क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरियों में उठा   क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वासिते

हर मुसलमान भाई और बहन के लिये यक्सां मुफ़ीद

शरीअ़त व त़रीक़त से मुतअ़ल्लिक़ एक जामेअ़ और मुनफ़रिद तह़रीर

मुकम्मल पांच हिस्से

आदाबे मुर्शिदे कामिल

तरतीबे जदीद
और
तख़रीज के साथ

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले जैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

तआरुफ़ मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब **"आदाबे मुर्शिदे कामिल"** उर्दू ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **'हिन्दी' रस्मुल ख़त्** (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक-त-बतुल मदीना** से **शाएअ** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़हा व सत्र नम्बर) **मुत्तलअ** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

नोट : इस्लामी बहनों को डायरेक्ट राबिता करने की इजाज़त नहीं है।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त् का लीपियांतर ख़ाका

थ = ته	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

हर मुसलमान भाई और बहन के लिये यक्सां मुफ़ीद शरीअ़त
व त़रीक़त से मुतअ़ल्लिक़ एक जामेअ़ और मुन्फ़रिद तह़रीर

आदाबे मुर्शिदे कामिल

(मुकम्मल पांच ह़िस्से)

-: पेशकश :-

शो'बए इस्लाही कुतुब

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

आदाबे मुर्शिदे कामिल

(मुकम्मल पांच हिस्से)

तरतीबे जदीद और तख़्रीज के साथ

पीरी मुरीदी का सुबूत, मुर्शिदे कामिल की तलाश,

मुर्शिद के अवसाफ़ व शराइत़, फ़ी ज़माना यादगार सलफ़ शख़्सिय्यत,

92 आदाबे मुर्शिद, 52 हिकायाते औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰه

ब-रकाते श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या, तसव्वुरे मुर्शिद का त़रीक़ा,

सालिक व मज्ज़ूब व त़ालिब की शरई हैसिय्यत

सरकश जिन्नात की 5 हिकायात शो'बदा बाज़ों के 6 वाक़ेआ़त

कामिल मुर्शिद के मुरीदीन के "7" वक़्ते मौत

और "6" क़ब्र खुलने

के वाक़ेआ़त मअ़ सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसलमान की पहचान

-: पेशकश :-

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہ

जुम्ला हुक़ूक़ ब हक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब : आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से)

मुरत्तिब : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए इस्लाही कुतुब)

त़बाअ़ते अव्वल : रबीउ़ल आख़िर, सि. 1434 हि.

त़बाअ़ते दुवुम : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सि. 1438 हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद - 1

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁..... अजमेर : मक-त-बतुल मदीना, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385

❁..... बरेली : मक-त-बतुल मदीना, दरगाह आ'ला ह़ज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994

❁..... गुलबर्गा : मक-त-बतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503

❁..... बनारस : मक-त-बतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101

❁..... कानपुर : मक-त-बतुल मदीना, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045

❁..... कलकत्ता : मक-त-बतुल मदीना, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212

❁..... नागपुर : मक-त-बतुल मदीना, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड़, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099

❁..... अनंतनाग : मक-त-बतुल मदीना, मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438

❁..... सुरत : मक-त-बतुल मदीना, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861

❁..... इन्दोर : मक-त-बतुल मदीना, शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692

❁..... बेंग्लोर : मक-त-बतुल मदीना, शॉप 13, ह़ज़रत बिलाल मस्जिद कॉम्पलेक्स, नवां मेन पिल्लाना गार्डन, अ्रेबिक कॉलेज, बेंग्लोर, कर्नाटक : 08088264783

❁..... हुबली : मक-त-बतुल मदीना, ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

"शरीअ़त व त़रीक़त" के ग्यारह मुबारक हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11" मुक़द्दस निय्यतें

मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر طبرانی حدیث ٥٩٤٢ ج ٦ ص ١٨٥ بیروت)

﴿1﴾ **रिज़ाए इलाही** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा।

﴿2﴾ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये **रोज़ाना चन्द सफ़ह़ात** पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा।

﴿3﴾ **शरीअ़त व त़रीक़त** के अह़काम सीखूंगा।

﴿4﴾ **क़ुरआनी आयात** की ज़ियारत करूंगा।

﴿5,6﴾ मुर्शिद के ह़ुक़ूक़ व आदाब पढ़ कर **याद रखूंगा और इन्हें** पूरा करने की भी कोशिश करूंगा।

﴿7﴾ जो नहीं जानते उन्हें **सिखाऊंगा।**

﴿8﴾ दूसरों को **पढ़ने की तरग़ीब भी** दिलाऊंगा।

﴿9,10﴾ "**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। ﴿مؤطا امام مالک، ج ٢، ص ٤٠٧، رقم: ١٧٣١﴾ इस ह़दीसे मुबारका पर अ़मल की निय्यत से ह़स्बे तौफ़ीक़ येह किताब दूसरों को **तोह़फ़तन दूंगा।**

﴿11﴾ इस किताब में दिये गए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ मुक़र्ररा वक़्त पर रोज़ाना पाबन्दी से **तसव्वुरे मुर्शिद** करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुन्फ़रिद सुन्नतों भरा बयान "निय्यत का फल" और आप के मुरत्तब कर्दा दीगर कार्ड या पेम्फ़्लेट मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से ह़ासिल फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से)

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
हिस्सए अव्वल		फ़रमां बरदार जिन्न	40	सच्चाई की ख़ुश्बू	59
फ़ैज़ाने औलिया	11	जानवर नुमा जिन्न	41	मुर्शिद से दूर	60
पीरी मुरीदी का सुबूत	12	अज़दहा नुमा जिन्न	42	मुर्शिद के दुश्मन	60
मुरीद होने का मक़सद	13	हबशी जिन्न	43	ख़ुश फ़हमी	60
चार शराइत़, मुर्शिदे इत्तेसाल	14	म-दनी माहोल से दूरी की तबाहकारियां	45	ख़िलाफ़े आ़दत काम	60
मुर्शिदे ईसाल की त़ा'रीफ़	16	मुर्शिदे कामिल के ह़ासिदीन	48	नाक़िस मुरीद	61
बैअ़ते ब-र-कत से क्या मुराद है ?	16	21 म-दनी अवसाफ़	49	करामत की त़लब	61
बैअ़ते इरादत	17	बाबा फ़रीद का इ़श्क़े मुर्शिद	50	मुर्शिद की नाराज़ी	61
26 म-दनी अवसाफ़	19	41 आदाबे मुर्शिद	52	मक़ामे मुर्शिद	62
मुर्शिदे कामिल की तलाश	20	अच्छी ह़ालत	52	क़ल्बे मुर्शिद	62
यादगारे सलफ़ शख़्सय्यत	20	हुस्ने ए'तेक़ाद	53	ह़िक्मते मुर्शिद	63
म-दनी मश्वरा	22	नाकाम मुरीद	53	ज़रूरी एह़तियात़	63
शैत़ानी रुकावट	22	धुत्कारा हुवा	53	मल्फ़ूज़ाते मुर्शिद	64
मुरीद बनने का त़रीक़ा	23	ह़क़्क़े मुर्शिद	53	ज़ियारते मुर्शिद	64
अदब की ज़रूरत	25	सच्चाई और यक़ीन	54	चेहरा मुबारक	65
बे अ-दबी की नुहूसत	26	सख़्त ज़लज़ले	54	इजाज़ते मुर्शिद	65
पांच ह़िकायात	28	सच्चाई	54	ख़ास ख़याल	65
इस्मिल्लाह का अदब	28	भटका हुवा मुरीद	55	मुरीद पर ह़क़	65
सादा कागज़ का अदब	29	ह़सद की नुहूसत	55	तोह़फ़ए मुर्शिद	66
सियाही के नुक़्ते का अदब	29	इत़ाअ़त की ब-र-कत	56	इमदाद का दरवाज़ा	66
बिस्मिल्लाह का अदब	31	निगाहे विलायत के असरार	56	मुरीद हो तो ऐसा	67
आले रसूल का अदब	33	दाइमी इ़ज़्ज़त	58	मुर्शिदे कामिल का दुश्मन	68
अदब की ब-र-कतें	37	ख़िदमते मुर्शिद	58	तरक़्क़ी का राज़	68
महब्बते मुर्शिद	38	रिज़ाए इलाही	59	नाराज़िये मुर्शिद	68
चार जिन्नों की ह़िकायात	40	ज़ाहिर बीन	59	मुर्शिद की नींद	69

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
मुर्शिद के इ़याल की ख़िदमत	69	मुरीद होना सीखो	97	शरई अह़काम	121
अदब सीखने का ह़क़	70	बा अदब मुरीद	99	जिस्मानी आ'माल	121
12 आदाबे मुर्शिद	71	मुर्शिदे कामिल ऐ़ब पोशी फ़रमाते हैं	100	आ'माले क़ल्बिय्या	121
26 आदाबे मुर्शिद	72	मुर्शिदे आ'ला ह़ज़रत की करामत	101	अहम तरीन आ'माल	122
ह़िस्सए दुवुम		ख़िदमते मुर्शिद का इन्आ़म	102	क़ल्ब के 40 ख़त़रात	123
सोह़बते सालिह़ीन की ब-र-कतें	76	मुर्शिदे कामिल की ख़िदमत का सिला	102	विलायते ख़ास	125
जा नशीने रसूल	77	कुफ़्ले मदीना की ज़रूरत	103	फ़ना फ़िश्शैख़	125
सोह़बत की ज़रूरत	77	तौबा पर इस्तेक़ामत	105	तसव्वुरे मुर्शिद की दलील	126
ईमान का तह़फ़्फ़ुज़	78	मुर्शिदे कामिल का एह़तिराम	106	तसव्वुर में आसानी के लिये	126
म-दनी उसूल	79	कामिल तवज्जोह	107	अहम हिदायात	127
ईमान की ह़िफ़ाज़त	80	मुर्शिदे कामिल के नालैन का अदब	108	सात क़ुरआनी आयात	129
अज़ ख़ुद इलाज	81	जन्नती दरवाज़ा	109	तसव्वुरे मुर्शिद का त़रीक़ा (अव्वल)	131
क़ुरआने मजीद के इर्शादात	81	बा कमाल मुरीद	111	तसव्वुरे मुर्शिद का त़रीक़ा (दुवुम)	132
अह़ादीसे मुबा-रका	82	दो शहज़ादे	112	इब्तेदाई तसव्वुर के लिये	
फ़ु-क़हा व मुह़द्दिसीने किराम		अनोखा अदब	113	म-दनी अन्दाज़	133
के अक़्वाल	82	पीर खाने का मेहमान	113	मन्क़बते अ़त्तार	134
सूफ़िया व आ़रिफ़ीन के अक़्वाल	83	मुर्शिदे कामिल की अवलाद का अदब	114	श-जरा शरीफ़ पढ़ने के फ़वाइद	
सोह़बत पाने का म-दनी ज़रीआ़	85	मुर्शिदे कामिल के मज़ारे मुबारक		व ब-र-कतें	137
तसनीफ़ात व तालीफ़ात	86	की ता'ज़ीम	114	श-जरे के 4 म-दनी फूल	139
26 ह़िकायाते औलिया	87	हुज़ूरे गौसे पाक की तशरीफ़ आवरी	115	इजाज़ते मुर्शिद	142
ईमान की ह़िफ़ाज़त	87	**ह़िस्सए सिवुम**		ज़रूरी एह़तियात	142
मुरीद हो तो ऐसा	89	तसव्वुफ़ व त़रीक़त की इब्तेदा	118	मुमा-नअ़त की ह़िक्मत	142
एक दरवाज़ा पकड़ मगर मज़बूती से	90	म-दनी वुजूहात	118	इजाज़त की ब-र-कत	143
मुरीद की इस्लाह़	93	म-दनी मिसाल	119	रिज़ाए इलाही	143
तल्वार का वार बे असर	94	अहले तसव्वुफ़ कौन ?	119	10 ह़ैरत अंगेज़ सच्चे वाक़ेआ़त	144
सआ़दत मन्द मुरीद	95	बेहतरीन अदवार	120	बिच्छू से पनाह	144
मह़ब्बत ने मन्ज़िल तक पहुंचा दिया	96	इल्मे तसव्वुफ़ की ज़रूरत	120	सांप बिग़ैर डसे लौट गया	145

www.dawateislami.net

चादर में बिच्छू	146	मजज़ूबे बरेली शरीफ़	178	मुरीदीन मुतवज्जेह हो	228
बिच्छू का ज़हर	146	वलिय्ये कामिल की कुर्बत	179	ख़ौफ़नाक जिन्नात की मौत	228
बिफ़रा हुवा सांप	147	वसाविस की काट	180	मन्क़बते "दामने अ़त्तार"	232
ज़हरीला डंग	148	मुसीबत का टलना	183	निस्बत की 12 बहारें	233
जान व माल महफ़ूज़	150	तवज्जोह फ़रमाएं	184	मर्हूम कामरान अ़त्तारी	234
अवलाद की हिफ़ाज़त	151	**हिस्सए पन्जुम**		मर्हूम मुनीर अ़त्तारी	236
कारोबार में ब-र-कत	152	पैदाइशी नाबीना की आंखें रोशन	187	मर्हूम अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारी	237
बस में लूटमार	153	वलिय्ये कामिल के तबर्रुक की		मर्हूम अ़ब्दुर्रहीम अ़त्तारी	241
श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या	156	ब-र-कत	191	मर्हूम वसीम अ़त्तारी	244
तवज्जोह फ़रमाएं	156	वस्वसे की काट	194	अ़त्तारिया इस्लामी बहन	246
मशाइख़े किराम के म-दनी इरशादात	157	तालिब की शरई हैसिय्यत	196	अ़त्तारिया होने की ब-र-कत	247
तारीख़े उर्स व मदफ़न शरीफ़	161	सालिक व मजज़ूब के अह़काम	201	मरते वक़्त कलिमए तय्यिबा	249
ईसाले सवाब की ब-र-कत	163	नक़्शे क़दम	202	क़ब्र जन्नत का बाग़	249
हिस्सए चहारुम		अ-ज़मतें मजाज़ीब	202	क़ब्र खुलने के वाक़िआत	250
दिल की इस्लाह़	165	रूहानी मनाज़िल	203	बिन्ते गुलाम मुर्सलीन अ़त्तारिया	250
क़ल्ब की सलामती	166	शरीअ़त की ह़क़ीक़त	204	अ़त्तारिया इस्लामी बहन	251
सात आ'ज़ा की ह़क़ीक़त	167	बाबा दिल देखता है !	205	मर्हूम उहुद रज़ा अ़त्तारी	252
ख़ास हिदायात	167	पुर असरार बुड्ढा	207	मय्यत की चीख़ें	255
अहले त़रीक़त की तौबा	168	फ़क़ीर दुआ़ करेगा	208	मर्हूम एह़सान अ़त्तारी	255
शरीअ़त व त़रीक़त के अह़काम	171	तकिये के नीचे 500 का नोट	210	म-दनी वसिय्यत	256
अह़कामे शरीअ़त	172	दिल उछल कर ह़ल्क़ में आ गया	212	मर्हूम मुहम्मद नवीद अ़त्तारी	257
क़िब्ला शरीफ़ का अदब	172	सच्चे मजज़ूब	215	ख़ुश नसीब अ़त्तारी	258
शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल	173	मूसा सुहाग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	215	अ़ज़ीम निस्बतें	260
रुहानी तरक़्क़ी	173	सच्चा वज्द	216	ह़ैरत अंगेज़ यक्सानिय्यत	264
क़ुरआन व सुन्नत के अह़काम	174	मजज़ूबे बरैली	217	सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसलमान	265
आ़जिज़ी के छे अक़्वाल	174	मजज़ूबे ज़माना	218	माख़ज़ व मराजेअ़	267
ज़ईफ़ी में अ़मल	176	पीरनुमा आ़मिल	221	क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब	268
पीर बनाने का मक़्सद	176	अ़क़ीदत की तक़्सीम	223	क़ादिरी अ़त्तारी फ़ोर्म	275

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہ

पेशे लफ़्ज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना एक त़रफ़ नाक़िस और कामिल पीर का इमतियाज़ मुश्किल है तो दूसरी त़रफ़ जो किसी कामिल मुर्शिद के दामन से वाबस्ता हैं भी तो उन्हें अपने मुर्शिद के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब से आश्नाई नहीं । जिस के सबब फ़ैज़े मुर्शिद के त़ालिब व तिश्नगान (या'नी प्यासे) अपनी सूखी ज़बानें तो देख रहे हैं। मगर आदाबे मुर्शिद से बे तवज्जोगी जो कि मुर्शिदे कामिल के फ़ुयूज़ो ब-र-कात से सैराबी में सब से बड़ी रुकावट है। इस पर तवज्जोह नहीं देते,

इन ह़ालात में इस बात की अशद्द ज़रूरत महसूस हुई कि कोई ऐसी तह़रीर हो **जिस से शरीअ़त की रोशनी में मौजूदा दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ नाक़िस और कामिल मुर्शिद की पेहचान भी हो सके** और कामिल मुर्शिद के दामन से वाबस्तगान आदाबे मुर्शिद से मुत्त़लअ़ हो कर **ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर त़रीक़त की राह में होने वाले ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान से भी महफ़ूज़ रह सकें ।** इस ह़क़ीक़त को जानने और मुर्शिदे कामिल के आदाब समझने के लिये **आदाबे मुर्शिदे कामिल** के **मुकम्मल पांच ह़िस्सों** पर मुश्तमिल इस किताब में शरीअ़त व त़रीक़त से मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी मा'लूमात पेश करने की सअ़ी की गई है।

इस किताब में आयात के तर्जमे **कन्ज़ुल ईमान** शरीफ़ और अह़ादीसे मुबा-रका के मुकम्मल ह़वालाजात के साथ हर किताब का ह़वाला जिल्द व सफ़ह़ा नम्बर के साथ देने की कोशिश की गई है।

www.dawateislami.net

तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये जा बजा ए'राब लगाने के साथ साथ क़ारेईन की दिलचस्पी के पेशे नज़र ईमान अफ़रोज़ सच्ची हिकायात भी पेश की गई हैं।

उम्मीद है कि आप बा अदब खुश नसीबों में शामिल होने के त़रीक़ए कार और शरीअ़त व त़रीक़त के असरार जानने के लिये इस किताब को अव्वल ता आख़िर ज़रूर पढ़ेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब का गहरी नज़र से मुत़ालआ़ न सिर्फ़ साबेक़ा ज़िन्दगी में होने वाली कोताहियों की निशान देही करेगा, बल्कि ज़ेरे मुत़ालआ़ रखने वालों की आयन्दा ज़िन्दगी के लिये भी रहनुमाई करेगा।

इस किताब को पेश करने की सआ़दत दा'वते इस्लामी की मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के **शो'बए इस्लाही कुतुब** को ह़ासिल हो रही है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि वोह हमें शरीअ़त व त़रीक़त के रुमूज़ और आदाबे मुर्शिद ज़ौक़ो शौक़ से जानने और इन पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **"अपनी और सारी दुन्या की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दीन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।**

(اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या, दा'वते इस्लामी)

26 ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम 1426 हि.

29 दिसम्बर सिने 2005 ई.

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہ

आदाबे मुर्शिदे कामिल

हिस्सए अव्वल में.....

फ़ैज़ाने औलिया (सफ़हा :11 ता 12)

पीरी मुरीदी का सुबूत (सफ़हा :12 ता 13)

मुरीद बनने का मक़्सद (सफ़हा :13)

मुर्शिदे कामिल के लिये 4 शराइत़

और 26 अवसाफ़ (सफ़हा : 14 ता 20)

फ़ी ज़माना यादगार सलफ़ शख़्सिय्यत

(सफ़हा : 20)

अदब की ज़रूरत व अहम्मिय्यत (सफ़हा : 25)

मुर्शिदे कामिल के 92 आदाब

वरक़ उलटिये....

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़िये

आशिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबुल बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं, "जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शु-हदा के साथ रखेगा।" (مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی الصلوۃ علی النبی.....الخ، رقم ۱۷۲۹۸، ج ۱۰، ص ۲۵۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ैज़ाने औलिया

उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की एक सिफ़त **अल्लाह** तआ़ला ने येह बयान फ़रमाई है कि **आप** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **लोगों का तज़किया (या'नी नफ़्स व क़ल्ब को पाक व साफ़) फ़रमाते हैं।** या'नी जिन के दिल शैत़ानी वस्वसों और नफ़्सानी सियाह कारियों से आलूदा हो चुके हों वोह भी जब हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नज़रे करम के फ़ैज़ान से मुस्तफ़ीज़ होते हैं तो उन के **ज़ाहिरो बात़िन पाक व साफ़** हो जाते हैं।

आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ाने रह़मत का सिल्सिला सह़ाबए किराम, ताबेईन व तब्अ़ ताबेईन رِضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और फिर उन के फ़ैज़ याफ़्तगान औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के ज़रीए ख़िलाफ़त दर ख़िलाफ़त जारी रहा। जिन में **ग़ौसुल आ'ज़म**

www.dawateislami.net

शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, आ़रिफ़े रब्बानी **दाता गंज बख़्श** अ़ली हिजवेरी, क़ुत़्बुल मशाइख़ **ख़्वाजा ग़रीबे नवाज़** अजमेरी, सय्यिदुल औलिया **बाबा फ़रीदुद्दीन** गंजे शकर, आ़रिफ़ बिल्लाह **ख़्वाजा बहाउद्दीन** नक़्शबन्द, सय्यिदुना **शैख़ शुहाबुद्दीन** सोहरवर्दी رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को मा'रेफ़त व ह़क़ीक़त का जो आ'ला मक़ाम नसीब हुवा इस की मिसाल नहीं मिलती।

इन नुफ़ूसे क़ुदसिया के रूह़ानी तसर्रुफ़ात और बात़िनी फ़ुयूज़ व ब-रकात के बाइ़स हर दौर में ह़क़ की शम्अ़ फ़रोज़ां रही, और ऐसे अहले नज़र पैदा होते रहे जो ना मुसाइद ह़ालात के बा वुजूद बात़िल के ख़िलाफ़ बर सरे पैकार रहे और शरीअ़त व त़रीक़त की रोशनी में लोगों के ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़ का फ़रीज़ा सर अन्जाम देने के साथ साथ ईमान की ह़िफ़ाज़त की म-दनी सोच भी अ़त़ा फ़रमाते रहे। क्यूंकि मुसल्मान की सब से क़ीमती चीज़ ईमान है, मगर फ़ी ज़माना ईमान को जिस क़-दर ख़त़रात लाह़िक़ हैं इस को हर ज़ी शुऊ़र महसूस कर सकता है।

आ'ला ह़ज़रत अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इर्शाद है, जिस को ज़िन्दगी में सल्बे ईमान का ख़ौफ़ नहीं होता, नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़त़रा है। (ब ह़वाला रिसाला "बुरे ख़ातिमे के अस्बाब" स. 14)

पीरी मुरीदी का सुबूत

उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : ईमान की ह़िफ़ाज़त का एक ज़रीआ़ किसी "मुर्शिदे कामिल" से मुरीद होना भी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है।

www.dawateislami.net

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ (پ ١٥، بنی اسرائیل:٧١)

(तर-ज-मए कुरआन, कन्जुल ईमान)

"जिस दिन हम हर जमाअ़त को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे ।"

नूरुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरुल कुरआन में मुफ़स्सिरे शहीर **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं, "**इस से मा'लूम हुवा** कि दुन्या में किसी सालेह़ को अपना इमाम बना लेना चाहिये **शरीअ़त** में "**तक़्लीद**" कर के, और त़रीक़त में "**बैअ़त**" कर के, ताकि ह़श्र अच्छों के साथ हो । अगर सालेह़ इमाम न होगा तो उस का इमाम शैत़ान होगा । इस आयत में **तक़्लीद, बैअ़त** और **मुरीदी** सब का सुबूत[1] है ।" (नूरुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरुल कुरआन, पारह :15, सूरए बनी इस्राईल:71)

मुरीद होने का मक़्सद

पीर **उमूरे आख़िरत** के लिये बनाया जाता है ताकि उस की राहनुमाई और बात़िनी तवज्जोह की ब-रकत से मुरीद **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की नाराज़ी वाले कामों से बचते हुए "**रिज़ाए रब्बुल अनाम के म-दनी काम**" के मुत़ाबिक़ अपने शबो रोज़ गुज़ार सकें ।

(मज़ीद मा'लूमात के लिये सफ़्ह़ा :160 ता 167 मुत़ालआ फ़रमाएं)

फ़ी ज़माना ह़ालात

मौजूदा ज़माने में बेशतर लोगों ने "**पीरी मुरीदी**" जैसे अहम मन्सब को हुसूले दुन्या का ज़रीआ बना रखा है । बे शुमार बद अक़ीदा और गुमराह लोग भी तसव्वुफ़ का ज़ाहिरी लुबादा ओढ़ कर लोगों के दीनो ईमान को बरबाद कर रहे हैं । और इन्ही ग़लत़कार लोगों को बुन्याद बना कर "**पीरी मुरीदी**" के मुख़ालिफ़ीन इस पाकीज़ा रिश्ते से लोगों को बद गुमान कर रहे हैं ।

1. मज़ीद मा'लूमात के लिये सफ़्ह़ा : 70 ता 74 मुलाह़ज़ा फ़रमाएं ।

www.dawateislami.net

दौरे ह़ाज़िर में चूंकि कामिल व नाक़िस पीर का इमतियाज़ इन्तिहाई मुश्किल है। लिहाज़ा मुरीद होते वक़्त सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان और हुज्जतुल इस्लाम **अबू ह़ामिद** मुह़म्मद बिन मुह़म्मद अल **ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى ने जिन **शराइत़ व अवसाफ़े मुर्शिद** के बारे में वज़ाह़त फ़रमाई है और मुर्शिदे कामिल की पेहचान का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमा कर उम्मत को सह़ीह़ रहनुमाई अ़त़ा की है। इसे पेशे नज़र रखना ज़रूरी है।

मुर्शिदे कामिल के लिये चार शराइत़

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़तावा अफ़्रीक़ा में तह़रीर फ़रमाते हैं कि मुर्शिद की दो क़िस्में हैं

﴾1﴿ **मुर्शिदे इत्तिसाल** ﴾2﴿ **मुर्शिदे ईसाल**

﴾1﴿ **मुर्शिदे इत्तिसाल** या'नी जिस के हाथ पर बैअ़त करने से इन्सान का सिल्सिला हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल हो जाए, इस के लिये चार शराइत़ हैं।

पहली शर्त़ ★ मुर्शिद का सिल्सिला **बि इत्तिसाले सह़ीह़** (या'नी दुरुस्त वास्त़ों के साथ तअ़ल्लुक़) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचा हो। बीच में मुन्क़त़अ़ (या'नी जुदा) न हो कि मुन्क़त़अ़ के ज़रीए़ इत्तिसाल (या'नी तअ़ल्लुक़) ना मुमकिन है। ★ बा'ज़ लोग **बिला बैअ़त** (या'नी बिग़ैर मुरीद हुए) **मह़ज़ ब ज़ो'मे विरासत** (या'नी वारिस होने के गुमान में) अपने बाप दादा के सज्जादे पर बैठ जाते हैं। या बैअ़त की थी मगर ख़िलाफ़त न मिली थी, **बिला इज़्न** (बिग़ैर इजाज़त) मुरीद करना शुरूअ़ कर देते हैं। या ★ सिल्सिला ही वोह हो कि **क़त़अ़** कर दिया गया, इस में फ़ैज़ न रखा गया, लोग **बराए हवस** इस में इज़्न व ख़िलाफ़त देते चले आते हैं या

www.dawateislami.net

★सिल्सिला फ़ी नफ़्सिही सहीह़ था। मगर बीच में ऐसा कोई शख़्स वाक़ेअ़ हुवा जो ब वज्हे इन्तिक़ाए बा'ज़ शराइत़ क़ाबिले बैअ़त न था। इस से जो शाख़ चली वोह बीच में **मुन्क़त़अ़** (या'नी जुदा) है। इन तमाम सूरतों में इस बैअ़त से हरगिज़ इत्तिसाल (या'नी तअ़ल्लुक़) ह़ासिल न होगा। (बेल से दूध या बांझ से बच्चा मांगने की मत जुदा है।)

दूसरी शर्त़ ★ मुर्शिद सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो। बद मज़हब गुमराह का सिल्सिला शैत़ान तक पहुंचेगा न कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक। आज कल बहुत खुले हुए बद दीनों बल्कि बे दीनों कि जो बैअ़त के सिरे से मुन्किर व दुश्मने औलिया हैं, मक्कारी के साथ पीरी मुरीदी का जाल फैला रखा है। **होशियार** ! ख़बरदार ! **एह़तियात़** ! एह़तियात़ !

तीसरी शर्त़ ★ मुर्शिद **आ़लिम** हो। या'नी कम अज़ कम इतना इल्म ज़रूरी है कि बिला किसी इमदाद के अपनी ज़रूरियात के मसाइल किताब से निकाल सके। कुतुब बीनी (या'नी मुत़ालआ़ कर के) और अफ़्वाहे रिजाल (या'नी लोगों से सुन सुन कर) भी आ़लिम बन सकता है, (मत़लब येह है कि फ़ारिग़ुत्तह़सील होने की सनद न शर्त़ है न काफ़ी। बल्कि इल्म होना चाहिये।) ★ इल्मे फ़िक़्ह (या'नी **अह़कामे शरीअ़त**) इस की अपनी ज़रूरत के क़ाबिल काफ़ी। ★ और **अ़क़ाइदे अहले सुन्नत** से लाज़िमी पूरा वाक़िफ़ हो। ★ कुफ़्र व इस्लाम, गुमराही व हिदायत के फ़र्क़ का **ख़ूब आ़रिफ़** (या'नी जानने वाला) हो।

चौथी शर्त़ ★ मुर्शिद फ़ासिक़े मो'लिन (या'नी ए'लानिय्या गुनाह करने वाला) न हो। इस शर्त़ पर हुसूले इत्तिसाल का तवक़्क़ुफ़ नहीं या'नी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से तअ़ल्लुक़ का दारो मदार इस शर्त़ पर नहीं, कि फ़ुजूर व फ़िस्क़ बाइसे फ़िस्ख़ (मन्सूख़ होने का

www.dawateislami.net

सबब) नहीं। मगर पीर की ता'ज़ीम लाज़िम है और फ़ासिक़ की तौहीन वाजिब और दोनों का इजतिमाअ़ बातिल। ("इसे इमामत के लिये आगे करने में इस की ता'ज़ीम है और शरीअ़त में इस की तौहीन वाजिब है।")

﴿2﴾ **मुर्शिदे ईसाल** या'नी शराइते़ मज़्कूरा (या'नी जिन शराइत़ का ज़िक्र किया गया) के साथ (1) मफ़ासिदे नफ़्स (नफ़्स के फ़ित्नों) (2) मकाइदे शैत़ान (या'नी शैत़ानी चालों) और (3) मसाइदे हवा (नफ़्स के जालों) से आगाह हो। (4) दूसरे की तरबिय्यत जानता हो और (5) अपने मुतवस्सिल पर शफ़्क़त नामा रखता हो कि इस के उ़यूब पर इसे मुत्त़लअ़ करे इन का इलाज बताए (6) जो मुश्किलात इस राह में पेश आएं उन्हें ह़ल फ़रमाए। (फ़तावा अफ़्रीक़ा, सफ़ह़ा :138)

बैअ़त की भी दो क़िस्में हैं

﴿1﴾ **बैअ़ते ब-रकत** ﴿2﴾ **बैअ़ते इरादत**

बैअ़ते ब-रकत

या'नी सिर्फ़ तबर्रुक के लिये बैअ़त हो जाना, आज कल आ़म बैअ़तें येही हैं। वोह भी नेक निय्यतों की, वरना बहुत से लोगों की बैअ़त दुन्यावी अग़राज़े फ़ासिदा के लिये होती है वोह ख़ारिज अज़ बह़स हैं। इस बैअ़त के लिये **शैख़े इत्तिसाल** (जिस का तआ़रुफ़ आगे गुज़रा) काफ़ी है। येह बैअ़त भी बेकार नहीं बल्कि बहुत मुफ़ीद है और दुन्या व आख़िरत में इस के कई फ़ाइदे हैं। मह़बूबाने ख़ुदा के ग़ुलामों के दफ़्तर में नाम लिख जाना और इन से सिल्सिला मुत्तसिल हो जाना भी बड़ी सआ़दत है।

﴿**अव्वल**﴾ इन ख़ास ख़ास ग़ुलामों और सालिकाने राहे त़रीक़त से इस अम्र में मुशा-बहत हो जाती है और सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि "**مَنْ تَشَبَّہَ بِقَوْمٍ فَھُوَ مِنْھُمْ** (**तर्जमा**) जो जिस क़ौम से मुशा-बहत इख़्तियार करे वोह उन्हीं में से है।"

(سنن ابوداؤد، کتاب اللباس، باب فی لبس الشھرۃ، رقم ۴۰۳۱، ج ۴، ص ۶۲)

www.dawateislami.net

﴾**दुवुम**﴿ इन अरबाबे त़रीक़त के साथ एक सिल्सिले में मुन्सलिक हो जाना भी ने'मत है। ह़दीसे पाक में है, इन का रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, "هُمُ الْقَوْمُ لَايَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ" **(तर्जमा)** वोह लोग हैं जिन के पास बैठने वाला भी बद बख़्त नहीं रहता।

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل مجالس الذکر، رقم ۲۶۸۹، ص ۱۴۴۴)

बैअ़ते इरादत

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, बैअ़ते इरादत येह है कि मुरीद अपने इरादा व इख़्तियार ख़त्म कर के ख़ुद को शैख़ व मुर्शिद हादिये बर ह़क़ के बिल्कुल सिपुर्द कर दे, उसे मुत़लक़न अपना ह़ाकिम व मुतस्सरिफ़ जाने, उस के चलाने पर राहे सुलूक चले, कोई क़दम बिग़ैर उस की मरज़ी के न रखे। इस के लिये मुर्शिद के बा'ज़ अह़काम या अपनी ज़ात में ख़ुद उस के कुछ काम, अगर इस के नज़्दीक सह़ीह़ न भी मा'लूम हों तो इन्हें अफ़्आ़ले ख़िज़्र عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मिस्ल समझे अपनी अ़क़्ल का क़ुसूर जाने, उस की किसी बात पर दिल में ए'तेराज़ न लाए, अपनी हर मुश्किल उस पर पेश करे।

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के सफ़र के दौरान जो बातें सादिर होती थीं ब ज़ाहिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को जिन पर ए'तेराज़ था फिर जब ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام इस की वजह बताते थे तो ज़ाहिर हो जाता था कि ह़क़ येही था जो उन्हों ने किया ग़रज़ उस के हाथ में **मुर्दा ब दस्ते ज़िन्दा** हो कर रहे। येह बैअ़ते सालिकीन है। येही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचाती है। येही हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِيْن से ली है।

(फ़तावा अफ़्रीक़ा, सफ़ह़ा :140)

www.dawateislami.net

जैसे सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस पर बैअ़त की, कि हर आसानी व दुश्वारी हर ख़ुशी व ना गवारी में हुक्म सुनेंगे और इत़ाअ़त करेंगे और साहिबे हुक्म के किसी हुक्म में चूं व चरा न करेंगे। (صحیح البخاری، کتاب الاحکام، باب کیف یبایع الامامُ النّاس، رقم ۷۱۹۹، ۷۲۰۰ ج ۴، ص ۴۷۴)

शैख़े हादी का हुक्म, **रसूले अकरम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म है। रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म में मजाले दम ज़दन नहीं।

मुर्शिदे कामिल के 26 मक्की म-दनी अवसाफ़

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْوَالِی कामिल मुर्शिद के अवसाफ़ यूं बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नाइब जिस को मुर्शिद बनाया जाए, उस के लिये येह शर्त़ है कि वोह आ़लिम हो। **लेकिन हर आ़लिम भी मुर्शिदे कामिल नहीं हो सकता।** इस काम के लाइक़ वोही शख़्स हो सकता है जिस में चन्द **मख़्सूस सिफ़ात** हों। यहां हम इजमाली त़ौर पर चन्द अवसाफ़ बयान करते हैं ताकि हर सर फिरा या गुमराह शख़्स मुर्शिद व रहबर बनने का दा'वा न कर सके।

आप फ़रमाते हैं मुर्शिदे कामिल वोही हो सकता है। (1) जो दुन्या की मह़ब्बत और दुन्यवी इ़ज़्ज़त व मर्तबे की चाहत से मुंह मोड़ चुका हो और (2) ऐसे कामिल मुर्शिद से बैअ़त कर चुका हो जिस का सिल्सिला ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचता हो। (3) उस शख़्स ने रियाज़त की हो। (4) हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़कामात की ता'मील का मज़हर (या'नी

www.dawateislami.net

अह़कामाते इलाहिया की बजा आवरी के साथ साथ सुनने न-बविय्या की पैरवी करने और करवाने की भी रोशन नज़ीर) हो, (5) वोह शख़्स थोड़ा खाना खाता हो, (6) थोड़ी नींद करता हो। (7) ज़ियादा नमाज़ें पढ़ता हो। (8) ज़ियादा रोज़े रखता हो। (9) ख़ूब स-दक़ा व ख़ैरात करता हो। (10) उस की त़बीअ़त में तमाम अच्छे अख़्लाक़ होने चाहियें। (11) सब्र। (12) शुक्र। (13) तवक्कुल। (14) यक़ीन। (15) सख़ावत। (16) क़नाअ़त (17) अमानत। (18) ह़िल्म। (19) इन्किसारी। (20) फ़रमां बरदारी। (21) सच्चाई। (22) ह़या। (23) वक़ार। (24) सुकून और (25) इसी क़िस्म के दीगर फ़ज़ाइल उस की सीरत व किरदार का जुज़्व होना चाहिये। (26) उस शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अन्वार से ऐसा नूर और रोशनी ह़ासिल की हो जिस से तमाम बुरी ख़स्लतें मसलन (1) कन्जूसी, (2) ह़सद, (3) कीना, (4) जलन, (5) लालच, (6) दुन्या से बड़ी उम्मीदें बांधना, (7) ग़ुस्सा (8) सरकशी वग़ैरा इस रोशनी में ख़त्म हो गई हों।

इल्म के सिल्सिले में किसी का मोह़ताज न हो, सिवाए उस मख़्सूस इल्म के जो हमें पयग़म्बरे इस्लाम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलता है। येह मज़्कूरा अवसाफ़ कामिल मुर्शिदों या पीराने त़रीक़त की कुछ निशानियां हैं। जो रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नाइबी के लाइक़ हैं। ऐसे मुर्शिदों की पैरवी करना ही सह़ीह़ त़रीक़त है।

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं। **ऐसे पीर बड़ी मुश्किल से मिलते** हैं। अगर येह दौलत किसी को ह़ासिल हुई और येह तौफ़ीक़ नसीब हुई कि ऐसा कामिल मुर्शिद मिल गया और वोह मुर्शिद उसे अपने मुरीदों में शामिल भी कर ले तो उस मुरीद के लिये लाज़िम है कि वोह अपने मुर्शिद का ज़ाहिरी व बात़िनी अदब करे।

(مجموعہ رسائل امام غزالی "ایھا الولد"، خطبۃ الرسالۃ، رقم ۲۶۳)

www.dawateislami.net

हज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे नेकी (या'नी म-दनी माहोल) अ़ता फ़रमाना चाहता है उसे अपने बर गुज़ीदा बन्दों की ख़िदमत में भेज देता है।

(شانِ اولیاء، حضرت جُنید بغدادی، علیہ الرحمۃ، ص ۱۹۳)

मुर्शिदे कामिल की तलाश येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम है कि वोह हर दौर में अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की इस्लाह़ के लिये अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه ज़रूर पैदा फ़रमाता है। जो अपनी मोअमिनाना हिक्मत व फ़िरासत के ज़रीए लोगों को येह ज़ेहन देने की कोशिश फ़रमाते हैं कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

फ़ी ज़माना यादगार सलफ़ शख़्सिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सेंकड़ों साल पहले सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی जिन अवसाफ़ के पीर को कामयाब फ़रमा रहे हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ी ज़माना येह तमाम अवसाफ़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका में ब दरजए अतम पाए जाते हैं। जिन के तक़्वा व परहेज़गारी की ब-रकात की एक मिसाल क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माहोल हमारे सामने है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की निगाहे विलायत व हिक्मतों भरी म-दनी तरबिय्यत ने दुन्या भर में लाखों मुसल्मानों बिल ख़ुसूस नौ जवानों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया और ग़ैर मुस्लिमों के इस्लाम क़बूल करने की इत्तिलाआ़त भी मिलती रहती हैं।

www.dawateislami.net

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शरीअ़ते मुत़ह्हरा और त़रीक़ते मुनव्वरा की वोह यादगार सलफ़ शख़्सिय्यत हैं जो कि **कसीरुल करामत** बुज़ुर्ग होने के साथ साथ **इल्मन व अ़-मलन, क़ौलन व फ़े'लन, ज़ाहिरन व बात़िनन अह़कामाते इलाहिय्या** की बजा आवरी और **सुनने न-बविय्या** की पैरवी करने और करवाने की भी रोशन नज़ीर हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जवानी की दहलीज़ पर क़दम रखने के साथ ही मा'रेफ़त और ह़क़ीक़त की तह़सील में भी कामिल हो चुके थे और आप इबतिदा ही से अ़वाम व ख़वास में इन्तिहाई मुख़्लिस, पुर जोश, बा अ़मल और मुत्तक़ी आ़लिम के त़ौर पर मश्हूर हैं। आप ने सब से ज़ियादा मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी** र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से इस्तिफ़ादा फ़रमाया और मुसल्सल 22 साल आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة की सोह़बते बा ब-रकत से मुस्तफ़ीज़ होते रहे। ह़त्ता कि उन्हों ने क़िब्ला **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को (ज़ाहिरी व बात़िनी उ़लूम से मुज़य्यन पा कर) अपनी ख़िलाफ़त व इजाज़त से नवाज़ा।

(माख़ूज़ अज़ वक़ारुल फ़तावा, जि. 2 सफ़ह़ा. 202, बज़्मे वक़ारुद्दीन, कराची)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान عَلَيْهِ الرَّحْمَة के पूरी दुन्या में वाह़िद ख़लीफ़ा हैं। और शारेह़े बुख़ारी, नाइबे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती **शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी** عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने भी आप को सलासिले अरबआ़ **क़ादिरिय्या, चिश्तिया, नक़्शबन्दिया** और **सोहरवर्दिया** की ख़िलाफ़त इनायत फ़रमाने के साथ कुतुबो ह़दीस वग़ैरा की इजाज़त भी अ़त़ा फ़रमाई। दुन्याए इस्लाम के कई और अकाबिर उ़-लमा व मशाइख़े किराम ने भी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को अपनी ख़िलाफ़त अ़त़ा करने के साथ साथ ह़ासिल शुदा असानीद व इजाज़ात से भी नवाज़ा है।

www.dawateislami.net

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सिल्सिलए क़ादिरिय्या में मुरीद करते हैं । और सिल्सिलए क़ादिरिय्या की बात ही क्या है कि इस सिल्सिले के अ़ज़ीम पेश्वा सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरा मुरीद चाहे कितना ही गुनाहगार हो बिग़ैर तौबा के नहीं मरेगा । (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

म-दनी मश्वरा

जो किसी का मुरीद न हो उस की ख़िदमत में म-दनी मश्वरा है कि इस ज़माने के सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका को ग़नीमत जाने और बिला ताख़ीर इन का मुरीद हो जाए । यक़ीनन मुरीद होने में नुक़्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा ही फ़ाइदा है ।

शैत़ानी रुकावट

मगर येह बात ज़ेह्न में रहे कि चूंकि **हुज़ूरे ग़ौसे पाक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुरीद बनने में ईमान के तह़फ़्फ़ुज़, मरने से पहले तौबा की तौफ़ीक़, जहन्नम से आज़ादी और जन्नत में दाख़िले जैसे अ़ज़ीम मनाफ़ेअ़ मौजूद हैं । लिहाज़ा शैत़ान आप को मुरीद बनने से रोकने की भरपूर कोशिश करेगा । आप के दिल में ख़याल आएगा : मैं ज़रा मां बाप से पूछ लूं, दोस्तों का भी मश्वरा ले लूं, ज़रा नमाज़ का पाबन्द बन जाऊं, अभी जल्दी क्या है, ज़रा मुरीद बनने के क़ाबिल तो हो जाऊं, फिर मुरीद भी बन जाऊंगा । मेरे प्यारे इस्लामी भाई ! कहीं क़ाबिल बनने के इन्तिज़ार में मौत न आ संभाले, **लिहाज़ा मुरीद बनने में ताख़ीर नहीं करनी चाहिये ।**

www.dawateislami.net

श-ज-रए अ़त्तारिय्या

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक बहुत ही प्यारा **"श-जरह शरीफ़"** भी मुरत्तब फ़रमाया है। जिस में गुनाहों से बचने के लिये, काम अटक जाए तो उस वक़्त, और रोज़ी में ब-रकत के लिये क्या क्या पढ़ना चाहिये, जादू टोने से हिफ़ाज़त के लिये क्या करना चाहिये, इसी त़रह़ के और भी बहुत से "अवराद" लिखे हैं। इस श-जरह को सिर्फ़ वोही पढ़ सकते हैं, जो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए क़ादरी र-ज़वी अ़त्तारी सिल्सिले में मुरीद या त़ालिब होते हैं। इस के इ़लावा किसी और को पढ़ने की इजाज़त नहीं। लिहाज़ा अपने घर के एक एक फ़र्द बल्कि अगर एक दिन का बच्चा भी हो तो उसे भी **सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सिल्सिले में मुरीद करवा कर **क़ादरी र-ज़वी अ़त्तारी** बनवा दें।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस बात का इज़्हार करते रहते हैं कि हम **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद या त़ालिब होना चाहते हैं मगर त़रीक़ए कार मा'लूम नहीं तो अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं तो अपना और जिन को मुरीद या त़ालिब बनवाना चाहते हैं उन का नाम, किताब के आख़िर में दिये गए फ़ॉर्म की फ़ोटो कॉपी (zerox) करवा कर इस पर तरतीब वार ब मअ़ वलदिय्यत व उ़म्र लिख कर मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी **सिल्सिलए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा।

www.dawateislami.net

इस के लिये नाम लिखने का त़रीक़ा भी समझ लें। मसलन लड़की हो तो मैमूना बिन्ते अ़ली रज़ा, उ़म्र तक़रीबन तीन माह और लड़का हो तो मुह़म्मद अमीन बिन मुह़म्मद मूसा, उ़म्र तक़रीबन सात साल, अपना मुकम्मल पता लिखना हरगिज़ न भूलें।

(पता इंग्रेज़ी के केपिटल हुरूफ़ में लिखें)

मस्अला ﴾1﴿ आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "औ़रत के लिये इजाज़ते शौहर की ह़ाजत नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द : 26, सफ़ह़ा : 584) औ़रत बारी के दिनों में भी मुरीद हो सकती है।

मस्अला ﴾2﴿ आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ब ज़रीअ़ए क़ासिद या ब ज़रीअ़ए ख़त़ मुरीद हो सकता है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द : 26, सफ़ह़ा : 585)

मा'लूम हुवा कि जब नुमाइन्दे या ख़त़ के ज़रीए मुरीद हो सकता है तो ई-मेल, टेलीफ़ोन, और लाउड स्पीकर पर ब द-र-जए औला बैअ़त जाइज़ हुई।"

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द **मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ां** عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ **भी लोगों को इजतिमाई त़ौर पर मुरीद फ़रमाते थे।**

E-mail : attar@dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का कार्ड पुर कर के हर म-दनी माह के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-रकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर इस अहम किताब के पांचों ह़िस्सों का अव्वल ता आख़िर ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

आदाबे मुर्शिदे कामिल (ह़िस्सए अव्वल)

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं, "जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، رقم ۲۲، ج ۲، ص ۳۲۸ طبعۃ دار الفکر)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अदब की ज़रूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई ख़ुश नसीब मुर्शिदे कामिल के दामन से वाबस्ता हो कर मुरीद होने की सआ़दत पा ले, तो उसे चाहिये कि अपने मुर्शिद से फ़ैज़ पाने के लिये पैकरे अदब बन जाए। इस लिये कि त़रीक़त के तमाम मुआ़मलात का इन्ह़िसार अदब पर है। क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ط
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ (پ ۲۶، الحجرٰت : ۱)

(तर-ज-मए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान) ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** और उस के रसूल से आगे न बढ़ो, और **अल्लाह** से डरो, बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है।

www.dawateislami.net

एक और जगह इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ۝

(پ ۲۶، الْحُجُرٰت : ۲)

(तर-ज-मए कुरआन कन्जुल ईमान) ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो, उस ग़ैब बताने वाले नबी की आवाज़ से, और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो ।

बे अदबी की नुहूसत

तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि पहले के ज़माने में जब कोई नौ जवान किसी बूढ़े आदमी के आगे चलता था तो **अल्लाह** तआ़ला उसे (उस की बे अदबी की वजह से) ज़मीन में धंसा देता था ।

एक और जगह नक़्ल है कि किसी शख़्स ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की, हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं फ़ाक़े का शिकार रहता हूं । तो आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तू किसी बूढ़े (शख़्स) के आगे चला होगा । (रूहुल बयान, पारह : 17)

इस से मा'लूम हुवा कि बे अदबी दुन्या व आख़िरत में मर्दूद करवा देती है । जैसा कि इब्लीस की नौ लाख साल की इबादत एक बे अदबी की वजह से बरबाद हो गई और वोह मर्दूद ठहरा ।

(1) **हज़रते** अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं : बन्दा **इत़ाअ़त** से जन्नत तक और **अदब** से ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ तक पहुंच जाता है ।

(الرسالة القشيرية، باب الادب، ص ۳۱۶)

www.dawateislami.net

(2) **ह़ज़रते जुन्नून** मिस्री عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि जब कोई मुरीद अदब का ख़याल नहीं रखता, तो वोह लौट कर वहीं पहुंच जाता है जहां से चला था। (الرسالۃ القشیریۃ، باب الادب، ص۳۱۹)

(3) **ह़ज़रते इब्ने मुबारक** عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि, हमें ज़ियादा इल्म ह़ासिल करने के मुक़ाबले में **थोड़ा सा अदब ह़ासिल करने की ज़ियादा ज़रूरत है।** (الرسالۃ القشیریۃ، باب الادب، ص۳۱۷)

(4) **आ'ला ह़ज़रत** अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने एक जगह ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی के क़ौले नसीह़त को बड़ी अहम्मिय्यत दी।

फ़रमाया : क्या वजह है कि मुरीद आ़लिम फ़ाज़िल और साह़िबे शरीअ़तो त़रीक़त होने के बा वुजूद (अपने मुर्शिदे कामिल के फ़ैज़ से) दामन नहीं भर पाता ? ग़ालिबन इस की वजह येह है कि मदारिस से फ़ारिग़ अकसर उ़-लमाए दीन अपने आप को पीरो मुर्शिद से अफ़्ज़ल समझते हैं या अ़मल का ग़ुरूर और कुछ होने की समझ कहीं का नहीं रहने देती। वगरना ह़ज़रते **शैख़ सा'दी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی का मश्वरा सुनें।

म-दनी मश्वरा

फ़रमाते हैं : भर लेने वाले को चाहिये कि जब किसी चीज़ के ह़ासिल करने का इरादा करे तो अगर्चे कमालात से भरा हुवा हो। मगर कमालात को दरवाज़े पर ही छोड़ दे। (या'नी आ़जिज़ी इख़्तियार करे) और येह जाने कि मैं कुछ जानता ही नहीं। ख़ाली हो कर आएगा तो कुछ पाएगा, और जो अपने आप को भरा हुवा समझेगा तो याद रहे कि **भरे बरतन में कोई और चीज़ नहीं डाली जा सकती।** (अन्वारे रज़ा, इमाम अह़मद रज़ा और ता'लीमाते तसव्वुफ़, सफ़ह़ा : 242)

www.dawateislami.net

"बा अदब" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 ह़िकायात

﴾1﴿ इस्मिल्लाह का अदब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** के बाब **फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह** से चार ह़िकायात पेशे ख़िदमत हैं।

मिट्टी का शिकस्ता प्याला सिल्सिलए आ़लिया नक़्शबन्दिया के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना **मुजद्दिदे अल्फ़े सानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي ने एक दिन आ़म बैतुल ख़ला में भंगी का सफ़ाई के लिये रखा हुवा गन्दगी से आलूदा कोना टूटा हुवा बड़ा सा मिट्टी का प्याला मुलाह़ज़ा फ़रमाया : ग़ौर से देखा तो बेताब हो गए क्यूं कि उस प्याले पर लफ़्ज़ **अल्लाह** कन्दा था ! लपक कर प्याला उठा लिया और ख़ादिम से पानी का आफ़्ताबा (या'नी ढक्कन वाला दस्ता लगा हुवा लोटा) मंगवा कर अपने दस्ते मुबारक से ख़ूब मल मल कर अच्छी त़रह़ धो कर उस को पाक किया, फिर एक सफ़ेद कपड़े में लपेट कर अदब के साथ ऊंची जगह रख दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उसी प्याले में पानी पिया करते। एक दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इल्हाम फ़रमाया गया : "जिस त़रह़ तुम ने मेरे नाम की ता'ज़ीम की मैं भी दुन्या व आख़िरत में तुम्हारा नाम ऊंचा करता हूं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामे पाक का अदब करने से मुझे वोह मक़ाम ह़ासिल हुवा जो सो साल की इ़बादत व रियाज़त से भी ह़ासिल न हो सकता था !"

(مُلَخَّص از حضرات القدس، دفتر دوم ص ۱۱۳ مکاشفہ نمبر ۳۵)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ सादा काग़ज़ का अदब

सिल्सिलए आ़लिया नक़्शबन्दिया के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद सरहिन्दी अल मा'रूफ़ **मुजद्दिदे अल्फ़े सानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي सादा काग़ज़ का भी एह़तिराम फ़रमाते थे। चुनान्चे एक रोज़ अपने बिछौने पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि यकायक बे क़रार हो कर नीचे उतर आए और फ़रमाने लगे : मा'लूम होता है, इस बिछौने के नीचे कोई काग़ज़ है। (زبدۃ المقامات، ص۲۷۶)

काग़ज़ात का एह़तिराम **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा, सादा काग़ज़ का भी अदब है और क्यूं न हो कि इस पर क़ुरआनो ह़दीस और इस्लामी बातें लिखी जाती हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बयान कर्दा ह़िकायत में ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي की खुली करामत है कि बिछौने के नीचे के काग़ज़ का ज़ाहिरी त़ौर पर बिन देखे पता चल गया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नीचे उतर आए ताकि ग़ुलामों को भी काग़ज़ात के अदब की तरग़ीब मिले।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿3﴾ सियाही के नुक़्ते का अदब

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद हाशिम कश्मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं सिल्सिलए आ़लिया नक़्शबन्दिया के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना **मुजद्दिदे अल्फ़े सानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي की ख़िदमत में

www.dawateislami.net

हाज़िर था। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़रीरी काम कर रहे थे, ज़रूरतन बैतुल खला गए मगर फ़ौरन वापस आ कर पानी का लोटा मंगवा कर बाएं हाथ के अंगूठे का नाखुन शरीफ़ धोया, फिर बैतुल ख़ला तशरीफ़ ले गए।

बा'दे फ़रागत जब तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : बैतुल ख़ला में जूं ही बैठा कि मेरी नज़र बाएं हाथ के अंगूठे के नाखुन की पुश्त पर पड़ी जिस पर क़लम का इमतिह़ान करते वक़्त का (या'नी क़लम को चेक करने के लिये कि काम कर रहा है या नहीं उस मौक़अ़ का) सियाही (ink) का नुक़्ता लगा हुवा था, चूंकि येह उसी क़लम से था जिस से क़ुरआनी ह़ुरूफ़ (अ़रबी ज़बान के सारे, जब कि फ़ारसी और उर्दू के अकसर ह़ुरूफ़ क़ुरआनी हैं) लिखे जाते हैं इस लिये बाएं हाथ के अंगूठे पर लगे हुए इस नुक़्ते के साथ वहां बैठना अदब के ख़िलाफ़ था हालांकि बहुत शिद्दत से पेशाब की ह़ाजत थी मगर उस तकलीफ़ के मुक़ाबले में इस बे अदबी की तकलीफ़ बहुत ज़ियादा थी लिहाज़ा फ़ौरन बाहर आ कर सियाही के नुक़्ते को धो कर फिर गया।

(زبدۃ المقامات، ص ۲۷۴)

अल्लाह ! अल्लाह ! सिल्सिलए आ़लिया नक़्शबन्दिया के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی क़लम की सियाही (ink) के नुक़्ते का भी इस क़दर अदब फ़रमाते थे जब कि हमारे यहां ह़ालत येह है कि लिखने के दौरान लगी हुई सियाही के निशानात धो कर उ़मूमन गटर में बहा दिया जाता है और ना क़ाबिले इस्ते'माल हो जाने पर क़लम और उस के अज्ज़ा को पहले कचरे के डिब्बे में डालते और बा'द में कचरा कुंडी की नज़्र कर देते हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

www.dawateislami.net

﴾4﴿ बिस्मिल्लाह का अदब

शराबी वली बन गया हज़रते सय्यिदुना **बिशरे हाफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى तौबा से क़ब्ल बहुत बड़े शराबी थे । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मरतबा शराब के नशे में धुत कहीं जा रहे थे कि रास्ते में एक काग़ज़ पर नज़र पड़ी जिस पर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखा हुवा था । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे ता'ज़ीमन उठा लिया और इत्र ख़रीद कर मुअ़त्तर किया फिर एक बुलन्द जगह पर अदब के साथ रख दिया । उसी रात एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में सुना कि कोई कह रहा है, "जाओ ! **बिशर** से कह दो कि तुम ने मेरे नाम को मुअ़त्तर किया, उस की ता'ज़ीम की और उसे बुलन्द जगह रखा हम भी तुम्हें पाक करेंगे ।" उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दिल में सोचा कि **बिशर तो शराबी है** । शायद मुझे ख़्वाब में ग़लत़ फ़हमी हुई है । चुनान्चे उन्हों ने वुज़ू किया, नफ़्ल पढ़े और फिर सो रहे । दूसरी और तीसरी बार भी येही ख़्वाब देखा और येह भी सुना कि "हमारा येह पैग़ाम **बिशर** ही की त़रफ़ है, जाओ ! उन्हें हमारा पैग़ाम पहुंचा दो !" चुनान्चे वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हज़रते बिशर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तलाश में निकल पड़े । उन को पता चला कि वोह शराब की महफ़िल में हैं तो वहां पहुंचे और **बिशर** को आवाज़ दी । लोगों ने बताया कि वोह तो नशे में बदमस्त हैं ! उन्हों ने कहा : उन्हें जा कर किसी त़रह़ बता दो कि एक आदमी आप के नाम कोई पैग़ाम लाया है और वोह बाहर खड़ा है । किसी ने जा कर अन्दर ख़बर दी : हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने फ़रमाया : उस से पूछो कि वोह किस का पैग़ाम लाया है ? दरयाफ़्त करने पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाने लगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम लाया हूं । जब आप

www.dawateislami.net

رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ को येह बात बताई गई तो झूम उठे और फ़ौरन नंगे पाउं बाहर तशरीफ़ ले आए। पैग़ामे ह़क़ عَزَّوَجَلَّ सुन कर सच्चे दिल से तौबा की और उस बुलन्द मक़ाम पर जा पहुंचे कि मुशाहदए ह़क़ عَزَّوَجَلَّ के ग़लबे की शिद्दत से नंगे पाउं रहने लगे। इसी लिये आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ह़ाफ़ी (या'नी नंगे पाउं वाला) के लक़ब से मश्हूर हो गए। (तज़्किरतुल औलिया, बाब : 12, सफ़्ह़ा : 106 (फ़ारसी))

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

बा अदब बा नसीब मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इस वाक़िए के ज़िम्न में तह़रीर फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिखे हुए काग़ज़ के टुकड़े का अदब करने से एक सख़्त गुनहगार और शराबी **वलिय्युल्लाह** बन गया तो जिन के दिलों में **रब्बुल अनाम** عَزَّوَجَلَّ का नाम कन्दा और जिन के क़ुलूब ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मा'मूर हैं उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के अदब के सबब हम गुनहगार, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से क्यूं बहरावर न होंगे ? नीज़ जो तमाम औलिया व अम्बिया के भी आक़ा हैं या'नी सय्यिदुल अम्बिया, अह़मदे **मुज्तबा**, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, उन का अदब अज्रो सवाब का मूजिब है। ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के नाम का अदब किया तो अ़–ज़मत पाई। तो आज हम अगर शहनशाहे आ़ली नसब, सुल्ताने अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे पाक का अदब करें, जहां सुनें चूम कर आंखों से लगा लें तो क्यूं कर इ़ज़्ज़त न पाएंगे ? ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम देखा

www.dawateislami.net

वहां इत्र लगाया तो पाक हो गए, हम भी जहां ज़िक्रे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हो वहां अ़रक़े गुलाब छिड़कें तो क्यूं न पाक होंगे ?

क्या महकते हैं महकने वाले — बू पे चलते हैं भटकने वाले
आ़सियो ! थाम लो दामन उन का — वोह नहीं हाथ झटकने वाले

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ आले रसूल का अदब

जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی (शुरूअ़ में) ख़लीफ़ए बग़दाद के दरबारी पहलवान और पूरी ममलुकत की शान थे। एक दिन दरबार लगा हुवा था कि चोबदार ने इत्तिलाअ़ दी कि सेह़न के दरवाज़े पर सुब्ह़ से एक लाग़र व नीमजान शख़्स बराबर इसरार कर रहा है कि मेरा चेलेन्ज जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तक पहुंचा दो, मैं उस से कुश्ती लड़ना चाहता हूं। लोगों को बड़ी ह़ैरत हुई मगर ख़लीफ़ा ने दरबारियों से बाहमी मश्वरे के बा'द कुश्ती के मुक़ाबले के लिये तारीख़ व जगह मुतअ़य्यन कर दी।

अनोखी कुश्ती **मुक़ाबले** की तारीख़ आते ही बग़दाद का सब से वसीअ़ मैदान लाखों तमाशाइयों से खचाखच भर गया। ए'लान होते ही ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तय्यार हो कर अखाड़े में उतर गए। वोह अजनबी भी कमर कस कर एक कनारे खड़ा हो गया। लाखों तमाशाइयों के लिये येह बड़ा ही ह़ैरत अंगेज़ मन्ज़र था, एक त़रफ़ शोहरत याफ़्ता पहलवान और दूसरी त़रफ़ कमज़ोर व नह़ीफ़ शख़्स।

www.dawateislami.net

पुर असरार गुफ़्तगू **ह़ज़रते** जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने जैसे ही ख़म ठोंक कर ज़ोर आज़्माई के लिये पन्जा बढ़ाया तो अजनबी शख़्स ने दबी ज़बान से कहा : **"कान क़रीब लाइये मुझे आप से कुछ कहना है ।"** न जाने उस आवाज़ में क्या सेह्र था कि सुनते ही ह़ज़रते जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) पर एक सक्ता त़ारी हो गया । कान क़रीब करते हुए कहा : **फ़रमाइये !** अजनबी की आवाज़ गुलूगीर हो गई । बड़ी मुश्किल से इतनी बात मुंह से निकल सकी । **जुनैद ! मैं कोई पहलवान नहीं हूं । ज़माने का सताया हुवा एक आले रसूल हूं,** सय्यिदा फ़ात़िमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का एक छोटा सा कुम्बा कई हफ़्ते से जंगल में पड़ा हुवा फ़ाक़ों से नीम जान है । छोटे छोटे बच्चे भूक की शिद्दत से बे ह़ाल हो गए हैं । हर रोज़ सुब्ह़ को येह कह कर शहर आता हूं कि शाम तक कोई इन्तिज़ाम कर के वापस लौटूंगा लेकिन ख़ानदानी ग़ैरत किसी के आगे मुंह नहीं खोलने देती । शर्म से भीक मांगने के लिये हाथ नहीं उठते । मैं ने तुम्हें सिर्फ़ इस उम्मीद पर चेलेन्ज दिया था कि आले रसूल की जो अ़क़ीदत तुम्हारे दिल में है । आज इस की आबरू रख लो । **वा'दा करता हूं कि कल मैदाने क़ियामत में नाना जान** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **से कह कर तुम्हारे सर पर फ़त्ह़ की दस्तार बंधवाऊंगा ।**

अजनबी शख़्स के येह चन्द जुम्ले निश्तर की त़रह़ ह़ज़रते जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के जिगर में पैवस्त हो गए, पल्कें आंसूओं के तूफ़ान से बोझल हो गईं, आ़लमगीर शोहरत व नामूस की पामाली के लिये दिल की पेशकश में एक लम्ह़े की भी ताख़ीर नहीं हुई । बड़ी मुश्किल से ह़ज़रते जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने जज़्बात की तुग़्यानी पर क़ाबू ह़ासिल करते हुए कहा : **"किश्वरे अ़क़ीदत के ताजदार ! मेरी इ़ज़्ज़त व नामूस का इस से बेहतरीन मसरफ़ और**

www.dawateislami.net

क्या हो सकता है कि इसे तुम्हारे क़दमों की उड़ती हुई ख़ाक पर निसार कर दूं ! ! !"

इतना कहने के बा'द ह़ज़रते जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ख़म ठोंक कर ललकारते हुए आगे बढ़े और सचमुच कुश्ती लड़ने के अन्दाज़ में थोड़ी देर पेंतरा बदलते रहे। लेकिन दूसरे ही लम्हे में ह़ज़रते जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) चारों शाने चित थे और **सीने पर सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **का एक नह़ीफ़ व ना तुवां शहज़ादा फ़त्ह़ का परचम लहरा रहा था !**

एक लम्हे के लिये सारे मज्मअ़ पर सकते की सी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई। ह़ैरत का त़िलिस्म टूटते ही मज्मअ़ ने नह़ीफ़ व ना तुवां सय्यिद को गोद में उठा लिया। और हर त़रफ़ से इन्आ़म व इकराम की बारिश हो रही थी। रात होने से पहले पहले एक गुमनाम सय्यिद ख़ल्अ़त व इन्आ़मात का बेश बहा ज़ख़ीरा ले कर जंगल में अपनी पनाहगाह की त़रफ़ लौट चुका था।

ह़ज़रते जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) अखाड़े में चित लैटे हुए थे। अब किसी को कोई हमदर्दी इन की ज़ात से नहीं रह गई थी। आज की शिकस्त की ज़िल्लतों का सुरूर इन की रूह़ पर एक ख़ुमार की त़रह़ छा गया था।

इ़शा की नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द ह़ज़रते जुनैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) जब अपने बिस्तर पर लैटे तो बार बार कान में येह अल्फ़ाज़ गूंज रहे थे। **"मैं वा'दा करता हूं कि कल क़ियामत में नाना जान से कह कर तुम्हारे सर पर फ़त्ह़ की दस्तार बंधवाऊंगा।"**

www.dawateislami.net

दस्तारे विलायत क्या सचमुच ऐसा हो सकता है ? क्या मेरी क़िस्मत का सितारा यक बयक इतनी बुलन्दी पर पहुंच जाएगा कि सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नूरानी हाथों की ब-र-कतें मेरी पेशानी को छू लें। अपनी त़रफ़ देखता हूं तो किसी त़रह़ अपने आप को इस ए'ज़ाज़ के क़ाबिल नहीं पाता। आह ! अब जब तक ज़िन्दा रहूंगा क़ियामत के लिये एक एक दिन गिनना पड़ेगा। येह सोचते सोचते ह़ज़रते जुनैद (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) की जैसे ही आंख लगी। सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी। सामने शहद से भी मीठे मीठे आक़ा मुस्कुराते हुए तशरीफ़ ले आए। लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे। अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए :

"जुनैद ! उठो, क़ियामत से पहले अपने नसीबे की सरफ़राज़ियों का नज़्ज़ारा कर लो। नबीज़ादों के नामूस के लिये शिकस्त की ज़िल्लतों का इन्आ़म क़ियामत तक क़र्ज़ नहीं रखा जाएगा। सर उठाओ, तुम्हारे लिये फ़त्ह़ व करामत की दस्तार ले कर आया हूं। आज से तुम्हें इरफ़ान व तक़र्रुब की सब से ऊंची बिसात़ पर फ़ाइज़ किया गया। बारगाहे यज़्दानी से गुरौहे औलिया की सरवरी का ए'ज़ाज़ तुम्हें मुबारक हो ! ! !"

इन कलिमात से सरफ़राज़ फ़रमाने के बा'द **सरकारे मदीना,** सुरूरे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जुनैद बग़दादी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى) को सीने से लगा लिया। इस आ़लमे कैफ़ बार में अपने शहज़ादों के जां निसार परवाने को क्या अ़त़ा फ़रमाया इस की तफ़्सील नहीं मा'लूम हो सकी। जानने वाले बस इतना ही जान सके कि सुब्ह़ को जब ह़ज़रते जुनैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की आंख खुली तो पेशानी की मौजूं में नूर की किरन लहरा रही थी। सारे बग़दाद में आप की विलायत की

www.dawateislami.net

धूम मच चुकी थी, ख़्वाब की बात बादे सबा ने घर घर पहुंचा दी थी, कल की शाम जो पाए हिक़ारत से ठुकरा दिया गया था आज सुब्ह को इस की राह गुज़र में पल्कें बिछी जा रहीं थीं। एक ही रात में सारा आलम ज़ेरो ज़बर हो गया था। तुलूए सह़र से पहले ही **ह़ज़रते जुनैद बग़दादी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरवाज़े पर दरवेशों की भीड़ जम्अ हो गई थी। जूं ही (आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) बाहर तशरीफ़ लाए ख़िराजे अ़क़ीदत के लिये हज़ारों गरदनें झुक गईं। ख़लीफ़ए बग़दाद ने अपने सर का ताज उतार कर क़दमों में डाल दिया। सारा शहर ह़ैरत व पशेमानी के आलम में सर झुकाए खड़ा था। ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुस्कुराते हुए एक बार नज़र उठाई और (सामने मौजूद आशिक़ाने रसूल के) हैबत से लरज़ते हुए दिलों को सुकून बख़्श दिया। पास ही किसी गोशे से आवाज़ आई : **गुरौहे औलिया** (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ) **की सरवरी का ए'ज़ाज़ मुबारक हो,** मुंह फेर कर देखा तो वोही नह़ीफ़ व नज़्ज़ार आले रसूल फ़र्ते ख़ुशी से मुस्कुरा रहा था। आले रसूल के अदब की ब-रकत ने एक पहलवान को लम्ह़ों में आस्माने विलायत का चांद बना दिया। सारी फ़ज़ा **सय्यिदुत्ताइफ़ा** की मुबारक बाद से गूंज उठी।

(जुल्फ़े ज़न्जीर मअ़ लालाज़ार, इन्आ़म शकत, सफ़ह़ा : 62 ता 72)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अदब की ब-र-कत कुरआने पाक में बा अदब ख़ुश नसीबों के बारे में इर्शाद होता है

وَفِیْ الْاٰیَةِ اِشَارَةٌ اِلٰی غَضِّ الصَّوْتِ عِنْدَ الشَّیْخِ الْمُرْشِدِ اَیْضًا لِاَنَّہٗ الْوَارِثُ وَلَہٗ الْخِلَافَة

(तर-ज-मए कुरआन कन्जुल ईमान) बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास, वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है। उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।

www.dawateislami.net

इस आयते मुबारका के तह़्त तफ़्सीरे रूहुल बयान सफ़ह़ा 66 जिल्द : 9, त़ब्अ़ए मक्तबए उ़स्मानिया में है

وَفِیْ الْاٰیَةِ اِشَارَةٌ اِلٰی غَضِّ الصَّوْتِ عِنْدَ الشَّیْخِ

الْمُرْشِدِ اَیْضًا لِاَنَّهٗ الْوَارِثُ وَلَهٗ الْخِلَافَة

(**तरजमा :** इस आयते मुबारका में इस बात की त़रफ़ इशारा है कि शैख़ व मुर्शिद के पास भी आवाज़ पस्त रखी जाए, क्यूंकि मुर्शिदे कामिल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का वारिस और नाइब होता है ।)

पस इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि जो लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **और आप के सच्चे नाइबों का अदब बजा लाते हैं । अल्लाह तआ़ला ने उन के क़ुलूब को तक़्वा के लिये ख़ास कर दिया है ।**

महब्बते मुर्शिद

अश्शैख़ुल मवाहिब सय्यिदुना **इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** عَلَیْہِ الرَّحْمَة अपनी मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़ **अल अन्वारुल क़ुदसिय्या फ़ी मा'रिफ़ति क़वाइदिस्सूफ़िय्यह** में इर्शाद फ़रमाते हैं : ऐ मेरे भाई ! तू जान ले कि मुर्शिद के अदब का आ'ला हिस्सा मुर्शिद की महब्बत ही है । जिस मुरीद ने अपने मुर्शिद से कामिल महब्बत न रखी । बई त़ौर कि मुर्शिद को अपनी तमाम ख़्वाहिशात पर तरजीह़ न दी तो वोह मुरीद इस राह में कामयाब न होगा । क्यूंकि **मुर्शिद की महब्बत की मिसाल सीढ़ी की सी है ।** मुरीद इस के ज़रीए ही से चढ़ कर अल्लाह तआ़ला की बारगाहे आ़लिया को पहुंचता है । और जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जो कि बन्दों को ह़क़ से मिला देने वाले हैं । अगर इन से महब्बत न रखी तो वोह मुनाफ़िक़ जहन्नम के निचले त़ब्क़े में होगा ।

www.dawateislami.net

जब तूने इस बात को जान लिया लिहाज़ा अब तू अपने मशाइख़ के मुहिब्बीन (या'नी अपने सिल्सिले के बुज़ुर्गों से महब्बत रखने वालों) के बा'ज़ अवसाफ़ से अपनी ज़ात को आज़्मा ले । (या'नी फ़िक्रे मदीना करते हुए तू अपना मुहासबा कर) और अपनी सच्ची और झूटी महब्बत में फ़र्क़ कर ले ।

अब मैं **अल्लाह** तआला की तौफ़ीक़ से कहता हूं कि तमाम अहले तरीक़त ने इत्तिफ़ाक़ किया है कि महब्बते मुर्शिद में सादिक़ मुरीद की अलामात में से एक येह है कि **वोह तमाम गुनाहों से तौबा करे** और तमाम ऐबों से पाकीज़गी इख़्तियार करे ।

क्यूंकि जो मुरीद गुनाहों से आलूदा हो कर अपने मुर्शिद की महब्बत का दा'वा करे तो वोह झूटा है । जैसा कि उस को अपने मुर्शिद से महब्बत नहीं तो इसी तरह मुर्शिद को भी उस से महब्बत नहीं । जब मुर्शिद को उस से महब्बत नहीं तो (गोया) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भी उस से महब्बत नहीं ।

अल्लाह तआला ने क़ुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाया :

★ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَO (پ۷،سورۃ المائدۃ :۹۳)

(तर-ज-मए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान) और **अल्लाह** नेकों को दोस्त रखता है ।

एक और जगह इर्शाद हुवा,

★ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَO (پ۱۰،سورۃ توبہ:۴)

(तर-ज-मए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान) बेशक **अल्लाह** परहेज़गारों को दोस्त रखता है ।

महब्बते मुर्शिद की ब-रकत से गुनाहों से बचते हुए नेकियां करने वाले इताअत गुज़ार, मुत्तक़ी व परहेज़गार, आशिक़ाने रसूल

www.dawateislami.net

जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपना दोस्त इर्शाद फ़रमाया : इताअ़ते इलाही की वोह ब-र-कतें पाते हैं कि न सिर्फ़ इन्सान बल्कि जिन्नात भी इन की फ़रमांबरदारी करते हैं। **आफ़ात व बलिय्यात व शरीर जिन्नात के शर से न सिर्फ़ खुद बल्कि इन के अहलो इयाल भी महफ़ूज़ कर दिये जाते हैं।**

"नेकी" के चार हुरूफ़ की निस्बत से चार सरकश जिन्नों की हिकायात

﴾1﴿ सरकश जिन्न

क़ाज़ी अबू या'ला "**तबक़ातुल ह-नफ़िय्या**" में फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद अ़ली अस्करी कहते हैं कि मेरे दादा ने बताया कि मैं **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की मस्जिद में मौजूद था कि उन की ख़िदमत में मुतवक्किल (बादशाह) ने अपना एक वज़ीर भेजा कि वोह आप को मुत्तलअ़ करे कि उस की शहज़ादी को मिर्गी हो गई है और अ़र्ज़ करे कि आप उस की सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत के लिये दुआ़ फ़रमाएं। तो ह़ज़रते **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वुज़ू करने के लिये खजूर के पत्ते का तस्मा लगा हुवा लकड़ी का जूता (खड़ाऊं जिस का पट्टा खजूर के पत्ते का था) निकाला और उस वज़ीर से फ़रमाया : अमीरुल मुअमिनीन के घर जाओ और उस लड़की के सर के पास बैठ कर उस जिन्न से कहो कि (इमाम) अह़मद फ़रमा रहे हैं **तुम्हें क्या पसन्द हैं ?** आया इस लड़की से निकल जाना पसन्द करते हो या उस (या'नी इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के 70 बार जूते खाना पसन्द करते हो ?

www.dawateislami.net

चुनान्चे वज़ीर उस जिन्न के पास गया और उसे येह पैग़ाम पहुंचा दिया। उस सरकश जिन्न ने लड़की की ज़बान से कहा हम सुनेंगे और इताअ़त करेंगे। अगर इमाम अह़मद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हमें इ़राक़ से जाने का हुक्म फ़रमाएंगे तो हम इ़राक़ में भी नहीं रुकेंगे। **वोह तो अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार बन्दे हैं।** चुनान्चे वोह जिन्न उस लड़की से निकल गया और वोह लड़की तन्दुरुस्त हो गई, फिर उस के यहां औलाद भी हुई।

जब इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ज़ाहिरी विसाल फ़रमाया तो वोह सरकश जिन्न उस लड़की पर दोबारा आ गया। मुतवक्किल बादशाह ने अपने वज़ीर को इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शागिर्द ह़ज़रते अबू बक्र मरूज़ी की ख़िदमत में भेजा तो उस ने पूरे वाक़िए़ से मुत्तलअ़ किया, चुनान्चे ह़ज़रते अबू बक्र मरूज़ी ने जूता लिया और उस लड़की के पास गए। तो उस सरकश जिन्न ने उस लड़की की ज़बान से गुफ़्तगू की और कहा : मैं इस लड़की से नहीं निकलूंगा और **मैं तुम्हारी इताअ़त नहीं करूंगा** और न ही तुम्हारी बात मानूंगा। **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के फ़रमां बरदार बन्दे थे इस लिये उन्हों ने हमें अपनी इताअ़त का हुक्म दिया।**

(और हमने अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इताअ़त व फ़रमां बरदारी के बाइ़स उन की इताअ़त की)

(ملخص از: لقط المرجان فی احکام الجان لِلسُّیوطی ترجمہ: जिनों की दुनिया ص210)

﴿2﴾ जानवर नुमा जिन्न

इब्ने अबिदुन्या "मकाइदुश्शयत़ान" में ह़ज़रते **ह़सन बिन हुसैन** رضی اللہ عنہما से रिवायत करते हैं कि मैं ह़ज़रते **रबीअ़ बिन्ते मुअ़व्वज़** बिन अ़फ़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा (और

www.dawateislami.net

पर्दे की एह़तियात़ के साथ) उन से कुछ सुवाल किये तो उन्हों ने फ़रमाया : कि मैं अपनी निशस्त पर बैठी थी कि मेरे घर की छत फटी और ऊंट की त़रह़ या गधे के मिस्ल एक काला जानवर मेरे ऊपर गिरा। मैं ने इस जैसा काला (और ख़ौफ़नाक जानवर पूरी ज़िन्दगी में) नहीं देखा। फ़रमाती हैं कि वोह मेरे क़रीब हो कर मुझे पकड़ना चाहता था लेकिन उस के पीछे एक छोटा सा काग़ज़ का रुक़्आ़ आया। जब उस को इस (जानवर नुमा जिन्न) ने खोला और पढ़ा तो उस में येह लिखा हुवा था।

مِنْ رَبِّ كَعْبٍ اِلٰى كَعْبٍ اَمَّا بَعْدُ فَلَا سَبِيْلَ لَكَ عَلَى الْمَرْاَةِ الصَّالِحَةِ بِنْتِ الصَّالِحِيْنَ

(तर्जमा) येह रुक़्आ़ का'ब के रब की जानिब से का'ब की त़रफ़ है। इस के बा'द तुम्हें हुक्म है कि तुम्हें नेक वालिदैन की नेक बेटी पर (शरारत की) कोई इजाज़त नहीं है।

ह़ज़रते रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि इस के बा'द वोह (जानवर नुमा जिन्न) जहां से आया था اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ वहीं वापस चला गया और मैं उस का वापस होना देख रही थी। ह़ज़रते ह़सन बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं फिर उन्हों ने मुझे वोह रुक़्आ़ दिखाया जो इन के पास अभी तक मौजूद था।

(ملخص از: لقط المرجان فی احکام الجان لِلسُّیوطی ترجمہ: جنوں کی دنیا ص306)

﴿3﴾ अज़्दहा नुमा जिन्न

इब्ने अबिदुन्या और इमाम बैहक़ी "दलाइल" में ह़ज़रते **यह़या बिन सईद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत करते हैं : जब ह़ज़रते उ़मरह बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की वफ़ात का वक़्त आया तो उन की ख़िदमत में बहुत से ताबिईने किराम जम्अ़ हुए। इन में ह़ज़रते उ़रवह बिन ज़ुबैर, ह़ज़रते क़ासिम बिन मुह़म्मद और ह़ज़रते अबू सलमह बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان भी थे।

www.dawateislami.net

इन ह़ज़रात की मौजूदगी में ही ह़ज़रते **उ़रवह** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا) पर ग़शी त़ारी हो गई और इन ह़ज़रात ने छत फटने की आवाज़ सुनी। देखा कि एक काला सांप (या'नी अज़्दहा नुमा जिन्न) नीचे आ कर गिरा जो खजूर के बड़े तने की मिस्ल (मोटा और लम्बा) था और वोह जब इन ख़ातून की त़रफ़ लपकने लगा कि अचानक एक सफ़ेद रुक्अ़ा ऊपर से गिरा, जिस में लिखा हुवा था।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○مِنۡ رَبِّ کَعۡبٍ اِلٰی کَعۡبٍ ○

لَیۡسَ لَکَ عَلٰی بَنَاتِ الصّٰلِحِیۡنَ سَبِیۡلٌ ○

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला बनू का'ब के रब की त़रफ़ से बनू का'ब की त़रफ़ तुम्हें नेक लोगों की बेटियों पर हाथ बढ़ाने की इजाज़त नहीं है। जब इस अज़्दहे ने येह सफ़ेद काग़ज़ देखा तो ऊपर चढ़ा और जहां से उतरा था वहीं से निकल गया।

(ملخص از : لقط المرجان فی احکام الجان لِلسُّیوطی ترجمہ:جنّوں کی دنیا ص306)

«4» ह़बशी जिन्न

इब्ने अबिद्दुन्या और इमाम बैहक़ी ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُ से रिवायत करते हैं : ह़ज़रते **औ़फ़ बिन अ़फ़रा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعالٰی عَنۡہُ की साहि़ब ज़ादी अपने बिस्तर पर लैटी हुई थीं। उन को मा'लूम भी न हुवा कि अचानक एक ह़बशी (सियाह फ़ाम आदमी नुमा जिन्न) उन के सीने पर चढ़ गया और उस ने अपना हाथ उन के ह़ल्क़ में डाल दिया तो अचानक पीले रंग का एक काग़ज़ आस्मान की त़रफ़ से गिरा। यहां तक कि उन के सीने पर आ गिरा तो उस (सियाह फ़ाम जिन्न) ने उस रुक़्ए़ को ले कर पढ़ा तो उस में येह लिखा हुवा था।

من رب لکین الی لکین اجتنب ابنة العبد الصالح فانه لا سبیل لک علیھا

www.dawateislami.net

या'नी येह हुक्म नामा लिकीन के रब की जानिब से
लिकीन की त़रफ़ है कि नेक इन्सान की बेटी से दूर हो
इस लिये कि तुम्हारा इस पर कोई ह़क़ नहीं है ।

आप फ़रमाती हैं : चुनान्चे वोह सियाह फ़ाम (आदमी नुमा जिन्न) उठा और अपना हाथ मेरे ह़ल्क़ से हटाया और अपना हाथ मेरे घुटने पर ऐसा मारा कि सूजन आ गई । फिर मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और येह वाक़ेआ़ उन से बयान किया तो उन्हों ने फ़रमाया : ऐ मेरे भाई की बेटी ! जब तू ह़ैज़ में हो तो अपने कपड़ों को समेट कर रखा कर तो येह (जिन्न) तुम्हें हरगिज़ कभी तकलीफ़ नहीं देगा । (اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस लड़की को उस वालिद की वजह से ह़िफ़ाज़त फ़रमाई क्यूं कि वोह जंगे बद्र में शहीद हुए थे ।

(ملخص از: لقط المرجان فی احکام الجان لِلسُّیوطی ترجمہ: जिनों की दुनिया ص306 تا307)

मा'लूम हुवा कि दुन्या व आख़िरत की आफ़ात व बलिय्यात से नजात और रब عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाने और हर दम सायए रह़मत में रहने की मुक़द्दस त़लब रखने वाले के लिये गुनाहों से बचते हुए नेकियों पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करना ज़रूरी है । फ़ी ज़माना क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी इन्आ़मात की ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और दीगर म-दनी कामों में मसरूफ़िय्यत इन्तिहाई मुफ़ीद और आसान ज़रीआ़ है । **क्यूंकि ग़फ़्लत की ज़िन्दगी और बे फ़ाइदा कामों में मश्ग़ूलिय्यत अल्लाह की रह़मत से दूरी का सबब होती है ।**

www.dawateislami.net

म-दनी माहोल से दूरी की तबाहकारियां

आ़रिफ़ बिल्लाह **इमाम ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی "अय्युहल वलद" में अपने शागिर्द को क़ौले नसीह़त इर्शाद फ़रमाते हुए तह़रीर करते हैं कि **नबिय्ये करीम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद है कि **बन्दे का ग़ैर मुफ़ीद कामों में मश्ग़ूल होना इस बात की अ़लामत है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उस बन्दे की त़रफ़ से अपनी नज़रे इनायत फेर ली है।** और जिस काम के लिये इन्सान को पैदा किया गया है अगर इस के सिवा किसी और काम में एक साअ़त भी सर्फ़ हुई तो येह बड़ी ह़सरत की बात होगी। (مجموعۃ الرسائل لامام الغزالی،خطبۃ الرسالۃ ایھا الولد ص ۲۵۷،طبعۃ دار الفکر بیروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! येह ह़दीसे मुबा-रका उन इस्लामी भाइयों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है जो म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने की सआ़दत पाने के बा वुजूद ग़ैर मुफ़ीद कामों मसलन (बा'दे इ़शा दा'वते इस्लामी के तह़्त लगने वाले मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में शिर्कत के लिये वक़्त होने के बा वुजूद नफ़्स को ख़ुश करने वाली ज़ाती दोस्तियों के सबब होटलों, थेलों या तफ़्रीह़गाहों पर वक़्त का गुज़ारना। घर, मस्जिद, दुकान या चौक दर्स और फ़िक्रे मदीना जो चन्द मिनट में मुमकिन है इस के बजाए फ़ुज़ूल गुफ़्तगू में मश्ग़ूलिय्यत। पूरे दिन बे शुमार लोगों से मुलाक़ात के बा वुजूद इनफ़िरादी कोशिश के बजाए लग़्व बातों में मसरूफ़िय्यत। म-दनी क़ाफ़िलों में जदवल के मुताबिक़ सफ़र या सालाना इजतिमाआ़त में अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों के साथ सफ़र के बजाए अपने मन पसन्द शु-रका के हमराह बे जदवल सफ़र वग़ैरा) में मश्ग़ूलिय्यत के बाइ़स म-दनी कामों की मसरूफ़िय्यत से मह़रूम हैं।

ऐसे इस्लामी भाइयों को फ़ौरन से पेशतर **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल को ग़नीमत जानते हुए किसी न किसी म-दनी

www.dawateislami.net

काम के ज़रीए रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के हुसूल की सअ्य शुरूअ़ कर देनी चाहिये, क्यूंकि उ़म्र बड़ी तेज़ी से गुज़र रही और मौत का पैग़ाम सुना रही है।

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं कि **जिस शख़्स का ह़ाल 40 साल की उ़म्र के बा'द येह हो कि उस की बुराइयों पर भलाइयां ग़ालिब न हों । तो उसे दोज़ख़ में जाने के लिये तैयार रहना चाहिये ।** (مجموعۃ الرسائل للامام الغزالی، ایھا الولد، ص ۲۵۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों की आ़दत न छूटने का एक सबब डट कर खाना[1] भी है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब **''पेट का क़ुफ़्ले मदीना''** सफ़ह़ा : 66 पर नक़्ल है : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, जो पेट भर कर खाने का आ़दी हो जाता है उस के बदन पर **गोश्त** बढ़ जाता है और जिस के बदन पर गोश्त बढ़ जाता है वोह **शहवत परस्त** हो जाता है और जो शहवत परस्त हो जाता है उस के **गुनाह** बढ़ जाते हैं। और जिस के गुनाह बढ़ जाते हैं उस का **दिल सख़्त** हो जाता है और जिस का दिल सख़्त हो जाता है वोह दुन्या की **आफ़तों** और **रंगीनियों** में ग़रक़ हो जाता है।

(اَلْمُنَبِّهَاتِ لِلْعَسقَلانی بابُ الخَماسی ۵۹)

1... त़रह़ त़रह़ की बीमारियों से नजात व ह़िफ़ाज़त और दुन्या और आख़िरत की भलाइयों के हुसूल के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़े लत़ीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** के मुन्फ़रिद बाब **''पेट का क़ुफ़्ले मदीना''** का मुत़ालआ़ इन्तिहाई मुफ़ीद है। इस अहम किताब में कम खाने की बहारें और ज़ियादा ख़ाने की तबाहकारियां बयान करने के साथ साथ जिस्म हल्का करने के मुफ़ीद त़िब्बी नुस्ख़े और मोटापे के अस्बाब मुफ़स्सल बयान किये गए हैं। **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से ह़ासिल फ़रमा कर ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

खाने की हिर्स से तू या रब नजात दे दे
अच्छा बना दे मुझ को अच्छी सिफ़ात दे दे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सारी दुन्या के लोगों को गुनाह से बचने की नसीह़त करना बहुत आसान है लेकिन इसे क़बूल करना (या'नी ख़ुद अ़मल करना) बड़ा मुश्किल है । क्यूंकि जिन लोगों के दिलों में दुन्या की लज़्ज़तें और नफ़्सानी ख़्वाहिशात घर कर लेती हैं उन के ह़ल्क़ को नसीह़त व हिदायत कड़वी लगती है। कुरआने ह़कीम में **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है ।

وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ط (سورۃ النجم آیت ۳۹ پ ۲۷)

(तर-ज-मए कुरआन कन्जुल ईमान) और येह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश ।

एक और जगह इर्शाद होता है कि

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ 0 وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ 0

(سورۃ الزلزال آیت ۷ تا ۸ پ ۳۰)

(तर-ज-मए कन्जुल ईमान) तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा । और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा ।

एक और जगह इर्शाद हुवा

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا ط

(سورۃ الکھف آیت نمبر ۱۱۰ پ ۱۶)

(तर-ज-मए कन्जुल ईमान) तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो, उसे चाहिये कि नेक काम करे ।

मगर याद रहे कि नेक आ'माल के साथ साथ नज़र रब की रह़मत पर ही होनी चाहिये चुनान्चे सय्यिदुना **इमाम ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى गुज़श्ता इर्शादात की वज़ाह़त में अपने शागिर्द से फ़रमाते हैं कि (यक़ीनन) **बन्दा अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो**

www.dawateislami.net

करम और रह़मत से ही बिहिश्त में जाएगा । लेकिन जब तक बन्दा अपनी इबादत व बन्दगी से अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के लाइक़ नहीं बनाएगा । उस वक़्त तक उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत नसीब नहीं होगी । (مجموعۃ الرسائل للامام محمد غزالی، ایھا الولد، ص ۲۰۸)

मज़ीद फ़रमाते हैं कि येह ह़क़ीक़त मैं नहीं कह रहा बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है ।

اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ۝ (پ۸، الاعراف:۵۶)

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) बेशक **अल्लाह** की रह़मत नेकों से क़रीब है ।

इस से मा'लूम हुवा कि गुनाहों से बचने और नेकियां करने की कोशिश करते हुए मुर्शिद की मह़ब्बत का दा'वा करना दुरुस्त है । मगर याद रहे ! इस के इलावा और भी मुर्शिद की मह़ब्बत की शराइत़ हैं ।

मुर्शिदे कामिल के ह़ासिदीन

सय्यिदुना इमाम शा'रानी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं मशाइख़े किबार ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि अपने मुर्शिद की मह़ब्बत की शराइत़ में से एक (अहम शर्त़) येह है कि मुरीद अपने मुर्शिद की गुफ़्तगू के इलावा दीगर तमाम लोगों की गुफ़्तगू सुनने से अपने कान (बन्द) कर ले । (या'नी मुर्शिद के ख़िलाफ़ ज़ेह्न ख़राब करने वाले की गुफ़्तगू सुनना तो दूर की बात नफ़रत के बाइस उस के साए से भी भागे) पस मुरीद किसी भी मलामत करने वाले की मलामत को न सुने । **यहां तक कि अगर तमाम शहर वाले लोग किसी एक साफ़ मैदान में जम्अ़ हो कर इसे अपने मुर्शिद से नफ़रत दिलाएं** (और हटाना चाहें) **तो वोह लोग इस बात पर** (या'नी मुरीद को मुर्शिद से दूर करने) **पर क़ुदरत न पा सकें ।**

(الانوار القدسیہ فی معرفۃ قواعد الصوفیہ)

www.dawateislami.net

"मस्त अपना बना मेरे मुर्शिद पिया"

के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से 21 म-दनी अवसाफ़

शैख़ ह़ज़रते मुह़्युद्दीन इब्ने अ़-रबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने मुर्शिद की मह़ब्बत रखने वालों के अवसाफ़ इस त़रह़ बयान फ़रमाए कि (1) वोह अपने मह़बूब की मह़ब्बत से मक़्तूल हो (2) मह़बूब में फ़ानी हो (3) हमेशा मह़बूब की त़रफ़ चलने वाला हो, या'नी बात़िन में सैर अलल मुर्शिद करने वाला हो (4) बहुत जागने वाला हो (5) मह़बूब के ग़म में डूबने वाला हो (6) जो चीज़ उसे **मह़बूब मुर्शिद** से हटाए, ख़्वाहिशाते दुन्यवी हों या उख़्वी सब से अ़लाह़िदा होने वाला हो (7) जो चीज़ उसे मह़बूब से रोके इन तमाम से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ करने वाला हो (8) बहुत आहो ज़ारी करने वाला हो (9) मह़बूब की गुफ़्तगू और नाम मुबारक से राह़त पाने वाला हो (10) मह़बूब के ग़म और दुख में हमेशा शरीक होने वाला हो (11) मह़बूब की ख़िदमत गुज़ारी में बे अदबी से डरने वाला हो (12) अपनी त़रफ़ से मह़बूब के ह़क़ में जो कुछ भी करे उस को थोड़ा समझने वाला और (13) मह़बूब के थोड़े को बहुत समझने वाला हो (14) मह़बूब की इत़ाअ़त से चिमटने वाला हो (15) उस की मुख़ालफ़त से भागने वाला हो (16) अपने नफ़्स से बिल्कुल अ़लाह़िदा होने वाला हो (या'नी कोई काम नफ़्स की ख़ात़िर न करे) (17) जिन तकलीफ़ों से त़बीअ़त मुतनफ़्फ़िर होती हैं उन पर सब्र करने वाला हो (18) जिन मुश्किलात पर मह़बूब उसे खड़ा करे इन पर मज़्बूत़ी से क़ाइम रहने वाला हो (19) मह़बूब की मह़ब्बत में दाइमी जुनून और (20) उस की रिज़ा को पाने (की कोशिश करने) और (21) नफ़्स के तमाम मत़ालिब पर (मुर्शिद के अह़काम को) तरजीह़ देने वाला हो।

www.dawateislami.net

ग़ौर फ़रमाएं पस ऐ भाई ! तू इन अवसाफ़ को जो मैं ने तुझे मुर्शिद की महब्बत के बारे में बयान किये हैं, अपनी ज़ात पर पेश कर। अगर तू ने अपनी ज़ात को इन के मुवाफ़िक़ पाया तो **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र बजा ला और जान ले कि तू अन क़रीब اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुर्शिद की महब्बत के इस रास्ते से **अल्लाह** तआ़ला की महब्बत तक पहुंच जाएगा, क्यूंकि मशाइख़े किराम की महब्बत व ता'ज़ीम **अल्लाह** तआ़ला की महब्बत व ता'ज़ीम के दरवाज़ों में से है।

(فتوحات مکیہ باب نمبر ۱۷۸)

बाबा फ़रीद عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ का इश्क़े मुर्शिद

एक मरतबा **ख़्वाजा ग़रीब नवाज़** عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ अपने महबूब ख़लीफ़ा हज़रते **बख़्तियार काकी** عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के यहां तशरीफ़ लाए। आप ने अपने मुरीद (बाबा फ़रीद عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ) जो आप के इश्क़ में घाइल थे। बुला कर इर्शाद फ़रमाया : अपने दादा पीर (या'नी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ) के क़दमों को बोसा दो। बाबा फ़रीद عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ हुक्मे मुर्शिद बजा लाने के लिये दादा पीर के क़दम चूमने झुके, मगर क़रीब ही तशरीफ़ फ़रमा अपने ही पीरो मुर्शिद (बख़्तियार काकी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ) के क़दम चूम लिये।

बख़्तियार काकी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने दोबारा इर्शाद फ़रमाया : फ़रीद ! सुना नहीं, दादा पीर के क़दम चूमो। बाबा फ़रीद जो मुर्शिद की हक़ीक़ी महब्बत में गुम थे फ़ौरन हुक्म बजा लाए और दोबारा दादा पीर के क़दम चूमने झुके मगर फिर अपने पीर बख़्तियार काकी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के क़दम चूम लिये।

बख़्तियार काकी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने दोबारा इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें दादा पीर के क़दम चूमने का कहता हूं मगर तुम मेरे क़दमों को क्यूं चूम लेते हो ? **बाबा फ़रीद** عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने अदब से सर झुका कर बड़े ही मुअद्दबाना और इश्क़ो मस्ती के आ़लम में हक़ीक़ते हाल

www.dawateislami.net

बयान फ़रमाई । हुज़ूर मैं आप के हुक्म पर दादा पीर ग़रीबे नवाज़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة के क़दम चूमने ही झुकता हूं, मगर वहां मुझे आप के क़दमों के सिवा और कोई क़दम नज़र ही नहीं आते । लिहाज़ा मैं इन्हीं क़दमों में जा पड़ता हूं । **ख़्वाजा ग़रीबे नवाज़** عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इर्शाद फ़रमाया : बख़्तियार (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) ! फ़रीद (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) ठीक कहता है । येह मन्ज़िल के उस दरवाज़े तक पहुंच गया है जहां **दूसरा कोई नज़र नहीं आता ! ! !**

(मक़ामाते औलिया, सफ़ह़ा : 180)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अगर कोई मुरीद ह़क़ीक़ी इश्क़े मुर्शिद की ला ज़वाल दौलत पा ले उस के लिये न सिर्फ़ नेकियां करना आसान बल्कि गुनाहों से भी यक्सर जान छूट सकती है ।

इश्क़े ह़क़ीक़ी **इस** की मिसाल यूं समझें कि किसी शख़्स का दिल किसी औ़रत पर आए और वोह उस के इश्क़ में गिरिफ़्तार हो जाए । चाहे वोह औ़रत बद शक्ल या सियाह रंगत वाली हो, मगर **इश्क़े मजाज़ी** की बिना पर उसे अपनी मह़बूबा के सामने दूसरी कोई औ़रत नहीं सूझती । चाहे सामने दुन्या की माहे जबीं ही क्यूं न हो । इसी त़रह़ अगर कोई ख़ुश नसीब मुरीद अपने मुर्शिदे कामिल की मह़ब्बत में **इश्क़े ह़क़ीक़ी** की मन्ज़िल पा ले और तसव्वुरे मुर्शिद में गुम रहे तो क्या उसे औ़रत, अम्रद, बद निगाही, और दीगर गुनाह अपनी त़रफ़ माइल कर सकते हैं ? **हरगिज़ नहीं** ! इश्क़े ह़क़ीक़ी की **ब-रकत** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उसे मुर्शिद के तसव्वुर में ऐसा गुमा देगी कि उस के दिल में गुनाह का ख़याल तक न होगा ।

और इस त़रह़ वोह गुनाह से बचते हुए मुर्शिद की मह़ब्बत के दा'वे में सच्चा हो कर मुर्शिद के ख़ुसूसी फ़ैज़ से मुस्त़फ़ीज़ होगा । क्यूंकि **ह़ज़रते दबाग़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَزَّاق इर्शाद फ़रमाते हैं कि मुरीद पीर की मह़ब्बत से कामिल नहीं होता । क्यूंकि मुर्शिद तो सब मुरीदों पर यक्सां शफ़्क़त फ़रमाते हैं । येह **मुरीद की मुर्शिद से मह़ब्बत होती है जो उसे कामिल के दरजे पर पहुंचा देती है ।**

www.dawateislami.net

41 की निस्बत

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या के मशाइख़े किराम के अस्माए गिरामी में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का 41वां नम्बर है। लिहाज़ा इस निस्बत के पेशे नज़र

आ़रिफ़ बिल्लाह इमाम शा'रानी की तस्नीफ़
अल अन्वारिल कुदसिया फ़ी मा'रिफ़ते क़वाइदुस्सूफ़िया से
"ऐ मुरीद ! बा अदब बा नसीब बे अदब बे नसीब" एक अटल ह़क़ीक़त है
के इक्तालीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से 41 आदाब

आ़शिके आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं, "जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।" (مجمع الزوائد ج ١٠ ص ١٦٣ رقم الحديث ١٧٠٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

याद रखिये जितने फ़ज़ाइलो आदाब आप पढ़ेंगे, वोह सिर्फ़ मुर्शिदे कामिल के हैं। वरना जाहिल, बे अ़मल व बद अ़क़ीदा नाम निहाद पीरों का इन फ़ज़ाइल से ज़रा भी तअ़ल्लुक़नहीं।

﴾1﴿ अच्छी ह़ालत

ऐ मेरे भाई ! तू जान ले कि सुलूक की मन्ज़िल त़ै करने वाला कोई भी शख़्स मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ की मह़ब्बत और उन के अच्छी त़रह़ आदाब बजा लाने और उन की बहुत ख़िदमत किये बिग़ैर त़रीक़त की एक अच्छी ह़ालत पर कभी नहीं पहुंचा।

www.dawateislami.net

﴾2﴿ हुस्ने ए'तेक़ाद

सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं। **من لم یعتقد لشَیخه الکمال لا یفلح علی یدیه ابدا**

या'नी जो मुरीद अपने शैख़ के कमाल का ए'तेक़ाद न रखे वोह मुरीद उस मुर्शिद के हाथों पर कभी कामयाब न होगा।

﴾3﴿ नाकाम मुरीद

मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने मुर्शिद को कभी लफ़्ज़ "**क्यूं**" न कहे क्यूं कि तमाम मशाइख़ ने इत्तिफ़ाक़ किया है कि जिस मुरीद ने अपने मुर्शिद को "**क्यूं**" कहा तो वोह त़रीक़त में कामयाब न होगा।

﴾4﴿ धुतकारा हुवा

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुर्रह़मान जैली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं कि जो मुरीद अपने नफ़्स को अपने मुर्शिद और अपने **पीर भाइयों की महब्बत** से रूगर्दानी करने वाला पाए तो उसे जानना चाहिये कि अब उस को **अल्लाह** तआ़ला के दरवाज़े से धुत्कारा जा रहा है।

﴾5﴿ ह़क़्क़े मुर्शिद

मुरीद के लिये ज़रूरी है कि वोह येह ख़याल कभी न लाए कि अब वोह अपने मुर्शिद का ह़क़ पूरा कर चुका है। **अगर्चे अपने मुर्शिद की हज़ार बरस ख़िदमत करे** और इस पर लाखों रूपिये भी ख़र्च करे और फिर मुरीद के दिल में इतनी ख़िदमत और इतने ख़र्च के बा'द येह ख़याल आया कि अब वोह कुछ न कुछ ह़क़ अदा कर चुका है (तो उसे त़रीक़त में ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान पहुंचेगा)

www.dawateislami.net

﴾6﴿ सच्चाई और यक़ीन

ह़ज़रते शैख़ अबुल ह़सन शाज़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो ! तुम बुज़ुर्गों की सोह़बत सच्चाई और यक़ीन ही के साथ इख़्तियार करो । **अगर वोह किसी सबबे ज़ाहिरी के बिग़ैर तुम पर** (ब ज़ाहिर) **ज़ियादती करें** तो भी तुम सब्र ही करो और तुम उन के पास पुख़्ता इरादा और आ़जिज़ी ही ले कर आओ, पस इस त़रीक़े से मुर्शिद तुम्हें फ़ौरन ही क़बूल फ़रमा लेंगे ।

﴾7﴿ सख़्त ज़ल्ज़ले

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन वफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने तमाम वसाइल, अस्बाब और अपने तमाम मा'मूलात को जिन पर इसे ए'तेमाद है अपने मुर्शिद के सामने पेश कर दे, ताकि मुर्शिद इन तमाम चीज़ों को फ़ना और गुम कर डाले । पस इस वक़्त मुरीद का ए'तेमाद न अपने इ़ल्म पर रहे न अ़मल पर । हां ! **अल्लाह** तआ़ला के बा'द सिर्फ़ अपने मुर्शिद ही के फ़ज़्ल पर ए'तेमाद है और येह यक़ीन रहे कि **अब मुझे तमाम भलाइयां और ख़ैर सिर्फ़ मेरे मुर्शिद ही के वासित़े से पहुंचेगी ।**

येह सब चीज़ें इस लिये ज़रूरी हैं कि मुर्शिद इस मुरीद को दुश्मन के मनाज़िल से निकाल कर मक़ामाते ह़क़ جَلَّ جَلَالُهٗ तक पहुंचा दे और मुन्दरिजए बाला ह़ालत में मुरीद को बहुत सख़्त ज़ल्ज़ले भी (जिन के आने के बहुत इमकान है) اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ कुछ ह़-रकत नहीं दे सकेंगे ।

﴾8﴿ सच्चाई

मुरीद पर लाज़िम है कि मुर्शिद की ख़िदमत में हर वक़्त सच्चाई ही के साथ आए **अगर्चे रोज़ाना हज़ार बार आना नसीब हो ।**

www.dawateislami.net

﴾9﴿ भटकता हुवा मुरीद

हज़रते सय्यिदी अ़ली बिन वफ़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने बिग़ैर मुर्शिद और हादी के कमाल का इरादा किया, तो **वोह मक़्सूद के रास्ते से भटक गया।** क्यूंकि मेवा अपनी गुठली के वुजूद के बिग़ैर जो कि इस का अस्ल है। कभी कामिल नहीं होगा। तो मुरीद भी इसी त़रह़ अपने मुर्शिद के वुजूद के बिग़ैर कभी कामिल नहीं होगा।

बे अदबी का अन्जाम

हज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى का एक मुरीद आप से नाराज़ हो गया और येह समझा कि उसे भी मक़ामे मा'रेफ़त ह़ासिल हो गया है, अब उसे मुर्शिद की ज़रूरत नहीं रही। एक दिन वोह आप का इमतिह़ान लेने के लिये आया। **हज़रते जुनैद बग़दादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى उस के दिल की कैफ़िय्यत से आगाह हो गए, उस ने आप से कोई बात पूछी। आप ने फ़रमाया : लफ़्ज़ी जवाब तो येह है कि अगर तू ने अपना इमतिह़ान कर लिया होता तो मेरा इमतिह़ान लेने न आता और मा'नवी जवाब येह है कि मैं ने तुझे विलायत से ख़ारिज किया। इस जुम्ले के फ़रमाते ही **उस मुरीद का चेहरा काला हो गया,** फिर आप ने फ़रमाया कि तुझे ख़बर नहीं कि औलिया वाक़िफ़े असरार होते हैं। (कश्फ़ुल मह़जूब, सफ़ह़ा : 206)

﴾10﴿ ह़सद की नुह़ूसत

मुरीद पर लाज़िम है कि जब उस का मुर्शिद उस के पीर भाइयों में से किसी एक को उस से आगे बढ़ा दे (या कोई मन्सब अ़त़ा करे) तो वोह अपने मुर्शिद के अदब की वजह से अपने उस पीर भाई की ख़िदमत (और इत़ाअ़त) करे और **ह़सद हरगिज़ न करे।** वरना उस के जमे हुए पाउं फिसल जाएंगे और उसे बड़ा नुक़्सान पेश आएगा।

www.dawateislami.net

﴾11﴿ इताअ़त की ब-रकत

अगर किसी मुरीद का येह इरादा है कि वोह अपने पीर भाइयों से आगे बढ़ जाए, तो उसे चाहिये कि वोह अपने मुर्शिद की ख़ूब इताअ़त करे और अपने आप को ऐसी सिफ़ात (जिन से मुर्शिद ख़ुश होते हों) से आरास्ता कर ले **जिन के ज़रीए वोह आगे बढ़ जाने का मुस्तहिक़ हो जाए,** और उस वक़्त मुर्शिद भी उसे इसी पीर भाई की त़रह़ दूसरे पीर भाइयों से आगे बढ़ा देगा, क्यूंकि मुर्शिद तो मुरीदों का ह़ाकिम और उन के दरमियान अ़द्ल करने वाला होता है और बहुत कम है कि कोई मुरीद इस मरज़ से बच जाए। **अल्लाह** तआ़ला अपनी पनाह में रखे।

निगाहे विलायत के असरार

जैसा कि (किताबे ख़ातिमा तर्जमा आदाबुल मुरीदीन के दीबाचे में सफ़ह़ा नम्बर 14 पर तह़रीर है), 15 र-मज़ानुल मुबारक सिने 787 हि. ब मुत़ाबिक़ 10 सितम्बर 1357 ई. को ह़ज़रत शैख़ुल इस्लाम **ख़्वाजा नसीरुद्दीन मह़मूद** चिराग़ देहल्वी عَلَيْهِ الرَّحْمَة पर अचानक बीमारी का ग़लबा हुवा तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि मशाइख़ अपने विसाल के वक़्त किसी एक को मुम्ताज़ क़रार दे कर अपना जा नशीन मुक़र्रर फ़रमाते हैं।

ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया : अच्छा मुस्तहिक़ लोगों के नाम लिख कर लाओ। मौलाना **ज़ैनुद्दीन** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बाहमी मश्वरे से एक फ़ेहरिस्त तय्यार कर के पेश की जिस में आप के मुरीदे ख़ास **ह़ज़रते गेसू दराज़** عَلَيْهِ الرَّحْمَة का नाम शामिल न था। या'नी उस वक़्त मौलाना ज़ैनुद्दीन رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अहम ज़िम्मादार होंगे जब

www.dawateislami.net

ही येह अहम काम उन को सोंपा गया और ज़ाहिरी तौर पर ह़ज़रते गेसू दराज़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة को इतना अहम नहीं समझा जाता होगा, जभी आप का नाम जा नशीन के लिये शामिल न किया गया।

मगर ह़ज़रत शैख़ुल इस्लाम जो कि निगाहे बातिन से वोह कुछ मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे थे, जिन से येह लोग बे ख़बर थे। आप ने फ़ेहरिस्त देख कर इर्शाद फ़रमाया कि "तुम किन लोगों के नाम लिख लाए हो? इन सब से कह दो ख़िलाफ़त का बार संभालना हर शख़्स का काम नहीं। अपने अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करें।" ग़ौर त़लब बात है कि इस फ़ेहरिस्त में किस क़दर ग़ौरो ख़ौज़ के बा'द अहम तरीन और ब ज़ाहिर बा सलाहिय्यत शख़्सिय्यतों को चुना गया होगा। मगर निगाहे मुर्शिद के असरार को समझना हर एक के बस की बात नहीं होती। **मौलाना ज़ैनुद्दीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस फ़ेहरिस्त को मुख़्तसर कर के दोबारा आप की बारगाह में पेश किया। इस फ़ेहरिस्त में भी **ह़ज़रते गेसू दराज़** عَلَيْهِ الرَّحْمَة का नाम न था।

अब शैख़ुल इस्लाम ने फ़रमाया कि "**सय्यिद मुह़म्मद ह़ज़रते ख़्वाजा गेसू दराज़** عَلَيْهِ الرَّحْمَة" का नाम तुम ने नहीं लिखा? ह़ालां कि वोही तो इस बारे गिरां को उठाने की अहलिय्यत रखते हैं। येह सुन कर सब थर थर कांपने लगे। अब जब **ह़ज़रते ख़्वाजा गेसू दराज़** عَلَيْهِ الرَّحْمَة का नाम भी फ़ेहरिस्त में लिख कर ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम ने फ़ौरन उस नाम पर "हुक्म सादिर" फ़रमा दिया। उस वक़्त ह़ज़रत गेसू दराज़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة की उ़म्र "36" साल से कुछ ज़ियादा न थी।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारी निगाह ज़ाहिरी सलाहिय्यत व शख़्सिय्यत को देखती है। मगर मुर्शिदे कामिल अपनी निगाहे विलायत से खरे खोटे की पहचान कर के बेहतर ही को सामने लाते हैं। और सामने आने वाला निगाहे मुर्शिद की तवज्जोहे ख़ास की ब-रकत से ऐसा बा कमाल हो जाता है कि लोग उस के ज़रीए होने वाले काम देख कर शशदर रह जाते हैं मगर कामयाब वोही रहते हैं जो इस ह़क़ीक़त को हर दम पेशे नज़र रखते हैं कि येह तमाम कमालात किस की निगाह के तुफ़ैल हैं और **यक़ीनन हर अ़मल मेरा किसी की नज़रों से क़ाइम है।** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए और म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत और मुर्शिद की बे अदबी से महफ़ूज़ फ़रमाए। (اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

﴾12﴿ दाइमी इ़ज़्ज़त

आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ मज़ीद फ़रमाते हैं कि जब तूने जान लिया कि तेरा मुर्शिद **अल्लाह** तआ़ला को जानता है और वोह तेरे रब के दरमियान वासित़ा है और एक ऐसा ज़रीआ़ है, जिस से **अल्लाह** तआ़ला तेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह होता है तो, **तू उस मुर्शिद की इत़ाअ़त को लाज़िम कर ले।** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दाइमी इ़ज़्ज़त पाएगा।

﴾13﴿ ख़िदमते मुर्शिद

आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि तू आ़रिफ़ बिल्लाह की ख़िदमत कर, तेरी ख़िदमत की जाएगी और तू बिल ख़ुसूस मुर्शिद के रू बरू उस की मुमानअ़त से बच **वरना तू मलऊ़न हो जाएगा** और धुत्कारा जाएगा, जैसा कि शैत़ान मलऊ़न हो गया। और धुत्कारा गया क्यूंकि वोह **अल्लाह** तआ़ला के रू बरू ही सज्दे का तारिक बन गया।

www.dawateislami.net

﴾14﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन वफ़ा عَلَيْهِ الرَّحْمَة मज़ीद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला की राह दिखाने वाला तेरा मुर्शिद एक ऐसी आंख है, जिस के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला तेरी त़रफ़ लुत़्फ़ और रह़मत से देखता है । और एक ऐसा मुंह है **जिस के ज़रीए से अल्लाह तआ़ला तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह होता है ।** और उस की रिज़ा से राज़ी होता है और उस की नाराज़ी से नाराज़ होता है । पस ऐ मुरीद तू इस बात को जान ले और मुर्शिद की इत़ाअ़त को लाज़िम कर ले ।

﴾15﴿ ज़ाहिर बीन

आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने अपने मुर्शिद की सिर्फ़ ज़ाहिरी बशरिय्यत देखी । तो उस की तमाम कोशिश ज़ाएअ़ हो गई और **उस वक़्त मुर्शिद उस के लिये जितना भी रोशन रास्ता खोले ।** वोह रास्ता उस मुरीद के रूगर्दानी और झुटलाने ही को बढ़ाएगा क्यूंकि बशर होने की वजह से आदमी की हैसिय्यत येह है कि वोह एक दूसरे की इत़ाअ़त न करें । **पस येह ख़ासिय्यत उसे मुर्शिद की नसीह़त और इर्शाद सुनने से मानेअ़ रहेगी ।** अगर्चे वोह इर्शाद क़ुरआन का इर्शाद ही क्यूं न हो । जब तक कि **अल्लाह** तआ़ला की इनायत उसे न घेरे ।

﴾16﴿ सच्चाई की ख़ुश्बू

जब मुर्शिद किसी मुरीद के मुआ़मले में (उस की भलाई की ख़ात़िर जिस से मुरीद बे ख़बर हो) उस की मुख़ालफ़त करे और उस की ख़्वाहिश के बर अ़क्स काम करे । तो मुरीद को सब्र करना चाहिये

www.dawateislami.net

और येह इस बात की एक बड़ी दलील है कि **मुर्शिद ने उस मुरीद से सच्चाई की बू सूंघी है।** अगर ऐसा न होता तो वोह उस से मुख़ालफ़त वाला मुआ़मला न करता बल्कि बेगानों वाला मुआ़मला करता या'नी नर्मी और मुवाफ़क़त वग़ैरा।

﴾17﴿ मुर्शिद से दूर

ह़ज़रते सय्यिद अ़ली बिन वफ़ा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि जिस मुरीद ने येह गुमान किया कि उस का शैख़ उस के असरार (या'नी राज़ों) से वाक़िफ़ नहीं है **तो वोह मुरीद अपने शैख़ से बहुत दूर है।** अगर्चे दिन रात मुर्शिद के साथ ही बैठा हो।

﴾18﴿ मुर्शिद के दुश्मन

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं कि ऐ मुरीद ! तू ह़ासिद और अपने शैख़ के दुश्मन की बात की त़रफ़ कान लगाने से बच। **वरना वोह तुझे अल्लाह की राह (या'नी म-दनी माह़ोल) से दूर कर देंगे।**

﴾19﴿ ख़ुश फ़हमी

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि ऐ मुरीद ! तू अपने मुर्शिद के मीठे कलाम (या'नी ह़ौसला अफ़्ज़ाई) से धोका मत खा। येह न समझ कि **तू अब उस के नज़्दीक एक आ'ला मक़ाम को पहुंच गया है।** (येही समझने में आ़फ़िय्यत है कि येह मुर्शिद की शफ़्क़त है वरना ह़क़ीक़तन मैं इस क़ाबिल नहीं)

﴾20﴿ ख़िलाफ़े आ़दत काम

मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने आप पर मुर्शिद के अदब को अशद् ज़रूरी जाने और **मुर्शिद से करामत की त़लब कभी न**

www.dawateislami.net

करे, और न ख़िलाफ़े आ़दत किसी काम का वुक़ूअ़ चाहे, और न ही कश्फ़ और इन जैसी चीज़ों का मुत़ालबा करे।

﴾21﴿ नाक़िस मुरीद

जिस मुरीद ने अपने मुर्शिद से इस निय्यत से करामत चाही कि फिर वोह अपने मुर्शिद की अच्छी इत्तिबाअ़ करेगा। **तो ऐसे मुरीद का अब तक ए'तेक़ाद सह़ीह़ नहीं** और न ही उसे यक़ीन ह़ासिल हुवा है कि इस का मुर्शिद अहलुल्लाह के त़रीक़े से ब ख़ूबी वाक़िफ़ है। या'नी ऐसा मुरीद अब तक नाक़िस मुरीद है।

﴾22﴿ करामत की त़लब

ह़ज़रते मुर्शिद अबुल अ़ब्बास मरसी عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं ऐ मुरीद ! तू अपने मुर्शिद से करामत त़लब करने से बच, ताकि तू इस करामत की वजह से उस के اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَرِ की इत्तिबाअ़ करे। क्यूंकि येह बे अदबी है और दीने इस्लाम में तेरे शक की अ़लामत है। क्यूंकि जिस ज़ात ने तुझे इस राह की त़रफ़ दा'वत दी है वोह तेरा (मीठा मीठा) मुर्शिद (ही तो) है।

﴾23﴿ मुर्शिद की नाराज़ी

ऐ मुरीद ! तू अपने मुर्शिद की ख़फ़गी और इताबों के वक़्त **अपने ऊपर सब्र को लाज़िम कर ले।** अगर वोह तुझे (तेरी इस्लाह़ की ख़ात़िर) धुत्कारे तो तू जुदा मत हो जा बल्कि तू उस की त़रफ़ दुज़दीदा नज़र (या'नी छुपी निगाह से) देखता रह। और येह भी जान ले कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی किसी एक मुसलमान को एक सांस बराबर भी ना पसन्द नहीं समझते। और वोह जो कुछ भी करते हैं वोह

www.dawateislami.net

सब मुरीदीन की ता'लीम ही की ग़रज़ से करते हैं (जिस से मुरीदीन बे ख़बर होते हैं) **बा'ज़ मरतबा मुर्शिदे कामिल इस त़रह़ अपने मुरीदीन व मो'तक़िदीन का इमतिह़ान भी लेते हैं** और जो साबित क़दमी का मुज़ाहरा करते हैं वोही फ़ैज़े बात़िनी ह़ासिल करने में कामयाब होते हैं।

﴾24﴿ मक़ामे मुर्शिद

आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि मुरीद का अपने मुर्शिद के मक़ाम को जानना **अल्लाह** तआ़ला की मा'रेफ़त से ज़ियादा मुश्किल है। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला का कमाल, बुज़ुर्गी और क़ुदरत मख़्लूक़ को मा'लूम है और मख़्लूक़ ऐसी नहीं (कि हर एक मुरीद को पीर का कमाल व बुज़ुर्गी भी मा'लूम हो) **पस इन्सान अपनी त़रह़ की एक मख़्लूक़ के बुलन्द मक़ाम को किस त़रह़ जान सकता है।** जो इस की त़रह़ खाता भी हो और इसी की त़रह़ पीता भी हो।

﴾25﴿ क़ल्बे मुर्शिद

आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि ऐ मुरीद ! तुम अपने मुर्शिद के अदब को अपने ऊपर हर दम लाज़िम बनाओ, अगर्चे वोह तुम से कभी ख़ुश रूई व ख़न्दा पेशानी से गुफ़्तगू फ़रमाएं। क्यूंकि औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के क़ुलूब, मिस्ले क़ुलूबे बादशाहों के हैं। फ़ौरन ही ह़िल्म व बुर्दबारी से नाराज़ी (या'नी सज़ा देने) की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाते हैं। याद रखो ! **जब वलिय्युल्लाह का बाज़ू तंग हो गया, तो उस का ईज़ा देने वाला उसी वक़्त हलाक हो जाएगा,** और जब कुशादा रहा तो उस वक़्त स-क़लैन (या'नी तमाम जिन्नों और तमाम इन्सानों) की ईज़ा रसानी को भी बरदाश्त फ़रमाएंगे।

www.dawateislami.net

﴾26﴿ हिक्मते मुर्शिद

आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि मुर्शिद को जाइज़ है कि वोह अपने मुरीद को एक वज़ीफ़े के तर्क करने और दूसरे वज़ीफ़े के इख़्तियार करने का हुक्म फ़रमाए, फिर जब मुर्शिद उसे किसी वज़ीफ़े के तर्क करने का हुक्म फ़रमाए तो मुरीद को चाहिये कि फ़ौरन ही इमतिसाले अम्र (या'नी हुक्मे मुर्शिद की बजा आवरी करे) **और मुरीद को अपने दिल में भी ए'तेराज़ लाना जाइज़ नहीं ।** मसलन दिल में यूं कहे कि वोह वज़ीफ़ा तो अच्छा था, मुर्शिद ने मुझे उस से क्यूं रोका ?

क्यूंकि बसा अवक़ात मुर्शिद उस वज़ीफ़े में मुरीद का ज़रर देखता है। (जिस से मुरीद बे ख़बर होता है) मसलन उस वज़ीफ़े से मुरीद के इख़्लास को सख़्त नुक़्सान पहुंच रहा है। नीज़ बहुत से आ'माल ऐसे होते हैं जो **इन्दश्शरअ़ अफ़्ज़ल** होते हैं। लेकिन जब उन में नफ़्स का कोई अ़मल दख़्ल हो तो वोह अ़मल **मफ़्ज़ूल** (या'नी कम द-रजे वाले) हो जाते हैं और मुरीद को इन चीज़ों का पता नहीं चलता। (इसी त़रह़ मुर्शिद से अवरादो वज़ाइफ़ की इजाज़त त़लब करने के बजाए इन के अ़त़ा कर्दा श-जरह में मौजूद अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने का ही मा'मूल बनाए कि इस में आ़फ़िय्यत है) पस मुरीद को चाहिये कि वोह हर वक़्त ! इमतिसाले अम्र (यानी हुक्म की बजा आवरी) करता रहे और **अपने आप को ख़त़रात व वसाविस के आने और शुबहात के पैदा होने से बचाए ।**

﴾27﴿ ज़रूरी एह़तियात़

आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि जब कभी मुर्शिद तुम्हारे सामने

www.dawateislami.net

ब ज़ाहिर ख़ुश ख़ुश और तबस्सुम फ़रमाते हुए नज़र आएं, **तब भी तुम उन से डरो और उन के पास अदब ही से बैठो,** क्यूंकि मुर्शिद कभी कभी बारिश और रह़मत की सूरत में तल्वार की मानिन्द होता हैं। (या'नी गिरिफ़्त भी फ़रमा सकते हैं)

﴾28﴿ मल्फ़ूज़ाते मुर्शिद

आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि ऐ मुरीद ! तेरा मुर्शिद जो कलाम (बयानात, म-दनी मुज़ाकरात, तह़रीरात, मल्फ़ूज़ात या मक्तूबात के ज़रीए) तेरे दिल में बो दे तो **उस को बे समर** (या'नी बे फ़ाइदा) **हरगिज़ मत समझ।** क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात उस कलाम का समर (या'नी फ़ाइदा) मुर्शिद के इन्तिक़ाल के बा'द ज़ाहिर होता है। क्यूंकि उस की खेती اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बरबाद नहीं होगी। पस ऐ बेटे ! **हर उस बात को जो तू अपने मुर्शिद से सुने उस की ख़ूब ह़िफ़ाज़त कर** अगर्चे उस बात को सुनने के वक़्त तू उस के फ़ाइदे को न समझे।

﴾29﴿ ज़ियारते मुर्शिद

मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने मुर्शिद के चेहरे को टिकटिकी बांध कर न देखे। **बल्कि जहां तक हो सके अपनी नज़र नीचे रखे** और इस बात के लुत्फ़ को किताबों में नहीं लिखा जा सकता है। सालिक लोग ही इसे चखते हैं।

क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़या की वजह से किसी के चेहरे की त़रफ़ नहीं देखते थे।

(شرح العلّامة الزرقانی علی المواهب، الفصل الثانی فیما اکرمة الله تعالیٰ النح، ج ٦، ص ٩٢)

www.dawateislami.net

﴾30﴿ चेहरए मुबारक

मेरे सरदार अ़ली मरसफ़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि हां ! अगर मुरीद अपने मुर्शिद के अदब के मक़ाम में साबित क़दम हो जाए और मुर्शिद के चेहरए मुबारक की त़रफ़ अकसर निगाह रखने से उस की इहानत लाज़िम न आए **तो फिर कोई नुक़्सान नहीं है ।** (कई बा अदब मुरीदीन तो मुर्शिदे कामिल की मौजूदगी में तो किसी और त़रफ़ देखने से भी बचते हैं)

﴾31﴿ इजाज़ते मुर्शिद

मैं (या'नी अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ) ने अपने सरदार **अ़ली मरसफ़ी** عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ से सुना, आप फ़रमाते हैं कि **मुरीद को लाइक़ नहीं** कि वोह अपने मुर्शिद की इजाज़त के बिग़ैर किसी वज़ीफ़े या किसी हुनर में मश्ग़ूल हो जाए।

﴾32﴿ ख़ास ख़याल

मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने मुर्शिद की त़रफ़ पाउं कभी न फैलाए। शैख़ ज़िन्दा हो या वफ़ात पा गए हों। रात हो या दिन, हर वक़्त ख़्वाह मुर्शिद ह़ाज़िर हों या ग़ाइब दोनों में मुर्शिद के अदब की रिआ़यत और निगहबानी करे।

﴾33﴿ मुरीद पर ह़क़

मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने मुर्शिद के कपड़े और जूती मुबारक को न पहने और मुर्शिद के बिस्तर पर न बैठे और मुर्शिद की तस्बीह़ पर वज़ीफ़ा न पढ़े। न मुर्शिद की मौजूदगी में और न मुर्शिद की ग़ैर मौजूदगी में। हां ! जब मुर्शिद इन चीज़ों के इस्ते'माल की ख़ुद इजाज़त दे तो फिर दुरुस्त है। (बहुत से उ़श्शाक़ को देखा गया

www.dawateislami.net

है कि वोह न सिर्फ़ मुर्शिद के शहर में अदबन **नंगे पाउं** रहते हैं बल्कि **मुर्शिद के साए** बल्कि चलते वक़्त जहां मुर्शिद क़दम मुबारक रखते वहां पर अपने पैर रखने से बचाते हैं, मुर्शिद की **तहारत व वुज़ू** की जगह को भी अदबन इस्ते'माल नहीं करते और कोशिश करते हैं कि मुर्शिद की मौजूदगी में वुज़ू क़ाइम रहे। जिस तरफ़ **मुर्शिद का घर** या मज़ार हो उस तरफ़ क़स्दन पीठ या पाउं भी नहीं करते)

﴾34﴿ तोहफ़ए मुर्शिद

मशाइख़े किबार رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने फ़रमाया कि जब मुर्शिद अपने मुरीद को कोई कपड़ा, इमामा, टोपी या मिस्वाक मुबारक अ़ता फ़रमाए तो येह दुरुस्त नहीं कि वोह उस को किसी दुन्यवी चीज़ के बदले में बेच डाले। **क्यूंकि बसा अवक़ात मुर्शिद उस चीज़ में मुरीद के लिये कामिल लोगों के इख़्लास (या'नी खुसूसी फ़ुयूज़ व ब-र-कात) डाल कर उस के सिपुर्द करते हैं।** जैसा कि **हुज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को चादर लपेट कर दे दी और वोह ज़ियादा भूलने वाले थे। पस उन्हों ने फ़रमाया कि फिर मैं ने इस के बा'द जो सुना या देखा उसे नहीं भूला।

﴾35﴿ इमदाद का दरवाज़ा

मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने दिल को अपने मुर्शिद के साथ हमेशा मज़्बूत बांधे हुए रखे और हमेशा ताबेअ़दारी करता रहे और हमेशा ए'तेक़ाद रखे कि **अल्लाह तआ़ला ने अपनी तमाम इमदाद का दरवाज़ा सिर्फ़ उस के मुर्शिद ही को बनाया है** और येह कि उस का मुर्शिद ऐसा मज़हर है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस के मुरीद पर फ़ुयूज़ात के पलटने के लिये सिर्फ़ इसी को मुअ़य्यन किया है और ख़ास फ़रमाया है और मुरीद को कोई मदद और फ़ैज़

www.dawateislami.net

मुर्शिद के वासिते के बिग़ैर नहीं पहुंचता। अगर्चे तमाम दुन्या मशाइख़े इज़्ज़ाम से भरी हुई हो। **येह क़ाइदा इस लिये है कि मुरीद अपने मुर्शिद के इलावा और सब से अपनी तवज्जोह हटा दे।** क्यूंकि उस की अमानत सिर्फ़ उस के मुर्शिद के पास होती है, किसी ग़ैर के पास नहीं होती।

मुरीद हो तो ऐसा

एक मरतबा ह़ज़रते **बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर** عَلَيْهِ الرَّحْمَة अपने मुरीदीन व मो'तक़िदीन के हमराह तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक नाम निहाद दरवेश ने आ कर ना'रा बुलन्द किया और आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : अपनी जाए नमाज़ मुझे इनायत फ़रमा दें तो **मैं वोह बात़िनी दौलत अ़त़ा करूंगा जो तुम्हें किसी ने इस से पहले न दी होगी।** ह़ज़रते बाबा फ़रीद عَلَيْهِ الرَّحْمَة की त़बीअ़त मुबारक पर गिरां गुज़रा मगर आप ने बड़े तह़म्मुल मिज़ाजी से नज़र उठा कर देखा और सर झुका कर इर्शाद फ़रमाया कि **फ़क़ीर को उस के मुर्शिद ने जो अ़त़ा करना था अ़त़ा फ़रमा चुके। अब दुन्या की तमाम ने'मतें आ कर किसी ग़ैर के पास जम्अ़ हो जाएं तो फ़क़ीर नज़र उठा कर भी नहीं देखेगा।**

ह़ज़रते शैख़ **ज़ैनुद्दीन अल ख़वानी** عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि मुरीद पर वाजिब है कि अपने मुर्शिद से इस्तिम्दाद (मदद त़लब करना) को बि ऐनिही रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिम्दाद समझे और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिम्दाद को बि ऐनिही **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिम्दाद समझे ताकि मुरीद इस त़रीक़े से अहलुल्लाह के त़रीक़े को पहुंच जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِیْلًا ○ (سورۃ الفتح آیت نمبر ۲۳)

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) : **अल्लाह** का दस्तूर है कि पहले से चला आता है और हरगिज़ तुम **अल्लाह** का दस्तूर बदलता न पाओगे।

《36》 मुर्शिदे कामिल का दुश्मन

मैं (या'नी अ़ब्दुल वहहाब शा'रानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة) ने अपने सरदार शैख़ **अ़ली मरसफ़ी** عَلَيْهِ الرَّحْمَة से सुना आप फ़रमाते हैं कि मुरीद के आदाब में से एक अदब येह भी है **कि मुर्शिद जिस शख़्स को अपना दुश्मन जानें मुरीद भी उस से दुश्मनी करे** और मुर्शिद जिस से दोस्ती रखे, मुरीद भी उस से दोस्ती रखे।

《37》 तरक़्क़ी का राज़

मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने मुर्शिद के कमाल का पुख़्ता ए'तेक़ाद रखे ता कि तरद्दुद (या'नी सोच बिचार) के मरज़ से बच जाए और फ़ौरन तरक़्क़ी कर ले।

《38》 नाराज़िये मुर्शिद

मुरीद पर लाज़िम और वाजिब है कि जब मुर्शिद उस से नाराज़ हो जाए तो फ़ौरन ही उस को राज़ी करने की कोशिश में लग जाए। **अगर्चे उसे अपनी ख़त़ा का पता न चले।** जिस मुरीद ने अपने मुर्शिद को राज़ी करने की त़रफ़ जल्द बाज़ी न की तो येह उस मुरीद की नाकामी की दलील व अ़लामत है।

मैं (या'नी अ़ब्दुल वहहाब शा'रानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة) ने अपने बेटे अ़ब्दुर्रह़मान (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) से जिन की उ़म्र पांच बरस थी सुना, उस ने कहा कि अब्बा जान ! सच्चा मुरीद वोह है कि जब मुर्शिद उस पर

www.dawateislami.net

नाराज़ हो जाए तो उस की रूह निकलने के क़रीब आ जाए और वोह न खाए न पिये और न हंसे और न सोए, **यहां तक कि** (वोह इस क़दर ग़मगीन व फ़िक्र मन्द हो कि) **उस के पीरो मुर्शिद उस से राज़ी हो जाएं।** पस बचपन की उम्र में बेटे की येह बात कहने से मुझे बहुत ख़ुशी हुई। मैं **अल्लाह** तआ़ला से सुवाल करता हूं कि वोह अपने फ़ज़्लो करम से उस को अपने ख़वास औलियाए किराम में शामिल फ़रमाए।

﴾39﴿ मुर्शिद की नींद

मुरीद पर लाज़िम है कि अपने मुर्शिद की नींद को अपनी इबादत से अफ़्ज़ल समझे क्यूंकि मुर्शिद अमराज़े बातिनिय्या से महफ़ूज़ होता है और उस की नींद इबादते इलाही में सुस्ती की बिना पर नहीं होती, वोह ज़ौक़ के मुशाहदे के लिये सोता है। ऐ मेरे भाई ! तू जान ले कि **जिस शख़्स ने अपनी इबादत को अपने मुर्शिद की नींद से अफ़्ज़ल समझा,** वोह आ़क़ या'नी ना फ़रमान हो गया और आ़क़ का कोई भी अ़मल आस्मान की त़रफ़ नहीं उठाया जाता।

﴾40﴿ मुर्शिद के इयाल की ख़िदमत

मैं (या'नी अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة) ने अपने सरदार **अ़ली मरसफ़ी** عَلَيْهِ الرَّحْمَة से सुना आप फ़रमाते हैं कि मुरीद के लिये एक अदब येह है **कि वोह अपने मुर्शिद की मौजूदगी व ग़ैर मौजूदगी दोनों ह़ालतों में मक़्दूर भर ख़र्च मुह़य्या कर के दे दे।** अगर मुरीद अपने कपड़े या इमामे के इलावा और कोई चीज़ न पाए तो वोह इन चीज़ों ही को बेच दे और इन की रक़म से जिस चीज़ की मुर्शिद के अहलो इयाल को ह़ाजत है उन्हें ले कर दे।

www.dawateislami.net

﴾41﴿ अदब सीखने का ह़क़

अपने मुर्शिद के इ़याल के लिये अपनी पगड़ी और कपड़े के एक टुकड़े के बेचने को (सिर्फ़) वोह शख़्स पसन्द नहीं करेगा जिस ने अपने मुर्शिद के अदब की बू न सूंघी हो। क्यूंकि आदाबे इलाहिय्या में से एक अदब जो मुर्शिद ने इस मुरीद को सिखाया दोनों जहां इस के बराबर नहीं हो सकते हैं पस पगड़ी और कपड़े का एक टुकड़ा यहां क्या हैसिय्यत रखते हैं। नीज़ मुरीद को येह याद रखना चाहिये कि **जब कोई मुरीद अपने मुर्शिद और उस के इ़याल पर अपना तमाम माल भी ख़र्च कर दे तब भी वोह मुरीद येह गुमान न करे कि मैं अपने मुर्शिद के सिखाए हुए एक अदब का ह़क़ अदा कर चुका हूं।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा **आदाबे मुर्शिदे कामिल** को पढ़ कर मा'लूम हुवा कि मुरीद को हर वक़्त मोह़तात़ और बा अदब रहना चाहिये कि ज़रा सी ग़फ़्लत और बे एह़तियाती दीनो दुन्या के किसी ऐसे बड़े नुक़्सान का सबब बन सकती है, जिस की शायद तलाफ़ी भी न हो सके। **इस लिये मुरीद को चाहिये कि ख़ल्वत हो या जल्वत आ़जिज़ी और अदब ही को मल्हूज़ रखे।**

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का कार्ड पुर कर के हर म-दनी माह के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-रकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

www.dawateislami.net

फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ से

"आदाबे मुर्शिदे कामिल"

के बारह हुरूफ़ की निस्बत से 12 आदाब

जितने फ़ज़ाइलो आदाब आप पढ़ेंगे वोह सिर्फ़ जामेए शराइत मुर्शिदे कामिल के हैं। वरना जाहिल, बे अ़मल व बद अ़क़ीदा नाम निहाद पीरों का इन फ़ज़ाइल से ज़रा भी तअ़ल्लुक़ नहीं।

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना **शाह अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : पीर वाजबी पीर हो, चारों शराइत का जामेअ़ हो। वोह **हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नाइब है। उस के हुक़ूक़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक़ूक़ के परतव (या'नी अ़क्स) हैं। जिस से पूरे तौ़र पर अ़ोहदह बर आ होना मुह़ाल है। मगर इतना फ़र्ज़ व लाज़िम है कि अपनी ह़द्दे क़ुदरत तक उन के अदा करने में उ़म्र भर साई (कोशिश करता) रहे। पीर की जो तक़्सीर (या'नी बा वुजूद कोशिश के हुक़ूक़ पूरे करने में जो कमी) रहेगी **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم मुआ़फ़ फ़रमाते हैं। पीरे सादिक़ कि उन का नाइब है, येह भी मुआ़फ़ करेगा येह तो उन की रह़मत के साथ है। अइम्मए दीन ने तस्रीह़ फ़रमाई है कि ﴿1﴾ मुर्शिद के ह़क़ बाप के ह़क़ से ज़ाइद हैं। और फ़रमाया कि ﴿2﴾ बाप मिट्टी के जिस्म का बाप है और पीर रूह़ का बाप है और फ़रमाया कि ﴿3﴾ कोई काम उस के ख़िलाफ़े मर्ज़ी करना मुरीद को जाइज़ नहीं। ﴿4﴾ उस के सामने हंसना मन्अ़ है, ﴿5﴾ उस की बिग़ैर इजाज़त बात करना मन्अ़ है। ﴿6﴾ उस की मजलिस में दूसरे की त़रफ़ मुतवज्जेह होना मन्अ़ है। ﴿7﴾ उस की ग़ैबत (या'नी अ़दमे मौजूदगी) में उसी के बैठने की जगह बैठना मन्अ़ है। ﴿8﴾ उस की औलाद की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है अगर्चे बेजा ह़ाल पर हों। ﴿9﴾ उस के कपड़ों की

www.dawateislami.net

ता'ज़ीम फ़र्ज़ है। ﴾10﴿ उस के बिछौने की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है। ﴾11﴿ उस की चौखट की ता'ज़ीम फ़र्ज़ है। ﴾12﴿ उस से अपना कोई ह़ाल छुपाने की इजाज़त नहीं, अपने जानो माल को उसी का समझे।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द :12, सफ़ह़ा :152, त़ब्अ़ा शब्बीर बिरादर्ज़, लाहोर)

"फिर तवज्जोह बढ़ा मेरे मुर्शिद अत़्तार पिया" के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से 26 आदाब

इसी त़रह़ एक साइल ने पीरे कामिल के कुछ हुक़ूक़ व आदाब तह़रीर कर के आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की ख़िदमत में तस्ह़ीह़ के लिये पेश किये वोह हुक़ूक़ व आदाब मअ़ **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت **के जवाब** के पेशे ख़िदमत हैं।

हुक़ूके पीर ब ग़रज़ तस्ह़ीह़ व तरमीम ﴾1﴿ येह ए'तेक़ाद रखे कि मेरा मत़लब इसी मुर्शिद से ह़ासिल होगा और अगर दूसरी त़रफ़ तवज्जोह करेगा तो मुर्शिद के फ़ुयूज़ो ब-रकात से मह़रूम रहेगा। ﴾2﴿ हर त़रह़ मुर्शिद का मुत़ीअ़ (फ़रमां बरदार) हो और जानो माल से उस की ख़िदमत करे क्यूंकि बिग़ैर मह़ब्बते पीर के कुछ नहीं होता और मह़ब्बत की पहचान येही है। ﴾3﴿ मुर्शिद जो कुछ कहे उस को फ़ौरन बजा लाए और बिग़ैर इजाज़त उस के फ़े'ल की इक़्तिदा न करे। क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात वोह (या'नी मुर्शिद) अपने ह़ाल व मक़ाम के मुनासिब एक काम करता है (मगर हो सकता है) कि मुरीद को उस का करना ज़ह्‌रे क़ातिल हो। ﴾4﴿ जो विर्दो वज़ीफ़ा मुर्शिद ता'लीम करे उस को पढ़े और तमाम वज़ीफ़े छोड़ दे। ख़्वाह उस ने अपनी त़रफ़ से पढ़ना शुरूअ़ किया या किसी दूसरे ने बताया हो। ﴾5﴿ मुर्शिद की मौजूदगी में हमा तन उसी की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहना चाहिये। यहां तक कि सिवाए

www.dawateislami.net

फ़र्ज़ों सुन्नत के नमाज़े नफ़्ल और ﴾6﴿ कोई वज़ीफ़ा उस की इजाज़त के बिग़ैर न पढ़े। ﴾7﴿ ह़त्तल इमकान ऐसी जगह न खड़ा हो कि उस का साया मुर्शिद के साये पर या उस के कपड़े पर पड़े। ﴾8﴿ उस के मुसल्ले (या'नी जाए नमाज़) पर पाउं न रखे। ﴾9﴿ मुर्शिद के बरतनों को इस्ते'माल में न लावे। ﴾10﴿ उस के सामने न खाना खाए न पिये और न वुज़ू करे। हां, इजाज़त के बा'द मुज़ायक़ा नहीं। ﴾11﴿ उस के रू बरू (या'नी सामने) किसी (और) से बात न करे बल्कि किसी की त़रफ़ मुतवज्जेह भी न हो। ﴾12﴿ जिस जगह मुर्शिद बैठता हो उस त़रफ़ पैर न फैलाए, अगर्चे सामने न हो। ﴾13﴿ और उस त़रफ़ थूके भी नहीं ﴾14﴿ जो कुछ मुर्शिद कहे और करे उस पर ए'तेराज़ न करे क्यूंकि जो कुछ वोह (या'नी मुर्शिद) करता है और कहता है (उस की) अगर कोई बात समझ न आवे तो ह़ज़रते **मूसा** व **ख़िज़्र** عليهما السلام का क़िस्सा याद करे। ﴾15﴿ अपने मुर्शिद से करामत की ख़्वाहिश न करे। ﴾16﴿ अगर कोई शुबा दिल में गुज़रे तो फ़ौरन अ़र्ज़ करे और अगर वोह शुबा ह़ल न हो तो अपने फ़हम (या'नी अ़क़्ल की कमी) का नुक़्सान समझे और अगर मुर्शिद इस का कुछ जवाब न दे तो जान ले कि मैं इस जवाब के लाइक़ न था। ﴾17﴿ ख़्वाब में जो कुछ देखे वोह मुर्शिद से अ़र्ज़ करे और अगर इस की ता'बीर ज़ेह्न में आवे तो इसे भी अ़र्ज़ करे। ﴾18﴿ बे ज़रूरत और बे इज़्न मुर्शिद से अ़लाह़िदा न हो। ﴾19﴿ मुर्शिद की आवाज़ पर अपनी आवाज़ बुलन्द न करे और ब आवाज़ उस से बात न करे और ब क़दरे ज़रूरत मुख़्तसर कलाम करे और निहायत तवज्जोह से जवाब का मुन्तज़िर रहे। ﴾20﴿ और मुर्शिद के कलाम को दूसरे से इस क़दर बयान करे जिस क़दर लोग समझ सकें और जिस बात को येह लोग न समझेंगे तो उसे बयान न

www.dawateislami.net

करे। ﴾21﴿ और मुर्शिद के कलाम को रद न करे अगर्चे ह़क़ मुरीद ही की जानिब हो बल्कि ए'तेक़ाद करे कि शैख़ की ख़ता मेरे सवाब (या'नी दुरुस्ती) से बेहतर है। ﴾22﴿ और किसी दूसरे का सलाम व पयाम शैख़ से न कहे (येह आ़म मुरीदीन के लिये है जिस को बारगाहे मुर्शिद में अभी मन्सबे अ़र्ज़े मा'रूज़ व दीगरान ह़ासिल न हो। ऐसों से अगर कोई सलाम के लिये अ़र्ज़ करे तो उ़ज़्र करे कि हुज़ूर ! मैं मुर्शिदे करीम की बारगाह में दूसरे की बात अ़र्ज़ करने के अभी क़ाबिल नहीं) ﴾23﴿ जो कुछ उस का ह़ाल हो, बुरा या भला, इसे मुर्शिद से अ़र्ज़ करे क्यूंकि मुर्शिद त़बीबे क़ल्बी है, इत्तिलाअ़ होने पर इस की इस्लाह़ करेगा, ﴾24﴿ मुर्शिद के कश्फ़ पर ए'तेमाद कर के सुकूत न करे। ﴾25﴿ उस के पास बैठ कर वज़ीफ़े में मश्ग़ूल न हो, अगर कुछ पढ़ना हो तो उस की नज़र से पोशीदा बैठ कर पढ़े। ﴾26﴿ जो कुछ फ़ैज़े बात़िनी उसे पहुंचे उसे मुर्शिद का तुफ़ैल समझे। अगर्चे ख़्वाब में या मुराक़बे में देखे कि दूसरे बुज़ुर्ग से पहुंचा, तब भी येह जाने कि मुर्शिद का कोई वज़ीफ़ा इस बुज़ुर्ग की सूरत में ज़ाहिर हुवा है।

अल जवाब

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت जवाब इर्शाद फ़रमाते हैं कि येह तमाम हुक़ूक़ सह़ीह़ हैं। इन में बा'ज़ **कुरआने अ़ज़ीम**, और बा'ज़ **अह़ादीसे शरीफ़ा** और बा'ज़ **कलामे उ़-लमा** व बा'ज़ **इर्शादाते औलिया** से साबित हैं। और इस पर ख़ुद वाज़ेह़ हैं कि जो मा'नए बैअ़त समझा हुवा है। **अकाबिर ने इस से भी ज़ाइद आदाब लिखें हैं।** इतनों ही पर अ़मल न करेंगे मगर बड़ी तौफ़ीक़ वाले। (कामयाबी का राज़, नाशिर : अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہ

आदाबे मुर्शिदे कामिल

हिस्सए दुवुम में.....

ईमान की हिफ़ाज़त (सफ़हा : 78 ता 80)

सोहबत की ज़रूरत व अहम्मिय्यत पर कुरआनो हदीस और फुक़हा, मुहद्दिसीन, सूफ़िया व आरिफ़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के इर्शादात (सफ़हा : 81 ता 84)

मुर्शिदे कामिल की सोहबत का ज़रीआ (सफ़हा : 85 ता 86)

26 हिकायाते औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی (सफ़हा : 87 ता 116)

वरक़ उलटिये....

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ

आदाबे मुर्शिदे कामिल

(हिस्सए दुवुम)

आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं, "जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और जुमुआ़ के रोज़ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, **अल्लाह** तआ़ला उस की सो ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा।"

(جامع الاحادیث للسیوطی، رقم ۷۷۳۷، ج ۳، ص ۷۵)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सोह़बते सालेह़ की ब-रकत

मशाइख़े किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ फ़रमाते हैं कि इन्सान की शख़्सिय्यत और उस के अख़्लाक़ व किरदार पर सोह़बत का गहरा असर पड़ता है। एक शख़्स दूसरे शख़्स के अवसाफ़ से अ़-मली और रूह़ानी त़ौर पर लाज़िमी मुतअस्सिर होता है। जो ईमान वाला "साह़िबे तक़्वा व इस्तिक़ामत" की सोह़बत ह़ासिल कर ले तो वोह उन से अख़्लाक़े ह़सना और ईमान की पुख़्तगी जैसी आ'ला सिफ़ात व मा'रेफ़ते इलाही जैसी आ'ला ने'मत ह़ासिल कर लेगा। नीज़ नफ़्सानी उ़यूब और बुरे अख़्लाक़ से भी اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ छुटकारा पाने में कामयाब हो जाएगा। जैसा कि सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को बुलन्द मक़ाम और आ'ला दरजा **सरकारे मदीना**, क़रारे क़ल्बो सीना

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत व मजलिस के सबब ह़ासिल हुवा, और ताबेईन عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इस अ़ज़ीम शरफ़ को सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सोह़बत से पाया।

जा नशीने रसूल

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत आ़म है और क़ियामत तक के लिये है और हर दौर में उ़-लमा व आ़रिफ़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वारिस होते हैं। इन आ़रिफ़ीन ने अपने नबी عَلَیْہِ السَّلَام से इ़ल्म, अख़्लाक़, ईमान और तक़्वा विरसे में पाया। येह नसीह़त और नेकी की दा'वत देने में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जा नशीन हैं। येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हैं, **और जो भी इन की हम नशीनी इख़्तियार करता है उन का वोह ह़ाल उस की त़रफ़ सरायत कर जाता है जो इन्हों ने रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **से ह़ासिल किया।**

सोह़बत की ज़रूरत

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में एक गुरौह क़ियामत तक ह़क़ पर रहेगा, **उन के मुख़ालिफ़ीन उन्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे।"** (صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، الخ، رقم ۱۹۲۰، ص ۱۰۶۱)

इन का असर ज़माने के गुज़रने से ख़त्म नहीं होता और इन वारिसीने रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत मुजर्रबे तिरयाक़ (या'नी तजरिबा शुदा ज़ह़र का इ़लाज) है और इन से दूरी ज़ह़रे क़ातिल है। येह वोह क़ौम है कि इन का हमनशीन बदबख़्त नहीं रह सकता, इन का तक़र्रुब और इन की सोह़बत इस्लाह़े नफ़्स, तह़ज़ीबे अख़्लाक़, अ़क़ीदे की पुख़्तगी और ईमान के रासिख़ करने के लिये बड़ा मुअस्सिर अ़-मली इ़लाज है। **येह "कमालात" मुत़ालआ़ करने और ज़ख़ीम**

www.dawateislami.net

किताबों के पढ़ने से ह़ासिल नहीं होते । येह तो वोह अ़-मली और वज्दानी ख़स्लतें हैं जो पैरवी करने, सोह़बत पाने, दिल से लेने और रूह़ से मुतअस्सिर होने से ह़ासिल होती हैं। (حقائق عن التصوف ،الباب الثانی، الصحبة ص ۴۷)

मा'लूम हुवा कि वारिसे मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और मुर्शिदे कामिल की सोह़बत ही वोह अ़-मली त़रीक़ा है। जिस से नफ़्स का "**तज़किया**" हो सके। यहां येह भी मा'लूम हुवा कि वोह शख़्स ग़-लत़ी पर है जो येह समझता है कि **मैं ब ज़ाते ख़ुद अपने दिल के अमराज़ का इलाज कर सकता हूं ।** और (अज़ ख़ुद) क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ालए़ से अपनी नफ़्सानी ख़राबियों से छुटकारा पा सकता हूं।

ईमान का तह़फ़्फ़ुज़

आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت "**नक़ाउस्सलाफ़ह फ़ी अह़कामिल बैअ़ते वल ख़िलाफ़ह**" में ऐसे लोगों को तम्बीह फ़रमाते हुए बड़े प्यारे अन्दाज़ से रहनुमाई फ़रमाते हैं कि **क़ुरआनो ह़दीस** में शरीअ़त, त़रीक़त और ह़क़ीक़त सब कुछ है और इन में सब से ज़ियादा ज़ाहिर व आसान शरीअ़त के मसाइल हैं और इन आसान मसाइल का येह ह़ाल है कि अगर "**अइम्मए मुज्तहिदीन**" इन की तश्रीह़ न फ़रमाते तो **उ़-लमा** कुछ न समझते और उ़-लमाए किराम, **अइम्मए मुज्तहिदीन** के अक़्वाल की तश्रीह़ न करते तो अ़वाम "**अइम्मा**" के इर्शादात समझने से भी आजिज़ रहते। और अब भी अगर "**अहले इ़ल्म**" अ़वाम के सामने "**मत़ालिबे कुतुब**" की तफ़्सील और सूरते ख़ास्सा पर हुक्म की तत़्बीक़ न करें तो **आ़म लोग हरगिज़ हरगिज़ किताबों से अह़काम निकाल लेने पर क़ादिर नहीं ।** हज़ारों ग़लतियां करेंगे और कुछ का कुछ समझेंगे।

www.dawateislami.net

मदनी उसूल इस लिये येह उसूल मुक़र्रर है कि अ़वाम "**उ़-लमाए ह़क़**" का दामन थामे। और वोह "**उ़-लमाए माहिरीन**" कि तसानीफ़ का और वोह (या'नी उ़-लमाए माहिरीन) "**मशाइख़े फ़तवा**" का और वोह (या'नी उ़-लमाए माहिरीन) "**अइम्मए हुदा**" का और वोह (अइम्मए हुदा) "**कुरआनो ह़दीस**" का। जिस ने इस सिल्सिले को कहीं से तोड़ दिया **वोह हिदायत से अन्धा हो गया।** और जिस ने हादी का दामन छोड़ा वोह **अ़न क़रीब किसी गहरे कुंवें में गिरा चाहता है।**

ज़रूरते मुर्शिद

सय्यिदी व मुर्शिदी **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت राहे त़रीक़त के गामज़न की राहनुमाई करते हुए फ़रमाते हैं कि जब अह़कामे शरीअ़त में येह ह़ाल है। तो फिर वाज़ेह़ है कि मुर्शिदे कामिल के बिग़ैर "**असरारे मा'रिफ़त**" कुरआनो ह़दीस से ख़ुद निकाल लेना किस क़दर मुह़ाल है। येह राह सख़्त बारीक और मुर्शिद की रोशनी के बिग़ैर सख़्त तारीक है। बड़े बड़ों को शैत़ाने लईन ने इस राह में ऐसा मारा कि "**तह़्तुस्सरा**" तक पहुंचा दिया। तेरी क्या ह़क़ीक़त कि "**बिग़ैर रहबरे कामिल**" इस में चले और सलामत निकल जाने का दा'वा करे।

"**अइम्मए किराम**" फ़रमाते हैं : "आदमी कितना ही बड़ा आ़लिम, आ़मिल, ज़ाहिद और कामिल हो **इस पर वाजिब है कि वलिय्ये कामिल को अपना मुर्शिद बनाए कि उस के बिग़ैर इस को हरगिज़ चारा नहीं।** (तसव्वुफ़ व त़रीक़त, सफ़ह़ा नम्बर : 108)

www.dawateislami.net

ईमान की ह़िफ़ाज़त

इस से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें। जो येह कहते हैं कि कु़रआनो ह़दीस अज़् ख़ुद समझना मुश्किल नहीं। हर कसो नाकस अपने त़ौर पर मुत़ालआ़ करे तो ह़क़ सामने आ जाएगा, तो वोह लोग जान लें कि **ऐसी सोच रखने वाला, बल्कि ऐसी सोच देने वालों की सोह़बत में बैठने वाले का भी ईमान हर वक़्त ख़त़रे में है।** लिहाज़ा फ़ौरन ऐसे लोगों से ईमान की ह़िफ़ाज़त के पेशे नज़र दूरी इख़्तियार कर के सुन्नतों के आ़मिल सह़ीह़ुल अ़क़ीदा आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और इन के हमराह सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और उ़-लमाए ह़क़ की मुस्तनद किताबों से रहनुमाई लेनी चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर ईसा शाज़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं कि **ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाबे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी मह़ज़ कु़रआन पढ़ने से अपने नुफ़ूस का इलाज नहीं कर सकते थे। वोह भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के शिफ़ा ख़ाने से वाबस्ता थे और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उन का "**तज़किया व तरबिय्यत**" (नफ़्स व क़ल्ब को पाक व साफ़) फ़रमाते थे। (حقائق عن التصوف، الباب الثانی الصحبۃ، ص۴۷)

अल्लाह तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह वस्फ़ बयान करते हुए फ़रमाया :

هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ
وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَۗ (پ۲۸، سورۂ جمعه، آیت ۲)

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) वोही है जिस ने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा कि उन पर उस की आयतें पढ़ते हैं। और उन्हें पाक करते हैं। और उन्हें किताब व ह़िक्मत का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाते हैं।

www.dawateislami.net

मा 'लूम हुवा **तज़किया** और चीज़ है और **ता 'लीमे कुरआन** और चीज़ है। इस लिये किसी मुर्शिदे कामिल की सोहबत ज़रूरी है।

अज़ खुद इलाज **आप** عَلَيْهِ الرَّحْمَة मज़ीद फ़रमाते हैं जैसा कि इल्मे तिब्ब में येह बात तै है कि तिब्ब की किताबें पढ़ने के बा वुजूद अज़ खुद कोई अपना इलाज नहीं कर सकता। बल्कि इस के वासिते कोई तबीब चाहिये। जो इस के मरज़ की तश्ख़ीस करे। **इसी तरह अमराज़े क़ल्बिया और नफ़्सानी बीमारियों का इलाज भी अज़ खुद नहीं किया जा सकता।** इन के लिये भी एक मुज़्की तबीब की हाजत है। (حقائق عن التصوف، الباب الثانی، الصحبۃ، ص ۴۸)

सोहबत की अहम्मिय्यत पर कुरआने पाक के इर्शादात

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجٰهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) ऐ ईमान वालो! **अल्लाह** से डरो और उस की तरफ़ वसीला ढूंढो और उस की राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ। (پ۶، سورۂ مائدہ آیت ۳۵)

हकीमुल उम्मत हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی तफ़्सीरे नईमी में लिखते हैं वसीला आम है हज़राते औलिया, अम्बिया, नेक आ'माल, इन हज़रात के तबर्रुकात सब ही इस में शामिल हैं। (तफ़्सीरे नईमी जि. 6 स. 393)

सूरए तौबह में इर्शाद हुवा : يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) ऐ ईमान वालो! **अल्लाह** से डरो और सच्चों के साथ हो। (سورۃ توبۃ آیت ۱۱۹)

www.dawateislami.net

एक और जगह इर्शाद होता है : وَاتَّبِعۡ سَبِیۡلَ مَنۡ اَنَابَ اِلَیَّ ۚ
(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) और उस की राह चल जो मेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया। (سورۂ لقمان آیت ۱۵)

इन आयात से भी उ़-लमाए किराम ने त़-लबे मुर्शिद और मुर्शिद से वाबस्तगी पर इस्तिद्लाल किया है।

सोह़बत की अहम्मिय्यत पर अह़ादीसे मुबा-रका

﴾1﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡھُما से रिवायत है आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई कि **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे लिये कौन सा हमनशीन बेहतर है। इर्शाद फ़रमाया : **वोह जिस के देखने से तुम्हें अल्लाह की याद आए,** जिस के कलाम से तुम्हारे अ़मल में इज़ाफ़ा हो और जिस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए।

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب ای الجلساء خیر، رقم ۱۷۶۸۶، ج۱۰، ص۳۸۹)

﴾2﴿ ह़ज़रते **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी अपने साथी के दीन पर होता है, पस ख़याल रखो कि **तुम किस को अपना दोस्त बना रहे हो।** (جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب۴۵، رقم ۲۳۸۵، ج۴، ص۱۶۷)

सोह़बत की अहम्मिय्यत पर फ़ुक़हा व मुह़द्दिसीने किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تعَالٰی) के अक़्वाल

﴾1﴿ फ़क़ीह **अ़ब्दुल वाह़िद बिन आ़शिर** عَلَیۡهِ الرَّحۡمَة अपनी मन्ज़ूम किताब **"अल मुर्शिदुल मुई़न"** में सोह़बते शैख़ की अहम्मिय्यत और इस की तासीर के बारे में फ़रमाते हैं।

www.dawateislami.net

''आ़रिफ़े कामिल की सोह़बत इख़्तियार करो। वोह तुम्हें हलाकत के रास्ते से बचाएगा। उस का देखना तुम्हें **अल्लाह** की याद दिलाएगा और वोह बड़े नफ़ीस त़रीक़े से नफ़्स का मुह़ा-सबा कराते हुए और ''ख़त़राते क़ल्ब'' से मह़फ़ूज़ फ़रमाते हुए तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिला देगा उस की सोह़बत के सबब तुम्हारे फ़राइज़ व नवाफ़िल मह़फ़ूज़ हो जाएंगे। ''**तस्फ़ीयए क़ल्ब**'' के साथ ''**ज़िक्रे कसीर**'' की दौलत मुयस्सर आएगी और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मु-तअ़ल्लिक़ा सारे उमूर में तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।'' (حقائق عن التصوف، الباب الثانی، الصحبۃ، ص ۵۷)

﴿2﴾ अ़ल्लामा **मुह़द्दिसे त़ीबी** عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि कोई आ़लिम इ़ल्म में कितना ही मो'तबर (या'नी क़ाबिले भरोसा) या यक्ताए ज़माना हो। **उस के लिये सिर्फ़ इ़ल्म पर क़नाअ़त करना और इसे काफ़ी समझना मुनासिब नहीं। बल्कि उस पर वाजिब है कि वोह मुर्शिदे कामिल की मुसाबह़त इख़्तियार करे,** ताकि वोह उस की राहे ह़क़ की त़रफ़ राहनुमाई करे। (حقائق عن التصوف، الباب الثانی، الصحبۃ، ص ۵۸)

सोह़बत की अहम्मिय्यत पर सूफ़िया व आ़रिफ़ीने किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) के अक़्वाल

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ख़ालिस बन्दगी वाली ज़िन्दगी के ह़रीस होते थे। मुर्शिदे कामिल की नसीह़तों को मानना और उन की तौजीह़ात को क़बूल करना इन की ज़िन्दगी के लवाज़िमात हैं।

﴿1﴾ ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम **अबू ह़ामिद मुह़म्मद ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने फ़रमाया : अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के इ़लावा कोई भी ज़ाहिरी व बात़िनी उ़यूब व अमराज़ से ख़ाली नहीं। लिहाज़ा इन ''अमराज़ व उ़यूब'' के इज़ाले के लिये **सूफ़िया के हमराह त़रीक़त में दाख़िल होना ज़रूरी है।** (حقائق عن التصوف، الباب الثانی، الصحبۃ، ص ۶۰)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ **सय्यिदुना इमाम शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं कि बिग़ैर मुर्शिद के मेरे मुजाहिदात की सूरत येह थी कि मैं सूफ़िया की किताबों का मुत़ालआ़ करता था। कुछ अ़रसे बा'द एक को छोड़ कर दूसरे त़रीक़े को इख़्तियार करता। एक अ़रसा मेरा येही ह़ाल रहा कि **बन्दे का बिग़ैर मुर्शिदे कामिल के येही ह़ाल होता है।** जब कि मुर्शिदे कामिल का येह फ़ाइदा है कि वोह मुरीद के लिये रास्ते को मुख़्तसर कर देता है **और जो बिग़ैर मुर्शिद के राहे त़रीक़त इख़्तियार करता है वोह परेशान रहता है** और उ़म्र भर मक़्सद नहीं पाता।

(حقائق عن التصوف، الباب الثانی، الصحبۃ، ص۴۹)

मा'लूम हुवा अगर त़रीक़त में कामयाबी बिग़ैर मुर्शिदे कामिल के मह्ज़ फ़ह्मो फ़िरासत से होती तो **इमाम ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی **और शैख़ इज़्ज़ुद्दीन** बिन अ़ब्दुस्सलाम (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ) जैसे लोग "मुर्शिदे कामिल" के मोह़्ताज न होते।

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने अबू ह़म्ज़ा बग़्दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی की और इमाम अह़मद बिन सरीज عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने अबुल क़ासिम **जुनैद बग़्दादी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی की सोह़बत इख़्तियार की।

सय्यिदुना **इमाम ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने भी "मुर्शिदे कामिल" को तलाश किया ह़ालांकि वोह **ह़ुज्जतुल इस्लाम** थे। इ़ज़्ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम (عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ) ने भी मुर्शिदे कामिल की सोह़बत इख़्तियार की। ह़ालांकि वोह "**सुल्त़ानुल उ़-लमा**" के लक़ब से मश्हूर थे।

शैख़ इज़्ज़ुद्दीन عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने फ़रमाया कि "**शैख़ अबुल ह़सन शाज़ली**" عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی की सोह़बत इख़्तियार करने से क़ब्ल मुझे इस्लाम की "**कामिल मा'रिफ़त**" ह़ासिल न थी।

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा जब इन जैसे बुज़ुर्ग उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی भी मुर्शिदे कामिल के मोह़ताज हैं **तो हम जैसों के लिये तो येह अज़ ह़द ज़रूरी है ।** (لطائف المنن والاخلاق)

इन तमाम अक़्वाल से पता चला कि मुर्शिदे कामिल की सोह़बत से मिलने वाली तरबिय्यत बहुत ज़रूरी है । अब अगर वाक़ेई आप को किसी मुर्शिदे कामिल की तलाश है तो शरीअ़तो त़रीक़त की जामेअ़ शख़्सिय्यत **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़ी ज़माना रब عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत हैं । जिन की सोह़बत से अ़मल में इज़ाफ़ा और आख़िरत की तय्यारी का ज़ेह्न बनता है । हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद की बजा आवरी की त़रफ़ त़बीअ़त माइल होती है । मज़ीद मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना से वक़्तन फ़ वक़्तन शाएअ़ होने वाले **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़याते मुबारका से मुतअ़ल्लिक़ रसाइल (मसलन काफ़िर ख़ानदान का क़बूले इस्लाम, अमीरे अहले सुन्नत की एह़तियातें, ईसाई पादरी का क़बूले इस्लाम वग़ैरहा) का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

मुर्शिदे कामिल की सोह़बत के ह़ुसूल का एक म-दनी ज़रीआ़

जिस किसी मुरीद को अपने पीरो मुर्शिद की ज़ाहिरी सोह़बत पाने में कोई शरई मजबूरी मानेअ़ हो उस के लिये उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि अगर किसी के मुर्शिद साह़िबे तस्नीफ़ हैं और सुन्नतों भरे इस्लाही बयानात भी फ़रमाते हैं **तो उन की तस्नीफ़ात, तालीफ़ात व बयानात की सोह़बत को अपने पीरो मुर्शिद ही की सोह़बत समझे ।**

www.dawateislami.net

तस्नीफ़ात व तालीफ़ात

लिहाज़ा जो कोई अपने पीरो मुर्शिद की सोहबत का त़ालिब है मगर कोई ज़ाहिरी रुकावट मानेअ़ है तो वोह अपने मुर्शिदे कामिल की तस्नीफ़ात व तालीफ़ात को मुत़ालए़ में रखे और **उन के सुन्नतों भरे बयानात व म-दनी मुज़ाकरात की केसीटें रोज़ाना या कम अज़ कम हफ़्ते में एक बार तो लाज़िमी सुनने का मा'मूल बनाए। रोज़ाना वक़्ते मुक़र्ररा पर बिला नाग़ा इस तसव्वुर के साथ फ़िक्रे मदीना** (या'नी आज म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ कितना अ़मल रहा) **के तह़्त ख़ाना पूरी करे कि मेरे पीरो मुर्शिद ब ज़रीअ़ए म-दनी इन्आ़मात मुझ से सुवालात फ़रमा रहे हैं और मैं जवाबात अ़र्ज़ कर रहा हूं।** और इन के मल्फ़ूज़ात व बयानात की इशाअ़त भी करे। मौक़अ़ मिलने पर अपना मौज़ूए़ गुफ़्तगू मुर्शिद से मुतअ़ल्लिक़ रखे और उन से ज़ाहिर होने वाली ब-र-कतों का ख़ूब चर्चा करे उन के दिये हुए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ म-दनी इन्आ़मात की ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के ज़रीए़ नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये कोशां रहे।

उन की पसन्द के मुत़ाबिक़ अपने शबो रोज़ गुज़ारने की ह़त्तल इमकान कोशिश करे तो येह ज़राएअ़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुर्शिदे कामिल की सोहबत ही की त़रह़ उस के क़ल्ब व बात़िन पर असर अन्दाज़ होंगे** और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का दिल गुनाहों से बेज़ार हो कर नेकियों की त़रफ़ माइल होगा और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मज़ीद कई ऐसी ब-र-कतें वोह ख़ुद महसूस करेगा जो कि लफ़्ज़ों में बयान नहीं हो सकती।

मगर येह मा'लूम होना भी ज़रूरी है कि इक्तिसाबे फ़ैज़ किस त़रह़ हो इस के लिये **"आदाबे मुर्शिदे कामिल" ह़िस्सए अव्वल** में चन्द ज़रूरी आदाब पेश किये गए। अब इस **ह़िस्सए दुवुम** में रहनुमाई के लिये अकाबिर मशाइख़ की **"26" ईमान अफ़रोज़ ह़िकायात** पेश करने की सअ़्य की गई है।

www.dawateislami.net

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन पुर असर हिकायात का बग़ौर मुत़ालआ आप के लिये एक मोह़तात़ व बा अदब राह मुअ़य्यन कर के हुसूले फ़ैज़ के लिये मुअस्सिर राहनुमाई करेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ है कि वोह हमें मुर्शिदे कामिल की बे अदबी से महफ़ूज़ फ़रमा कर बा अदब ख़ुश नसीबों में शामिल फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

"रहना राज़ी सदा मेरे मुर्शिद अ़त्तार पिया"
के छब्बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से "26" ह़िकायाते औलिया

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं : "बेशक (ह़ज़रते) जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ने मुझे बिशारत दी : "जो आप (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर रह़मत भेजता है और जो आप (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर सलाम पढ़ता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर सलामती भेजता है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبدالرحمٰن بن عوف، رقم ۱۶۶۴، ج ۱ ص ۴۰۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿1﴾ ईमान की ह़िफ़ाज़त

सय्यिदी व मुर्शिदी **आ'ला ह़ज़रत** मुह़द्दिसे बरेल्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि इमाम **फ़ख़्रुद्दीन राज़ी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की नज़्अ़ का जब वक़्त क़रीब आया तो शैत़ान आया और उन का ईमान सल्ब करने की भरपूर कोशिश की। (क्यूंकि शैत़ान इस वक़्त हर मुसलमान का ईमान

www.dawateislami.net

बरबाद करने की कोशिश करता है) उस ने पूछा : ऐ राज़ी ! तुमने सारी उ़म्र मुनाज़रों में गुज़ारी ज़रा येह तो बताओ तुम्हारे पास ख़ुदा के एक होने पर क्या दलील है ? आप ने एक दलील दी । वोह ख़बीस चूंकि मुअ़ल्लिमुल मलकूत रह चुका था । उस ने वोह दलील अपने इल्मे बातिल के ज़ोर से (अपने ज़ो'मे फ़ासिद में) तोड़ दी । आप ने दूसरी दलील दी । उस ने वोह भी (अपने ज़ो'मे फ़ासिद में) तोड़ दी । यहां तक कि आप ने 360 दलीलें क़ाइम कीं और उस ने वोह सब (अपने ज़ो'मे फ़ासिद में) तोड़ दीं, आप सख़्त परेशान व मायूस हुए । शैतान ने कहा : अब बोल ख़ुदा को कैसे मानता है ? **आप** के पीर हज़रते **नजमुद्दीन कुब्रा** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वहां से मीलों दूर किसी मक़ाम पर वुज़ू फ़रमाते हुए चश्मे बातिन से ये मुनाज़रा मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे । आप ने वहां से आवाज़ दी : राज़ी ! **कह क्यूं नहीं देते कि मैं ने ख़ुदा को बिग़ैर दलील के एक माना** !!! इमाम राज़ी ने येह कहा और **कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर** (ह़ालते ईमान) **में जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द कर दी ।** (अल मल्फ़ूज़, हिस्सए चहारुम, सफ़्हा : 389)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से शैत़ान की शरारतों से पनाह मांगते रहना चाहिये और येह भी मा'लूम हुवा कि किसी मुर्शिदे कामिल के हाथ में हाथ दे देना चाहिये कि उन की बात़िनी तवज्जोह वस्वसए शैत़ानी को भी दफ़्अ़ करती है और ईमान की हिफ़ाज़त का भी एक मज़्बूत ज़रीआ़ है ।

आख़िरी वक़्त है और बड़ा सख़्त है
मेरा ईमां बचा मेरे मुर्शिद पिया

www.dawateislami.net

﴾2﴿ मुरीद हो तो ऐसा

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : बैअ़त (या'नी मुरीद होना) इसे कहते हैं कि ह़ज़रते **यह़या मुनीरी** عَلَيْهِ الرَّحْمَة के एक मुरीद दरिया में डूब रहे थे। **ह़ज़रते ख़िज़्र** عَلَيْهِ السَّلَام ज़ाहिर हुए और फ़रमाया : अपना हाथ मुझे दे कि तुझे निकाल लूं। उस मुरीद ने अ़र्ज़ की : **येह हाथ ह़ज़रते यह़या मुनीरी** عَلَيْهِ الرَّحْمَة **के हाथ में दे चुका हूं और अब दूसरे को न दूंगा,** ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ग़ाइब हो गए और ह़ज़रते यह़या मुनीरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ज़ाहिर हुए और उन को निकाल लिया।

(अन्वारे रज़ा, इमाम अह़मद रज़ा और ता'लीमाते तसव्वुफ़, सफ़ह़ा : 238)

इमाम शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی मीज़ानुश्शरीअ़तिल कुब्रा में फ़रमाते हैं कि जिस त़रह़ मज़ाहिबे अ़रबआ़ में से किसी एक की तक़्लीद लाज़िम है। इसी त़रह़ मुरीद के लिये भी एक ही पीर से वाबस्ता रहना लाज़िमी है, **मुदख़ल शरीफ़** में है कि मुरीद को चाहिये कि अपने ज़माने के तमाम मशाइख़ के साथ नेक गुमान रखे, और (सिर्फ़) **अपने मुर्शिदे कामिल ही के दामन से वाबस्ता रहे** और तमाम कामों में उसी पर ए'तेमाद करे और (इधर उधर ठोकरें खाने) और वक़्त ज़ाएअ़ करने से बचे। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जिल्द : 21, सफ़ह़ा : 478)

फिर फ़रमाया : इरादत (या'नी ए'तेक़ाद) अहम तरीन शर्त़ है बैअ़त में। बस मुर्शिद की ज़रा सी तवज्जोह दरकार होती है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सए सिवुम, सफ़ह़ा : 343)

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है
तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आ'ज़म

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾3﴿ एक दरवाज़ा पकड़ मगर मज़बूती से

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से अ़र्ज़ की गई कि ह़ज़रते **सय्यिदी अह़मद ज़र्रूक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया है कि जब किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो **''या ज़र्रूक़''**(رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) कह कर निदा करे मैं फ़ौरन उस की मदद करूंगा। तो आप ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया : मैं ने कभी इस क़िस्म की मदद त़लब न की। जब कभी मैं ने इस्तिआ़नत (या'नी मदद त़लब की) **या ग़ौस** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही कहा। **''यक दर गीर मोह़कम गीर''** (एक ही दर पकड़ो मगर मज़्बूत़ पकड़ो)

(अल मल्फ़ूज़, ह़िस्सए सिवुम, सफ़ह़ा : 307)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़े लत़ीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** के मुन्फ़रिद बाब **''फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह''** के (सफ़ह़ा : 8 ता 11) पर आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की करामत बयान फ़रमाई है कि **सरकारे आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت जब 21 बरस के नौ जवान थे उस वक़्त का वाक़ेआ़ ख़ुद उन्हीं की ज़बानी मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे फ़रमाते हैं : सतरहवीं शरीफ़ माहे फ़ाख़िर रबीउ़ल आख़िर 1293 में कि फ़क़ीर को इक्किसवां साल था। आ'ला ह़ज़रत मुसन्निफ़ अ़ल्लाम सय्यिदुनल वालिद قُدِّسَ سِرُّهُ الْمَاجِد व ह़ज़रते मुह़िब्बे रसूल जनाब मौलाना मौलवी मुह़म्मद **अ़ब्दुल क़ादिर साह़िब** बदायूनी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराहे रिकाब ह़ाज़िरे बारगाहे बेकस पनाहे हुज़ूर पुरनूर मह़बूबे इलाही निज़ामुल ह़क़्के वद्दीन सुल्त़ानुल औलिया

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हुवा । हुजरए मुक़द्दसा के चार त़रफ़ मजालिसे बात़िला लह्वो सुरूर गर्म थी शोरो ग़ोग़ा से कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देती । दोनों ह़ज़रते आ़लिय्यत अपने क़ुलूबे मुत़मइन्ना के साथ ह़ाज़िरे मुवाजहए अक़्दस हो कर मश्ग़ूल हुए । इस फ़क़ीरे बे तौक़ीर ने हुजूमे शोरो शर्र से ख़ात़िर (या'नी दिल) में परेशानी पाई । दरवाज़ए मुत़ह्हरा पर खड़े हो कर ह़ज़रते सुल्त़ानुल औलिया رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की : ऐ मौला ! ग़ुलाम जिस के लिये ह़ाज़िर हुवा येह आवाज़ें इस में ख़लल अन्दाज़ हैं । (लफ़्ज़ येही थे या इन के क़रीब बहर ह़ाल मज़्मूने मा'रूज़ा येही था) येह अ़र्ज़ कर के **बिस्मिल्लाह** कह कर दाहिना पाउं दरवाज़ए हुजरए त़ाहिरा में रखा । बिऔ़ने रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ वोह सब आवाज़ें दफ़्अ़तन गुम थीं । मुझे गुमान हुवा कि येह लोग ख़ामोश हो रहे, पीछे फिर कर देखा तो वोही बाज़ार गर्म था । क़दम कि रखा था बाहर हटाया फिर आवाज़ों का वोही जोश पाया । फिर **बिस्मिल्लाह** कह कर दाहिना पाउं अन्दर रखा । بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی फिर वैसे ही कान ठन्डे थे । अब मा'लूम हुवा कि येह मौला عَزَّوَجَلَّ का करम और ह़ज़रते सुल्त़ानुल औलिया رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामत और बन्दए नाचीज़ पर रह़मत और मऊ़नत है । शुक्र बजा लाया और ह़ाज़िरे मुवाजहए आ़लिय्या हो कर मश्ग़ूल रहा । कोई आवाज़ न सुनाई दी जब बाहर आया तो फिर वोही ह़ाल था कि ख़ानक़ाहे अक़्दस के बाहर क़ियाम गाह तक पहुंचना दुश्वार हुवा । फ़क़ीर ने येह अपने ऊपर गुज़री हुई गुज़ारिश की, कि अव्वल तो वोह ने'मते इलाही عَزَّوَجَلَّ थी और रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ० अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को लोगों से ख़ूब बयान कर । मअ़ हाज़ा इस में ग़ुलामाने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के लिये बिशारत और मुन्किरों पर बला व ह़सरत है । इलाही ! عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

सदक़ा अपने महबूबों (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) का हमें दुन्या व आख़िरत व क़ब्रो हश्र में अपने महबूबों عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की ब-रकाते बे पायां से बहरा मन्द फ़रमा। (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاء ص ٦٠ تا ٦١)

अल मल्फ़ूज़ हिस्सए सिवुम सफ़हा 307 पर आ'ला हज़रत عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का मज़ीद येह इर्शाद भी बयान किया गया है कि हज़रते सुल्तानुल औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की येह बय्यन करामत देख कर इस्तिआनत चाही तो बजाए हज़रते महबूबे इलाही के नामे मुबारक के या ग़ौस (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ही ज़बान से निकला। वहीं मैं ने अकसीरे आ'ज़म क़सीदा भी तस्नीफ़ किया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! येह हिकायत "बाईस ख़्वाजा की चौखट देहली शरीफ़" की है। इस में ताजदारे देहली हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की नुमायां करामत है। जब कि मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की भी येह करामत ही है कि क़ब्रे अन्वर वाले कमरे में क़दम रखते थे तो उन्हें ढोल बाजों की आवाज़ें न सुनाई देती थीं। इस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि बिलफ़र्ज़ अगर मज़ाराते औलिया पर जो-हला ग़ैर शरई ह-रकात कर रहे हों और उन को रोकने की क़ुदरत न हो तब भी अपने आप को अहलुल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के दरबारों की हाज़िरी से महरूम न करे। हां मगर येह वाजिब है कि इन ख़ुराफ़ात को दिल से बुरा जाने और इन में शामिल होने से बचे। बल्कि इन की तरफ़ देखने से भी ख़ुद को बचाए।

www.dawateislami.net

﴾4﴿ मुरीद की इस्लाह़

ह़ज़रते **जुनैद बग़दादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى के एक मुरीद को येह सूझी कि वोह कामिल हो गया है। उसे हर रात ऐसे दिखाई देता कि फ़िरिश्ते उसे सुवारी पर बिठा कर जन्नत की सैर कराते और त़रह़ त़रह़ के मेवे खिलाते हैं। आप उस के पास गए तो देखा कि **वोह बड़े ठाठ से बैठा है** आप ने उस से कैफ़िय्यत पूछी तो उस ने बड़े फ़ख़्र से अपने बुलन्द मक़ाम और जन्नत की सैर का ज़िक्र किया। आप ने फ़रमाया आज जब जन्नत में जाओ तो मेवे खाने से पहले لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ पढ़ना। उस ने कहा बहुत अच्छा।

शैत़ानी खेल चुनान्चे ह़स्बे मा'मूल जब वोह जन्नत में पहुंचा तो आप का फ़रमान याद आ गया। तो उस ने لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ पढ़ा। येह अभी पढ़ा ही था कि उस ने एक चीख़ सुनी और जन्नत को आने वाह़िद में आंखों से ग़ाइब देखा और **अपने आप को एक गन्दी जगह पर बैठे हुए पाया**। मुर्दों की हड्डियों को अपने सामने पड़े देखा। जान लिया कि येह एक शैत़ानी जाल था और मैं उस जाल में गिरिफ़्तार था। इस के बा'द आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर **तौबा** की। (کشف المحجوب مترجم، باب صحبت شیخ سے انحراف کا وبال، ص۴۸۶)

तबाही का दर इस ह़िकायत से येह अहम राज़ आश्कार हुवा कि तवज्जोहे मुर्शिद से ह़ासिल होने वाले मक़ाम को पा कर भी मुरीद हर वक़्त बारगाहे मुर्शिद में बा अदब ही रहे। **वरना अ़त़ाए मुर्शिद को अपना कमाल समझने वाला मुरीद तबाही के दर पे दस्तक देता है।** इस लिये मुरीद हर दम येही यक़ीन रखे कि मेरा हर अ़मल ख़ुद तवज्जोहे मुर्शिद का मोह़ताज है।

www.dawateislami.net

मुर्शिद की चौखट कुत़्बे आ़लम ह़ज़रते मख़्दूम **अशरफ़ जहांगीर सिमनानी** किछौछवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरी मक़्बूलिय्यत का द-रजा व मक़ाम इस द-रजा बढ़ जाए कि **मेरा सर अ़र्शे मुअ़ल्ला तक पहुंचे। तब भी मेरा सर मेरे पीरो मुर्शिद के आस्ताने (या'नी चौखट) पर ही रहेगा।**

(सीरते फ़ख़्रुल आ़रिफ़ीन, सफ़ह़ा नम्बर :186)

यक़ीनन हर अ़मल मेरा तेरी नज़रों से क़ाइम है
मुझे शैत़ान के मक्रों से परे मुर्शिद हटाना तुम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿5﴾ तल्वार का वार बे असर

ह़ज़रते **ख़्वाजा बहाऊद्दीन** नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی एक दिन क़ज़ाने सुल्त़ान के दरबार में जल्लादी के फ़राइज़ सर अन्जाम दे रहे थे। दरबार में एक मुजरिम पेश हुवा तो सुल्त़ान ने उस के क़त्ल का हुक्म सादिर फ़रमाया। **ह़ज़रत ख़्वाजा साह़िब** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उसे क़त्ल गाह में ले गए और उस की आंखें बांध दी। तल्वार मियान से निकाली और **सरकार** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा और तल्वार उस की गरदन पर मारी मगर तल्वार ने कुछ भी असर न किया। दूसरी बार इसी त़रह़ किया मगर तल्वार ने फिर भी कुछ असर न किया। ह़ज़रते ख़्वाजा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने देखा कि तल्वार खींचते वक़्त मुजरिम होंट हिलाता था और मुंह में कुछ पढ़ता था।

यादे मुर्शिद आप ने उस से पूछा कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त की क़सम जो मा'बूदे बर ह़क़ है, तू सच सच बता क्या कहता

www.dawateislami.net

था। मुजरिम ने जवाब दिया कि मैं अपने मुर्शिदे कामिल ह़ज़रत व सय्यिद को याद करता हूं और ख़ुदा तआ़ला से मग़्फ़िरत त़लब करता हूं। आप ने फ़रमाया कि तेरे पीरो मुर्शिद कौन हैं और उन का नाम क्या है ? मुजरिम ने कहा मेरे पीरो मुर्शिद **ह़ज़रते अमीर कलाल** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان हैं। आप ने फ़रमाया इस वक़्त कहां तशरीफ़ रखते हैं मुजरिम ने कहा इस वक़्त बुख़ारा के अ़लाक़ा क़रिया वख़ार में तशरीफ़ फ़रमा हैं। येह सुन कर आप ने तल्वार ज़मीन पर फेंक दी और फ़ौरन बुख़ारा की त़रफ़ रवाना हो गए और फ़रमाने लगे **कि वोह पीर जो मुरीद को तल्वार के नीचे से बचा ले अगर कोई इस की ख़िदमत बजा लाए तो तअ़ज्जुब नहीं कि अल्लाह तआ़ला उस को दोज़ख़ की आग से बचा ले।** ह़ज़रते ख़्वाजा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان के अमीर कलाल عَلَيْهِ الرَّحْمَة के पास ह़ाज़िर होने का सबब येही वाक़ेआ़ बना। (لیل العارفین ص۴۰)

आंखें भी उठ चुकी हैं ज़ोरों पे यावह गोई
दम तोड़ते मरीज़े इस्यां ने है पुकारा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿6﴾ सआ़दतमन्द मुरीद

सय्यिदी व मुर्शिदी **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं कि एक साह़िब हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के मुरीदों में से थे। उन्हों ने (सोते जागते) में देखा कि एक टीले पर याक़ूत की कुर्सी बिछी है। इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना **जुनैद बग़दादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तशरीफ़ फ़रमा हैं और नीचे एक मख़्लूक़ जम्अ़ है। हर एक अपनी चीठ्ठी देता है और ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस को बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में पेश करते हैं। येह चुपके खड़े रहे।

www.dawateislami.net

हज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ने बहुत देर उन्हें देखा। जब उन्हों ने कुछ न कहा तो खुद फ़रमाया "लाओ, मैं तुम्हारी अर्ज़ी पेश करूं।" अर्ज़ किया, क्या मेरे शैख़ को मा'ज़ूल कर दिया गया ? फ़रमाया : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन को मा'ज़ूल नहीं किया गया और न कभी उन को मा'ज़ूल करेंगे। उन्हों ने अर्ज़ की, तो **बस मेरा मुर्शिद मेरे लिये काफ़ी है।** आंख खुली तो **सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के दरबार में हाज़िर हुए कि मुआ़मला अर्ज़ करे। कुरबान जाइये ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की फ़िरासत पर, क़ब्ल इस के कि कुछ अर्ज़ करे, सरकारे ग़ौसे पाक, शैख़ स-मदानी, महबूबे सुब्हानी अश्शैख़ **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने इर्शाद फ़रमाया : "लाओ, मैं तुम्हारी अर्ज़ी पेश करूं", फिर फ़रमाया : इरादत येह है : "बमा शीरान जहां बस्ता ईं सिल्सिला अन्दर" **जब तक मुरीद येह ए'तेक़ाद न रखे कि मेरा शैख़ तमाम औलियाए ज़माना से मेरे लिये बेहतर है नफ़्अ़** (या'नी फ़ैज़) **नहीं पाएगा।** (अल मल्फ़ूज़, हिस्सए सिवुम, सफ़हा : 308)

महब्बत दूसरों की दिल में मेरे आ बसी है क्यूं
ज़रा दिल पर तवज्जोह हो नज़र दिल पे जमाना तुम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

«7» महब्बत ने मन्ज़िल तक पहुंच दिया

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक रूमाल मुझे मेरे पीरो मुर्शिद ने अ़ता फ़रमाया। जिस पर इत्तिफ़ाक़ से मेरे भाई का

www.dawateislami.net

पाउं पड़ गया । मुझे इस बात का इस क़दर अफ़्सोस हुवा कि मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए । **येही जज़्बए महब्बत था कि** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मैं मुर्शिदे कामिल की निगाहे करम से उसी लम्हे मन्ज़िले मुराद तक पहुंच गया ।** (عوارف المعارف)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ मुरीद होना सीखो

आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं कि तीन दरवेश महबूबे इलाही عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के वालिदे माजिद ह़ज़रते **''निज़ामुल ह़क़** عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ'' की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और खाना मांगा । ख़ादिम को खाना लाने का हुक्म फ़रमाया गया । ख़ादिम ने जो कुछ उस वक़्त मौजूद था । उन के सामने ला कर रखा । **उन में से एक ने वोह खाना उठा कर फेंक दिया** और कहा : अच्छा खाना लाओ । ह़ज़रत ने इस ना शाइस्ता ह़-रकत का कुछ ख़याल न फ़रमाया बल्कि ख़ादिम को इस से अच्छा खाना लाने का हुक्म फ़रमा दिया । ख़ादिम पहले से अच्छा खाना ले आया । उन्हों ने दोबारा फेंक दिया और इस से अच्छा मांगा । ह़ज़रत عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने और अच्छे खाने का हुक्म दिया । ग़रज़ उन्हों ने इस बार भी फेंक दिया और **इस से भी अच्छा मांगा ।**

इस पर ह़ज़रत عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने उस दरवेश को क़रीब बुलाया और कान में इर्शाद फ़रमाया कि येह खाना उस मुर्दार बैल से तो अच्छा था जो तुम ने रास्ते में खाया । येह सुनते ही दरवेश का रंग मुतग़य्यिर हुवा । (क्यूंकि राह में तीन दिन फ़ाक़ों के बा'द एक मरा हुवा बैल जिस में कीड़े पड़ गए थे तीनों जान बचाने के लिये उस का गोश्त

www.dawateislami.net

खा कर आए थे) दरवेश हुज़ूर عَلَيْهِ الرَّحْمَة के क़दमों पर गिर पड़ा। हुज़ूर عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने उस का सर उठा कर अपने सीने से लगाया और जो कुछ बातिनी फ़ुयूज़ात अ़ता फ़रमाना थे अ़ता फ़रमा दिये। इस पर वोह दरवेश वज्द में झूमने लगा और कहने लगा कि **मेरे मुर्शिदे कामिल ने मुझे ने 'मत अ़ता फ़रमाई है।** ह़ाज़िरीन (जो येह सब मुआ़मले देख रहे थे कि इसे ह़ज़रत निज़ामुल ह़क़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने नवाज़ा है) उस से कहने लगे कि बे वुक़ूफ़ जो कुछ तुझे मिला वोह तो ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का अ़ता किया हुवा है। यहां तक तो बिल्कुल ख़ाली आया था। तो वोह कलन्दर (कैफ़े सुरूर की मस्ती में) बोला : बे वुक़ूफ़ तुम हो।

अगर मेरे पीरो मुर्शिद ने मुझ पर नज़र न की होती तो हुज़ूर عَلَيْهِ الرَّحْمَة मुझ पर नज़रे करम कब फ़रमाते ? येह इसी नज़र (या'नी तवज्जोहे मुर्शिद) का सबब है।

इस पर ह़ज़रते निज़ामुल ह़क़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इर्शाद फ़रमाया : येह सच कहता है। फिर फ़रमाया भाइयो ! **मुरीद होना इस से सीखो।** (अल मल्फ़ूज़, ह़िस्सए अव्वल, सफ़ह़ा : 16)

मा'लूम हुवा कि मुरीद को मिलने वाला फ़ैज़ ब ज़ाहिर किसी भी बुज़ुर्ग या साह़िबे मज़ार से मिले मगर उसे अपने मुर्शिदे कामिल का फ़ैज़ ही तसव्वुर करना चाहिये। बल्कि किसी भी मज़ार पर ह़ाज़िरी के वक़्त भी तसव्वुरे मुर्शिद को ही मद्दे नज़र रखना चाहिये।

बस पीर की जानिब ही मेरा दिल येह लगा हो
इस दिल में सिवा पीर के कोई न बसा हो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

9 बा अदब मुरीद

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने फ़रमाया कि **अ़ली बिन हैती** عَلَيْهِ الرَّحْمَة जो **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के ख़ास ख़लीफ़ा हैं। उन्हों ने एक बार हुज़ूरे ग़ौसे पाक की दा'वत की। अ़ली बिन हैती عَلَيْهِ الرَّحْمَة के एक ख़ास मुरीद जिन का नाम **ह़ज़रते अ़ली जोसक़ी** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه था। वोह खाना ले कर ह़ाज़िर हुए। अब सोचने लगे कि रोटियां किस के सामने पहले पेश करूं। अगर अपने पीरो मुर्शिद के सामने पहले पेश करता हूं तो येह हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की शान के ख़िलाफ़ है और अगर पहले हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के सामने रखता हूं, तो इरादत तक़ाज़ा नहीं करती (क्यूंकि ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ग़ुलामी की निस्बत तो मैं ने अपने पीरो मुर्शिद अ़ली बिन हैती عَلَيْهِ الرَّحْمَة के हाथ पर मुरीद हो कर पाई है ?) उन्हों ने इस तरकीब से रोटीयां घुमाईं कि दोनों की ख़िदमत में एक साथ पहुंची।

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़ली बिन हैती عَلَيْهِ الرَّحْمَة से इर्शाद फ़रमाया : **येह तुम्हारा मुरीद** (या'नी अ़ली जोसक़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) **बहुत बा अदब है।** अ़ली बिन हैती عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह बहुत तरक़्क़ियां कर चुका है अब आप इस को अपनी ख़िदमत में ले लें। **अ़ली बिन जोसक़ी** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह सुनते ही एक कोने में गए और रोना शुरूअ़ कर दिया। हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : इस को अपने पास ही रहने दो। जिस पिस्तान से हिला हुवा है उसी से दूध पियेगा। फिर इर्शाद फ़रमाया **मुरीद अपने तमाम ह़वाइज (या'नी ज़रूरियात) में अपने पीरो मुर्शिद ही की त़रफ़ रुजूअ़ करे।** (अल मल्फ़ूज़ शरीफ़, हिस्सए सिवुम स. 308-309)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾10﴿ मुर्शिदे कामिल ऐ़ब पोशी फ़रमाते हैं

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिया के मुमताज़ बुज़ुर्ग, मुर्शिदे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت सय्यिद शाह **आले रसूल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो 1209 हि. में पैदा हुए और 18 ज़ुल ह़िज्जा 1296 हि. में इन्तिक़ाल हुवा। हुज़ूर **अच्छे मियां** قُدِّسَ سِرُّہٗ के ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन थे। तहज्जुद की नमाज़ भी कभी क़ज़ा नहीं होती थी। निहायत करीम, नफ़ीस और ऐ़ब पोश थे।

एक मरतबा **मुफ़्ती ऐ़नुल ह़सन** बिलगरामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة जिन का कश्फ़ बहुत बढ़ा हुवा था। जमाअ़त में शरीक हुए, मगर फिर निय्यत तोड़ दी और सलाम के बा'द इमाम साह़िब से फ़रमाने लगे कि नमाज़ पढ़ते हुए (ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सामने) ख़यालात में बाज़ार जाने और सौदा ख़रीदने की क्या ज़रूरत हुई थी। हम कहां कहां तुम्हारे पीछे परेशान फिरें?

मुर्शिदे आ'ला ह़ज़रत सय्यिद शाह आले रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुफ़्ती ऐ़नुल ह़सन बिलगरामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة पर सख़्त इताब किया और फ़रमाया कि या तो आप ख़ुद ही नमाज़ पढ़ें या इमाम साह़िब के साथ फिरें। मगर शरीअ़त से इस्तिहज़ा न करें। **आप को ख़ुद तो नमाज़ में हुज़ूरे क़ल्ब ह़ासिल नहीं, दूसरे पर ए'तेराज़ करते हैं। अगर तुम्हें हुज़ूरी होती तो दूसरे पर नज़र ही न जाती।**

(महफ़िले औलिया, सफ़ह़ा नम्बर : 559)

हो नमाज़ें अदा पहली सफ़ में सदा
हो ख़ुशूअ़ भी अ़त़ा मेरे मुर्शिद पिया

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾11﴿ मुर्शिदे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की करामत

एक बदायूनी साहि़ब जो कि मुर्शिदे आ'ला ह़ज़रत **सय्यिद शाह आले रसूल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ास मुरीद थे। सोचने लगे कि **मे'राज** चन्द लम्ह़ों में किस त़रह़ हुई होगी। उस वक़्त सय्यिदी शाह आले रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वुज़ू फ़रमा रहे थे। अपने इस मुरीद से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : ज़रा अन्दर से तोलिया उठा लाओ। वोह साहि़ब अन्दर गए तो एक खिड़की नज़र आई। झांक कर देखा तो पुर फ़ज़ा बाग़ नज़र आया तो नीचे उतर गए। सैर करते करते एक अ़ज़ीमुश्शान शहर में दाख़िल हुए। वहां कारोबार शुरूअ़ कर दिया। शादी की और औलाद भी हुई। **इसी ह़ाल में 20 साल गुज़र गए।**

यक बयक ह़ज़रत सय्यिद **शाह आले रसूल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आवाज़ सुनी, घबरा कर देखा तो खिड़की नज़र आई, फ़ौरन दाख़िल हो कर तोलिया लेते हुए दौड़े। क्या देखते हैं कि हुनूज़ क़त़राते आब (पानी के क़त़रे) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरए मुबारक पर मौजूद हैं और आप वहीं तशरीफ़ फ़रमा हैं। दस्ते मुबारक तर हैं। येह देख कर वोह साहि़ब ह़ैरत ज़दा और इन्तिहाई ह़ैरत ज़दा थे। **सय्यिदी शाह आले रसूल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तबस्सुम फ़रमाया और अपने इस मुरीद से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया। आप वहां बीस बरस रहे। शादी भी की और यहां अभी तक वुज़ू भी ख़ुश्क नहीं हुवा। **अब तो मे'राज की ह़क़ीक़त समझ गए!!!** (महफ़िले औलिया, सफ़ह़ा : 561)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾12﴿ ख़िदमते मुर्शिद का इन्आ़म

ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ़ एक बुज़ुर्ग सो बरस तक ख़ुदा की इबादत करते रहे। दिन को रोज़ा रखते और रात को क़ियाम फ़रमाते और हर आने जाने वाले को इबादते इलाही की तल्क़ीन फ़रमाते। उन के इन्तिक़ाल के बा'द लोगों ने उन्हें जन्नत में देख कर उन का ह़ाल पूछा। उन्हों ने जवाब दिया कि मेरी रात दिन की इबादत जन्नत में दाख़िले का बाइ़स नहीं हुई। **बल्कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत की वजह से बख़्शा है।**

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के रोज़ औलिया, सिद्दीक़ीन और मशाइख़े त़रीक़त رَحِمَهُمُ اللّٰهُ को क़ब्रों से उठाया जाएगा तो उन के कन्धों पर चादरें पड़ी होंगी और हर चादर के साथ हज़ारों रेशे लटकते होंगे। इन बुज़ुर्गों के मुरीदीन और अ़क़ीदत मन्द उन रेशों को पकड़ कर लटक जाएंगे **और इन बुज़ुर्गों के साथ पुल सिरात़ उ़बूर कर के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।**

(دلیل العارفین مع حشت بہشت، ص۸۲، مطبوعہ شیر برادرز)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾13﴿ मुर्शिदे कामिल की ख़िदमत का सिला

ह़ज़रते ख़्वाजा **ग़रीब नवाज़** قُدِّسَ سِرُّہٗ फ़रमाते हैं कि जब मैं शैख़ुल इस्लाम सुल्त़ानुल मशाइख़ ह़ज़रते **उ़स्मान हारवनी** قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی का "मुरीद" हुवा तो कामिल बीस साल तक ख़िदमते

www.dawateislami.net

अक़्दस में हाज़िर रहा। और इस द–रजा ख़िदमत की, कि नफ़्स को कभी आप की ख़िदमत की वजह से राहत न दी। न दिन देखता था और न रात। जहां आप सफ़र को जाते सोने के कपड़े और तोशा सामान उठा कर हमराह हो जाता। जब आप ने मेरी ख़िदमत और अ़क़ीदत देखी तो **ऐसी कमाल ने'मत अ़ता फ़रमाई जिस की कोई इन्तिहा नहीं।**

मा'लूम हुवा कि पीरो मुर्शिद की ख़िदमत का मौक़अ़ मिलने पर मुरीद अपने लिये इसे बड़ी सआ़दत समझे और किसी सूरत इस मौक़अ़ को ज़ाएअ़ न करे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

14 कुफ़्ले मदीना की ज़रूरत

ह़ज़रते **निज़ामुद्दीन औलिया** عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि मैं ने शैख़ुल इस्लाम **फ़रीदुद्दीन** गंजे शकर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر से सुना है। वोह फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में एक जुरअत अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रत शैख़ क़ुत़्बुद्दीन **बख़्तियार काकी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के सामने की थी।

मुआ़मला कुछ यूं हुवा कि मैं ने एक दफ़्आ़ अपने शैख़ से इजाज़त मांगी कि गोशा नशीन हो जाऊं। शैख़ क़ुत़्बुद्दीन **बख़्तियार काकी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने फ़रमाया कि (अभी ज़रूरत) नहीं है। मैं ने जवाब दिया कि मुर्शिदे कामिल पर मेरा ह़ाल रोशन है कि मेरी निय्यत शोहरत की ज़रा भी नहीं है। मैं शोहरत के लिये नहीं कहता। जिस पर मेरे पीरो मुर्शिद शैख़ **क़ुत़्बुद्दीन** رضی الله عنه ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई।

www.dawateislami.net

इस वाक़िए के बा'द मैं सारी उ़म्र सख़्त शर्मिन्दा रहा और तौबा करता रहा कि ऐसा जवाब क्यूं दिया **जो उन के हुक्म के मुवाफ़िक़ नहीं था।**

(فوائد الفواد مع حشت بہشت حصہ اول، ص ۶۹۷، مطبوعہ شبیر برادرز)

कुछ ऐसी तवज्जोह हो अ़त़ा पीर की या रब عَزَّوَجَلَّ
कम बोलूं निगाहों को मेरी जो कि झुका दे

मा'लूम हुवा कि जिस काम के लिये पीरो मुर्शिद मन्अ़ करें तो उस से बाज़ रहा जाए। किसी तावील से उस की गुन्जाइश न निकाली जाए **और न ही उस हुक्म के फ़वाइद व नुक़्सानात पर ग़ौर करें।** क्यूंकि मुर्शिदे कामिल हमेशा अपने मुरीदों के लिये बेहतर ही इर्शाद फ़रमाते हैं।

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت इर्शाद फ़रमाते हैं : बेकार बातों से तो हर वक़्त परहेज़ होना चाहिये और **मुर्शिद के हुज़ूर तो ख़ामोश रहना ही अफ़्ज़ल है।** हां, ज़रूरी मसाइल पूछने में ह़रज नहीं। औलियाए किराम तो फ़रमाते हैं कि मुर्शिदे कामिल के हुज़ूर बैठ कर ज़िक्र भी न किया जाए कि ज़िक्र में दूसरी त़रफ़ मश्ग़ूल होगा। और येह ह़क़ीक़तन मुमानअ़ते ज़िक्र नहीं बल्कि तक्मीले ज़िक्र है कि वोह (जो अपने त़ौर पर) करेगा, बिला तवस्सुल होगा। और मुर्शिदे कामिल की तवज्जोह से जो ज़िक्र होगा वोह मुतवस्सुल होगा। येह उस से बदरजहा अफ़्ज़ल है। (फिर फ़रमाया) अस्ल कार हुस्ने अ़क़ीदत है। वोह नहीं तो कुछ फ़ाइदा नहीं और अगर सिर्फ़ हुस्ने अ़क़ीदत है तो ख़ैर। इत्तिसाल तो है (फिर फ़रमाया) परनाले के मिस्ल फ़ैज़ पहुंचेगा। बस हुस्ने अ़क़ीदत होना चाहिये। (अल मल्फ़ूज़, ह़िस्सए सिवुम, सफ़ह़ा : 309)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾15﴿ तौबा पर इस्तिक़ामत

अबू उ़मर **इस्माईल** बिन नजीद नैशापूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ह़ज़रते **जुनैद** عَلَيْهِ الرَّحْمَة के अस्ह़ाब में से थे । आप ने सिने 366 हि. में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में विसाल फ़रमाया । आप फ़रमाते हैं कि मैं ने शुरूअ़ में ह़ज़रते **अबू उ़स्मान ह़ैरी** قُدِّسَ سِرُّهٗ की मजलिस में तौबा की । फिर कुछ अ़रसा इस तौबा पर क़ाइम भी रहा । **मगर एक दिन अचानक फिर दिल में गुनाह का ख़याल आया और मुझ से गुनाह सरज़द हो गया ।** चुनान्चे मैं ने मुर्शिदे कामिल की सोह़बत से (नदामत की वजह से) मुंह फेर लिया (या'नी उन की बारगाह में ह़ाज़िरी देना छोड़ दी) यहां तक कि आप को दूर से आता देखता तो शर्मिन्दगी की वजह से भाग खड़ा होता या (छुप जाता) कि उन की निगाह मुझ पर न पड़े ।

दुश्मन की ख़ुशी **इत्तिफ़ाक़** से एक दिन आप से सामना हो गया । आप मुझ से फ़रमाने लगे बेटा ! उस वक़्त तक अपने दुश्मन की सोह़बत इख़्तियार न करो जब तक तुम्हारे अन्दर उस से बचने की त़ाक़त पैदा न हो जाए । क्यूंकि दुश्मन तेरे ऐ़ब देखते (या'नी तलाश) करते हैं । अगर तेरे अन्दर ऐ़ब होंगे तो (तेरी बुरी ह़ालत देख कर) दुश्मन ख़ुश होंगे ।

दुश्मन का ग़म अगर तू साफ़ (या'नी बा अ़मल व मुत्तक़ी) होगा तो दुश्मन ग़मगीन होंगे । अगर (नफ़्सो शैत़ान के ग़लबे की वजह से) गुनाह करने ही को तेरा जी चाहता है तो मेरे पास आ, ताकि तेरा बोझ मैं उठा लूं (या'नी नफ़्सो शैत़ान के वार से तेरी ह़िफ़ाज़त करूं) और तू दुश्मन का मक़्सद (या'नी कि वोह तुझे बे अ़मल और गुनाहों में मुब्तला देखना चाहते हैं) पूरा न करे ।

अबू उ़मर عَلَيْهِ الرَّحْمَة का बयान है कि "मुर्शिदे कामिल" के येह इस्लाह़ी और पुर असर जुम्ले सुनते ही गुनाह से मेरा दिल भर

www.dawateislami.net

गया। और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे तौबा पर इस्तिक़ामत हासिल हो गई।

(کشف المحجوب مترجم، باب بار بار ارتکاب گناہ کا مسئلہ، ص ۴۲۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾16﴿ मुर्शिदे कामिल का एह़तिराम

ह़ज़रते **अ़ल्लामा क़ुशैरी** عَلَیْہِ الرَّحْمَة अपने मुर्शिदे कामिल **अबू अ़ली दक़ाक़** عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الرَّزَّاق के बारे में फ़रमाते हैं कि जब कभी वोह अपने पीरो मुर्शिद **नस्र आबादी** عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْھَادِی के पास जाते तो पहले ग़ुस्ल फ़रमाते फिर उन की मजलिस में जाते।

अ़ल्लामा क़ुशैरी عَلَیْہِ الرَّحْمَة तो अपने मुर्शिद से भी एक क़दम आगे बढ़े हुए थे। **आप** عَلَیْہِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि इब्तिदाई ज़माने में जब भी मैं अपने मुर्शिदे करीम (अबू अ़ली दक़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الرَّزَّاق) की मजलिस में जाने की सआ़दत पाता तो **उस दिन रोज़ा रखता, फिर ग़ुस्ल करता।** तब मैं अपने पीरो मुर्शिद (अबू अ़ली दक़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الرَّزَّاق) की मजलिस में जाने की हिम्मत करता। कई बार तो ऐसा भी हुवा कि मद्रसे के दरवाज़े तक पहुंच जाता। मगर **मारे शर्म के दरवाज़े से लौट आता।** और अगर जुरअत कर के अन्दर दाख़िल हो भी जाता मगर जैसे ही मद्रसे के दरमियान तक पहुंचता तो तमाम बदन में ऐसी सनसनी पैदा हो जाती (और जिस्म ऐसा सुन हो जाता) कि ऐसी ह़ालत में अगर मुझे सूई भी चुभो दी जाती तो शायद मैं मह़सूस न करता। (الرسالۃ القشیریۃ، باب الصحبۃ، ص ۳۲۸)

ऐसा ग़म दे मुझे होश भी न रहे
मस्त अपना बना मेरे मुर्शिद पिया

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾17﴿ कामिल तवज्जोह

ह़ज़रते **बा यज़ीद बिस्त़ामी** قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی एक मुद्दत तक ह़ज़रते **इमाम जा'फ़र सादिक़** علیہ رحمۃُ الرّازِق की ख़िदमत में रहे। आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ को ह़ज़रत इमामे जा'फ़र सादिक़ علیہ رحمۃُ الرّازِق से इक्तिसाबे फ़ैज़ में इस क़दर मह़विय्यत थी कि कभी एक लम्ह़े के लिये भी दूसरी त़रफ़ तवज्जोह न की।

एक दिन ह़ज़रते **इमामे जा'फ़र सादिक़** علیہ رحمۃُ الرّازِق ने फ़रमाया। **बा यज़ीद** (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ اللَّطِیْف) ज़रा त़ाक़ से किताब उठा लाओ। आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर त़ाक़ कहां है ? ह़ज़रत इमामे जा'फ़र عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر ने फ़रमाया : तुम्हें यहां रहते हुए इतना अ़रसा गुज़र गया। अभी तक त़ाक़ का भी मा'लूम नहीं ? आप ने अ़र्ज़ की : **हुज़ूर ! मुझे तो आप की ज़ियारत और सोह़बते बा ब-र-कत ही से फ़ुरसत नहीं, त़ाक़ का ख़याल कैसे रखूं** ? ह़ज़रत इमामे जा'फ़र عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر येह सुन कर बहुत मसरूर हुए और फ़रमाया : **अगर तुम्हारा येह ह़ाल है तो बिस्त़ाम चले जाओ। तुम्हारा काम पूरा हो चुका है।**

(शाने औलिया, ह़ज़रत बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ, सफ़ह़ा : 73)

बस आप की जानिब ही मेरा दिल येह लगा हो
इस दिल में सिवा आप के कोई न बसा हो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾18﴿ मुर्शिदे कामिल की ना'लैन का अदब

ह़ज़रते **अमीर ख़ुसरू** عَلَيْهِ الرَّحْمَة को अपने मुर्शिद से न सिर्फ़ अ़क़ीदत व महब्बत थी, बल्कि कमाल द-रजे का इ़श्क़ भी था। इस की एक नादिर मिसाल येह है कि एक दफ़्आ़ किसी दरवेश ने **ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया** عَلَيْهِ الرَّحْمَة की ख़िदमत में आ कर सुवाल किया।

इत्तिफ़ाक़ से लंगरख़ाने में कोई ऐसी चीज़ मौजूद न थी जो उसे दी जाती। ख़्वाजा साहिब عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने दरवेश से कहा कि इत्तिफ़ाक़ से आज कोई शै न आई। अलबत्ता कल की फ़ुतूह़ तुम्हें दे दी जाएगी, मगर दूसरे दिन भी कोई शै नहीं आई। तब ख़्वाजा साहिब عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने अपने पाउं से ना'लैन शरीफ़ (या'नी जूतियां) उतार कर दरवेश को दे दी और रुख़्सत किया।

मुर्शिद की ख़ुश्बू **इत्तिफ़ाक़** से उस वक़्त अमीर ख़ुसरू عَلَيْهِ الرَّحْمَة बादशाह के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में वोही दरवेश मिल गया। आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة को जब पता चला कि येह शहरे मुर्शिद से आ रहा है तो, आप ने दरवेश से अपने पीरो मुर्शिद (ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया عَلَيْهِ الرَّحْمَة) की ख़बर पूछी। जब दरवेश गुफ़्तगू करने लगा तो अमीर ख़ुसरू عَلَيْهِ الرَّحْمَة बे साख़्ता बोल उठे। मुझे अपने पीर रोशन ज़मीर की ख़ुश्बू आ रही है। शायद उन की कोई निशानी तेरे पास है। दरवेश ने येह सुन कर ख़्वाजा साहिब عَلَيْهِ الرَّحْمَة की ना'लैन शरीफ़ सामने कर दी और कहा येह मुझे इनायत की गई हैं।

ना'लैन शरीफ़ **अमीर ख़ुसरू** عَلَيْهِ الرَّحْمَة अपने मुर्शिदे कामिल के ना'लैन शरीफ़ देख कर बेताब हो गए और दरवेश से कहा : क्या तुम इन्हें फ़रोख़्त करने को तय्यार हो ? दरवेश आमादा हो गया।

www.dawateislami.net

अमीर ख़ुसरू عَلَيْهِ الرَّحْمَة के पास उस वक़्त पांच लाख नुक़रई टिन्के थे जो सुल्तान ने दिये थे। **आप ने वोह सब के सब दरवेश को दे कर अपने मुर्शिदे कामिल के ना'लैन शरीफ़ ले लिये।** और अपने सर पर रख कर चल पड़े।

फिर मुर्शिद की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि "दरवेश ने ना'लैन के बदले में पांच लाख पर ही इक्तिफ़ा कर लिया। **वरना वोह इन ना'लैन शरीफ़ के बदले में मेरी जान भी मांगता तो भी मैं देने से दरेग़ न करता।"** (अन्वारुल अस्फ़िया, सफ़हा : 335)

ऐसा ग़म दे मुझे होश भी न रहे
मस्त अपना बना मेरे मुर्शिद पिया

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

19 जन्नती दरवाज़ा

ह़ज़रते पीर सय्यिद **गुलाम ह़ैदर अ़ली शाह साह़िब जलाल पूरी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक दफ़्आ ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन **बख़्तियार काकी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي की त़बीअ़त नासाज़ थी। ह़ज़रते **बाबा फ़रीद** गंजे शकर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر को हुक्म हुवा कि अ़त्तार की दूकान से जा कर नुस्ख़ा बंधवा लाएं। आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة बैठे दुकान में नुस्ख़ा बंधवा रहे थे कि शोर हुवा। एक बुज़ुर्ग पालकी में सुवार हो कर आ रहे हैं। और मुनादी (निदा करने वाला) उन के आगे आगे निदा कर रहा है : **जो इन की ज़ियारत करेगा (** اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ **) वोह जन्नती होगा।** लोग जूक़ दर जूक़ ज़ियारत को जा रहे थे। लेकिन बाबा साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) ही न की।

www.dawateislami.net

बल्कि जब पालकी नज़दीक आई तो दूकान के अन्दर के हिस्से में तशरीफ़ ले गए। हर चन्द लोगों ने इसरार किया मगर आप ने तवज्जोह न फ़रमाई। जब पालकी गुज़र गई तो आप नुस्ख़ा लिये मुर्शिदे कामिल की ख़िदमते बा ब-र-कत में हाज़िर होने के लिये रवाना हुए। हज़रते ख़्वाजा बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي ने देर से आने की वजह दरयाफ़्त की तो आप ने जवाब में तमाम वाक़ेआ अ़र्ज़ कर दिया।

आप के पीरो मुर्शिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने इर्शाद फ़रमाया फ़रीद (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) ! **क्या तुम्हें जन्नत की ज़रूरत न थी कि ज़ियारत न की** !

बाबा फ़रीद गंजे शकर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर मैं डरता था कि कहीं ज़ियारत कर के जन्नती हो जाऊं और जन्नत में आप का मक़ाम जाने कहां हो और इस त़रह़ क़ियामत के दिन आप की क़दम बोसी से महरूम रह जाऊं। **मेरे लिये जन्नत वोह जगह है जहां आप की हमनशीनी की ने'मत ह़ासिल हो।**

ह़ज़रते ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي अपने मुरीदे बा अदब की येह बात सुन कर बहुत ख़ुश हुए और जोश में आ कर फ़रमाया : ऐ फ़रीद ! उस की ज़ियारत करने से लोग आज के दिन जन्नती होते हैं तो तुम्हारे दरवाज़े से क़ियामत तक जो भी गुज़रेगा (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) वोह जन्नती होगा।

(ज़िक्रे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सफ़ह़ा : 421)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾20﴿ बा कमाल मुरीद

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت इक्कीस साल की उ़म्र में अपने वालिदे माजिद के साथ ह़ज़रत शाह **आले रसूल** मारेह़रवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में उन से बैअ़त की। उन के मुर्शिदे कामिल ने (आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت को मुरीद बनाने के साथ) **तमाम सिल्सिलों की इजाज़त व ख़िलाफ़त और सनदे ह़दीस भी अ़ता फ़रमाई।**

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, बाब बैअ़त व ख़िलाफ़त, जिल्द : 1, सफ़ह़ा : 39)

अ़-ज़-मते आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة **ह़ज़रत** शाह आले रसूल قُدِّسَ سِرُّهٗ ख़िलाफ़त व इजाज़त के मुआ़मले में बड़े मोह़तात़ थे। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت को मुरीद होते ही जुम्ला सलासिल की इजाज़त मिली तो ख़ानक़ाह के एक ह़ाज़िर बाश से न रहा गया। अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! आप के ख़ानदान में तो ख़िलाफ़त बड़ी रियाज़त और मुजाहिदे के बा'द दी जाती है। इन को आप ने फ़ौरन ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमा दी ? ह़ज़रत **शाह आले रसूल** قُدِّسَ سِرُّهٗ ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : लोग गन्दे दिल और नफ़्स ले कर आते हैं। उन की सफ़ाई पर ख़ास्सा वक़्त लगता है। मगर **येह पाकीज़गिये नफ़्स के साथ आए थे। सिर्फ़ निस्बत की ज़रूरत थी। वोह हम ने अ़ता कर दी।**

फिर ह़ाज़िरीन से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : मुझे मुद्दत से एक फ़िक्र परेशान किये हुए थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह आज दूर हो गई। क़ियामत में जब **अल्लाह** तआ़ला पूछेगा कि **आले रसूल** ! हमारे लिये क्या लाया है ? **तो मैं अपने मुरीद अह़मद रज़ा ख़ान** (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) **को पेश कर दूंगा।** फिर आप قُدِّسَ سِرُّهٗ ने आ'ला

www.dawateislami.net

ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت को वोह तमाम आ'माल व अश्ग़ाल अ़ता फ़रमा दिये। जो ख़ानवदए बरकातिया में सीना दर सीना चले आ रहे हैं। (अन्वारे रज़ा, सफ़ह़ा : 378)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

21 दो शहज़ादे

सय्यिदी **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت अपने मुर्शिदे कामिल की बे ह़द ता'ज़ीम व तकरीम करते थे और आप के मज़ारे पुर अन्वार पर आ़लिमाना व सूफ़ियाना वा'ज़ भी फ़रमाते थे।

एक मरतबा आप के पीरो मुर्शिद के सज्जादा नशीन साह़िब ने रखवाली के लिये दो कुत्तों की फ़रमाइश की तो आप अपने घर पहुंचे और अपने दोनों शहज़ादों को साथ ले कर ख़ानक़ाह में सज्जादा नशीन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आ़जिज़ी फ़रमाते हुए अ़र्ज़ की, कि **अह़मद रज़ा** येह दोनों साह़िबज़ादे [1] आप की ख़िदमत में पेश करता है। **येह दिन के वक़्त आप का काम काज करेंगे और रात के वक़्त रखवाली करना भी ख़ूब जानते हैं।**

(अन्वारे रज़ा, इमाम अह़मद रज़ा और ता'लीमाते तसव्वुफ़, सफ़ह़ा : 238)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1. आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने यहां आ़जिज़न अपने दोनों शहज़ादों के लिये लफ़्ज़ "कुत्ते" इस्ते'माल फ़रमाया। राक़िम ने साह़िबज़ादे लिखा है।

www.dawateislami.net

﴾22﴿ अनोखा अदब

ह़ज़रते पीर **जमाअ़त अ़ली शाह** साह़िब عَلَيْهِ الرَّحْمَة ह़ज़रते पीर **बढ़न शाह** कलानूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی का वाक़ेआ़ (अदब सीखाने के लिये) अकसर सुनाया करते थे कि उन्हों ने एक मरतबा अपने मुर्शिदे कामिल की साह़िबज़ादी के लिये ज़ेवर बनवाया। जब वोह तैयार हो गया तो सुनार ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ज़ेवर तैयार है। हुक्म हो तो ला कर वज़्न कर दूं। **पीर बढ़न शाह** साह़िब عَلَيْهِ الرَّحْمَة बोले (ठहरो) **वोह ज़ेवर हुज़ूर पीरो मुर्शिद की साह़िबज़ादी का सिंघार है मैं देखूंगा तो बे अदब हो जाऊंगा।** फिर जब आप बाहर तशरीफ़ ले गए तो सुनार ने ज़ेवर का वज़्न किया। (माहनामा अस्सलसबील, सिने 1947 ई.)

ऐसी नज़रें झुकें फिर कभी न उठें
दे दे ऐसी ह़या मेरे मुर्शिद पिया

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾23﴿ पीर ख़ाने का मेहमान

इसी त़रह़ एक दफ़्आ़ ह़ज़रते पीर **बढ़न शाह कलानूरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی के मुर्शिद के गाऊं का ख़ाकरूब (या'नी झाड़ू देने वाला) आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और आप की ग़ैर मौजूदगी में आप की रिहाइशगाह में रखे हुए चमड़े के एक बन्डल पर बैठ गया। आप ह़ुजरे से बाहर तशरीफ़ लाए तो ख़ाकरूब को पलंग पर उ़म्दा बिस्तर बिछा कर बिठाया, और ख़ुद्दाम को हुक्म दिया कि इस चमड़े

www.dawateislami.net

की जूतिया न बनवाना। **बल्कि डोल बनवा कर कुंवें पर रखवा देना क्यूंकि इस चमड़े पर पीर ख़ाने का मेहमान बैठ चुका है।**

(माहनामा अस्सलसबील, सिने 1964 ई.)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾24﴿ मुर्शिदे कामिल की औलाद का अदब

ह़ज़रते सुल्तानुत्तारीकीन ख़्वाजा मह़कमुद्दीन सीरानी उवैसी عَلَيْهِ الرَّحْمَة को आप के पीरो मुर्शिद قُدِّسَ سِرُّهٗ ने निकाह़ करने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया। तो आप ने अ़र्ज़ किया कि **अगर निकाह़ कर लूं और इस से औलाद पैदा हो तो मुझे ख़त़रा है कि वोह कहीं आप की औलाद की बे अदबी न कर दे।** आप के पीरो मुर्शिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد को आप का येह जवाब पसन्द आया और आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने बहुत दुआ़एं दी। (माहनामा अस्सलसबील, सिने 1964 ई.)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾25﴿ मुर्शिदे कामिल के मज़ार मुबारक की ता'ज़ीम

एक मरतबा ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي अपने मुरीदीन के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे और त़रीक़त से मुतअ़ल्लिक़ तरबिय्यत फ़रमा रहे थे। मगर दौराने बयान जब आप की नज़र दाईं त़रफ़ पड़ती तो आप (बा अदब अन्दाज़ में) खड़े हो जाते। तमाम लोग येह देख कर ह़ैरान थे कि पीरो मुर्शिद किस की ता'ज़ीम के लिये खड़े होते हैं। चुनान्चे उन्हों ने इस त़रह़ कई मरतबा पीरो मुर्शिद को क़ियाम करते देखा। (मगर अदब के बाइ़स किसी को सबब दरयाफ़्त करने की जुरअत न हुई)

www.dawateislami.net

अल ग़रज़ जब सब लोग वहां से चले गए, तो एक मुरीद जो मुर्शिद का मन्ज़ूरे नज़र था। उस ने मौक़अ़ पा कर अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर हमारी तरबिय्यत के दौरान बारहा आप ने क़ियाम फ़रमाया येह किस की ता'ज़ीम के लिये था?

हज़रते ख़्वाजा **मुईनुद्दीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने फ़रमाया कि इस त़रफ़ में पीरो मुर्शिद शैख़ उ़स्मान हारवनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی का मज़ार मुबारक है लिहाज़ा **जब मेरा अपने पीरो मुर्शिद के मज़ार मुबारक की त़रफ़ रुख़ होता तो मैं ता'ज़ीम के लिये उठ खड़ा होता।** पस, मैं अपने पीरो मुर्शिद के रौज़ए मुबारक के लिये क़ियाम करता था। (فوائد السالکین مع ھشت بہشت، ص ۱۳۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

﴾26﴿ हुज़ूर ग़ौसे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق की तशरीफ़ आवरी

शरक़ पूर शरीफ़ में ख़ानक़ाह शरीफ़ की मस्जिद की पेशानी पर **या शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** رَضِیَ اللهُ تعالٰی عَنْهُ **शैअन लिल्लाह** लिखा हुवा था और ह़ज़रत मियां **शेर मुह़म्मद** शरक़पूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة जो कि मादरज़ाद वली थे। अकसर बत़ौरे वज़ीफ़ा पढ़ते भी रहते थे।

एक बार कोई साह़िब जो करामाते औलिया के मुन्किर थे। ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। मगर मस्जिद के कत्बे पर ए'तेराज़ कर के बोले : क्या **हज़रत शैख़ जीलानी** (رَضِیَ اللهُ تعالٰی عَنْهُ) बग़दाद में आप की आवाज़ सुन लेते हैं। जो आप उन्हें यहां बैठ कर पुकारा करते हैं। येह सुन कर ह़ज़रत मियां **शेर मुह़म्मद** शरक़पूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة पर एक अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी हो गई और बुलन्द आवाज़ से पढ़ने लगे।

www.dawateislami.net

या शैख़ अ़ब्दल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **शैअन लिल्लाह ।** **करामाते औलिया का मुन्किर चीख़ मार कर एक दम बेहोश हो गया ।** जब होश आया तो ह़ज़रत मियां **शेर मुह़म्मद** शरक़पूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة के क़दमों पर गिर पड़ा । और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर भरी मह़फ़िल में ह़ाज़िरीन से कहा कि जब ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने **या शैख़ अ़ब्दल क़ादिर जीलानी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **शैअन लिल्लाह** कहा तो मैं ने हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म को अपनी आंख से ख़ानक़ाह में देखा वोह फ़रमा रहे हैं कि **जो हमें पुकारता है । हम उस के पास पहुंच जाते हैं मगर पुकारने वाला कोई शेर मुह़म्मद (عليه الرحمة) तो हो ।**

(अनीसे अहले सुन्नत, सफ़ह़ा :101)

येह अदाए दस्तगीरी कोई मेरे दिल से पूछे
वहीं आ गए मदद को मैं ने जब जहां पुकारा

या शैख़
अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رضی الله عنه
शैअन लिल्लाह

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ

आदाबे मुर्शिदे कामिल

हिस्सए सिवुम में.....

तसव्वुफ़ की इब्तिदा (सफ़ह़ा : 118 ता 122)

क़ल्ब के 40 ख़त़रात (सफ़ह़ा : 123 ता 130)

तसव्वुरे मुर्शिद का त़रीक़ा (सफ़ह़ा : 131 ता 136)

श-जरह शरीफ़ के फ़वाइद व ब-रकात

(सफ़ह़ा : 137 ता 143)

10 ईमान अफ़रोज़ सच्चे वाक़ेआ़त

(सफ़ह़ा : 144 ता 163)

वरक़ उलटिये....

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

आदाबे मुर्शिदे कामिल

(हिस्सए सिवुम)

आशिके़ आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं : "जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है।" (جامع الترمذی، کتاب الوتر، رقم ۴۸۴، ج ۲، ص ۲۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तसव्वुफ़ व त़रीक़त की इब्तिदा एक सुवाल का जवाब

तसव्वुफ़ की मायए नाज़ किताब "**ह़क़ाइक़ अ़नित्तसव्वुफ़**" में मुसन्निफ़ तसव्वुफ़ की इब्तिदा व अहम्मिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ बड़े मुदल्लल अन्दाज़ में तह़रीर फ़रमाते हैं कि बहुत से लोगों के ज़ेह्न में येह बात होती है कि इस्लाम की शुरूआ़त में **दा'वते तसव्वुफ़ व त़रीक़त** आ़म न थी । इस का ज़ुहूर तो सह़ाबा व ताबेईन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ज़माने के बा'द हुवा। इस का जवाब येह है कि सह़ाबा व ताबेईन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ज़माने में **नबिय्ये करीम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **से क़ुर्बे इत्तिसाल के सबब दा'वते तसव्वुफ़ की ज़रूरत न थी ।**

म-दनी वुजूहात

चूंकि उस मुतबर्रक दौर में लोग मुत्तक़ी, परहेज़गार, अहले मुजाहदा और त़ब्अ़न इबादात की त़रफ़ मुतवज्जेह थे । येह लोग

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी में जल्दी और दूसरों से सब्क़त ले जाने की कोशिश करते थे। उन लोगों को किसी ऐसे इल्म की ज़रूरत न थी जो उन की तसव्वुफ़ के मक़ासिद की त़रफ़ रहनुमाई करे। क्यूंकि **वोह इन मक़ासिद को अ़-मली त़ौर पर ह़ासिल कर चुके थे।**

म-दनी मिसाल

इस की मिसाल इस त़रह़ समझिये कि एक ख़ालिस "**अ़रब**" लुग़ते अ़-रबी को नस्लन जानता है। यहां तक कि वोह अश्आ़रे बलीग़ा की तराकीब से भी फ़ित्री त़ौर पर वाक़िफ़ है। अगर्चे वोह लुग़त, सर्फ़ व नह्व शे'र, उ़रूज़ और क़वाफ़ी के **क़ाइदों से ना आश्ना हो।** तो ऐसे शख़्स को सर्फ़ व नह्व और उ़रूज़ व क़वाफ़ी वग़ैरा पढ़ने की ह़ाजत नहीं। **इन चीज़ों के सीखने की ज़रूरत उस ग़ैरे अ़रब को है, जो लुग़ते अ़-रबी को समझने का ख़्वाहिश मन्द हो।**

अहले तसव्वुफ़ कौन

अगर्चे सह़ाबा व ताबेईन عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को "**मुतसव्वुफ़ीन**" का नाम नहीं दिया गया। मगर अ़मलन व फ़े'लन, वोह **अहले तसव्वुफ़** थे। क्यूंकि "**तसव्वुफ़ व त़रीक़त**" सारा का सारा येही है कि बन्दा नफ़्स के बजाए रब عَزَّوَجَلَّ के लिये ज़िन्दा हो। और अपने तमाम अवक़ात में रूह़ व क़ल्ब के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे। **येह तमाम कमालात सह़ाबए किराम** عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **में ब द-र-जए औला मौजूद थे।** उन्हों ने इस्लामी ए'तेक़ादात के इक़रार और फ़राइज़े इस्लाम की अदाएगी पर ही इक्तिफ़ा न किया, बल्कि उन के साथ साथ ज़ौक़ और वज्दान को भी मिलाया और **हुज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की पसन्दीदा जमीअ़ नफ़्ली इबादात पर भी अ़मल पैरा रहे, वोह मुह़र्रमात** (ह़राम कामों) **के**

www.dawateislami.net

इलावा मकरूहात से भी दूर रहे। हत्ता कि उन की बसीरतें मुनव्वर हो गईं। उन के कुलूब से हिक्मतों के चश्मे फूट पड़े और उन के अतराफ़ पर, अस्रारे रब्बानी का फ़ैज़ान हुवा।

बेहतरीन अदवार

येही हाल ताबेईन और तबए ताबेईन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का था। और येही "कुरूने सलासा" इस्लाम के बेहतरीन "**अदवार**" थे। जैसा कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अदवार" में बेहतरीन मेरा ज़माना है। फिर वोह जो इस के क़रीब है, फिर वोह जो इन से क़रीब है।** (بخاری و مسلم)

इल्मे तसव्वुफ़ की ज़रूरत

जब येह उम्दा तरीन "**अदवार**" गुज़र गए तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने से दूर होने के साथ साथ **रूहानिय्यत** भी कमज़ोर होने लगी। और लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी से ग़ाफ़िल होने लगे। तो अरबाबे रियाज़त व ज़ोहद ने, दा'वत इलल हक़ और तवज्जोह इलल्लाह के लिये **इल्मे तसव्वुफ़ की तदवीन की।**

मा'लूम हुवा ! "तसव्वुफ़ व तरीक़त" कोई नई इस्तिलाह नहीं, बल्कि येह सीरते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और हयाते सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से माख़ूज़ है। और तसव्वुफ़ व तरीक़त की असास, इस "उम्मत" के सलफ़ व सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن जलीलुल क़द्र सहाबा, ताबेईन, तबए ताबेईन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के तरीक़े पर है। और येह तरीक़ा ऐन इस्लाम से अ-मली मुताबिक़त का ही नाम है।

शैख़ अहमद ज़र्रूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقُدُّوس फ़रमाते हैं : जिस तरह उ-लमाए ज़ाहिर ने **हुदूदे शरइय्या** की हिफ़ाज़त की है, इसी तरह उ-लमाए तसव्वुफ़ ने शरीअत की रूह और आदाब की हिफ़ाज़त की है। (فوائد التصوف، ۲۹۵)

www.dawateislami.net

तसव्वुफ़ व त़रीक़त की अहम्मिय्यत

शरई अह़काम शरई अह़काम जिन के साथ इन्सान को **मुकल्लफ़** बनाया गया है। इन की दो अक़्साम हैं। एक वोह अह़काम जिन का तअ़ल्लुक़ **ज़ाहिरी आ'माल** से है। और दूसरे वोह अह़काम हैं, जिन का तअ़ल्लुक़ **बात़िनी आ'माल** से है। ब अल्फ़ाज़े दीगर एक क़िस्म के अह़काम का तअ़ल्लुक़ **जिस्मे इन्सानी** से है और दूसरे क़िस्म के अह़काम का तअ़ल्लुक़ **दिल के आ'माल** से है।

जिस्मानी आ'माल से मुतअ़ल्लिक़ अह़काम की दो क़िस्में हैं

(1) मामूराते जिस्मानी : (या'नी वोह जिस्मानी अफ़्आ़ल जिन के करने का हुक्म है) जैसे नमाज़, ज़कात, रोज़ा, ह़ज और दीगर फ़राइज़ व वाजिबात वग़ैरा।

(2) मुन्हिय्याते जिस्मानी : (या'नी वोह जिस्मानी आ'माल जिन से रुकने का हुक्म है) जैसे क़त्ल, ज़िना, शराब, चोरी व दीगर कबीरा गुनाह वग़ैरा।

आ'माले क़ल्बिय्या से मुतअ़ल्लिक़ अह़काम की भी दो क़िस्में हैं

(1) मामूराते क़ल्बिय्या : (या'नी वोह क़ल्बी अफ़्आ़ल जिन के करने का हुक्म है) जैसे ईमान बिल्लाह (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान), फ़िरिश्तों, आस्मानी किताबों और जमीअ़ अम्बिया व रुसुल عَلَيْهِمُ السَّلَام पर ईमान और इख़्लास, रिज़ा, सिद्क़, ख़ुशूअ़, तवक्कुल वग़ैरा।

www.dawateislami.net

(2) मुन्हियाते क़ल्बिय्या : (या'नी वोह क़ल्बी अफ़्आ़ल जिन से रुकने का हुक्म है) जैसे कुफ़्र, निफ़ाक़, तकब्बुर, उ़जब (ख़ुद पसन्दी) रिया, ग़ुरूर, कीना और ह़सद वग़ैरा। (ह़क़ाइक़ अ़नित्तसव्वुफ़, 26)

अहम तरीन आ'माल

अगर्चे दोनों क़िस्म के आ'माल (जिस्मानी और क़ल्बी) अहम हैं मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़दीक क़ल्ब से मुतअ़ल्लिक़ आ'माल **"जिस्मानी आ'माल"** से ज़ियादा अहम हैं। क्यूंकि बातिन, ज़ाहिर के लिये असास और जाए सुदूर है, **"आ'माले क़ल्बिय्या"** आ'माले ज़ाहिरा के लिये बुन्याद हैं। आ'माले क़ल्बिय्या में फ़साद के सबब आ'माले ज़ाहिरा में ख़लल पैदा हो जाता है।

क़ुरआन में **अल्लाह तबारक व तआ़ला** इर्शाद फ़रमाता है.....

فَمَنۡ كَانَ يَرۡجُوۡا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا۟ (سورة الكهف، آيت ١١٠، پاره ١٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो, उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।

इस आयत में दिल की सफ़ाई को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के यहां**, ह़ुज़ूर व शुहूद के लिये ज़रूरी शर्त़ ठहराया गया है।

www.dawateislami.net

क़ल्ब के चालीस ख़त़रात

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने कमो बेश **चालीस** क़ल्ब के ख़त़रात की निशानदही फ़रमाई है । (1) रिया (2) उ़जब (या'नी ख़ुद पसन्दी), (3) ह़सद, (4) कीना, (5) तकब्बुर, (6) हुब्बे मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़ की ख़्वाहिश), (7) हुब्बे जाह (या'नी इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश), (8) मह़ब्बते दुन्या, (9) त़-लबे शोहरत, (10) ता'ज़ीमे उमरा (11) तह़क़ीरे मसाकीन, (12) इत्तिबाए़ शहवत, (13) मुदाहनत (या'नी दीनी मुआ़मलात में सुस्ती) (14) कुफ़्राने नअ़्म (या'नी ना शुक्री) (15) ह़िर्स, (16) बुख़्ल, (17) तूले अमल (या'नी लम्बी उम्मीद) (18) सूए ज़न (बुरा गुमान), (19) इ़नादे ह़क़ (ह़क़ से दुश्मनी) (20) इसरारे बात़िल, (21) मक्र, (22) ग़दर (या'नी धोका), (23) ख़ियानत, (24) ग़फ़्लत, (25) क़स्वत (या'नी सख़्ती) (26) त़मअ़, (27) तमल्लुक (या'नी चापलूसी करना), (28) ए'तेमादे ख़ल्क़ (या'नी मख़्लूक़ पर ए'तेमाद), (29) निस्याने ख़ालिक़ (या'नी ख़ालिक़ को भूल जाना) (30) निस्याने मौत (या'नी मौत को भूल जाना), (31) जरात अ़लल्लाह, (32) निफ़ाक़, (33) इत्तिबाए़ शैत़ान, (34) बन्दगिये नफ़्स (या'नी नफ़्स की इत़ाअ़त), (35) रग़बते बत़ालत (या'नी बात़िल की त़रफ़ रग़बत), (36) कराहते अ़मल, (37) क़िल्लते ख़शिय्यत (या'नी ख़ौफ़ की कमी), (38) जज़्अ़ (या'नी बे सब्री), (39) अ़दमे ख़ुशूअ़ (या'नी ख़ुशूअ़ का न होना), (40) ग़ज़ब लिन्नफ़्स व तसाहिल फ़िल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मलात में सुस्ती करना) वग़ैरा । (फ़तावा अफ़्रीक़ा, सफ़ह़ा : 133)

www.dawateislami.net

मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام के नज़दीक क़ल्ब की नूरानिय्यत हासिल करने और उसे मज़कूरा ख़त़रात से बचाने के लिये **किसी कामिल मुर्शिद से मुरीद हो कर उस के मुबारक दामन से वाबस्ता होना ज़रूरी है । ताकि मुर्शिदे कामिल फ़ैज़े बात़िनी के ज़रीए ख़ुसूसी रहनुमाई फ़रमा कर बे नूर व सख़्त दिल को नूरानिय्यत व जिला (या 'नी ज़िन्दगी) अ़त़ा करे ।**

इस ज़िम्न में اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रिसाला **आदाबे मुर्शिदे कामिल** के हिस्सए अव्वल और हिस्सए दुवुम में शरीअ़त व त़रीक़त से मुतअ़ल्लिक़ अहम मा'लूमात जामेअ़ त़ौर पर पेश करने की सअ़्य की गई । अब हिस्सए सिवुम में **तसव्वुरे मुर्शिद की ब-र-कतें और श-जरह शरीफ़ पढ़ने के फ़वाइद** पेशे ख़िदमत हैं । इस का मुकम्मल तवज्जोह से मुत़ालआ़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बे शुमार मा'लूमात हासिल करने का ज़रीआ़ बनने के साथ साथ **"फ़ैज़े मुर्शिद के हुसूल"** के लिये भी रहनुमाई करेगा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें मुर्शिदे कामिल के दामन से **वाबस्तगी का ह़क़** अदा करने, और तसव्वुफ़ व त़रीक़त की इन अहम ता'लीमात को आ़म करने के सिल्सिले में अ़-मली कोशिश करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए । (اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم)

तसव्वुरे मुर्शिद

आ 'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के जद्दे मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिद शाह आले अह़मद अच्छे मियां قُدِّسَ سِرُّهٗ "आदाबुस्सालिकीन" में इर्शाद फ़रमाते हैं ! फ़ना के तीन द-रजे हैं ।

(1) फ़ना फ़िश्शैख़ (2) फ़ना फ़िर्रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم (3) फ़ना फ़िल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

विलायते ख़ास

आप मौलाना जामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامی की "नफ़्हातुल अनस" के ह़वाले से ज़िक्र करते हैं कि **आ़म विलायत** तो तमाम ईमान वालों को ह़ासिल है। मगर **ख़ास विलायत** (अहले त़रीक़त) में उन लोगों के लिये मख़्सूस है। जो फ़ना फ़िश्शैख़ के ज़रीए फ़नाफ़िर्रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हो कर फ़ना फ़िल्लाह हो गए। (शिराजुल अ़वारिफ़)

फ़ना फ़िश्शैख़

मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब बनने का आ'ला व अ़ज़ीम इन्आ़म पाने (या'नी फ़ना फ़िर्रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हो कर फ़ना फ़िल्लाह عَزَّوَجَلَّ होने) की **पहली सीढ़ी फ़ना फ़िश्शैख़ है।** या'नी सालिक अपने आप को मुर्शिद से अलग न समझे। बल्कि ख़याल करे कि मेरे जिस्म की ह़-रकत व सुकून मेरे मुर्शिद ही के इख़्तियार में है। और मेरा मुर्शिद ही मुझे समझ सकता है और ज़ाहिर व बात़िन की इस्लाह़ कर सकता है। अपने त़ौर त़रीक़ों से येह ज़ाहिर करे, कि अपने वुजूद पर इस का कोई इख़्तियार नहीं और त़र्ज़े अ़मल में रियाकारी और ख़ुद पसन्दी से बिल्कुल दूर रहे।

(मगर येह याद रहे कि) **फ़ना फ़िश्शैख़ की पहली मन्ज़िल तसव्वुरे मुर्शिद का मुकम्मल क़ाइम होना है।** इस से येह मा'लूम हुवा कि तसव्वुरे मुर्शिद मुरीदीन की तरक़्क़ी के लिये किस क़-दर अहम्मिय्यत का ह़ामिल है।

www.dawateislami.net

तसव्वुर की दलील

तिरमिज़ी शरीफ़ (जिल्द : 5, सफ़हा : 503, रक़म : 8) में ह़ज़रत **ह़सन बिन अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत मौजूद है कि उन्हों ने अपने मामूं हिन्द बिन अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का हुल्या मुबारका पूछा ताकि वोह अपने ज़ेह्न में मह़फ़ूज़ कर सकें।

उ़-लमाए किराम इस ह़दीस से **तसव्वुरे शैख़ की दलील लेते हैं।** मज़ीद अह़ादीस से भी येह साबित है कि सह़ाबी ऐसी ह़दीस बयान करते वक़्त फ़रमाते हैं : **"गोया मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देख रहा हूं।"** (صحیح البخاری، رقم ۶۹۲۹، ج۴، ص۳۸۰)

मवाहिबुल्लदुन्निया और **कुतुबे फ़िक़्ह** में भी इस बात की तसरीह़ मौजूद है कि रौज़ए रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़ाज़िरी के वक़्त ज़ाइर को चाहिये कि **हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस का तसव्वुर करे।** इन तमाम दलाइल से भी तसव्वुरे शैख़ का सुबूत मिलता है। (المواھب اللدنیہ، المقصد العاشر، الفصل الثانی من آداب الریارۃ، ج۴، ص۵۸۱)

तसव्वुर में आसानी के लिये

याद रहे कि जब तक मुरीद अपने मुर्शिद की ज़ात में अपने आप को गुम नहीं कर लेगा। आगे रास्ता नहीं पा सकेगा। **तसव्वुरे मुर्शिद** में कामयाबी ह़ासिल करने के लिये **मुरीद** को चाहिये कि अपने दिल में **मुर्शिद की मह़ब्बत** को ख़ूब बढ़ाए। जितनी मह़ब्बत ज़ियादा होगी, उतना ही **मुर्शिद के तसव्वुर** में आसानी होगी। मुर्शिद की ज़ात को अपनी **सोच का मह़वर** बनाने की कोशिश करे, मुर्शिदे कामिल के हर हर **अन्दाज़,** हर हर **आ़दत** और उन के **हर अ़मल** को ब ग़ौर देखे और इसे ख़ुद भी अपनाने की कोशिश करे। हर वक़्त उस के गुमान में **मुर्शिद का जल्वा** समाया रहे। चले तो

www.dawateislami.net

उन के अन्दाज़ में, बैठे तो सोचे कि मेरे मुर्शिद इस त़रह़ **बैठते** हैं, खाना खाए तो उन का अन्दाज़ अपनाए।

जहां मौक़अ़ मिले मुर्शिद की बातें बयान करे, उन के मल्फ़ूज़ात शरीफ़ की इशाअ़त करे, उन से ज़ाहिर होने वाली ब-र-कतों का **ख़ूब तज़किरा** करे ! कि येह पीरो मुर्शिद से मह़ब्बत की दलील है। जामेउ़स्सग़ीर में है कि **जिस चीज़ से जितनी ज़ियादा मह़ब्बत होती है उस का कसरत से ज़िक्र किया जाता है।**

(الجامع الصغیر مع فیض القدیر، حرف المیم، رقم ۸۳۱۲، ج ۶، ص ۴۰)

मह़बूब का ज़िक्र

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहल्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अख़्बारुल अख़्यार के मुक़द्दमे में इर्शाद फ़रमाते हैं कि आ़शिक़ को अपने मह़बूब का तज़किरा अच्छा लगता है, और मह़बूब भी आ़शिक़ का ज़िक्र करना पसन्द करता है। इन बुज़ुर्गों का तज़किरा ऐसी इबादत है जिसे हर आदमी हर ह़ाल में अदा कर सकता है और इस त़रह़ उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब नसीब हो सकता है। या'नी जब मुरीद के ज़ेह्न में हर वक़्त मुर्शिद का ख़याल रहेगा और वोह अपने मुर्शिदे कामिल का ज़िक्रे ख़ैर करता रहेगा तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ज़ेह्न तसव्वुर के लिये तय्यार होता चला जाएगा।** (अख़्बारुल अख़्यार, सफ़ह़ा : 6)

ज़रूरी बात मगर येह याद रहे कि मन्ज़िले मुराद तक वोही शख़्स पहुंच सकता है। **जो हर हर लम्ह़े मुर्शिदे कामिल का अदब मल्ह़ूज़ रखे।** चाहे सामने हो या दूर, वरना मुर्शिदे कामिल के फ़ैज़ से मह़रूम रहेगा। इस लिये मुरीद को चाहिये कि वोह अपने मुर्शिद की त़बीअ़त से वाक़िफ़ हो। ताकि उन के **ख़िलाफ़े मिज़ाज** कोई काम न सादिर हो जाए। बल्कि **अपने आप को उन कामों में ज़ियादा से ज़ियादा मश्ग़ूल रखे जिन कामों को मुर्शिदे कामिल पसन्द फ़रमाते हों।**

www.dawateislami.net

मसलन पीरो मुर्शिद बड़ों की **इताअ़त, सन्जीदगी** और **कुफ़्ले मदीना** (या'नी ज़बान, निगाह बल्कि अपने हर उ़ज़्व को **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ना फ़रमानी वाले कामों से बचाने की कोशिश) को पसन्द फ़रमाते हों, तो उन की पसन्द लाज़िमी अपनाए और **मुर्शिद के अ़ता कर्दा निज़ाम बिल ख़ुसूस मर्कज़ी मजलिसे शूरा व दीगर मजालिस और जिस के भी मा तहूत हैं उन** की इताअ़त करे, और सन्जीदा रहने की कोशिश करे। **वरना ज़ियादा बोलने वाला या फ़ुज़ूल बातों का आ़दी उल्टा नुक़्सान उठा सकता है।**

इसी त़रह़ अगर मुर्शिदे कामिल का दिल उस मुरीद से ज़ियादा ख़ुश होता है, जो येह ज़ेह्न रखता हो कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** तो मुरीद अगर मुर्शिदे कामिल से **ख़ुसूसी फ़ैज़** का त़लबगार है, तो उसे अपने पीरो मुर्शिद की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ अपने शबो रोज़ **म-दनी इन्आ़मात** की ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र रखते हुए **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बनाए और दीगर म-दनी कामों की तरक़्क़ी के लिये कोशिश में वक़्त गुज़ारे कि इस से पीरो मुर्शिद का दिल ख़ुश होगा। और वोह इस मुरीद पर तवज्जोहे ख़ास से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तसव्वुर के रास्ते की तमाम रुकावटें दूर फ़रमा देगा। फिर वोह ख़ुश नसीब मुरीद اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ब आसानी तसव्वुरे मुर्शिद का मक़्सद (या'नी **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रिज़ा वाली ज़िन्दगी) पा लेगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है!!!

इन्सान को कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये येह तसव्वुर रखना ज़रूरी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे देख रहा है! ताकि **येह म-दनी तसव्वुर उसे गुनाहों से रोके,** और नेकी की राह में रहनुमाई करे। क़ुरआने पाक में कई जगह इस **"म-दनी तसव्वुर"** की त़रफ़ ध्यान दिलाया गया है।

www.dawateislami.net

“चल मदीना” के सात हुरूफ़ की निस्बत से “7 क़ुरआनी आयात”

﴿۱﴾اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) बेशक **अल्लाह** हर वक़्त तुम्हें देख रहा है।

(النساء،۱پ۴)

﴿۲﴾اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) क्या न जाना ! कि **अल्लाह** देख रहा है।

(العلق۱۴پ۳۰)

﴿۳﴾اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ ग़ाइब नहीं।

(الفجر۱۴پ۳۰)

﴿۴﴾وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) और वोह तुम्हारे साथ है, तुम कहीं हो और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है। (سورہ الحدید:۴پ۲۷)

﴿۵﴾يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) **अल्लाह** जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है। (سورہ مؤمن:۱۹پ۲۴)

﴿۶﴾اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) और बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (سورہ الحشر۱۸پ۲۸)

﴿۷﴾اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है।

(سورہ البقرہ۱۱۰پ۱)

मज़्कूरा आयात से पता चला कि **अल्लाह** तआला सब को देख रहा है, वोह आंखों की चोरी और सीनों में छुपी हुई बातें भी जानता है और उस का इल्म हर शै पर हावी है। **अल्लाह तआला** की इन सिफ़ात पर मुस्तह्कम यक़ीन पैदा करने और इस यक़ीन के

www.dawateislami.net

ज़रीए अपनी बद ह़ाली की इस्लाह़ के लिये येह तसव्वुर जमाना कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **हमें देख रहा है**" बेह़द ज़रूरी है।

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत ऐसे करो कि गोया उसे देख रहे हो और अगर येह न हो सके, तो येह ज़रूर यक़ीन रखो कि वोह तुम्हें देख रहा है।**" (صحیح البخاری رقم ۵۰، ج۱، ص۳۱)

ह़क़ीक़ी कामयाबी मगर इन्सान के लिये बे देखे तसव्वुर मुश्किल होता है, क्यूंकि न तो हम ने अपने **प्यारे रब** عَزَّوَجَلَّ को देखा और न ही अपने प्यारे प्यारे **आक़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की। हमें अपने प्यारे प्यारे शहद से भी मीठे मुर्शिद से मह़ब्बत भी इसी लिये है और हम उन से अ़क़ीदत भी इसी लिये रखते हैं कि येह **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) के प्यारे हैं।

इस लिह़ाज़ से **अगर अपने पीरो मुर्शिद का तसव्वुर करने की कोशिश की जाए,** तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह शक्ले मुबा-रका आईनए ह़क़ नुमा बन जाएगी। कुछ अ़रसे कोशिश के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस (तसव्वुरे मुर्शिद की ब-रकत) से तसव्वुरे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ासिल होगा, और फिर पाक परवरदगार عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात पर भी ध्यान जम ही जाएगा, जो कि हमारा अस्ल मक़्सूद है। फिर हमें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह कामिल तसव्वुर भी ह़ासिल हो जाएगा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **हमें देख रहा है**" और येह तसव्वुर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें गुनाहों से बचने में भी मदद देगा। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले कामों में भी लगा देगा। और येही अस्ल कामयाबी है।

इमाम रब्बानी ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं ! "**तसव्वुरे मुर्शिद**" का क़ाइम हो जाना पीर व मुरीद के दरमियान कामिल निस्बत की अ़लामत है और **बारगाहे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **में पहुंचने का कोई रास्ता इस से ज़ियादा क़रीब का नहीं।** (मक्तूबात जिल्द सिवुम)

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहल्वी عليه الرحمة ने ''इन्तिबाहे फ़ी सलासिले औलियाउल्लाह'' में, और आ'ला ह़ज़रत عليه الرحمة ने ''अल याक़ूतुल वासित़ा'' में **''तसव्वुरे शैख़ और तसव्वुरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुदा तक पहुंचने का रास्ता बताया है।''** (इस लिये) कि तसव्वुफ़ में तसव्वुरे मुर्शिद के ज़रीए रूह़ानी तरबिय्यत होती है। (इन्तिबाहे फ़ी सलासिले औलियाउल्लाह, सफ़ह़ा : 41, 42)

''तसव्वुरे मुर्शिद का त़रीक़ा''

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल ब-रकत अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن यूं इर्शाद फ़रमाते हैं : **ख़ल्वत** (या'नी तन्हाई) में आवाज़ों से दूर, **रू ब मकाने शैख़** (या'नी मुर्शिद के घर की त़रफ़ मुंह कर के) और विसाल हो गया हो तो जिस त़रफ़ मज़ारे शैख़ हो उधर मुतवज्जेह बैठे। मह़्ज़ **ख़ामोश, बा अदब** ब कमाले ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़, **सूरते शैख़ का तसव्वुर** करे और अपने आप को उन के हुज़ूर जाने, और येह ख़याल जमाए कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अन्वार व फ़ैज़, **शैख़ के क़ल्ब** पर फ़ाइज़ हो रहे हैं। और मेरा क़ल्ब, **क़ल्बे शैख़ के नीचे** ब ह़ालते दर यूज़ह गरी (या'नी गदागरी) में लगा हुवा है और **इस में से अन्वारे फ़ुयूज़ उबल उबल कर मेरे दिल में आ रहे हैं।**

इस तसव्वुर को बढ़ाए, यहां तक कि जम जाए और तकल्लुफ़ की ह़ाजत न रहे। इस की इन्तिहा पर सूरते शैख़ (या'नी पीरो मुर्शिद का चेहरए मुबारक) ख़ुद मुतमस्सिल हो कर मुरीद के साथ रहेगी। और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (**अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की अ़त़ा से) हर काम में मदद करेगी **और इस राह में जो मुश्किल उसे पेश आएगी उस का ह़ल बताएगी।**

(अल वज़ीफ़तुल करीमा, सफ़ह़ा : 36)

www.dawateislami.net

तसव्वुरे मुर्शिद का एक और म-दनी त़रीक़ा

चल मदीना के मुक़द्दस सफ़र के दौरान जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़र्ज़ की गई कि हुज़ूर ! क्या **तसव्वुरे मुर्शिद** करना चाहिये ? तो आप ने फ़रमाया कि **त़रीक़त का मुआ़मला है मैं कैसे मन्अ़ कर सकता हूं** ! मज़ीद अ़र्ज़ की गई कि हुज़ूर ! **तसव्वुरे मुर्शिद** का त़रीक़ा क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : अल वज़ीफ़तुल करीमा में **आ'ला ह़ज़रत** عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने लिखा है। देख लें। जब इसरार बढ़ा तो आप ने इर्शाद फ़रमाया :

चाहें तो इस त़रह़ भी **तसव्वुर** कर सकते हैं कि मुरीद अपने पीरो मुर्शिद को सब्ज़ गुम्बद के सामने, दस्त बस्ता (या'नी हाथ बांधे), सर झुकाए गिर्या व ज़ारी फ़रमाते **तसव्वुर** करे। और येह तसव्वुर बांधे कि मैं भी अपने **पीरो मुर्शिद** के पीछे, सर झुकाए अश्कबार आंखों के साथ बा अदब मौजूद हूं और सब्ज़ गुम्बद से **मेरे पीरो मुर्शिद पर अन्वार व तजल्लियात की बारिश हो रही है।** और वोह तजल्लियात की बारिश **पीरो मुर्शिद** से **मुझ पर बरस रही है।** इसी त़रह़ तसव्वुर जमाने की कोशिश करे ह़त्ता कि इस में कामिल हो जाए। अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर अगर मुरीद इस त़रह़ तसव्वुरे मुर्शिद करे तो क्या होगा ?

इर्शाद फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मुर्शिद हर वक़्त उस के साथ होगा।** (मगर इस के लिये अपने क़ल्ब को आईना बनाना होगा, गुनाहों के ज़ंग को अपने दिल से दूर करना होगा।)

www.dawateislami.net

इब्तिदाई तसव्वुर के लिये एक म-दनी अन्दाज़

तसव्वुरे मुर्शिद की राह हमवार करने के लिये शुरूअ़ में इस त़रह़ करना भी फ़ाइदा मन्द हो सकता है कि रोज़ाना चन्द लम्हे ही सही, चाहे तो हर नमाज़ के बा'द अपने ज़ेह्न में येह तसव्वुर जमाने की कोशिश करे कि मैं ने अपने पीरो मुर्शिद को यहां **मुलाक़ात** फ़रमाते देखा, आप फ़ुलां मक़ाम पर **वुज़ू** फ़रमा रहे थे, मुझे फ़ुलां दिन **शफ़्क़त से सीने से लगाया था ।** मेरे मुर्शिद इस त़रह़ **बयान** फ़रमाते हैं : मैं फ़ुलां जगह **स-ह़री व इफ़्त़ारी** के वक़्त उन के साथ था, मेरे मुर्शिद किसी चीज़ का **इशारा** इस त़रह़ फ़रमाते हैं : मुझे उस दिन **मुस्कुरा कर** देखा था। या'नी **इस त़रह़ जितनी मरतबा मुलाक़ात हुई या कहीं भी ज़ियारत की सआ़दत मिली तो वोह तसव्वुर में लाने की कोशिश करे ।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ''तसव्वुरे मुर्शिद'' में बहुत आसानी होगी और मुर्शिद की मह़ब्बत में भी इज़ाफ़ा होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **जितनी अपने पीरो मुर्शिद से मह़ब्बत बढ़ेगी,** गुनाह से दिल बेज़ार होगा और नेकियों में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर दिल लग जाएगा।

तज़किरए मशाइख़े नक़्शबन्दिया में नक़्ल है कि **तसव्वुर** को यहां तक पक्का करना चाहिये कि तमाम ह-रकात व सकनात, निशस्त व बरख़ास्त ग़रज़ की हर फ़े'ल में, पेश्वा (या'नी मुर्शिद) की अदाएं आ जाएं और आख़िरे कार पेश्वा (या'नी मुर्शिद) की सूरत के मुशाबेह हो जाए कि **इसी से फिर आगे का रास्ता खुल जाता है ।**

www.dawateislami.net

"फिर तवज्जोह बढ़ा मेरे मुर्शिद अत्तार पिया" دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

के 26 हुरूफ़ की निस्बत से "छब्बीस" अश्आ़र

फिर तवज्जोह बढ़ा **मेरे मुर्शिद पिया**
नज़रें दिल पे जमा **मेरे मुर्शिद पिया**

नफ़्स हावी हुवा ह़ाल मेरा बुरा
तुझ से कब है छुपा **मेरे मुर्शिद पिया**

अब ले जल्दी ख़बर तेरी जानिब नज़र
मैं ने ली है लगा **मेरे मुर्शिद पिया**

सख़्त दिल हो चला अब क्या होगा मेरा
अब दे दिल को जिला **मेरे मुर्शिद पिया**

तेरी बस इक नज़र दिल पे हो जाए गर
पाएगा येह शिफ़ा **मेरे मुर्शिद पिया**

ऐसी नज़रें झुके फिर कभी न उठे
दे दे ऐसी ह़या **मेरे मुर्शिद पिया**

गर मैं चुप न रहा बोलता ही रहा
नामा होगा सियाह **मेरे मुर्शिद पिया**

बस तेरी याद हो दिल मेरा शाद हो
मुझ को मय वोह पिला **मेरे मुर्शिद पिया**

ऐसा ग़म दे मुझे होश ही न रहे
मस्त अपना बना **मेरे मुर्शिद पिया**

हर बुरे काम से ख़्वाहिशे नाम से
दूर रखना सदा **मेरे मुर्शिद पिया**

मुझ गुनहगार को इस रियाकार को
तू ही मुख़्लिस बना **मेरे मुर्शिद पिया**

शहवतों की त़लब ख़त्म हो जाए अब
कर दो तक़्वा अ़त़ा **मेरे मुर्शिद पिया**

जो मिले शुक्र हो कल की ना फ़िक्र हो
हो क़नाअ़त अ़त़ा **मेरे मुर्शिद पिया**

www.dawateislami.net

डाल दी क़ल्ब में अ़-ज़-मते मुस्त़फ़ा
तू रज़ा की ज़िया **मेरे मुर्शिद पिया**

गुल्शने सुन्निय्यत पे थी मज़्लूमिय्यत
तू ने दी है बक़ा **मेरे मुर्शिद पिया**

तेरा एह़सान है सुन्नते आ़म है
दीं का डंका बजा **मेरे मुर्शिद पिया**

ह़िक्मतों से तेरी हर सू धूम पड़ी
तू जमाले रज़ा मेरे **मेरे मुर्शिद पिया**

है येह फ़ज़्ले ख़ुदा कि है तुझ पे फ़िदा
बच्चा हो या बड़ा **मेरे मुर्शिद पिया**

हो नमाज़ें अदा पहली सफ़ में सदा
हो ख़ुशूअ़ भी अ़त़ा **मेरे मुर्शिद पिया**

नफ़्ल सारे पढ़ूं और अदा मैं करूं
सुन्नते क़ब्लिया **मेरे मुर्शिद पिया**

बा वुज़ू मैं रहूं, एक रुकूअ़ भी पढ़ूं
कन्ज़ुल ईमान सदा **मेरे मुर्शिद पिया**

पूरे दिन हो नसीब सब्ज़ इ़मामा शरीफ़
सुन्नते दाइमा **मेरे मुर्शिद पिया**

क़ाफ़िलों में सफ़र कर लूं मैं उ़म्र भर
जज़्बा हो वोह अ़त़ा **मेरे मुर्शिद पिया**

मुझ से बदकार से इस गुनहगार से
रहना राज़ी सदा **मेरे मुर्शिद पिया**

आख़िरी वक़्त है और बड़ा सख़्त है
मेरा ईमां बचा **मेरे मुर्शिद पिया**

एक अ़जब था मज़ा जब येह तेरा गदा
तेरी जानिब चला **मेरे मुर्शिद पिया**

("21 मनाक़िबे अ़त़्तार" स. 7, मत़बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

www.dawateislami.net

म-दनी मश्वरा

जो इस्लामी बहन या इस्लामी भाई येह चाहते हैं कि इस्तिक़ामत के साथ हमारे शबो रोज़ **तसव्वुरे मुर्शिद** की ब-र-कतों से मा'मूर रहे । तो पिछले सफ़हा पर दिये गए मन्क़बत के 26 अश्आ़र याद कर ले और वक़्ते मुक़र्ररा पर रोज़ाना कुछ देर तसव्वुरे मुर्शिद करते हुए इन अश्आ़र के ज़रीए बारगाहे मुर्शिद में इस्तिग़ासा पेश करें इस की आ़दत बनाने के लिये **इब्तिदा** में पहले हफ़्ते रोज़ाना कम अज़ कम **एक मिनट** तसव्वुर करें, फिर दूसरे हफ़्ते **दो मिनट** और इस त़रह़ वक़्त बढ़ाते चले जाएं । ताकि नफ़्स पर गिरां भी न गुज़रे और **तसव्वुरे मुर्शिद** की कोशिश भी शुरूअ़ की जा सके ।

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द तसव्वुरे मुर्शिद की ब-र-कतें ज़ाहिर होना शुरूअ़ होंगी और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम येह ख़याल जमाने में कामयाब हो जाएंगे कि

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें देख रहा है ।

www.dawateislami.net

शजरह शरीफ़ पढ़ने के फ़वाइद और ब-र-कतें

आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं : "बेशक तुम्हारे नाम बमअ़ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो।" (مصنف عبد الرزاق ج۲ص۲۱٤ رقم الحدیث ۳۱۱۱ مطبوعہ ادارۃ القرآن کراچی)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अवरादो वज़ाइफ़

ह़ज़रते अ़ब्दुल क़ादिर ईसा शाज़ली عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं : "**विर्द**" मुफ़रद है। जो मुक़र्रर वज़ीफ़े को कहते हैं। इस की जम्अ़ "**अवराद**" है। मुरीदीन को बा'दे नमाज़े फ़ज्र (या मुख़्तलिफ़ अवक़ात में) जिन **अवरादो वज़ाइफ़** के पढ़ने की मशाइख़े किराम तल्क़ीन करते हैं, वोह अहले त़रीक़त के नज़दीक **अवरादो वज़ाइफ़** कहलाते हैं। लुग़त में "**अवराद**" के मा'ना (आने वाला) है। मशाइख़े किराम की इस्ति़लाह़ में क़ल्ब पर अन्वारे इलाही عَزَّوَجَلَّ के नुज़ूल को "**वारिद**" कहते हैं। **जिस के सबब कुलूब मुतह़र्रिक होते हैं।** (حقائق عن التصوف، الباب الثانی، الذکر، ورد الصوفیۃ ودلیلہ من الکتاب والسنۃ، ص۲۳۳)

www.dawateislami.net

मशाइख़े किराम ने राहे त़रीक़त इख़्तियार करने वालों को बड़ी सख़्ती से "**अवराद**" व "**वज़ाइफ़**" की पाबन्दी की तल्क़ीन की है और उन्हें सुस्ती या फ़राग़त के इन्तिज़ार से बड़ा डराया है। क्यूंकि उ़म्र जल्द ख़त्म होने वाली है **और दुन्यावी मशाग़िल ख़त्म होने की बजाए बढ़ते रहते हैं।** अ़त़ाउल्लाह عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं : फ़राग़त मिलने तक "**आ'माल**" व "**अवराद**" को छोड़ना **शैत़ानी मक्रो फ़रेब** है। (तसव्वुफ़ के ह़क़ाइक़, स. 233)

श-ज-रए आ़लिया

मशाइख़े किराम का येह दस्तूर रहा है कि वोह अपने मुरीदीन व त़ालिबीन को एक श-जरह शरीफ़ भी अ़त़ा फ़रमाते हैं जिस में सिल्सिलए आ़लिया के तमाम मशाइख़ के नाम और ज़रूरी वज़ाइफ़ और मख़्सूस हिदायात भी होती हैं।

श-जरह शरीफ़ में सिल्सिलए आ़लिया के मशाइख़ के नाम, बित्तरतीब इस त़रह़ लिखे होते हैं कि सिल्सिला नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचता है। इस **श-ज-रए आ़लिया** को पढ़ने की तल्क़ीन इस लिये भी की जाती हैं कि जब कोई "**श-ज-रए आ़लिया**" पढ़ेगा तो बार बार अपने **मशाइख़े किराम के नाम** लेने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नाम भी याद होने के साथ हर बार ईसाले सवाब करने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ औलियाए कामिलीन के फ़ुयूज़ात भी ह़ासिल होंगे।

(येह त़ै शुदा अम्र है कि औलियाए किराम अपने चाहने वालों और ईसाले सवाब भेजने वालों को नफ़्अ़ देते हैं)

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के अ़ता कर्दा श-जरह शरीफ़ पढ़ने के फ़वाइद पर श-जरह के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से 4 म-दनी फूल

पहला म-दनी फूल रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक, अपने इत्तिसाल (या'नी सिल्सिले के मिलने) की सनद का ह़िफ़्ज़, (यक़ीनन सआ़दत) ।

या'नी मुरीद को जब येह याद रहेगा कि मैं ने जिस मुर्शिदे कामिल के हाथ में हाथ दिया है, इन का सिल्सिला इन मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम से होता हुवा नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचता है, तो उस के दिल में "**अपने मशाइख़**" की मह़ब्बत मज़ीद जां गुज़ीं होगी । क्यूंकि अपने पीरो मुर्शिद और सिल्सिले के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की मह़ब्बत ही कामयाबी की अस्ल है ।

मुर्शिदे कामिल से मह़ब्बत का सदक़ा

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे बुज़ुर्ग वार (मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن) के शागिर्द, **ब-रकात अह़मद साह़िब** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) मेरे पीर भाई भी थे । और ह़ज़रत पीरो मुर्शिद (सय्यिदी आले रसूल عَلَيْهِ الرَّحْمَة) पर मर मिटने वाले थे । ऐसा कम ही हुवा होगा कि वोह अपने पीरो मुर्शिद (सय्यिदी आले रसूल عَلَيْهِ الرَّحْمَة) का नाम मुबारक लेते हों और उन की आंखों से आंसूं न बहें । (पीरो मुर्शिद से ऐसी मह़ब्बत का ऐसा सदक़ा मिला) कि जब उन का इन्तिक़ाल हुवा और मैं दफ़्न के वक़्त उन की क़ब्र में उतरा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे बिला मुबालग़ा वहां वोह ख़ुश्बू मह़सूस हुई, **जो पहली बार रौज़ए रसूल** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **के क़रीब पाई थी ।**

www.dawateislami.net

इन (ब-रकात अह़मद साहि़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ) के इन्तिक़ाल के दिन मौलवी सय्यिद अमीर अह़मद साहि़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ख़्वाब में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए, देखा कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم घोड़े पर तशरीफ़ ले जाते हैं। अ़र्ज़ कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कहां तशरीफ़ ले जाते हैं ? फ़रमाया : ब-रकात अह़मद के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने !

आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت इर्शाद फ़रमाते हैं : येह वोही नामे अह़मद صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ब-र-कतें थीं जो इन्हें (या'नी ब-रकात अह़मद साहि़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को) अपने पीरो मुर्शिद से मह़ब्बत करने के सबब ह़ासिल हुई। (मल्फ़ूज़ात शरीफ़, हि़स्सए दुवुम, सफ़ह़ा : 173)

दूसरा म-दनी फूल **सालिह़ीन** का ज़िक्र मूजिबे रह़मत (या'नी रह़मत के नाज़िल होने का सबब) है। **ह़दीस शरीफ़** में है कि "नेक लोगों का ज़िक्र मा'सिय्यत (या'नी गुनाहों) को धोता है।" एक और रिवायत में है कि नेक लोगों के तज़किरे के वक़्त (**अल्लाह** तआ़ला) की रह़मत नाज़िल होती है। (कश्फ़ुल ख़फ़ा, जिल्द : 2, स. 65)

आ़रिफ़ बिल्लाह सय्यिद अ़ब्दुल वाहि़द बलगरामी सब्ए़ सनाबिल में फ़रमाते हैं मशाइख़े किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلام का ज़िक्र सच्चे मुरीदों के ईमान को ताज़ा करता है और **उन के वाक़ेआ़त, मुरीदीन के ईमान पर तजल्लियां डालते हैं।**

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی अख़्बारुल अख़्यार के मुक़द्दमे में फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला के बर गुज़ीदा बन्दों का तज़किरा **बाइसे रह़मत, क़ुर्बे इलाही है।**

(अख़्बारुल अख़्यार, स. 6)

www.dawateislami.net

तीसरा म-दनी फूल नाम बनाम अपने आक़ायाने ने'मत (या'नी सिल्सिले के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ) को ईसाले सवाब, कि इन की बारगाह से **मूजिबे नज़रे इनायत** (या'नी नज़रे करम होने का सबब) **है**।

जब मुरीद **श-जरए आ़लिया** पाबन्दी से पढ़ता है और सिल्सिले के बुज़ुर्गों की अरवाह़े मुक़द्दसा को **ईसाले सवाब** भी करता है तो इस से उन बुज़ुर्गों की अरवाह़े मुक़द्दसा ख़ुश होती हैं। और ईसाले सवाब करने वाले मुरीद पर **ख़ुसूसी नज़रे इनायत** की जाती है। जिस से मुरीद को दीनी व दुन्यवी बे शुमार ब-र-कतें ह़ासिल होती हैं और फ़ाइदा मिलता है।

चौथा म-दनी फूल **जब येह** (या'नी श-ज-रए आ़लिया पढ़ने वाला) **अवक़ाते सलामत** (या'नी राह़त) **में उन का** (या'नी अपने सिल्सिले के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ का) **नाम लेवा रहेगा तो वोह अवक़ाते मुसीबत** (या'नी किसी भी परेशानी और मुश्किल के वक़्त), **इस के दस्तगीर होंगे।** (या'नी इस की मदद फ़रमाएंगे)

सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं: "आराम की ह़ालत में ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को पहचान वोह तुझे सख़्ती में पहचानेगा।" (या'नी तेरे लिये आसानी फ़राहम करेगा)

(الجامع الصغیر مع فیض القدیر، حرف التاء، رقم ۳۳۱۷، ج ۳ ص ۳۳۱)

मज़ीद येह कि श-जरह शरीफ़ में दिये हुए ज़रूरी "**अवरादो वज़ाइफ़**" और मख़्सूस हिदायात पढ़ने से मुरीद को अपना वोह अ़हद भी याद रहेगा जो उस ने **मुर्शिदे कामिल** के हाथ में हाथ दे कर किया था, नीज़ "**अवरादो वज़ाइफ़**" पढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उसे दीनो दुन्या की बे शुमार ब-र-कतें भी ह़ासिल होंगी।

www.dawateislami.net

इजाज़ते मुर्शिद "अवरादो वज़ाइफ़" पढ़ने के लिये ज़रूरी है कि मुरीद सिर्फ़ अपने मुर्शिदे कामिल के दिये हुए अवरादो वज़ाइफ़ में ही मश्ग़ूल रहे। दीगर किताबों में से लिये हुए या किसी और की त़रफ़ से मिलने वाले वज़ाइफ़ को तर्क कर दे और कोशिश करे कि **बिग़ैर इजाज़ते मुर्शिद** किसी विर्द या वज़ीफ़े में मश्ग़ूल न हो। क्यूंकि बिग़ैर इजाज़ते मुर्शिद किसी विर्द या वज़ीफ़े में मश्ग़ूलिय्यत, मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه के नज़दीक त़रीक़त में ना क़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान का सबब बन सकती है।

ज़रूरी एह़तियात़ अश्शैख़ अबुल मवाहिब **सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي अपनी मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़ अल अन्वारुल क़ुदसिय्या फ़ी मा'रिफ़ते क़वाइदुस्सूफ़िया में इर्शाद फ़रमाते हैं कि मुरीद को लाइक़ नहीं, कि वोह अपने **मुर्शिद की इजाज़त** के बिग़ैर किसी वज़ीफ़े में मश्ग़ूल हो। बल्कि मुर्शिद को जाइज़ है, कि वोह अपने मुरीद को एक वज़ीफ़े के तर्क करने और एक दूसरे वज़ीफ़े के इख़्तियार करने का हुक्म फ़रमाए। जब मुर्शिद मुरीद को किसी वज़ीफ़े के तर्क करने का हुक्म फ़रमाए, तो उस को चाहिये कि **फ़ौरन ही हुक्मे मुर्शिद की ता'मील करे। मुरीद को अपने दिल में कोई ए'तेराज़ लाना भी जाइज़ नहीं।** मसलन दिल में यूं कहे कि वोह वज़ीफ़ा तो अच्छा था, मुर्शिद ने मुझे उस से क्यूं रोका। (इन ही वुजूहात की बिना पर मुरीद तरक़्क़ी नहीं कर पाता)

मुमानअ़त की हिक्मत बसा अवक़ात मुर्शिद किसी वज़ीफ़े में मुरीद का नुक़्सान देखता है। मसलन इस **वज़ीफ़े** से मुरीद के **इख़्लास** को सख़्त नुक़्सान पहुंच रहा है।

इसी त़रह़ बहुत से आ'माल, ऐसे होते हैं जो **इन्दश्शरअ़ अफ़्ज़ल होते हैं** लेकिन जब इन में नफ़्स का कोई अ़मल दख़्ल हो

www.dawateislami.net

तो वोह **अमल मफ़्ज़ूल** (या'नी कम दरजे वाले) **हो जाते हैं** और मुरीद को इन चीज़ों का पता भी नहीं चलता।

लिहाज़ा मुरीद को चाहिये कि वोह हर वक़्त हुक्म की ता'मील ही करता रहे और अपने आप को वस्वसों के आने और शुबहात के पैदा होने से बचाए। (अन्वारुल कुदसिय्या)

इजाज़त की ब-रकत किसी भी विर्द या वज़ीफ़े की कामिल ब-र-कतें हासिल करने और इस में हक़ीक़ी कामयाबी के लिये अवरादो वज़ाइफ़ की **मुर्शिदे कामिल** से इजाज़त बहुत फ़ाइदा देती है और इन की इजाज़त के तहूत पढ़े जाने वाले **"अवरादो वज़ाइफ़" के ज़रीए ज़ाहिर होने वाले फ़ुयूज़ो ब-रकात की बात ही कुछ और होती है।**

म-दनी हिक्मत **वज़ाइफ़** की इजाज़त में एक हिक्मत येह भी है कि मुर्शिदे पाक अपने अ़ता कर्दा **"अवरादो वज़ाइफ़"** से मुतअ़ल्लिक़ तमाम **ज़ाहिरी व बातिनी** उमूर की ता'लीम देने के इलावा मुकम्मल तवज्जोह भी फ़रमाएं। येह बातिनी तवज्जोह **"अवरादो वज़ाइफ़"** में कीमिया का असर रखती है।

रिज़ाए इलाही **बा'ज़** अवक़ात लोग किसी वलिय्ये कामिल से अ़र्ज़ करते हैं कि फ़ुलां मुश्किल दरपेश है तो वलिय्ये कामिल इल्हामे इलाही عَزَّوَجَلَّ से बताते हैं कि फ़ुलां वज़ीफ़ा पढ़ो या फ़ुलां काम करो (मसलन म-दनी इन्आ़मात का फ़ार्म हर माह पुर कर के जम्अ़ कराएं या म-दनी क़ाफ़िले के ज़रीए राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करें) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ काम हो जाएगा। **तो इस वज़ीफ़े** (या बताए हुए काम से ज़ाहिर होने वाली) **ब-र-कत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उन वलिय्ये कामिल की ही होती है।**

लिहाज़ा अपने पीरो मुर्शिद के पसन्दीदा उमूर के तहूत अपना मा'मूल रखने में ही दुन्या और आख़िरत की बेहतरी है।

www.dawateislami.net

"श-ज-रए अ़त्तारिय्या" के दस हुरूफ़ की निस्बत से 10 हैरत अंगेज़ सच्चे वाक़ेआ़त

1 बिच्छू से पनाह

बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई ने ह़ल्फ़िया बताया कि अन्दरूने सिन्ध आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान **श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या** से वोह विर्द जिसे अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मुरीदीन व त़ालिबीन को पढ़ने की इजाज़त दी है।

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ O

जिस की फ़ज़ीलत येह है कि जो सुब्ह़ और शाम तीन तीन बार इस दुआ़ को पढ़ ले तो (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) सांप, बिच्छू वग़ैरा मूज़िय्यात से पनाह में रहेगा। (अल वज़ीफ़तुल करीमा, सफ़ह़ा : 10,11)

तमाम शु-रकाए क़ाफ़िला इजतिमाई त़ौर पर येह दुआ़ पढ़ते थे। बारिश के दिन थे, और क़ियाम मस्जिद में था, क़रीब में खेत भी थे। एक इस्लामी भाई फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दे कर फ़ारिग़ हुए तो देखा कि उन के नीचे एक **ख़ौफ़नाक बिच्छू** जाने कब से बैठा था।

www.dawateislami.net

मगर चूंकि वोह श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या से मज़्कूरा दुआ़ पढ़ चुके थे इस लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस बिच्छू को डंक मारने की जुरअत न हुई और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से **इस बड़ी मुसीबत से मह़फ़ूज़ रहे ।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾2﴿ सांप बिग़ैर डसे लौट गया

वोही इस्लामी भाई बताते हैं कि रात जब सोए, तो किसी ने देखा कि खेतों की त़रफ़ से एक **ख़ौफ़नाक काला सांप** आया और क़रीब सोए हुए इस्लामी भाई के सीने पर अपना ख़ौफ़नाक फ़न फैलाए कुंडली मार कर काफ़ी देर तक मौजूद रहा । ख़ौफ़नाक सांप अपना फ़न बार बार डसने के अन्दाज़ में उन के चेहरे की त़रफ़ नीचे करता मगर फिर ऊपर कर लेता । ऐसा मह़सूस होता था जैसे उसे किसी ने रोक रखा हो । मगर चूंकि वोह इस्लामी भाई **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **से मुरीद थे और उन के अ़त़ा कर्दा श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या में दी हुई मज़्कूरा दुआ़ पढ़ चुके थे । लिहाज़ा इस की ब-र-कत से** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **उस सांप को भी डसने की हिम्मत न हुई और वोह कुछ देर बा'द वापस लौट गया । और** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **वोह इस्लामी भाई भी इस आफ़त से मह़फ़ूज़ रहे ।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

﴾3﴿ चादर में बिच्छू

सूबा पंजाब के मुबल्लिग़े **दा'वते इस्लामी** जिन का मज़्कूरा विर्द का पाबन्दी के साथ मा'मूल था। ह़ल्फ़िया बताया कि मैं एक बार म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान जब सोने लैटा तो मुझे पेट के क़रीब चादर में किसी जानदार शै की मौजूदगी का एह़सास हुवा। मैं ने चादर को हिलाया और दोबारा सोने की कोशिश करने लगा मगर कुछ देर बा'द फिर अ़जीब सरसराहट सी मह़सूस हुई। मैं ने फिर चादर पर हाथ फेरा और चादर को अच्छी त़रह़ हिला कर देखा मगर पता न चला कुछ देर बाद जब दोबारा अ़जीब सी पुर असरार सरसराहट सी हुई तो मैं ने तश्वीश में आ कर जैसे ही चादर को झाड़ा तो दम ब ख़ुद रह गया। एक **काला ख़ौफ़नाक बिच्छू** मेरी चादर से बाहर आ गिरा मैं ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया कि उस ने मुझे श-जरह शरीफ़ के मज़्कूरा विर्द पढ़ने की ब-र-कत से बिच्छू के शर से मह़फ़ूज़ रखा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ बिच्छू का ज़ह्र

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के शहर सख्खर के मुक़ीम **इस्लामी भाई** ने ह़ल्फ़िया बताया कि मुझे दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से पहले एक मरतबा बिच्छू डंक मार चुका था। मैं इस के ज़ह्र की तकलीफ़ की शिद्दत बयान नहीं कर सकता। डॉक्टर के मुत़ाबिक़ मुझे नई ज़िन्दगी मिली है।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने के साथ साथ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه से मुरीद भी हो गया। और श-ज-रए अ़त्तारिय्या के अवराद का मा'मूल बनाया। मज़्कूरा विर्द भी मेरे मा'मूल में था। एक बार मुझे मह़सूस हुवा चादर में कोई जानवर है। मैं ने चादर लपेट कर पकड़ लिया और बा क़ाइदा उसे हाथ से हिला हिला कर देखने लगा कि येह कोई कीड़ा है। काफ़ी देर हिलाने के बा'द जब मैं समझ नहीं पाया तो उसे नीचे डाला। तो मेरी चीख़ निकल गई। वोह एक ख़ौफ़नाक बिच्छू था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बार बार छूने के बा वुजूद **एक वलिय्ये कामिल के अ़ता कर्दा विर्द पढ़ने की ब-रकत से उसे डंक मारने की जुरअत न हुई।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾5﴿ बिफरा हुवा सांप

मदीनतुल औलिया (मुल्तान शरीफ़) के मद्रसतुल मदीना के नाज़िम ने श-ज-रए अ़त्तारिय्या के मज़्कूरा विर्द की ब-र-कत को सुना तो अपना सच्चा वाक़ेआ ह़ल्फ़िया बताया कि मैं आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करते हुए एक मस्जिद में क़ियाम पज़ीर था। बा'दे मग़रिब शु-रकाए क़ाफ़िला सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर खाना खा रहे थे। बा'दे त़आ़म मैं ने बरतन समेटना शुरूअ़ किये, दस्तर ख़्वान से हड्डियां वग़ैरा चुनने लगा। मस्जिद में रोशनी काफ़ी मधम थी। कुछ फ़ासिले पर एक बड़ी हड्डी रखी मह़सूस हुई, हाथ बढ़ा कर जैसे ही उठाया तो वोह कोई जानदार शै थी

www.dawateislami.net

जो हाथ में मचलने लगी। मैं ने घबरा कर उसे छोड़ दिया दोबारा जैसे ही उठाने के लिये हाथ बढ़ाया तो **मेरी चीख़ निकलते निकलते रह गई** और मुझ पर **सक्ता** त़ारी हो गया। सामने एक ख़ौफ़नाक **सांप** कुंडली मारे मुंह खोले ह़म्ले के लिये तैयार था। मैं जिसे हड्डी समझा था वोह दर ह़क़ीक़त **सांप** था। जो मुंह में छुपकली पकड़े कुंडली मार कर निगलने में मस्रूफ़ था। मेरे उठाने पर **सांप** का शिकार मुंह से निकल गया। और वोह बिफर कर ख़ौफ़नाक अन्दाज़ में मेरे सामने ह़म्ले के लिये तय्यार था मगर ऐसा लगता था कि **किसी ग़ैबी त़ाक़त ने उसे रोक रखा था,** शु-रकाए क़ाफ़िला में से एक इस्लामी भाई ने दूर से ईंट मारी तो वोह कुचला गया और ज़ख़्मी हो कर तड़पने लगा। मज़ीद ज़र्ब पड़ने पर आख़िरे कार वोह मूज़ी हलाक हो गया। और मैं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ श-ज-रए अ़त्त़ारिय्या की मज़्कूरा दुआ़ सुब्ह़ो शाम पढ़ने की ब-र-कत से सांप हाथ में पकड़ने के बा वुजूद उस के डसने से मह़फ़ूज़ रहा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾6﴿ ज़हरीला डंक

जनूबी अफ़्रीक़ा के शहर (जोहानिसबर्ग) में 26 माह के लिये सफ़र करने वाले इस्लामी भाई जिन्हें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी वकालत के मन्सब से भी नवाज़ा है, या'नी सिल्सिलए त़रीक़त में उन्हें **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ का मुरीद बनाने की इजाज़त है। उन्हों ने (बैरूने मुल्क सफ़र से पहले)

www.dawateislami.net

ह़ल्फ़िया बताया कि मैं आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करते हुए आज़ाद कश्मीर के एक पहाडी अ़लाक़े में पहुंचा तो शु-रकाए क़ाफ़िला को ख़ौफ़ महसूस हुवा कि अ़लाक़ा आबादी से दूर और वीरान जगह पर है। कोई ज़हरीला जानवर नुक़्सान न पहुंचा दे। हम ने श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या से मज़कूरा दुआ़ पढ़ ली जिस के मुतअ़ल्लिक़ आया कि सुब्ह़ो शाम पढ़ने वाला सांप बिच्छू व दीगर मूज़िय्यात से मह़फ़ूज़ रहता है।

उन्हों ने बताया कि सोते में अचानक मुझे महसूस हुवा कि मेरी क़मीज़ में कोई कीड़ा रैंग रहा है, जब गिरेबान के बटन खोल कर देखा तो ऊपर का सांस ऊपर, नीचे का नीचे रह गया, देखा कि एक **बड़ा सियाह बिच्छू** मेरे सीने पर चलता हुवा आहिस्ता आहिस्ता बग़ल की त़रफ़ बढ़ रहा है। मुझ में इतनी हिम्मत भी न रही कि उसे हटा सकूं। बिच्छू ने जब बग़ल की जानिब से निकलने की जगह न पाई, तो अपना **ज़हरीला ख़ौफ़नाक डंक** मेरे बाज़ू में पैवस्त कर दिया, बस **मैं ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी,** पूरे जिस्म से पसीना बहने लगा। चीख़ सुन कर शु-रकाए क़ाफ़िला भी जाग गए, और क़रीब रखे गिलास के ज़रीए़ बिच्छू को मार डाला। ह़वास बह़ाल हुए तो मेरी ह़ैरत और ख़ुशी की इन्तिहा न रही कि बिच्छू ने जहां **ख़ौफ़नाक डंक** पैवस्त किया था, वहां काला छाला ज़रूर बन गया था, मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ न उस जगह पर दर्द था और न ज़ह्र का असर ज़ाहिर हुवा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾7﴿ जानो माल महफ़ूज़

बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े नयाआबाद के इस्लामी भाई जो कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए क़ादिरी अ़त्तारी सिल्सिले में दाख़िल हैं। उन्हों ने हल्फ़िया बताया कि अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या में दर्ज दुआ, मेरे विर्द में थी।

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى دِيْنِىْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَوُلْدِىْ وَ اَهْلِىْ وَمَالِىْ ○

इस की फ़ज़ीलत येह है कि जो कोई सुब्हो शाम तीन तीन बार पढ़ ले तो उस के पढ़ने वाले का दीन, ईमान, जान, माल और बच्चे सब महफ़ूज़ रहते हैं। (अल वज़ीफ़तुल करीमा, रक़म : 14)

वोह कहते हैं कि एक मरतबा मैं ऑफ़िस में था और लोग भी मौजूद थे कि **अचानक ऑफ़िस में डाकू आ गए** और अस्लहा निकाल कर लूटना शुरूअ़ कर दिया। मेरे अन्दर की जेब में नव्वे हज़ार (90,000) रूपिये मौजूद थे और चन्द नोट आगे की जेब में रखे थे।

मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं मुत़मइन था, कि मैं ने अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा **श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या** से मज़कूरा दुआ पढ़ ली है। इस लिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मेरी जानो माल दोनों महफ़ूज़ रहेंगे**। इतने में एक **डाकू** मेरे क़रीब आया और मेरे जेब में से **पचास (50)** रूपिये निकाल लिये, मैं सोचने लगा कि 90 हज़ार हों या पचास (50) रूपिये इस दुआ की ब-र-कत से तो सब की हिफ़ाज़त होनी चाहिये।

www.dawateislami.net

अभी मैं येह सोच ही रहा था कि डाकू जब सब से लाखों रूपिये लूट कर जाने लगे तो वोही "**डाकू**" जिस ने मेरी जेब से पचास रूपिये निकाले थे। मेरे क़रीब आया और येह कहते हुए कि **मौलाना! क्या याद रखोगे** पचास रूपिये वापस जेब में डाल दिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾8﴿ अवलाद की ह़िफ़ाज़त

वोही इस्लामी भाई बताते हैं कि चूंकि मज़्कूरा "**दुआ़**" में मालो जान के साथ **अवलाद की ह़िफ़ाज़त** से मुतअ़ल्लिक़ भी बताया गया है। तो एक मरतबा कमरे में रखे हुए पच्चीस तीस के क़रीब, तमाम बिस्तर मेरी **तीन साला बच्ची** पर गिर पड़े। जिस से बच्ची बिस्तर के नीचे दब गई। इस वाक़िए का किसी को इ़ल्म न था। काफ़ी देर बा'द जब हमारी वालिदा कमरे में पहुंची और गिरे हुए बिस्तर उठाए तो सब की चीख़ निकल गई कि इस के नीचे बच्ची दबी हुई थी, मगर येह देख कर ह़ैरत और ख़ुशी की इन्तिहा न रही कि **इतनी देर बोझ तले दबे रहने के बा वुजूद** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बच्ची ज़िन्दा थी और रोते हुए उठ कर खड़ी हो गई।** हम सब ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया कि उस ने हमारी बच्ची की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

9 कारोबार में ब-रकत

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के शहर हैदराबाद के अ़लाक़े आफ़न्दी टाऊन के मुक़ीम एक कारोबारी उ़म्र रसीदा बारीश सुन्नतों के आ़मिल इस्लामी भाई जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए क़ादिरी अ़त्तारी सिल्सिले में दाख़िल हैं उन का ह़ल्फ़िया बयान है कि हम ने बड़े पैमाने पर तेल निकालने के लिये माल ख़रीदा। मगर बा'द में मह़सूस हुवा कि तवक़्क़ोअ़ के ख़िलाफ़ फ़ी बोरी एक किलो तेल कम निकल रहा है। बड़े नुक़्सान का अन्देशा सामने नज़र आने लगा।

वोह बताते हैं कि मैं ने अपने पीरो मुर्शिद के अ़त़ा कर्दा श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या में से "**विर्द**" ढूंडा तो उस में सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत पढ़ी।

سَیِّدُ الاِستغفار اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَاَنَا عَلٰی عَھْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّمَاصَنَعْتُ اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَ اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ O

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب افضل الاستغفار، رقم ۶۳۰۶، ج ۴، ص ۱۸۹)

जो सुब्ह़ शाम एक एक बार या तीन तीन बार इसे पढ़ ले, **उस के गुनाह मुआ़फ़ हों** और उस दिन रात में मरे तो **शहीद** और अपने जिस फ़े'ल से **नुक़्सान का अन्देशा हो, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस से महफ़ूज़ रखता है।**

www.dawateislami.net

मैं ने इस को विर्द बना लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक वलिय्ये कामिल की इजाज़त से पढ़े जाने वाले **"विर्द"** की ब-र-कत येह ज़ाहिर हुई कि **आख़िर में जब हिसाब किया तो जहां बड़े नुक़्सान का अन्देशा था,** वहां اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم के करम से ठीक ठाक नफ़्अ़ हुवा। मैं ने अपने दीगर कारोबारी अह़बाब को भी **"विर्द"** पढ़ने के लिये दिया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

10 बस में लूट मार

बाबुल इस्लाम सिन्ध (ह़ैदराबाद) के मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का ह़ल्फ़िया बयान है कि **19 रजबुल मुरज्जब 1419 हि.** मैं बा'द नमाज़े मग़रिब ह़ैदराबाद से **हिन्द** म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के सिल्सिले में मा'लूमात के लिये बाबुल मदीना (कराची) जाने के लिये A.C. Coach में सुवार हुवा। अभी बस ने कमोबेश आधे घन्टे का सफ़र त़ै किया होगा कि अचानक 5 अफ़राद खड़े हो कर चीख़ने लगे कि अपने हाथ सीधे कर के सर झुका लें। तीन अफ़राद के हाथों में रिवॉल्वर थे। एक ने बस ड्राइवर को थप्पड़ मार कर हटाया और ख़ुद गाड़ी ड्राईव करने लगा।

बस में ख़ौफ़ो हिरास फैल गया। कई ख़वातीन चीख़ने लगीं। डाकू हाथ में रिवॉल्वर लहराते हुए सख़्ती के साथ ख़ामोश रहने की तल्क़ीन कर रहे थे। फिर एक एक के सामने रिवॉल्वर तान कर रक़म त़लब करने लगे : **"जितने पैसे हैं निकाल लो, वरना गोली मार देंगे।"** अब बस में सन्नाटा छा चुका था। सिर्फ़ डाकूओं की धमकियां गूंज रही थीं या अचानक कभी किसी ख़ातून की सिसकी सुनाई देती।

www.dawateislami.net

मैं सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए हाथ में तस्बीह लिये दुरूदे पाक पढ़ते हुए दिल ही दिल में अपने पीरो मुर्शिद की बारगाह में इस्तिग़ासा पेश कर रहा था। चूंकि मेरे पास भी एक बड़ी रक़म थी। इस लिये फ़िक्रमन्द था मगर येह सोच कर मुत़मइन था कि मैं ने **श-ज-रए अ़त्तारिय्या** में से विर्द का मा'मूल बना रखा था। जिस की ब-र-कत से जानो माल, ईमान व अवलाद सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हिफ़ाज़त में आ जाते हैं। बस में चन्द नौ जवान भी सुवार थे और तश्वीश येह थी कि कहीं इन में से कोई जज़्बात में आ कर लूटने वालों को रोकने की कोशिश करे तो मुमकिन है डाकू फ़ायर कर दें और इस त़रह़ चलने वाली गोली किसी को भी लग सकती है ! **ख़ैर, मैं दुरूदे पाक पढ़ने और मुर्शिद की बारगाह में इस्तिग़ासा पेश करने में मस्रूफ़ था।** इस अस्ना में मेरे बराबर सीट पर जो नौ जवान बैठा था उस के पास फ़र्दन फ़र्दन तीन डाकूओं ने आ कर तलाशी ली और उस की जेब ख़ाली करवा ली।

मगर ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर उन डाकूओं ने न ही मेरी तलाशी ली और न ही कुछ कहा बल्कि जब चौथा डाकू आया तो बराबर वाले की तलाशी लेने के बा'द मुझ से मुख़ात़िब हो कर बड़ी ही नर्मी से कहने लगा। **आप को तो किसी ने चेक नहीं किया ?** मेरे इन्कार में सर हिलाने पर वोह चला गया।

पीछे सीट पर मौजूद शख़्स ने मेरी कमर के पीछे नोटों के बन्डल डाल दिये थे, और किसी ख़ातून ने अपनी सोने की चैन नीचे से फेंकी थी जो मेरे पांव की त़रफ़ गिरी थी।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ श-ज-रए अ़त्तारिय्या के विर्द पढ़ने की ब-र-कत से न सिर्फ़ मैं लूटने से महफ़ूज़ रहा बल्कि मेरी कमर के पीछे डाली गई रक़म और सोने की चैन भी डाकूओं से महफ़ूज़ रही। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह मेरे पीरो मुर्शिद ज़माने के वली क़िब्ला शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत के अ़त़ा कर्दा विर्द पढ़ने की ब-रकत थी।

ख़ुसूसी मदद मा'लूम हुवा कि किसी वलिय्ये कामिल की इजाज़त से पढ़े जाने वाले "**अवरादो वज़ाइफ़**" और उन के दिये गए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ किये जाने वाले कामों में **अल्लाह व रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) **की ख़ुसूसी मदद शामिले ह़ाल हो जाती है।**

बहर ह़ाल अज़ ख़ुद पीरो मुर्शिद से **वज़ाइफ़** वग़ैरा की इजाज़त लेने की कोशिश के बजाए उन के अ़त़ा कर्दा **श-जरह शरीफ़** में दिये गए "अवराद" व "वज़ाइफ़" का मा'मूल बनाना ही मुनासिब है। कई मुरीदीन "**अवरादो वज़ाइफ़**" की तलाश व इजाज़त में सरगर्दां तो नज़र आते हैं। मगर बद क़िस्मती से अपने पीरो मुर्शिद के अ़त़ा कर्दा **श-जरह शरीफ़** का मुत़ालआ़ करने से महरूम होते हैं।

श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या

वोह इस्लामी भाई जो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से मुरीद या त़ालिब हैं, अगर **श-ज-रए क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं तो इस में कमो बेश इक्यावन (51) के क़रीब "**अवरादो वज़ाइफ़**" हैं। मसलन (1) रिज़्क़ में ब-र-कत के लिये

www.dawateislami.net

(2) ग़म व अलम और **क़र्ज़** की अदाएगी के लिये (3) तमाम गुनाहों की **मग़्फ़िरत** के लिये (4) हर ग़म व परेशानी से **नजात** के लिये (5) हर बला से महफ़ूज़ रहने के लिये (6) सांप बिच्छू वग़ैरा मूज़िय्यात से **पनाह** के लिये (7) रात दिन के हर नुक़्सान की **तलाफ़ी** के लिये (8) **ईमान** पर ख़ातिमे के लिये (9) दीनो ईमान, जान, माल और बच्चे सब के महफ़ूज़ रहने के लिये (10) शैतान और उस के लश्कर से **हिफ़ाज़त** के लिये (11) जाइज़ हाजात, कामयाबी, दुश्मन की **मग़लूबी** के लिये (12) जहन्नम से पनाह और बे शुमार इस तरह के मसाइल के हल के लिये "**अवरादो वज़ाइफ़**" मौजूद हैं।

तवज्जोह फ़रमाएं श-ज-रए क़ादिरिय्या अत्तारिय्या में मौजूद "अवराद" व "वज़ाइफ़" पढ़ने की हर उस इस्लामी भाई या इस्लामी बहन को इजाज़त है जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए क़ादिरी अत्तारी सिल्सिले में दाख़िल हैं येह पॉकिट साइज़ श-जरह शरीफ़ **मक-त-बतुल मदीना**, सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद या अपने शहर की किसी भी **शाख़** से हासिल किया जा सकता है।

जो कोई **श-ज-रए क़ादिरिय्या अत्तारिय्या के अवरादो वज़ाइफ़** पढ़ने के ख़्वाहिश मन्द हैं और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए बैअत या तालिब होना चाहते हैं। इस के लिये अपने नाम ब मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र, किताब के आख़िर में दिये गए फ़ॉर्म पर लिख कर **म-दनी मर्कज़ "फ़ैज़ाने मदीना" त्रीकोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ा पूर, अहमदआबाद** के पते पर रवाना फ़रमा दें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें सिल्सिलए क़ादिरिय्या अत्तारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा।

www.dawateislami.net

अकाबिर मशाइखे किराम के म-दनी इर्शादात

वक़्त का फ़ाइदा इब्ने उ़जैबिय्या عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं हर इन्सान पर वाजिब है कि तमाम रुकावटों और मसरूफ़िय्यात को ख़त्म कर के ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की **मुख़ालफ़त** करते हुए (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ रुजूअ़ करने में) जल्दी करे और किसी दूसरे वक़्त का मुन्तज़िर न रहे कि **अहले त़रीक़त वक़्त से फ़ाइदा उठाने वाले होते हैं।** (حقائق عن التصوف، الباب الثانی الذکر وردالصوفیۃ ودلیلہ من الکتاب والسنۃ، ص ۲۳۳)

ग़फ़्लत के साथ ज़िक्र इब्ने अ़त़ाउल्लाह सिकन्दरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे क़ल्ब ह़ासिल न होने पर ज़िक्र (अवरादो वज़ाइफ़) तर्क नहीं करना चाहिये, (अवरादो वज़ाइफ़) और **ज़िक्र को बिल्कुल छोड़ देना ग़फ़्लत के साथ ज़िक्र करने से बड़ी ग़फ़्लत है।** ऐन मुमकिन है कभी भी आप ग़फ़्लत के साथ ज़िक्र करते करते दिल की हुज़ूरी के साथ ज़िक्र करने के मर्तबे में पहुंच जाएं। **अहले त़रीक़त ने तो मरातिब ह़ासिल करने के बा वुजूद अपने अवराद नहीं छोड़े।**

(حقائق عن التصوف، الباب الثاب الذکر، باب آداب الذکر المنفرد، ص ۱۲۵)

सर का ताज अबुल ह़सन दराज علیہ رَحْمَةُ اللّٰهِ الجَوَاد ने फ़रमाया **ह़ज़रते जुनैद बग़दादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی के मुत़ाबिक़ अहले मा'रेफ़त करामात, अन्वार और (दीगर ब-र-कतों के) ह़ुसूल के बा वुजूद अपने अवराद व वज़ाइफ़ और इ़बादात तर्क नहीं करते। **इ़बादत आ़रिफ़ीन के लिये बादशाह के सर पर ताज से ज़ियादा मह़बूब है।**

किसी ने आप (या'नी जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی) के हाथ में तस्बीह़ देख कर पूछा कि इस क़दर कमाल (ह़ासिल होने) के बा'द अब इस की (या'नी अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने और ज़िक्र करने) की क्या ज़रूरत है?

www.dawateislami.net

आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इर्शाद फ़रमाया इस के ज़रीए (या'नी अवरादो वज़ाइफ़ और ज़िक्र) के ज़रीए मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तक पहुंचा हूं अब इस को कैसे छोड़ दूं !!!** (ऐज़न)

ग़फ़्लत से ताइब इब्ने अ़ताउल्लाह عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया : सिवाए जाहिलों के अवरादो (वज़ाइफ़) को कोई कमतर नहीं समझता मज़कूरा किसी सबब के पेशे नज़र अगर किसी ने ज़िक्रो **अवराद व वज़ाइफ़** तर्क कर दिये हैं तो उसे चाहिये कि **ग़फ़्लत** से ताइब हो कर बेदारी की त़रफ़ लौट आए और आयन्दा पाबन्दी का इरादा (व निय्यत) करे और दुन्या व आख़िरत की बे शुमार ब-र-कतों के हुसूल के लिये **श-जरह शरीफ़ से चन्द अवराद मुक़र्रर कर के इन्हें पाबन्दी से अपने विर्द में लाने की कोशिश करे और ब तदरीज इस में इज़ाफ़े की कोशिश भी जारी रखे ।** (حقائق عن التصوف، الباب الثالث الذکر، ص۲۳۴)

याद रखें ! वज़ाइफ़ पढ़ने या किसी भी काम करने का मक़्सद सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का हुसूल होना चाहिये जब वोह राज़ी होगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सब काम संवर जाएंगे ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ है कि वोह हमें अपने पीरो मुर्शिद और सिल्सिले के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इश्क़ अ़ता फ़रमा कर **तसव्वुरे मुर्शिद** की लज़्ज़तें और **श-जरह शरीफ़** पढ़ने की ब-र-कतें लूटने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

(اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم)

www.dawateislami.net

श-ज-ए आ़लिया

हज़राते मशाइख़े किराम सिलसिलए मुबारका क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या

या इलाही रह़्म फ़रमा मुस्त़फ़ा[1] के वासित़े
या रसूलल्लाह करम कीजिये ख़ुदा के वासित़े
मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किल कुशा[2] के वासित़े
कर बलाएं रद शहीदे करबला[3] के वासित़े
सय्यिदे सज्जाद[4] के सदक़े में साजिद रख मुझे
इ़ल्मे ह़क़ दे बाक़िरे[5] इ़ल्मे हुदा के वासित़े
सिद्क़े सादिक़[6] का तसद्दुक़ सादिकुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम[7] और रज़ा[8] के वासित़े
बह़रे मा'रूफ़ो[9] सरी[10] मा'रूफ़ दे बे ख़ुद सरी
जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे[11] बा सफ़ा के वासित़े
बहरे शिब्ली[12] शेरे ह़क़ दुन्या के कुत्तों से बचा
एक का रख अ़ब्दे[13] वाह़िद बे रिया के वासित़े
बुल फ़रह़[14] का सदक़ा कर ग़म को फ़रह़ दे हुस्नो सा'द
बुल ह़सन[15] और बू सईदे[16] सा'दे ज़ा के वासित़े
क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरियों में उठा
क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिरे[17] कुदरत नुमा के वासित़े
(1) اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهُمْ رِزْقًا से दे रिज़्क़े ह़सन
बन्दए रज़्ज़ाक़[18] ताजुल अस्फ़िय्या के वासित़े
नस्र[19] अबी सालेह़ का सदक़ा सालेह़ो मन्सूर रख
दे ह़याते दीं मुह़िय्ये[20] जां फ़िज़ा के वासित़े
तूरे इरफ़ानो उ़लुव्वो ह़म्दो हुस्ना व बहा
दे अ़ली[21] मूसा[22] ह़सन[23] अह़मद[24] बहा[25] के वासित़े
बहरे इब्राहीम[26] मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी[27] बादशाह के वासित़े

---

(1)..... या'नी अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अच्छी रोज़ी अ़त़ा फ़रमाई।

www.dawateislami.net

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल
शह ज़िया[28] मौला जमालुल[29] औलिया के वासिते
दे मुहम्मद[30] के लिये रेज़ी कर अहमद[31] के लिये
ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह[32] से हिस्सा गदा के वासिते
दीनो दुन्या के मुझे ब-रकात दे ब-रकात[33] से
इश्के़ हक़ दे इश्की इश्के़ इन्तिमा(1) के वासिते
हुब्बे अहले बैत दे आले[34] मुहम्मद के लिये
कर शहीदे इश्के़ हम्ज़ा[35] पेश्वा के वासिते
दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर नूर कर
अच्छे प्यारे शम्से[36] दीं बदरुल उ़ला के वासिते
दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
ह़ज़रते आले[37] रसूले मुक़्तदा के वासिते
कर अ़ता अहमद रज़ाए अहमदे मुर्सल मुझे
मेरे मौला ह़ज़रते अहमद रज़ा[38] के वासिते
पुर ज़िया कर मेरा चेहरा ह़श्र में ऐ किब्रिया
शह ज़ियाउद्दीन[39] पीरे बा सफ़ा के वासिते
اَحِینَا فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا سَلَامٌ بِالسَّلَامِ (2)
क़ादिरी अ़ब्दुस्सलाम[40] ख़ुश अदा(3) के वासिते
इश्के़ अहमद में अ़ता कर चश्मे तर सोज़े जिगर
या ख़ुदा **इल्यास**[41] को अहमद रज़ा के वासिते
सदक़ा इन आ'यां का दे छे ऐन इ़ज़्ज़, इ़ल्मो अ़मल
अ़फ़्वो इ़रफ़ां, आ़फ़िय्यत इस बे नवा के वासिते

---

(1).... या'नी इश्क़ की निस्बत रखने वाले।

(2).... या'नी हमें दीन व दुन्या में सलामती अ़ता फ़रमा।

(3).... क़ब्ले अज़ीं मत़्बूआ़ शजरे के शे'र के अन्दर "अ़ब्दुस्सलाम अ़ब्दे रज़ा" में चूंकि फ़न्नी ए'तिबार से "मीम" गिर रहा था लिहाज़ा तरमीम की गई है।

www.dawateislami.net

तवारीख़े ए'रास व मदफ़न शरीफ़

नम्बर	अस्माए गिरामी	रेहलत	मज़ारे मुक़द्दस
1	शहनशाहे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم	12, रबीउन्नूर, 11 हि.	मदीनए मुनव्वरा
2	हज़रते मौला अ़ली كرم الله وجهه الكريم	21, रमज़ानुल मुबारक, सि. 40 हि.	नजफ़ शरीफ़
3	हज़रत इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	जुमुआ –10, मुहर्रम, सि. 61 हि.	करबलाए मुअल्ला
4	हज़रत इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	18, मुहर्रमुल हराम, सि. 94 हि.	मदीनए तय्यिबा
5	हज़रत इमाम बाक़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	7, ज़िल हिज्जा, सि.114 हि.	" "
6	हज़रत इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	15, रजब, सि. 148 हि.	" "
7	हज़रत इमाम काज़िम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	5, रजब, सि. 184 हि.	बग़दाद शरीफ़
8	हज़रत इमाम रज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	21, रमज़ानुल मुबारक, सि. 202 हि.	मशहद मुक़द्दस
9	हज़रत मा'रूफ़ कर्ख़ी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	2, मुहर्रम, सि. 200 हि.	बग़दाद शरीफ़
10	हज़रत इमाम सरी सक़्ती رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	13, र–मज़ानुल मुबारक, सि. 253 हि.	" "
11	हज़रत इमाम जुनैद बग़दादी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	27, रजब, सि. 297, 298, 299 हि.	" "
12	हज़रत इमाम शिब्ली رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	27, ज़िल हिज्जा, सि. 334 हि.	" "
13	हज़रत इमाम शैख़ अ़ब्दुल वाहिद رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	26, जमादिल आख़िर, सि. 425 हि.	" "
14	हज़रत इमाम अबुल फ़र्ह तरतूसी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	3, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, सि. 447 हि.	" "
15	हज़रत इमाम अबूल हसन हक्कारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	यकुम मुहर्रमुल हराम, सि. 486 हि.	" "
16	हज़रत इमाम अबू सईद मख़ज़ूमी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	7, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, सि. 513 हि.	बग़दाद शरीफ़
17	हज़रत ग़ौसुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	11, रबीउ़ल आख़िर, सि. 582 हि.	" "
18	हज़रत सय्यिद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	6, शव्वालुल मुकर्रम, सि. 623 हि.	" "
19	हज़रत अबू सालेह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	27, रजबुल मुरज्जब, सि. 632 हि.	" "
20	हज़रत मोहयुद्दीन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ	22, रबीउ़न्नूर, सि. 656 हि.	" "

www.dawateislami.net

नम्बर	अस्माए गिरामी	रेहलत	मज़ारे मुक़द्दस
21	हज़रत सय्यिद अ़ली बग़दादी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	23, शव्वालुल मुकर्रम, सि. 739 हि.	बग़दाद शरीफ़
22	हज़रत सय्यिद मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	13, रजबुल मुरज्जब, सि. 763 हि.	" "
23	हज़रत सय्यिद ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	26, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सि. 781 हि.	" "
24	हज़रत सय्यिद अह़मद जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	19, मुह़र्रमुल ह़राम, सि. 853 हि.	" "
25	हज़रत शैख़ बहाउद्दीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	11, ज़ुल ह़िज्जा, सि. 921 हि.	ह़ैदराबाद दक्कन
26	हज़रत इब्राहीम ऐरजी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	15, रबीउ़ल आख़िर, सि. 940/953 हि.	देहली
27	हज़रत मुह़म्मद निज़ामुद्दीन भिकारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	9, जिल क़ा'दा, सि. 981हि.	काकूरी शरीफ़
28	हज़रत क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन मारूफ़ बज्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	22, रजबुल मुरज्जब, सि. 989 हि.	लखनौ
29	हज़रत जमालुल औलिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	शबे ईदुल फ़ित्र, सि. 1047 हि.	कौड़ाजहां आबाद
30	हज़रत मुह़म्मद क़ाल्पवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	6, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, सि.1030/1071 हि.	काल्पी शरीफ़
31	हजरत सय्यिद अह़मद क़ाल्पवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	19, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सि. 1084 हि.	" "
32	हज़रत सय्यिद फ़ज़लुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	14, ज़िल क़ा'दा, सि. 1111 हि.	" "
33	हज़रत सय्यिद ब-र-क़तुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	10, मुह़र्रमुल ह़राम, सि. 1142 हि.	मारेहरा मुत़ह्हर
34	हज़रत सय्यिद आले मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	16, रमज़ानुल मुबारक, सि. 1164 हि.	" "
35	हज़रत शाह ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	14, रमज़ानुल मुबारक, सि. 1198 हि.	" "
36	हज़रत सय्यिद शाह आले अह़मद अच्छे मियां رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	17, रबीउ़ल अव्वल सि. 1225 हि.	" "
37	हज़रत सय्यिद शाह आले रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	18, ज़िल ह़िज्जा, सि. 1296 हि.	" "
38	इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	25, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, सि. 1340 हि.	बरैली शरीफ़
39	शैख़ ज़ियाउद्दीन म-दनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	4, ज़िल ह़िज्जा, सि. 1401 हि.	मदीनए त़य्यिबा
40	हज़रत मौलाना अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ		

www.dawateislami.net

ईसाले सवाब

दुन्या व आख़िरत की बेहतरी और **आफ़ातो बलिय्यात** से नजात के लिये मुन्दरिजए बाला मशाइख़े क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या के यौमे विसाल की तारीख़ों के हिसाब से **ईसाले सवाब** का एहतिमाम फ़रमाएं । बल्कि हर रोज़ बा'द नमाज़े फ़ज्र एक बार "**श-ज-रए आ़लिया**" पढ़ लिया करें । इस के बा'द "**दुरूदे ग़ौसिया**" सात बार "**اَلْحَمْدُ शरीफ़**" एक बार "**आयतुल कुर्सी**" एक बार "**قُلْ هُوَ اللّٰهُ**" सात बार, फिर "**दुरूदे ग़ौसिया**" तीन बार पढ़ कर इस का सवाब **बारगाहे रिसालत** मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में नज़्र कर के तमाम **अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ السَّلَام, **सह़ाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इ़ज़्ज़ाम की **अरवाहे त़य्यिबा** की नज़्र करें जिन के हाथ पर बैअ़त की है वोह ज़िन्दा हों तब भी उन के नाम शामिले फ़ातेह़ा कर लिया करें कि जीते जी भी ईसाले सवाब हो सकता है और साथ ही दुआ़ए दराज़िए उ़म्र बिल ख़ैर भी करें । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ैब से मदद के सामान होंगे ।

दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ मा'मूल व दीगर म-दनी कामों में शुमूलिय्यत और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस्लाही सुन्नतों भरे बयानात की केसीटें व रसाइल की तक़्सीम भी ईसाले सवाब का बेहतरीन ज़रीआ़ है ।

दुरूद ग़ौसिया اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ
مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ

आदाबे मुर्शिदे कामिल

हिस्सए चहारुम में.....

क़ल्ब की सलामती (स. 165 ता 171)

शरीअ़त व त़रीक़त (स. 171 ता 174)

अकाबिर औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के

6 आ़जिज़ाना अक़्वाल (स. 174 ता 176)

पीर बनाने का मक़्सद (स.176 ता 180)

वस्वसों की काट (स.180)

वरक़ उलटिये.....

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

आदाबे मुर्शिदे कामिल

(हिस्सए चहारुम)

आशिके आ'ला हज़रत, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नक्ल फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।'' (مجمع الزوائد ج۰١ ص٢٥٥ رقم الحديث ١٧٣٠٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिल की इस्लाह़

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्हाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के क़ुलूब की इस्लाह़ और तज़किया का ज़ियादा एहतिमाम फ़रमाते थे । और इन पर वाज़ेह़ फ़रमाते कि बेशक इन्सान की इस्लाह़ और अमराज़े बातिन से उस की शिफ़ा **इस्लाहे क़ल्ब** पर मौक़ूफ़ है ।

आप صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ख़बरदार जिस्मे इन्सानी में एक टुकड़ा है अगर वोह दुरुस्त हो जाए तो तमाम जिस्म सहीह़ रहेगा और अगर वोह ख़राब हो जाए तो पूरा जिस्म ख़राब हो जाएगा **और वोह दिल है ।** (بخاری، بحوالہ حقائق عن التصوف ص ٢٥)

www.dawateislami.net

क़ल्ब की सलामती **जब** इन्सान की इस्लाह़ का दिल की इस्लाह़ के साथ इर्तिबात़ (या'नी राबित़ा) है तो इन्सान के लिये ज़रूरी ठहरा कि वोह (जिस्म के साथ) अपने दिल की इस्लाह़ भी करे। या'नी तमाम बुरी आ़दतों से जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ फ़रमाया उन से दिल को साफ़ करे और तमाम **अच्छे औसाफ़** जिन का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया, दिल को मुज़य्यन करे। तब जा कर उस का दिल **सलामती वाला** होगा और इस त़रह़ वोह कामयाब व कामरान हो सकेगा।

जैसा कि कुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۝ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝

(پ۱۹۔سورۃ الشعراء آیت ۸۹۔۸۸)

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) जिस दिन न माल काम आएगा, न बेटे, मगर वोह जो **अल्लाह** के हुज़ूर हाज़िर हुवा, **सलामत दिल ले कर।**

एक और जगह कुरआने पाक में इर्शाद होता है।

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۝ (پ۸،سورۃ الاعراف آیت ۳۳)

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) तुम फ़रमाओ मेरे रब ने तो **बे ह़याइयां** ह़राम फ़रमाई हैं। **जो उन में खुली हैं और जो छुपी।**

एक और जगह इर्शाद होता है :

وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَبَطَنَ ۝ (پ۸۔سورۃ الانعام آیت ۱۵۱)

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) और बे ह़याइयों के पास न जाओ। जो इन में **खुली** हैं और जो **छुपी।**

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरीने किराम के मुताबिक़ इन आयाते मुबा-रका में बातिनी बे ह़याई से मुराद ख़ुद पसन्दी, रिया, ह़सद और निफ़ाक़ वग़ैरा है।

सात आ'ज़ा की ह़क़ीक़त

अगर बन्दा इस्लाम की ह़क़ीक़त समझ ले और जान ले कि इस्लाम दिल और बदन दोनों की इस्लाह़ की दा'वत देता है, तो वोह दिल का इलाज भी ज़रूर करेगा। ह़क़ीक़तन शुरूअ़ में बन्दा अपने इन सात आ'ज़ा (1) **ज़बान** (2) **आंख** (3) **कान** (4) **हाथ** (5) **पाउं** (6) **पेट** और (7) **शर्मगाह** के गुनाहों से छुटकारा पाता है। फिर इन आ'ज़ा को इबादत व इत़ाअ़त से मुज़य्यन करता है। क्यूंकि **येही सातों आ'ज़ा दिल के रास्ते हैं,** अगर इन पर गुनाहों के अंधेरे छा जाएं तो **दिल को सख़्त,** और बे नूर कर देते हैं और अगर येह त़ाअ़त व इबादात के अन्वार से मुनव्वर हो जाएं, तो **दिल को शिफ़ा** व नूरानिय्यत नसीब होती है। (حقائق عن التصوف، ص۲۶)

इसी दिल की नूरानिय्यत से राहे त़रीक़त पर चलने वाले को मुजाहिदात व इबादात के वक़्त मदद ह़ासिल रहती है।

ख़ास हिदायात : मगर चूंकि मुजाहिदे का त़रीक़ए कार बड़ा वसीअ़ व मुश्किल है। इस लिये इस राह पर चलने वाले के लिये, अकेले येह रास्ता त़ै करना कठिन है।

लिहाज़ा किसी **मुर्शिदे कामिल** के दामन से वाबस्ता होना ज़रूरी है। या'नी किसी ऐसे बुज़ुर्ग के हाथ में हाथ दे दिया जाए जो परहेज़गार और मुत्तबए़ सुन्नत हो, जिन की ज़ियारत ख़ुदा व

www.dawateislami.net

मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की याद दिलाए। जिन की बातें क़ुरआनो सुन्नत का शौक़ उभारने वाली हो। जिन की सोह़बत मौत व आख़ेरत की तय्यारी का जज़्बा बढ़ाती हो। जो नेकियों पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करने के त़रीक़े बताए और ख़ास त़ौर पर गुनाहों से बचने के मुआ़मले में राहनुमाई करे।

क्यूंकि सालिक के लिये ज़रूरी है कि वोह अपने नफ़्स के उ़यूब को पहचाने, **तौबा करने में जल्दी करे** और गुनाहों से लाज़िमी बचे। किसी सूरत भी गुनाहों के छोटे होने की त़रफ़ न देखे, बल्कि अ़-ज़-मते रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ध्यान करे और सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की पैरवी करे कि वोह अ़-ज़-मते रब عَزَّوَجَلَّ के सबब मा'मूली गुनाह को भी मोहलिक (या'नी हलाक कर देने वाला) समझते थे।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : आज तुम लोग ऐसे आ'माल में मुब्तला हो, जिसे तुम बाल से ज़ियादा बारीक समझते हो। **जब कि हम हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **के ज़माने में उसे हलाक करने वाला समझते थे।** (حقائق عن التصوف، ص۸۱)

इमाम बरकूमी قُدِّسَ سِرُّہُ السّامی ने फ़रमाया : जो अपने नफ़्स के उ़यूब को न जानता हो, वोह बहुत जल्द हलाकत में पड़ जाता है। **क्यूंकि गुनाह कुफ़्र के पयाम बर हैं।** (رسالہ قشیریہ، ص۲)

अहले त़रीक़त की तौबा मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : अहले त़रीक़त सिर्फ़ गुनाहों से तौबा नहीं करते जो कि अ़वाम का त़रीक़ा है, **बल्कि वोह हर उस बात से तौबा करते हैं** जो उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल रखे।

www.dawateislami.net

ह़ज़रत **जुन्नून मिस्री** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : अ़वाम की तौबा गुनाहों से और **ख़वास की ग़फ़्लत से होती है।**

ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह तमीमी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : तौबा करने वालों में फ़र्क़ है। बा'ज़ गुनाहों और ख़त़ाओं से तौबा करते हैं, बा'ज़ **लग़ज़िशों और ग़फ़्लतों** से तौबा करते हैं और बा'ज़ **अपनी नेकी और त़ाअ़त को देखने से** तौबा करते हैं।

अ़त़िय्या बिन उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **बन्दा उस वक़्त मुत्तक़ी बन सकता है जब वोह उन कामों से बचने की ख़ात़िर, जिन में शरई क़बाह़त हो, उन कामों को छोड़ दे जिन में कोई क़बाह़त नहीं।** (ترمذی)

शैख़ अह़मद ज़र्रूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَعْبُوْد ने फ़रमाया : जिस तौबा के बा'द तक़्वा न हो, वोह तौबा बात़िल (या'नी कमज़ोर) है और जिस **तक़्वा में इस्तिक़ामत न हो वोह नाक़िस है।** (قواعد التصوف، ص ۱۷۷)

मज़कूरा ह़दीसे मुबा-रका और शैख़ **अह़मद ज़र्रूक़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَعْبُوْد के क़ौल को अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा म-दनी इन्आ़म कि, **आप राह चलते वक़्त आंखों पर क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए, ह़त्तल इमकान नीची निगाहें रखते हैं? बिला ज़रूरत इधर उधर देखने, साइन बोर्ड वग़ैरा पर नज़र डालने की आ़दत तो नहीं?** के ज़रीए समझिये! इधर उधर देखने में ब ज़ाहिर शरई क़बाह़त नहीं। मगर इस से रुकने का मश्वरा मुत्तक़ी बनाने की एक म-दनी कोशिश है। ताकि बद निगाही का दरवाज़ा इब्तिदा ही से बन्द हो जाए।

www.dawateislami.net

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي इर्शाद फ़रमाते हैं : अगर आंख को मुबाह़ (या'नी ख़ुशनुमा मनाज़िर वग़ैरा) देखने की इजाज़त देंगे, तो येह दिलेर होगी । और फिर येह ना जाइज़ का मुत़ालबा करेगी । लिहाज़ा बद निगाही से तौबा में मज़बूत़ी के लिये बा'दे तौबा तक़्वा (या'नी नज़र झुका कर रखने की आ़दत डालना) ज़रूरी है । इसी त़रह़ किसी ने बद निगाही से तौबा की, मगर तक़्वा न अपनाया, मसलन **नज़र झुका कर रखने की सअ़य न की ।** तो येह तौबा कमज़ोर है कि दोबारा बद निगाही की नुहूसत में मुब्तला हो सकता है । इसी त़रह़ तक़्वा इख़्तियार करने के साथ साथ इस में इस्तिक़ामत भी लाज़िमी अम्र है । ऐसा न हो कि **कभी नज़र झुकाई तो कभी इधर उधर देखने की आ़दत भी रही** कि येह तक़्वा नाक़िस है कि इस त़रह़ नज़र झुका कर चलने की आ़दत न बनने के सबब वोह दोबारा बद निगाही के बरबाद कुन मरज़ में मुब्तला हो सकता है । लिहाज़ा ! **बा'दे तौबा तक़्वा और इस में इस्तिक़ामत, बद निगाही से महफ़ूज़ रहने के लिये ज़रूरी है ।**

मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : **ह़क़ीक़ी तौबा** के ह़ुसूल, दिल को तक़्वा की त़रफ़ माइल करने और त़रीक़त के रुमूज़ जानने के लिये **मुर्शिदे कामिल** के दामन से वाबस्ता हो कर उन की सोह़बत पाना लाज़िमी अम्र है ।

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم : इल्मे दीन के ह़ुसूल के बा वुजूद इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم जैसे इल्म के बेकरां समुन्दर ने भी उ़लूमे त़रीक़त, ह़ज़रते **इमामे जा'फ़र सादिक़** عليه رحمةُ الرّازق की सोह़बते बा ब-रकत व मजालिस से ह़ासिल किये ।

www.dawateislami.net

इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم ने फ़रमाया : अगर मेरी ज़िन्दगी में येह दो साल (जो मैं ने इमामे **जा'फ़र सादिक़** علیہ رحمۃُ الرّازِق की ख़िदमत में गुज़ारे) न होते तो नो'मान (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) हलाक हो गया होता। (ऐज़न) मा'लूम हुवा कि नाक़िस और कामिल पीर का इम्तियाज़ रखते हुए किसी **मुर्शिदे कामिल** के दामन से वाबस्ता हो कर उन की सोह़बत पाना निहायत ज़रूरी है। और इस के साथ येह जानना भी लाज़िमी है कि मुर्शिद बनाते वक़्त क्या मक़्सद पेशे नज़र होना चाहिये। ताकि शैत़ान ला इल्मी के सबब वस्वसे डाल कर गुमराह करने की कोशिश न करे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अगले सफ़ह़ात में शरीअ़त और त़रीक़त के अह़काम की वज़ाह़त के साथ **पीर बनाने के अस्ल मक़्सद** को भी पेश करने की कोशिश की है।

शरीअ़त व त़रीक़त के अह़काम

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं कि शरीअ़त मम्बअ़ है, और त़रीक़त उस में से निकला हुवा एक दरिया है। उ़मूमन किसी **मम्बअ़** या'नी पानी निकलने की जगह से अगर दरिया बहता हो तो उसे ज़मीनों को सैराब करने में मम्बअ़ की ह़ाजत नहीं होती। लेकिन शरीअ़त वोह मम्बअ़ है कि इस से निकले हुए दरिया, **या'नी त़रीक़त को, हर आन इस की ह़ाजत है।**

अगर **शरीअ़त** के मम्बअ़ से **त़रीक़त** के दरिया का तअ़ल्लुक़ टूट जाए तो सिर्फ़ येही नहीं कि आयन्दा के लिये इस में पानी नहीं आएगा, **बल्कि येह तअ़ल्लुक़ टूटते ही दरियाए त़रीक़त फ़ौरन फ़ना हो जाएगा।**

(مقال عرفاء باعزاز شرع وعلماء)

www.dawateislami.net

अह़कामे शरीअ़त

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى के सामने किसी शख़्स ने मा'रेफ़त पर गुफ़्तगू करते हुए कहा कि क्या **अहले मा'रेफ़त** ऐसे मक़ाम पर पहुंच जाते हैं कि जहां उन को **अ़मल की ज़रूरत** नहीं रहती और वोह ज़ाहिरी आ'माल छोड़ देते हैं ?

आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने इर्शाद फ़रमाया कि इस त़रह़ ख़याल करना या इस बात का यक़ीन करना **गुनाहे अ़ज़ीम** है और जो शख़्स इस बात का क़ाइल हो, **उस से तो चोर और ज़ानी बेहतर है ।**

मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं अगर हज़ार बरस ज़िन्दा रहूं, तो फ़राइज़ व वाजिबात तो बड़ी चीज़ हैं, **जो नवाफ़िल व मुस्तह़ब्बात मुक़र्रर कर लिये हैं बे उ़ज़्रे शरई इन में से कुछ कम न करूं।**

(الیواقیت والجواہر فی بیان عقائد الاکابر، طبقات الصوفیہ رسالہ قشیریہ)

क़िब्ला शरीफ़ का अदब

ह़ज़रते **बा यज़ीद बुस्त़ामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِى एक शख़्स से मिलने गए। जो ज़ो-हदो विलायत का दा'वेदार था। आप के सामने उस ने क़िब्ले की त़रफ़ थूका। आप उस से मिले बिग़ैर वापस आ गए और फ़रमाया : येह शख़्स शरीअ़त के एक अदब का **अमीन** नहीं है, तो असरारे इलाही पर क्यूं कर **अमीन** होगा।

मज़ीद फ़रमाया : **अगर तुम किसी में (ब ज़ाहिर) बड़ी करामतें देखो, यहां तक कि वोह हवा में उड़ता हो, तब भी उस से धोका न खाना । जब तक उसे शरीअ़त की कसोटी पर न परख लो ।**

(الرسالۃ القشیریۃ، ابو یزید بن طیفور بن عیسی البسطامی، ص ۳۸، ۳۹)

www.dawateislami.net

शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल

ह़ज़रते कुत़्बे रब्बानी शाह मुह़म्मद त़ाहिर अशरफ़ जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स हवा पर उड़ रहा हो, पानी पर चलता हो या (ब ज़ाहिर) कितना ही साह़िबे कमाल नज़र आए, लेकिन शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल पैरा हो **तो उस शख़्स या (नाम निहाद पीर) को बा कमाल बुज़ुर्ग न जाने, वोह यक़ीनन कोई शो'बदा बाज़ (या 'नी धोके बाज़) होगा।** (صراط الطالبین صفحہ ۱۹۱)

रूह़ानी तरक़्क़ी

ह़ज़रते निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आदमी रूह़ानी तरक़्क़ी में ह़क़ीक़त तक पहुंच जाए और वहां इस से कोई **ख़त़ा सरज़द** हो जाए और वोह नीचे **गिराया जाए** तो ह़क़ीक़त से नीचे मक़ामे त़रीक़त में गिरेगा। और अगर त़रीक़त में कोई ग़-लत़ी हो तो शरीअ़त में गिरेगा। लेकिन अगर शरीअ़त में ग़-लत़ी हो जाए तो नीचे का द-रजा दोज़ख़ ही है। **गोया सब से अहम ह़िफ़ाज़त शरीअ़त ही की ह़िफ़ाज़त है।** (فوائد الفوائد)

ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : अगर **ह़ुदूदे शरीअ़त** में से किसी ह़द में ख़लल आए, तो जान ले तू फ़ित्ने में पड़ा है **और बेशक शैत़ान तेरे साथ खेल रहा है।** (طبقاتِ اولیاء ج ۱ ص ۱۳۱)

ह़ज़रते अबू सईद ख़राज़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने फ़रमाया : हर वोह बात जो **ज़ाहिर के मुख़ालिफ़ हो बात़िल है।**

(الرسالۃ القشیریۃ، ابوسعید احمد بن عیسی الخراز، ص ۶۱)

www.dawateislami.net

शैख़ अहमद ज़र्रूक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَعْبُوْد ने फ़रमाया : जो पीर सुन्नत को न अपना सका, उस की इत्तिबाअ़ दुरुस्त नहीं । ख़्वाह वोह (ब ज़ाहिर) हज़ार करामतें दिखाए । (वोह सब इस्तिद्राज या'नी धोका है)

कुरआनो सुन्नत

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ने फ़रमाया : हमारी त़रीक़त कुरआनो सुन्नत के साथ मश्रूत़ है । और **राहे त़रीक़त, नबिय्ये करीम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की पैरवी और सुन्नत की ताबेअ़दारी के बिग़ैर त़ै नहीं हो सकती ।** (ऐज़न)

औलियाए कामिलीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی आस्माने विलायत के दरख़्शन्दा सितारे होने के बा वुजूद अ़मल में कमी करना तो दूर की बात, बल्कि आ'माले सालेह़ा की कसरत के बा वुजूद आ़जिज़ी के अ़ज़ीम पैकर हुवा करते थे ।

मक़ामे ग़ौर

आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت के वालिदे बुज़ुर्गवार रईसुल मुतकल्लिमीन सय्यिदी अ़ल्लामा **मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن अकाबिर मशाइख़े किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام के आ़जिज़ी के क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं ।

"या अल्लाह" عَزَّوَجَلَّ के छे मुक़द्दस हुरूफ़ की निस्बत से आ़जिज़ी के 6 अक़्वाल

(1) **ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी** قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی (आ़जिज़ी फ़रमाते हुए कहते) : अगर **सारे आ़लम के गुनाह** जम्अ़ हों, तो भी मेरे गुनाह से कम निकलें !!!

(2) **ह़ज़रते मुह़म्मद वासेअ़** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाते) : अगर **गुनाहों से बद बू आती** तो मेरे पास कोई बैठ नहीं सकता ।

www.dawateislami.net

(3) **हज़रते ख़्वाजा फुज़ैल बिन इयाज़** رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने एक मरतबा (आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाया) : अगर इस साल मैं हज में शरीक न होता, सब बख़्शे जाते। मेरी शामत से महरूम रहें तो बईद नहीं।

(4) **हज़रते अ़ता़ सु-लमी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی जब किसी को बीमार होता देखते तो अपना पेट कूटते और (आ़जिज़ी करते हुए) फ़रमाते : मेरी शामत से ख़ल्क़ पर बला आती है !!!

(5) **हज़रते सरी सक़ती** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی (आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाते) कि मैं हर रोज़ आईने में मुंह देख लेता हूं कि कहीं काला न हो गया हो। अगर हज़रत (पीरो मुर्शिद) की दुआ़ न होती, तो बेशक मुझ जैसे लोग **मस्ख़ हो जाते या ज़मीन में धंस जाते।** मेरी आरज़ू है, अपने शहर में न मरूं, शायद ज़मीन मुझे क़बूल न करे और **हम चश्मों में रुस्वाई हो** !!!

(6) **हज़रते इब्ने सम्माक** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق (आ़जिज़ी करते हुए अकसर फ़रमाया करते) : ऐ नफ़्स तू ज़ाहिदों की सी बातें करता है और मुनाफ़िक़ों के काम। (सुरूरुल क़ुलूब, स. 214)

मा'लूम हुवा कि **ह़क़ीक़ी अहले त़रीक़त** शरीअ़त को हर आन पेशे नज़र रखते हैं। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाने के बा वुजूद ख़ौफ़े ख़ुदा में लर्ज़ां रहते हैं।

वोह लोग जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल करते हैं और कहते हैं कि हम उस मक़ाम पर हैं **कि हमें अब अ़मल करने की ज़रूरत नहीं, येह त़रीक़त की बातें हैं, हर एक नहीं समझ सकता ! तो वोह अपने आप को और लोगों को धोका देते हैं।**

www.dawateislami.net

ज़ईफ़ी में अ़मल

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی जब ज़ईफ़ हो गए, तो भी जवानी के **अवरादो वज़ाइफ़ व नफ़्ली इबादात** में से भी कुछ तर्क न किया। लोगों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर आप ज़ईफ़ हो गए है लिहाज़ा बा'ज़ नफ़्ली इबादात तर्क फ़रमा दीजिये। फ़रमाया : जो चीज़ें इब्तिदा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से मैं ने ह़ासिल की, मुह़ाल (या'नी ना मुमकिन) है **कि अब इन्तिहा में छोड़ दूं।** (कश्फ़ुल महजूब, स. 459)

ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं येह ख़याल करना कि शरई मुकल्लफ़ात किसी ह़ाल में साक़ित़ हो जाते हैं, ग़लत़ है। **फ़र्ज़ इबादात का छोड़ना ज़िन्दीक़िय्यत** (या'नी बे दीनी) है। **ह़राम कामों का करना मा'सिय्यत** (या'नी गुनाह) **है। फ़र्ज़ किसी ह़ाल में साक़ित़ नहीं होता।** (حقائق عن التصوف، الباب الخامس، التحذیر من الفصل بین الحقیقۃ والشریعۃ، ص۴۸۸)

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن के मज़कूरा अक़्वाले मुबा-रका से येह बात वाज़ेह़ हो गई **शरीअ़त व त़रीक़त के अह़काम** अलग नहीं। अब मुरीद होने और उस के बा'द की मज़ीद एह़तियातें आयन्दा सफ़ह़ात में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

पीर बनाने का मक़्सद

किसी से मुरीद होने से पहले, इन **चार शराइत़** जो फ़तावा अफ़्रीक़ा के ह़वाले से ह़िस्सए अव्वल में भी ज़िक्र की गईं इन शराइत़ को मद्दे नज़र रखना ज़रूरी है।

मगर बा'ज़ लोग मुर्शिदे कामिल का येह मे'यार समझते हैं कि पीर ता'वीज़ गन्डे या अ़-मलियात में माहिर हो और दुन्यावी मुश्किलात ह़ल कर दिया करे। हरगिज़ ऐसा नहीं !

www.dawateislami.net

हक़ीक़त में **पीर** उमूरे आख़िरत के लिये बनाया जाता है। येह अलग बात है कि ज़िम्नन इन से दुन्यवी ब-र-कतें, मसलन बीमार को शिफ़ा या मुश्किलों का हल होना भी ज़ाहिर होता रहता है। **मगर सिर्फ़ दुन्यवी मसाइल के हल के लिये, मुर्शिदे कामिल से मुरीद नहीं हुवा जाता।**

इस लिये कोई कहे कि तुम्हारा पीर कामिल होता तो तुम्हारी **परेशानी, बीमारी, जिन्नात** के असरात और **जादू टोने** के मुआ़मलात हल हो जाते। तो येह बे वुक़ूफ़ी व नादानी है कि **पीर इस लिये नहीं बनाया था,** पीर तो आख़िरत के मुआ़मलात के लिये होता है।

शहज़ादए आ'ला हज़रत मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना अश्शाह **मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां** बरेल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपने वालिदे माजिद आ'ला हज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ां** बरेल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के क़सीदए अल इस्तिम्दादे अ़ला अजयादुल इर्तिदाद की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : इमाम सय्यिदुना **अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने मीज़ाने अश्शरीअ़तिल कुब्रा में फ़रमाया है कि बेशक सब अइम्मा व औलिया व उ़-लमा (व मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام) अपने पैरोंकारों और मुरीदों की शफ़ाअ़त करते हैं, और (1) जब उन के मुरीद की रूह़ निकलती है, (2) जब मुन्कर नकीर उन से क़ब्र में सुवाल करते हैं, (3) जब ह़श्र में उस का नामए आ'माल खुलता है, (4) जब उस से ह़िसाब लिया जाता है या (5) जब उस के आ'माल तोले जाते हैं, और (6) जब वोह पुल सिरात़ पर चलता है, इन तमाम मराह़िल में वोह उस की निगेहबानी करते हैं और किसी जगह भी ग़ाफ़िल नहीं होते।

(المیزان الکبری، باب مثال طرق مذاهب الائمة المجتهدین، ج۱، ص۵۳)

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा कि पीर उमूरे आख़िरत के लिये बनाया जाता है। ताकि वोह क़ब्रो आख़िरत की हर मुश्किल और कठिन घड़ी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से मदद फ़रमा कर **मुरीद के लिये आसानियां पैदा करे।**

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल मर्तबत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के दो ईमान अफ़रोज़ सच्चे वाक़ेआ़त से रहनुमाई लेते हैं कि पीरो मुर्शिद के दामन से वाबस्तगी पा कर, और औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की सोह़बत मिलने पर **उन से क्या त़लब करना चाहिये ?**

मज्ज़ूबे बरेली शरीफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं कि बरेली (शरीफ़) में एक मज्ज़ूब **बशीरुद्दीन साह़िब** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अख़ुन्दज़ादा की मस्जिद में रहा करते थे। मुझे उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने का शौक़ हुवा।

एक रोज़ रात ग्यारह बजे, अकेला उन के पास पहुंचा और फ़र्श पर बैठ गया। वोह हुजरे में चारपाई पर बैठे थे। मुझ को बग़ौर पन्दरह बीस मिनट तक देखते रहे। आख़िर मुझ से पूछा : साह़िबज़ादे ! **तुम मौलवी रज़ा अ़ली ख़ां साह़िब** (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) **के कौन हो ?** मैं ने कहा : मैं उन का पोता हूं। येह सुन कर फ़ौरन आए और मुझ को उठा कर ले गए और चारपाई की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि आप यहां तशरीफ़ रखिये। फिर पूछा : क्या मुक़द्दमे के लिये आए हो ? मैं ने कहा मुक़द्दमा तो है, लेकिन मैं इस लिये नहीं आया हूं। **मैं तो सिर्फ़ दुआए मग़्फ़िरत के वासिते ह़ाज़िर हुवा हूं।**

www.dawateislami.net

येह सुन कर कमो बेश आधे घन्टे तक वोह बराबर फ़रमाते रहे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करम करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करम करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करम करे। (अल मल्फ़ूज़ शरीफ़, हिस्सए चहारुम, स. 386)

इस वाक़िए से हमें येह दर्स मिला कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की बारगाह से दुन्या नहीं बल्कि आख़िरत की त़लब रखनी चाहिये।

वलिय्ये कामिल की क़ुर्बत

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : ह़ज की पहली ह़ाज़िरी के वक़्त मिना शरीफ़ की मस्जिद में मग़रिब के वक़्त ह़ाज़िर था। उस वक़्त मैं अवरादो वज़ाइफ़ बहुत पढ़ा करता था।

بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰی मैं अपनी ह़ालत वोह पाता हूं, जिस में फ़ुक़हाए किराम ने लिखा है कि सुन्नतें भी ऐसे शख़्स को मुआ़फ़ हैं। लेकिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतें भी कभी न छोड़ीं। ख़ैर, जब सब लोग मस्जिद से चले गए तो मस्जिद के अन्दरूनी हिस्से में एक साहिब को देखा कि क़िब्ला रू अवरादो वज़ाइफ़ में मसरूफ़ हैं, मैं सेह़न में मस्जिद के दरवाज़े के पास था। और कोई तीसरा मस्जिद में न था। यकायक एक आवाज़ गुनगुनाहट की सी मस्जिद के अन्दर मा'लूम हुई। जैसे शहद की मख्खी बोलती है।

फ़ौरन मेरे दिल में येह ह़दीसे मुबा-रका आई कि अहलुल्लाह के क़ल्ब से ऐसी आवाज़ निकलती है, जैसे शहद की मख्खी बोलती है। मैं वज़ीफ़ा छोड़ कर उन की त़रफ़ चला कि उन से दुआए मग़्फ़िरत कराऊं।

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं कभी किसी बुज़ुर्ग के पास दुन्यवी ह़ाजत ले कर न गया। जब भी गया, इसी ख़याल से गया कि उन से दुआ़ए मग़्फ़िरत कराऊंगा।

ग़रज़, दो ही क़दम उन की त़रफ़ चला था कि उन बुज़ुर्ग ने मेरी त़रफ़ मुंह कर के आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर, तीन मरतबा फ़रमाया : الّٰھم اغفرلا خی ھذا (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे इस भाई को बख़्श दे) मैं ने समझ लिया कि फ़रमाते हैं कि हम ने तेरा काम कर दिया, अब तुम हमारे काम में मुख़िल न हो। मैं वैसे ही लौट आया।

(अल मल्फ़ूज़ शरीफ़, हिस्सए चहारुम, स. 385)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की मक्की म-दनी सोच की रहनुमाई से पता चला कि औलियाए किराम की बारगाह उमूरे आख़िरत की बेहतरी के लिये होती है। लिहाज़ा पीरो मुर्शिद के दामन से वाबस्ता होते हुए, मज़कूरा मक़्सद ही पेशे नज़र होना चाहिये ताकि शैत़ान कम इल्मी के बाइस वस्वसा डाल कर गुमराह न कर सके।

वसाविस की काट

इसी त़रह़ हो सकता है कभी किसी ने अपने या किसी और के म-रज़ या परेशानी के ह़ल के लिये अवरादो वज़ाइफ़ पढ़े, मज़ारात पर ह़ाज़िरी दी, या अपने पीरो मुर्शिद की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर दुआ़ भी कराई, मगर उस की परेशानी दूर न हुई हो तो मा'लूमात न होने के बाइस शैत़ान वस्वसा डाल सकता है कि इतना अ़रसा गुज़र गया, मेरी परेशानी तो दूर नहीं हुई ?

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"फ़ैज़ाने र-मज़ान"** में तह़रीर फ़रमाते हैं कि ब ज़ाहिर ताख़ीर से घबराना नहीं चाहिये । रब عَزَّوَجَلَّ की मस्लह़तें हम नहीं समझ सकते, देखिये !....

दुआए सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चालीस बरस बा'द फ़िरऔ़न ग़रक़ हुवा । दुआए **सय्यिदुना या'क़ूब** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्सी बरस बा'द सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुलाक़ात हुई । (फ़ैज़ाने र-मज़ान, स. 122)

येह बात भी ज़ेह्न में रहे कि परेशानी दूर होना या किसी मरीज़ का सिह़्ह़त याब होना, बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मन्ज़ूर होता है । तो उस के लिये दुन्या में कोई न कोई सबब बन जाता है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर अल जुज़ाइरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस चीज़ का इरादा फ़रमाता है, तो उस के अस्बाब मुहय्या फ़रमा देता है । (حقائق عن التصوف، ص٦٥)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से मुश्किलात के ह़ल के लिये करामात का ज़ाहिर होना भी, एक ऐसा ही म-दनी सबब है ।

येह भी याद रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है कि किस के लिये क्या बेहतर है । मसलन किसी का रोज़गार नहीं, या घर में खांसी का म-रज़ है । दुआ की गई । मगर खांसी रुकती ही नहीं । अब क्या मा'लूम कि उसे केन्सर का मरज़ होना था, मगर खांसी के ज़रीए बदल दिया गया । किसी को केन्सर है,

www.dawateislami.net

इलाज के लिये रक़म नहीं, या दुआ कराई मगर मरज़ सहीह नहीं हुवा, तो हो सकता है केन्सर का मरज़ दे कर उस के बदले ईमान व आफ़िय्यत की मौत और जन्नत में प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब में लिख दिया गया हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है !

وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान) और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो। और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे हक़ में बुरी हो। और **अल्लाह** जानता है। और तुम नहीं जानते। (پ۲، البقرہ آیت ۲۱۶)

हज़रते अबी सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि जनाबे रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब कोई मुसलमान बन्दा दुआ करता है तो वोह दुआ ज़रूर क़बूल होती है, ब शर्ते कि किसी गुनाह या ना जाइज़ बात के लिये या किसी बेगाने मुसलमान की तकलीफ़ देही के लिये दुआ न की हो। लेकिन इस का असर या तो यहां ज़ाहिर हो जाता है या दुआ का असर दूसरी सूरत में नज़र आता है **कि कोई आस्मानी या दुन्यवी बला और मुसीबत इस बन्दे पर नाज़िल होने वाली थी, वोह इस की दुआ से दफ़्अ़ हो गई। और इस बन्दे को उस बला की ख़बर भी न हुई।** या इस की दुआ का असर क़ियामत में ज़ाहिर होगा। जो निहायत ज़रूरत का वक़्त है, और वहां हर एक मुसलमान येह तमन्ना करेगा **कि क्या ही अच्छा होता कि मेरी एक भी दुआ दुन्या में क़बूल न होती। सारी की सारी दुआएं आज ही क़बूल होतीं।** (तहारतुल क़ुलूब)

www.dawateislami.net

मुसीबत का टलना

एक और त़वील सह़ीह़ ह़दीसे मुबा-रका में इस त़रह़ भी आया है कि क़ियामत के दिन रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को सामने बुला कर फ़रमाएगा। तुम्हारी फ़ुलां फ़ुलां दुआ़, फ़ुलां वक़्त हम ने क़बूल फ़रमाई, मगर उस का असर हम ने बदल दिया। **इस के बदले तुम पर मुसीबत आने वाली थी, हम ने फ़ुलां दुआ़ के सबब वोह मुसीबत दफ़्अ़ कर दी और तुम्हें उस के सदमे से बचा लिया।** (ऐज़न)

मा'लूम हुवा कि **अल्लाह तआ़ला** की त़रफ़ से दुआ़ का असर ज़ाहिर न होना और आख़िरत के लिये उठा रखना या किसी बला को टाल देना कमाले रह़मत की दलील है और येह भी मा'लूम हुवा कि मुसीबतें बड़ी आफ़तों के टलने का सबब भी होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को आज़माता भी है। और मसाइब व आलाम गुनाहों के मिटने और द-रजात बुलन्द होने का सबब भी होते हैं।

हमारी तो येही दुआ़ होनी चाहिये कि ऐ पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हमारे गुनाहों को नेकियों में तब्दील फ़रमा कर बिग़ैर आज़माइश के हमें दुन्या और आख़िरत की भलाइयां अ़त़ा फ़रमा कर हर बला व मुसीबत से महफ़ूज़ फ़रमा और ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मदीने में मौत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा।

(اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

www.dawateislami.net

तवज्जोह फ़रमाएं

पिछले सफ़हात के मुत़ालए से येह ह़क़ीक़त आश्कार हो गई कि पीर उमूरे आख़िरत के लिये बनाया जाता है । मगर ज़िम्नन उन से दुन्यवी मुश्किलात भी दूर होती हैं, तो कभी मुश्किलात का दूर न होना भी मस्लह़त से ख़ाली नहीं होता, इस लिये नाक़िस और कामिल पीर का इम्तियाज़ रखते हुए साह़िबे शरीअ़त व त़रीक़त के ही दामन से वाबस्तगी ह़ासिल करनी चाहिये । किसी बे शरअ़ मसलन, **बे नमाज़ी दाढ़ी मुन्डे** या दाढ़ी को एक **मुट्ठी से घटाने, फ़िल्में डिरामे देखने, गालियां बकने, झूट बोलने, बे पर्दगी के साथ औ़रतों से मिलने**, औ़रतों को हाथ **चूमवाने**, औ़रतों से **पांव दबवाने वाले की बैअ़त हरगिज़ जाइज़ नहीं ।** लिहाज़ा, अगर ला इ़ल्मी में ऐसे पीर के मुरीद हो गए हों, तो बैअ़त तोड़ देना लाज़िमी है ।

बह्र ह़ाल, किसी भी नाम निहाद सूफ़िय्यत का लुबादा ओढ़ कर, शरीअ़त और त़रीक़त में फ़र्क़ बता कर, अपनी बद आ'मालियों को छुपाने की कोशिश करने वालों से हर सूरत बचना चाहिये कि फ़राइज़ व वाजिबात छोड़ने और कबीरा गुनाह करने की किसी सूरत में इजाज़त नहीं ।

इन तमाम बातों से पता चला कि शरीअ़त व त़रीक़त अलग नहीं बल्कि त़रीक़त में तरक़्क़ी के लिये शरीअ़त की हर आन ज़रूरत है।

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہ

आदाबे मुर्शिदे कामिल

हिस्सए पन्जुम में.....

2 करामात

वस्वसों की काट

त़ालिब की शरई हैसिय्यत

सालिक व मज्ज़ूब के अह़काम

शो'बदाबाज़ आ़मिलीन के 7 वाक़ेआ़त

अ़क़ीदत की तक़्सीम के नुक़्सानात

जिन्नात की मौत

मुर्शिदे कामिल से मुरीद होने की 12 बहारें

सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसलमान की पेहचान

वरक़ उलटिये.....

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

आदाबे मुर्शिदे कामिल

(हिस्सए पन्जुम)

आशिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं : "जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शो-हदा के साथ रखेगा।" (مجمع الزوائد ج ۱۰ ص ۲۵۳ رقم الحديث ۱۷۲۹۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"हक़" के दो हुरूफ़ की निस्बत से 2 ना क़ाबिले फ़रामोश सच्चे वाक़ेआ़त

अगले सफ़ह़े पर पेश किया जाने वाला वाक़ेआ़ इस ज़माने के सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की एक ऐसी करामत है जिसे पढ़ कर आप का दिल न सिर्फ़ ख़ुशी से झूम उठेगा, बल्कि अपनी क़िस्मत की सरफ़राज़ी पर भी नाज़ां होगा कि इस पुर फ़ितन दौर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सूरत में अपने मक़्बूल वली की सोह़बते बा ब-र-कत से नवाज़ा।

www.dawateislami.net

﴾1﴿ पैदाइशी नाबीना की आंखें रोशन हो गईं

सूबा पंजाब के शहर गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा) के मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी का ह़ल्फ़िया बयान है कि ग़ालिबन सि.1995 ई. की बात है मुझे येह ख़ुश ख़बरी मिली कि (वोहकेन्ट) में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान है। चुनान्चे, मैं ने इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए आ़शिक़ाने रसूल का एक म-दनी क़ाफ़िला तय्यार किया कि सफ़र के इख़्तिताम पर सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत पाएंगे। शु-रका में मेरे बहनोई भी शामिल थे जो करामाते औलिया के मुन्किरीन की सोह़बत में बैठने के बाइ़स अ़क़ाइद के मुआ़मले में तज़ब्ज़ुब का शिकार थे।

इसी दौरान एक पैदाइशी नाबीना ह़ाफ़िज़ साह़िब तशरीफ़ ले आए जो किसी और पीर साह़िब से नक़्शबन्दी सिल्सिले में मुरीद थे और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से त़ालिब थे और आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बे इन्तिहा मह़ब्बत करते थे। वोह भी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये इसरार करने लगे। उन्हें समझाया गया कि आप **नाबीना** हैं, **3** दिन सफ़र में किस त़रह़ रह सकेंगे ? मगर वोह ब ज़िद रहे ह़त्ता कि उन की आंखों में आंसू आ गए, वोह कहने लगे कि ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस वली या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मिलने की तरकीब बना दें। उन का शौक़ व जज़्बा देख कर आख़िर कार उन्हें भी साथ ले लिया गया।

3 दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के बा'द जब हमारा म-दनी क़ाफ़िला इजतिमाअ़ गाह में पहुंचा तो लोगों की ता'दाद इस क़दर कसीर थी कि मन्च (स्टेज) नज़र नहीं आ रहा था। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान जारी था। अचानक दौराने

www.dawateislami.net

बयान आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शु-रकाए इजतिमाअ़ से इर्शाद फ़रमाया : **अभी बारिश होगी मगर मा'मूली होगी, लिहाज़ा कोई भी फ़िक्रमन्द न हो ।**

मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी का कहना है कि येह सुन कर मेरी नज़र बे साख़्ता आस्मान की त़रफ़ उठी मगर वहां बारिश के क़त़्अ़न कोई आसार न थे और मत़्लअ़ बिल्कुल साफ़ था । मगर ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर बयान के बा'द दौराने दुआ़ अचानक ठन्डी ठन्डी हवा चलना शुरूअ़ हुई और हल्की हल्की फुवार पड़ने लगी । **एक वलिय्ये कामिल की ज़बाने मुबारक से निकले हुए अल्फ़ाज़ की ताईद में होने वाली बारिश ने अ़क़ीदत के फूलों को मज़ीद महका दिया ।**

इजतिमाअ़ के इख़्तिताम पर जब हम गाड़ी में बैठ कर रवाना हुए तो रास्ते में ख़ुश क़िस्मती से **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की गाड़ी आती दिखाई दी । बस फिर क्या था, इस्लामी भाई गाड़ी से उतर कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कार के गिर्द जम्अ़ हो गए ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कार का शीशा नीचे करते हुए सलाम इर्शाद फ़रमाया और हमारी ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त फ़रमाई । इजतिमाअ़ चूंकि बहुत कामयाब हुवा था, लिहाज़ा आप बहुत ख़ुश थे । मैं ने और दीगर इस्लामी भाइयों ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दस्तबोसी की सआ़दत ह़ासिल की । मेरे बहनोई भी क़रीब खड़े तमाम मन्ज़र देख रहे थे मगर उन्हों ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से न मुलाक़ात की और न ही किसी अ़क़ीदत का इज़हार किया ।

मादरज़ाद नाबीना इतने में पैदाइशी नाबीना इस्लामी भाई भी किसी त़रह़ अपनी गाड़ी से उतर कर गिरते पड़ते आ पहुंचे और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कार के अगले ह़िस्से पर हाथ मार

www.dawateislami.net

मार कर **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तवज्जोह चाहने लगे । किसी ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को इशारे से अ़र्ज़ की येह मादरज़ाद नाबीना हैं इन पर दम कर दें और दुआ़ भी फ़रमा दें ।

आंखें रोशन **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने झुक कर शीशे में से उस **मादरज़ाद नाबीना** के चेहरे पर अपनी निगाहे विलायत डाली और सामने रखे बेग में से टॉर्च निकाल कर इस की रोशनी उस **मादरज़ाद नाबीना** के चेहरे पर डालते हुए जैसे ही दम करने के अन्दाज़ में फूंक मारी तो उस **मादरज़ाद नाबीना ने एक दम झुरझुरी ली और उस की आंखें रोशन हो गईं !!!**

वोह नक़्शबन्दी इस्लामी भाई अचानक आंखें रोशन हो जाने पर अ़जीब कैफ़िय्यत व दीवानगी के आ़लम में चीख़ने लगे कि **मुझे नज़र आ रहा है, मेरी आंखें रोशन हो गईं, मुझे नज़र आ रहा है !** येह कहते हुए वोह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब बढ़े और रोते हुए आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़दमों में गिर पड़े ।

येह ऐसा ना क़ाबिले यक़ीन मन्ज़र था कि वहां मौजूद 35 के क़रीब चश्म दीद गवाह दम ब ख़ुद रह गए । रात का आख़िरी पहर था । लोगों पर कुछ देर तो सक्ता त़ारी रहा फिर जब ह़वास बह़ाल हुए तो उन की आंखें भी ज़माने के वली की खुली करामत देख कर जज़्बाते तअस्सुर से भीग गईं, पैदाइशी नाबीना जिन की अब आंखें रौशन हो चुकी थीं उन की ह़ालत क़ाबिले दीद थी, वोह आंखों को रोशन पा कर फूले नहीं समा रहे थे और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर फ़िदा हुए जा रहे थे । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उसे सीने से लगा कर पीठ थपकते हुए फ़रमाया : **बेटा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **शिफ़ा देने वाला है !**

www.dawateislami.net

बद अ़क़ीदगी से तौबा **मेरे** बहनोई भी (जो करामाते औलिया के मुन्किरीन की सोह़बत में रहे थे) येह ईमान अफ़रोज़ करामत देख कर अपने जज़्बात क़ाबू में न रख सके और रोते हुए आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़दमों में गिर पड़े और **बद अ़क़ीदगी और साबिक़ा गुनाहों से तौबा** करने के साथ साथ सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी शरीफ़ सजाने की निय्यत भी कर ली और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर सिल्सिलए आ़लिया **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल भी हो गए।

क़ल्ब रोशन **गोया** कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक त़रफ़ **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की अ़त़ा से **ज़ाहिरी आंखों को रोशन** फ़रमाया तो दूसरी त़रफ़ एक शख़्स को **राहे ह़क़ की रोशनी** अ़त़ा फ़रमा दी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे बहनोई की ज़िन्दगी में ऐसा म-दनी इन्क़िलाब बरपा हुवा कि घर आ कर न सिर्फ़ ख़ुद बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने लगे बल्कि दूसरों को भी तल्क़ीन करने लगे। घर से T.V. और V.C.R. निकाल बाहर किया और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाने लगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी वलिय्ये कामिल के अ़क़ीदत मन्दों में **मुरीद, त़ालिब या अहले मह़ब्बत** होते हैं। येह तीनों सूरतें या'नी **मुरीद या त़ालिब होना या मह़ब्बत करना** हुसूले फ़ैज़ के बेहतरीन ज़राएअ़ हैं। यक़ीन और मह़ब्बत कामिल हो तो इस की ब-र-कतें ह़ैरानकुन होती हैं। जैसा कि ख़ुश नसीब ह़ाफ़िज़

www.dawateislami.net

साहिब नक़्शबन्दी जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से "तालिब" थे **मगर वलिय्ये कामिल से महब्बत, अदब, यक़ीन और मज़्बूत इरादत की बदौलत उन की आंखें रोशन हो गईं ।**

इल्मे ज़ाहिर है फ़क़त तू क़ल्ब दीदावर बना
तू कहेगा मुझ को प्यारे हज़रते अत्तार हैं

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अब एक ऐसे **लबे दम नौ जवान मरीज़** का वाक़ेआ पेशे ख़िदमत है जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **से मुरीद था न तालिब,** मगर उस की अक़ीदत, महब्बत और अदब ने उसे नई ज़िन्दगी अता कर दी ।

2 वलिय्ये कामिल के तबर्रुक की ब-रकत

बाबुल इस्लाम सिन्ध के शहर (हैदराबाद) के अलाक़े हीराबाद के मुक़ीम इस्लामी भाई का कहना है कि एक मरतबा एक इस्लामी भाई जो किसी और पीर साहिब से नक़्शबन्दी सिल्सिले में मुरीद थे, और ख़तरनाक मूज़ी मरज़ में मुब्तला थे, मुझ से मिले और गले लग के रोने लगे.....उन्हों ने कुछ इस तरह से बताया कि मुझे डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है, वोह कहते हैं, "जिस मरज़ में तुम मुब्तला हो तिब में **अभी तक इस का इलाज दरयाफ़्त नहीं हो सका है,** हम तुम्हें अंधेरे में रखना नहीं चाहते ।" मेरे वालिदैन मेरी ज़िन्दगी से मायूस हो

www.dawateislami.net

चुके हैं और अब मेरी भी हिम्मत जवाब देने लगी है। **मैं ने कई आ़मिलों को भी दिखाया!** कोई कहता है कि काला इ़ल्म कराया हुवा है। किसी का कहना है कि "हिन्दू जिन्न का मुआ़मला है।" हज़ारों रूपिये बरबाद करने के बा'द अब मैं मुआ़शी त़ौर पर तक़रीबन कंगाल हो चुका हूं और क़र्ज़ पर गुज़ारा है। मेरी बहन लाहोर से ब ज़रीए़ हवाई जहाज़ आख़िरी मुलाक़ात के लिये आई हुई है, दीगर रिश्तेदार भी घर पर जम्अ़ हैं.....मैं पन्दरह दिन से कुछ खा नहीं सका हूं ह़त्ता कि **पानी भी हज़्म नहीं होता,** पीता हूं तो तड़पा कर रख देता है, जब मैं अपने छोटे छोटे बच्चों को देखता हूं तो दिल भर आता है।"

दौराने गुफ़्तगू वोह इस्लामी भाई मुसल्सल रोते रहे। मैं ने उन्हें सीने से लगा कर तसल्ली दी और समझाया कि भाई मरने के लिये मरज़ ज़रूरी नहीं, आप मायूस न हों, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **बेहतर सबब फ़रमा देगा।**

वोह नक़्शबन्दी इस्लामी भाई **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के न तो मुरीद थे और न ही त़ालिब अलबत्ता **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बे इन्तिहा अ़क़ीदत रखते थे। लिहाज़ा मैं ने उन से अ़र्ज़ की, कि मेरे पास **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का तबर्रुक (या'नी इस्ते'माल शुदा शै) है, ह़दीसे मुबा-रका है : **"मोमिन के झूटे में शिफ़ा है।"** जब आ़म मोमिन के झूटे में इतना असर है तो **अल्लाह** के वली के तबर्रुक की कैसी ब-र-कत होगी। येह कह कर मैं ने आम की वोह गुठली जो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने चूसी थी, उन की त़रफ़ बढ़ा दी (जिस के इस्ते'माल की ब-र-कत से पहले भी चार ऐसे मरीज़ **अल्लाह** व रसूल

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की अ़ता से शिफ़ायाब हो चुके थे जिन्हें डॉक्टरों ने ला इ़लाज क़रार दे दिया था) उन्हों ने निहायत अ़क़ीदत से वोह गुठली ले ली और आंखों में उम्मीद के चराग़ जलाए वापस लौट गए।

तीसरे दिन वोह नक़्शबन्दी इस्लामी भाई ने इन्तिहाई ख़ुशी के आ़लम में फ़ोन किया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं जो पहले पानी तक नहीं पी सकता था, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के तबर्रुक की ब-रकत से ऐसा करम हो गया है कि अब मैं ने लौकी शरीफ़ के शोरबे में चपाती भिगो कर खाना शुरूअ़ कर दी है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्द में भी कमी है, दुआ़ फ़रमाएं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे कामिल शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। फिर उन्हों ने **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के मक्तब से ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या हासिल किये और प्लेटों (एक मख़्सूस रूहानी इ़लाज) का कोर्स भी शुरूअ़ कर दिया,

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की ब-रकत से उन्हें कुछ ही अ़रसे में उस मूज़ी मरज़ से नजात मिल गई और वोह मुकम्मल सिह़्ह़तयाब हो कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से त़ालिब भी हो गए। और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1425 हि. को जश्ने विलादत की ख़ुशी में होने वाले चराग़ां व सजावट में भरपूर हिस्सा लेते नज़र आए।

(मुलख़्ख़स रिसाला "ब-रकाते ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या" हिस्सए दुवुम, स.13)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़ैज़ाने औलिया "**फ़ैज़ाने औलिया**" के त़लब गार चाहे मुरीद हों या त़ालिब या अहले मह़ब्बत अगर फ़ुयूज़ो ब-र-कात से मुस्तफ़ीज़ होना चाहते हैं तो उन्हें चाहिये कि अपनी अ़क़ीदत व मह़ब्बत का अ़मली सुबूत देते हुए "**रिज़ाए रब्बुल अनाम**" के म-दनी कामों

www.dawateislami.net

की कोशिश से अपने शबो रोज़ मुअ़त्त़र करने की सअ़्य जारी रखें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **चाहे मुरीद हो या त़ालिब हो या अहले मह़ब्बत, वोह वलिय्ये कामिल के फ़ुयूज़ो ब-रकात के जाम से ज़रूर सैराब होगा।**

आस्मान है जो विलायत का उसी चर्ख़े कोहन
के चमकते इक सितारे ह़ज़रते अ़त्त़ार हैं

वस्वसे की काट

वस्वसा : इन ह़िकायात को सुन कर वस्वसा आता है कि क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा भी कोई शिफ़ा दे सकता है?

इ़लाजे वस्वसा : बेशक ज़ाती त़ौर पर सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही शिफ़ा देने वाला है, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से **उस के बन्दे भी शिफ़ा दे सकते हैं।** अगर कोई येह दा'वा करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई त़ाक़त के बिग़ैर फ़ुलां दूसरे को शिफ़ा दे सकता है तो **यक़ीनन वोह काफ़िर है।** क्यूंकि शिफ़ा हो या दवा एक ज़र्रा भी कोई किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर नहीं दे सकता। **हर मुसलमान का येही अ़क़ीदा है** कि अम्बिया व औलिया عَلَيهِمُ السّلام ورَحِمَهُمُ اللّٰه जो कुछ भी देते हैं, वोह मह़्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से देते हैं, مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अगर कोई येह अ़क़ीदा रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी नबी या वली को म-रज़ से शिफ़ा देने का, कुछ अ़त़ा करने का इख़्तियार ही नहीं दिया। **तो ऐसा शख़्स हुक्मे क़ुरआनी को झुटला रहा है।** पारह : 3, सूरए आले इ़मरान की

www.dawateislami.net

आयत नम्बर 49 और उस का तर्जमा पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वस्वसे की जड़ कट जाएगी और शैत़ान नाकाम व ना मुराद होगा, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक क़ौल की ह़िकायत करते हुए क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है।

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْیِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ (پ ۳ سورہ ال عمران آیت ۴۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादरज़ाद अन्धों और सफ़ेद दाग़ वाले (या'नी कोढ़ी) को और मैं मुर्दे जिलाता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से।

देखा आपने ? ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام साफ़ साफ़ फ़रमा रहे हैं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बख़्शी हुई क़ुदरत से मादरज़ाद अन्धों को बीनाई और कोढ़ियों को शिफ़ा देता हूं। ह़त्ता कि मुर्दों को भी ज़िन्दा कर दिया करता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام को त़रह़ त़रह़ के इख़्तियारात अ़त़ा किये गए हैं और फ़ैज़ाने अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام से औलियाए कामिलीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن को भी अ़त़ा किये जाते हैं लिहाज़ा वोह भी शिफ़ा दे सकते हैं और बहुत कुछ अ़त़ा फ़रमा सकते हैं। (फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, सफ़ह़ा नम्बर. 51 ता 52)

ह़ज़रते इमाम याफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताब **नशरुल महासिनुल ग़ाइया** का मुत़ालआ़ फ़रमाएं, उन्हों ने बहुत से अहले सुन्नत के अकाबिर अइम्मए किराम और मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम से ब त़ौरे करामत ख़ारिक़े आ़दत अश्या या'नी पैदाइशी नाबीना की आंखें रोशन हो जाना, या चन्द लम्ह़ों में त़वील सफ़र त़ै कर लेने के वाक़ेआ़त वग़ैरा को नक़्ल किया है। (जामेए करामाते औलिया, सफ़ह़ा नम्बर . 137)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

त़ालिब की शरई हैसिय्यत

"इरादत" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 सुवालात के जवाबात

(दारुल इफ़्ता, अह़कामे शरीअ़त के फ़तावा)

सुवाल ﴾1﴿ अपने पीर की मौजूदगी में किसी दूसरे मुर्शिदे कामिल के हाथ पर त़ालिब होने की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब : अपने पीरो मुर्शिद की मौजूदगी में किसी दूसरे जामेए़ शराइत़ पीर से बैअ़ते ब-र-कत करते हुए **त़ालिब होना जाइज़ है।** इस से जो कुछ ह़ासिल हो उसे अपने पीर ही की अ़त़ा जाने।

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "दूसरे जामेए़ शराइत़ से **त़-लबे फ़ैज़ में ह़-रज नहीं** अगर्चे वोह किसी सिल्सिलए सरीह़ा का हो और इस से जो फ़ैज़ ह़ासिल हो उसे भी अपने शैख़ ही का फ़ैज़ जाने। **कमा फ़ी सबए़ सनाबिल मुबा-रका अ़न सुल्त़ानुल औलिया इमामुल ह़क़्क़े वद्दीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 579, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया, लाहोर)

अह़कामे शरीअ़त और मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت में है : "तब्दीले बैअ़त बिला वजहे शरई मम्नूअ़ है और तजदीद (या'नी त़ालिब होना) **जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है** और जो सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में न हो और अपने शैख़ से बिग़ैर इन्ह़िराफ़ के इस सिल्सिले में बैअ़त करे वोह तब्दीले बैअ़त नहीं बल्कि तजदीद है कि जमीअ़ सलासिल इसी सिल्सिलए आ'ला की त़रफ़ राजेअ़ हैं।"

(अह़कामे शरीअ़त, ह़िस्सए दुवुम, स. 129, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ الرَّحْمَة, ह़िस्सए अव्वल, स. 29, मुश्ताक़ बुक कॉर्नर, मर्कज़ुल औलिया, लाहोर)

www.dawateislami.net

एक जामेए़ शराइत़ शैख़ की ह़यात में उस के मुरीदों को किसी दूसरे जामेए़ शराइत़ शैख़ का **त़ालिब होना जाइज़ है।** **फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल** में है : "वोह पीर जो बा ह़यात है उस के मुरीद को दूसरा पीर ता'लीम, ज़िक्रो अज़्कार और इजाज़त व ख़िलाफ़त दे सकता है। ख़ास कर इस सूरत में जब कि मुरीद अपने पीर से बहुत दूर हो और दूसरा पीर इसी सिल्सिले का शैख़ हो।"

(फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जिल्द : 3, स. 420, शब्बीर बिरादर्ज़ मर्कज़ुल औलिया, लाहोर)

मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "बेशक एक जामेउ़श्शराइत़ (पीर) के हाथ पर बैअ़ते सह़ीह़ करे फिर दूसरे से बैअ़त ठीक नहीं **त़-लबे फ़ैज़ कर सकता है** (या'नी त़ालिब हो सकता है)"

(फ़तावा मुस्त़फ़विय्या, स. 537, शब्बीर बिरादर्ज़)

मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द عَلَيْهِ الرَّحْمَة के मुर्शिदे करीम ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल हुसैन अह़मद नूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة अपने मल्फ़ूज़ात में फ़रमाते हैं : "अगर कोई शख़्स किसी और पीर का मुरीद हो तो उसे मुरीद न करे, **त़ालिब कर लेने में कोई मुज़ायक़ा नहीं।**"

(मल्फ़ूज़ाते अ़त्त़ारिय्या, ह़िस्सा : 8, सफ़ह़ा : 119)

किसी भी मस्लह़त या फ़ाइदे की वजह से दूसरे जामेए़ शराइत़ पीर साह़िब से **त़ालिब होने पर जवाज़ का फ़तवा है** अगर्चे पीर साह़िब ह़यात हों जैसा कि फ़तावा र-ज़विय्या जि. 26, स. 558, मत़्बूआ़ रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर में है **नीज़ बुज़ुर्गाने दीन से त़ालिब होना और करना तवातर से साबित है।** ख़ुसूसन मुह़क्किक़ अ़लल इत़लाक़ शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى और ह़ज़रते शैख़ अह़मद मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي की सीरत का मुत़ालआ़ करने से मुस्तफ़ाद होता है।

www.dawateislami.net

सुवाल ﴾2﴿ मुरीद और तालिब में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब : तालिब और मुरीद में फ़र्क़ बयान करते हुए सय्यिदी आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मुरीद गुलाम है और तालिब वोह कि ग़ैबते शैख़ (या'नी मुर्शिद की अ़दम मौजूदगी) में ब ज़रूरत या बा वुजूदे शैख़ किसी मस्लहत से, जिसे शैख़ जानता हो या मुरीदे शैख़ ग़ैर शैख़ से इस्तिफ़ादा करे। उसे जो कुछ हासिल हो वोह भी फ़ैज़े शैख़ ही जाने।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 557, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया, लाहोर)

सुवाल ﴾3﴿ जिस मुर्शिदे कामिल से तालिब हुए क्या उन का भी हुक्म बजा लाना भी ज़रूरी है ? क्या अपने पीर की तरह उस के भी हुक़ूक़ है ?

जवाब : तालिब अपने शैखे़ सानी से (या'नी जिस मुर्शिदे कामिल से तालिब हुवा) फ़ैज़ हासिल करता है। फ़ैज़ की ता'रीफ़ करते हुए सय्यिदी आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : फ़ैज़ ब-रकात और नूरानिय्यत का दूसरे पर इल्क़ा फ़रमाना है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द : 26, सफ़हा : 563, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया, लाहोर)

येह इसी सूरत में हो सकता है कि तालिब अपने शैखे़ सानी (या'नी जिस से तालिब हुवा) से **कामिल महब्बत करे।** उस के अहकाम (जो बिला तावीले सरीह ख़िलाफ़े हुक्मे ख़ुदा व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم न हों) बजा लाए और हर वोह जाइज़ काम करे जिस से वोह ख़ुश व राज़ी हो। **उस की कामिल ता'ज़ीम व तौक़ीर करे और** अपने अक़्वाल व अफ़्आ़ल व ह-रकात व सकनात में उस की हिदायात के मुताबिक़ (जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हों) पाबन्द रहे ताकि उस से फ़ुयूज़ व ब-रकात हासिल करने में कामयाब हो सके।

www.dawateislami.net

जब मुर्शिदे अव्वल (जो उस का ह़क़ीक़ी मुर्शिद है) और मुर्शिदे सानी (जिस से फ़ैज़ ह़ासिल करने के लिये त़ालिब हुवा है) के किसी हुक्म में ब ज़ाहिर तआ़रुज़ आए और दोनों के हुक्म ऐन शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हों तो मुर्शिदे अव्वल के हुक्म को तरजीह़ दे ।

सुवाल ﴾4﴿ जिस मुर्शिदे कामिल से त़ालिब हुए इन के लिये कौन सा लफ़्ज़ इस्ते'माल करें ? शैख़, मत़्लूब या रेहबर ?

जवाब : सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने दूसरे मुर्शिद के लिये भी "शैख़" (या'नी मुर्शिद) का लफ़्ज़ इस्ते'माल फ़रमाया है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द : 26, सफ़ह़ा : 580, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया, लाहोर)

सुवाल ﴾5﴿ अपने पीर की मौजूदगी में किसी मुर्शिदे कामिल से त़ालिब होने की ज़रूरत कब और किन ह़ालात में पड़ती है ?

जवाब : त़ालिब होने की ज़रूरत वुजूहात की बिना पर होती है ।

﴾**अव्वल**﴿ पीरे मुर्शिद वफ़ात पा जाएं और त़रीक़त की ता'लीम मुकम्मल न हो तो **त़ालिब होना बेहतर** है । सय्यिदी **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इसी त़रह़ के इस्तिफ़्ता के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : "जाइज़ है । (या'नी किसी भी जाइज़ वजह की बिना पर शरीअ़त में त़ालिब होना दुरुस्त है) इस पर शरअ़ (या'नी शरीअ़त में) कोई मुमा-नअ़त नहीं जब कि (जिस से त़ालिब हो) चारो शराइते़ पीरी (जो किताब के इब्तिदा में गुज़रीं) का जामेअ़ हो अगर एक शर्त़ भी कम है तो उस से बैअ़ते ब-रकत जाइज़ नहीं । (बल्कि) **अगर उस में वोह शर्तें नहीं तो वोह पीर बनाने के क़ाबिल ही नहीं** अब किसी दूसरे जामेए़ शराइत़ के हाथ पर बैअ़त चाहिये ।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 575, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया, लाहोर)

www.dawateislami.net

दुवुम पहले पीरो मुर्शिद मौजूद या'नी ह़यात हों लेकिन किसी वजह से उन से इस्तिफ़ादा दुश्वार हो मसलन पीर साहिब मुरीद से दूर रहते हों और येह दूर रहना इस्तिफ़ादा में रुकावट भी बन रहा हो, तो इस सूरत में किसी दूसरे जामेए़ शराइत़ पीर साहिब से त़ालिब हो सकता है।

अलबत्ता अगर मुर्शिदे कामिल ने **तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक** की सूरत में ऐसा मज़्बूत़ और वसीअ़ सुन्नतों भरा निज़ाम अ़ता कर दिया हो जिस के ज़रीए़ मुरीद ब ज़ाहिर मुर्शिद की ज़ाहिरी सोह़बत से दूर हो मगर मुर्शिद की जानिब से मिलने वाले तरबिय्यत के म-दनी फूल जो मल्फ़ूज़ात व बयानात या म-दनी माह़ोल की सूरत में उस की तरबिय्यत का ज़रीआ़ बन रहे हों तो **फिर त़ालिब होने की वजह न रही।**

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से अ़र्ज़ की गई कि अपना मुर्शिद मौजूद हो मगर ब वुजूहाते मा'कूला वाके़ई इस से तअ़ल्लुम मह़ाल, तो ब ग़-रज़े ता'लीम त़रीक़ए किराम दूसरे शैख़ से त़ालिब होना औला है या बे इल्म रहना बेहतर है? आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया : "जहल से त़लब औला है या'नी त़ालिब होना औला है मगर पीरे सह़ीह़ से इन्ह़िराफ़ जाइज़ नहीं, जो फ़ैज़ मिले उसे शैख़ ही की अ़त़ा जाने।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 584, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

والله ورسوله اَعلَم عَزَّوَجَلّ و صلی الله تعالی علیه وآله و سلم

मुफ़्ती दारुल इफ़्ता अह़कामे शरीअ़त

★ जामेअ़ मस्जिद अल ख़ैर गेलेक्सी पार्क ★ ब्लॉक 2, क्लिफ़्टन, बाबुल मदीना (कराची)

6 जुमादिल ऊला, सि.1425 हि. 25 जून सि. 2004 ई.

www.dawateislami.net

सालिक और मज्ज़ूब के अह्काम

आ़शिके़ आ'ला ह़ज़्रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ अपने रिसाले ज़ियाए दुरूदो सलाम में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं : "जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह तआ़ला** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है।" (جامع ترمذی ج ۱ ص ٦٤ مکتبہ دار القران و الحدیث ملتان)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सुलूक के मा'ना रास्ते पर चलना है और रास्ते पर चलने वाले को सालिक कहते हैं। **सालिक** शरीअ़त व त़रीक़त दोनों का जामेअ़ होता है वोह लत़ाइफ़े रूह़ानी की बेदारी से द-रजा ब द-रजा तरक़्क़ी करता है। इस वजह से उस के शुऊ़र की सकत (या'नी कु़व्वत) क़ाइम रहती है और उस का शुऊ़र मग़्लूब नहीं होता। जब कि मज्ज़ूब लत़ाइफ़ की बेदारी से यकदम रूह़ानिय्यत की बुलन्द मन्ज़िलों में मुस्तग़्-रक़ हो कर रह जाता है। उस की शुऊ़री सलाह़िय्यतें मग़्लूब हो जाती हैं, **जिस** की वजह से वोह होश व ह़वास से बे नियाज़ हो कर दुन्यावी दिलचस्पियों से ला तअ़ल्लुक़ हो जाता है। या'नी मजाज़ीब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वोह मख़्सूस बन्दे हैं जिन्हें दीगर मख़्लूक़ से कोई वासित़ा व तअ़ल्लुक़ नहीं होता। वोह अज़ ख़ुद न खाते हैं न पीते हैं, न पहनते हैं न नहाते हैं, उन्हें सर्दी-गर्मी, नफ़्अ़ व नुक़्सान की ख़बर तक नहीं होती। अगर किसी ने खिला दिया तो खा पी लिया, पहना दिया तो पहन लिया, नहला दिया तो नहा लिया,

www.dawateislami.net

सर्दियों में बिग़ैर कम्बल चादर लिये सुकून, गर्मियों में लिहाफ़ ओढ़ लें तो परवाह नहीं। या'नी मज्ज़ूब (ब ज़ाहिर) होश में नहीं होता। इस लिये वोह शरीअ़त का मुकल्लफ़ भी नहीं होता या'नी इस पर शरई अह़काम लागू नहीं होते। मगर वोह शरई अह़काम की मुख़ालफ़त भी नहीं करता।

नक़्शे क़दम

ह़ज़रते शैख़ मुह़्युद्दीन इब्ने अ़-रबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हर **वली** किसी न किसी नबी عَلَیْہِ السَّلَام के नक़्शे क़दम पर होता है जैसे मह़बूबे सुब्ह़ानी, क़ुत़्बे रब्बानी ह़ज़रते सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है : **"मैं बदरे कामिल नबिय्ये मुकर्रम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **के क़दमे मुबारक पर हूं।"**

इसी त़रह़ ह़ालते जज़्ब वाले ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के नक़्शे क़दम पर हैं। मज्ज़ूब को जज़्ब की कैफ़िय्यत **अल्लाह तआ़ला** के क़ुर्ब के ज़रीए़ ह़ासिल होती है या'नी मज्ज़ूब वोह शख़्स है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में गुम हो कर रह जाता है।

अ़-ज़-मते मजाज़ीब

किताबों में औलियाए किराम के तज़किरे के साथ साथ मजाज़ीब का ज़िक्रे ख़ैर भी मिलता है। उन की तक़्लीद नहीं की जा सकती लेकिन उन की अ़-ज़-मत व रिफ़अ़त को सूफ़ियाए किराम ने तस्लीम किया है।

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने मज्ज़ूब की अ़-ज़मत को इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है, बुख़ारी शरीफ़ की एक ह़दीस है कि जिस के मिस्दाक़ मज्ज़ूब औलिया हैं।

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि "बहुत से ऐसे लोग हैं जिन के बाल उल्झे हुए और गर्दो ग़ुबार में अटे हुए होते हैं। ऐसे ख़स्ता ह़ाल होते हैं कि अगर वोह लोगों के दरवाज़ों पर जाएं तो लोग ह़क़ारत से उन्हें धक्का दे कर निकाल दें। लेकिन ख़ुदा के दरबार में उन की मह़बूबिय्यत का येह आ़लम है कि अगर वोह किसी बात की क़सम खा लें तो परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ज़रूर ज़रूर उन की क़सम पूरी फ़रमा देता है और उन के मुंह से जो बात निकलती है वोह पूरी हो कर रहती है।"

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء، رقم ۵۲۳۱، ج ۳، ص ۱۱۸)

रूह़ानी मनाज़िल

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت मज्ज़ूबों के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं कि वोह ख़ुद सिल्सिले में होते हैं। मगर उन का कोई सिल्सिला फिर उन से आगे नहीं चलता। या'नी मज्ज़ूब अपने सिल्सिले में मुन्तही (या'नी कामिल) होता है। अपने जैसा दूसरा मज्ज़ूब पैदा नहीं कर सकता।

वजह ग़ालिबन येह है **कि मज्ज़ूब मक़ामे ह़ैरत ही में फ़ना हो जाता है और बक़ा ह़ासिल कर लेता है।** इस लिये उस की ग़ैर की त़रफ़ तवज्जोह नहीं होती। (अन्वारे रज़ा, स. 243)

बा'ज़ लोग पैदाइशी मज्ज़ूब होते हैं, बा'ज़ पर रूह़ानी मनाज़िल त़ै करते हुए किसी मरह़ले पर जज़्बे की कैफ़िय्यत त़ारी हो

www.dawateislami.net

जाती है और कुछ नुफ़ूसे क़ुदसिया जज़्बए शौक़ और वुफ़ूरे इश्क़ से ज़िन्दगी के आख़िरी सालों में आ़लमे इस्तिग़राक़ में चले जाते हैं।

ज़ाहिरी और बातिनी शरीअ़त की ह़क़ीक़त

कुछ लोग शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल करने वालों या'नी चरस और भंग के नशे में धुत मवालियों को, मज्ज़ूब या फ़क़ीर का नाम दे कर, शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल को (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) उन के लिये जाइज़ क़रार देते हैं। और कहते हैं : येह त़रीक़त का मुआ़मला है, येह फ़क़ीरी लाइन है, हर एक को समझ में नहीं आ सकती। अगर उन लोगों को नमाज़ न पढ़ता देख कर पूछा जाए तो (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) कहते हैं कि येह ज़ाहिरी शरीअ़त, ज़ाहिरी लोगों के लिये है, हम बातिनी अजसाम के साथ **ख़ानए का'बा** या **मदीने में नमाज़** पढ़ते हैं ! तो याद रखो ! **येह गुमराही है और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।** क्यूंकि येह मा'लूम होना ज़रूरी है कि **बातिनी शरीअ़त** या'नी त़रीक़त का मख़्ख़न उसी **ज़ाहिरी** दूध से पैदा होता है और बातिनी इ़ल्म उसी ज़ाहिरी इ़ल्म से इ़यां होता है।

चुनान्चे, बातिनी नमाज़ या'नी नमाज़ का हुज़ूर उसी **ज़ाहिरी नमाज़** कमाले इस्तिग़राक़ और पूरी मह़विय्यत का नाम है। इसी से इस का ज़ुहूर और उसी नमाज़ की हुस्ने अदाएगी से ही सीने में नूर और बातिनी सुरूर पैदा होता है। शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल करने वाले जिन गुमराह लोगों को **ज़ाहिरी शरीअ़त** की पाबन्दी की ताब और त़ाक़त न हो, उन के लिये **बातिनी शरीअ़त** का हुसूल किस त़रह़ मुमकिन है। **जिन के पास दूध नहीं उन्हें मख़्ख़न कहां से ह़ासिल हो।** लिहाज़ा ऐसे जाहिल व बे अ़मल गुमराह लोगों से दूर रहने में ही आ़फ़िय्यत है।

www.dawateislami.net

मगर बहुत से नादान लोग म-दनी माहोल से वाबस्ता होने के बा वुजूद शरीअ़त व त़रीक़त से ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर नाम निहाद फ़क़ीर या बाबा नुमा बहरूपियों के ज़ाहिरी हुल्ये और शो'बदाबाज़ी से मुतअस्सिर हो कर उन के अ़क़ीदत मन्द बन जाते हैं। जिस बिना पर वोह जराइम पेशा लोग ब आसानी उन्हें अपना शिकार बना लेते हैं। इस ज़िम्न में **पांच इब्रत अंगेज़ सच्चे वाक़ेआ़त** अपने लफ़्ज़ों में पेश करने की सअ़ूय की गई है, ब ग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

शो 'बदाबाज़ी के 5 इब्रत अंगेज़ वाक़ेआ़त

﴾1﴿ बाबा दिल देखता है !!!

एक इस्लामी भाई ने बताया कि तक़रीबन सि.1998 ई. की बात है कि मैं shoes की दुकान में नोकरी करता था। एक दिन सुब्ह़ के वक़्त एक शख़्स दुकान में आया जिस ने गले में माला डाली हुई थी और सर पर रूमाल ओढ़ा हुवा था, लिबास भी साफ़ सुथरा था, हाथों में कई अंगूठियां थीं। वोह आ कर शेठ के सामने वाली कुरसी पर बैठ गया। इस से पहले कि हम उस से कुछ मा'लूम करते, शेठ ने ख़ुद ही उस से पूछा : **बाबा क्या चाहिये ?** मगर वोह शख़्स बातचीत किये बिग़ैर शेठ को घूरे जा रहा था, शेठ के बार बार पूछने के बा वुजूद वोह बिग़ैर कोई जवाब दिये मुसल्सल घूरे जा रहा था। शेठ ने फिर पूछा : **बाबा क्या लेना है ?** अब वोह बाबा धीमे और पुर असरार लहजे में बोला : **बाबा तेरी क़मीज़ लेगा, बोल देगा ?** शेठ घबरा सा गया और बोला : बाबा मेरी क़मीज़ पुरानी है, नई क़मीज़ मंगवा देता हूं। मगर वोह बोला : **"नहीं, बाबा तेरी ही क़मीज़ लेगा, बोल देगा ?"** आख़िर शेठ ने परेशान हो कर क़मीज़ उतारना चाही तो वोह फ़ौरन बोला : रहने दे, **बाबा दिल देखता है !!!**

www.dawateislami.net

फिर कुछ देर ख़ामोश रह कर बोला : **बाबा तेरे जूते लेगा, बोल देगा ?** शेठ बोला : बाबा मेरे जूते बहुत पुराने है नए जूते दे देता हूं, वोह बोला : **"नहीं, बाबा तेरे जूते लेगा, बोल देगा ?"** शेठ अपने जूते देने लगा, तो वोह एक दम बोला : **"नहीं, बाबा दिल देखता है, अपने जूते अपने पास रख । बाबा दिल देखता है !!!"**

फिर कुछ देर टिकटिकी बांधे घूर घूर कर शेठ को देखता रहा, शेठ ने घबरा कर पूछा **बाबा क्या चाहिये ?** बोला : **"जो मांगूंगा देगा ?"** शेठ बोला : बाबा आप बोलो क्या लेना है ? वोह कुछ देर ख़ामोश रह कर बोला : अगर मैं येह बोलूं कि **अपनी जेब के सारे पैसे दे दे** तो क्या तू बाबा को दे देगा ? अब शेठ चौंका, मगर शायद उस शख़्स ने कोई अ़मल किया हुवा था । चुनान्चे शेठ ने जेब में हाथ डाला और जेब की तमाम रक़म निकाल कर उस के सामने रख दी । उस बाबा नुमा शख़्स ने नोट हाथ में लिये और कुछ देर उलट पुलट कर देखता रहा फिर बोला : **बाबा दिल देखता है !!! ले अपने पैसे वापस ले, बाबा पैसों का क्या करेगा ? बाबा दिल देखता है !!!** येह कहते हुए तमाम नोट वापस कर दिये । और ख़ामोश टिकटिकी बांधे शेठ को घूरने लगा और कुछ देर बा'द मुस्कुरा कर बोला : **"अगर बाबा तुझ से तेरी तिजोरी की सारी रक़म मांगे तो क्या बाबा को दे देगा ? बोल, "बाबा दिल देखता है," बोल दे देगा ।"** चूंकि वोह अब तक बाबा नुमा पुर असरार शख़्स तमाम चीज़ें मांग कर फिर **"बाबा दिल देखता है"** कह कर वापस कर चुका था, लिहाज़ा शेठ ने ताख़ीर किये बिग़ैर तिजोरी ख़ाली करना शुरूअ़ कर दी ।

उस शख़्स ने अपना रूमाल सामने बिछा दिया, और रक़म उस में रखने लगा, फिर उस को बांध कर गांठ लगा दी । और मुस्कुरा कर बोला : बाबा अगर येह सारी रक़म ले जाए **तो तुझे बुरा तो नहीं**

www.dawateislami.net

लगेगा ? शेठ बोला : बाबा मैं ने पैसे आप को दे दिये हैं अब आप जो चाहें करें। वोह फिर बोला : नहीं, तू येह सोच रहा है कि कहीं येह रक़म ले न जाए। **बाबा दिल देखता है ! बाबा दिल देखता है !! बाबा दिल देखता है !!!** कहते कहते वोह पुर असरार अन्दाज़ पोटली हाथ में लिये उठा और दुकान से नीचे उतर गया। हम सब सक्ते के आ़लम में कुछ देर तो एक दूसरे के चेहरे देखते रहे फिर एक दम शेठ चीख़ा : **अरे वोह शख़्स मुझे लूट कर चला गया, उसे पकड़ो।** मगर बाहर जा कर देखा तो **वोह पुर असरार शख़्स ग़ाइब हो चुका था,** बहुत तलाश किया लेकिन वोह शख़्स न मिला, और यूं शेठ हज़ारों की रक़म गंवा बैठा।

﴾2﴿ पुर असरार बूढ़ा

एक इस्लामी भाई ने बताया कि ग़ालिबन सि.1991 ई. की बात है। मैं नया नया दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हुवा था और गवर्नमेन्ट स्कूल में बतौ़रे उस्ताज़ मुलाज़मत थी।

एक दिन मैं अपनी क्लास में बच्चों को पढ़ा रहा था, कि अचानक क्लास में एक पुर **असरार बूढ़ा** जिस की दाढ़ी के बाल आपस में उल्झे हुए थे, सर नंगा था, बोसीदा कपड़ों में मल्बूस चेहरे पर चश्मा लगाए दाख़िल हुवा और क़रीब आ कर कहने लगा, बेटा मदीने जाएगा, बेटा मदीने जाएगा। म-दनी माहोल की ब-रकत से चल मदीना की ख़्वाहिश तो पैदा हो ही चुकी थी। लिहाज़ा येह सुन कर मैं उस की जानिब मुतवज्जेह हुवा। पुर असरार बूढ़े ने क़रीब आ कर गुफ़्तगू करते करते हुए सामने रखी कॉपी में से काग़ज़ का एक टुकड़ा फाड़ कर लपेटा और मेरे हाथ में दे दिया। मैं ने उसे खोला तो

www.dawateislami.net

उस में ता'वीज़ की त़रह़ गहरे सुर्ख़ रंग की तह़रीर मौजूद थी जिस में "मदीने जाएगा" वग़ैरा लिखा हुवा था। मैं चूंकि इस त़रह़ नज़रबन्दी के वाक़ेआ़त सुन चुका था लिहाज़ा मोह़तात़ हो कर कहने लगा : बाबा, बस दुआ़ कर दें। वोह बड़े पुर असरार अन्दाज़ में क़रीब आ कर बोला : बेटा ! बाबा को पैसे नहीं देगा ? बाबा दुआ़ करेगा। मेरी जेब में 2 रूपिये थे। निकाल कर दिये तो बोला : बस, इतने कम, येह कहते कहते उस ने नोट हाथ में लिया और ऊपर की जानिब ले जा कर मेरा हाथ पकड़ा और मेरी हथेली फैला कर ऊपर अपने हाथ से नोट को दबाया तो **ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर उस नोट में से पानी टपकना शुरूअ़ हो गया,** ह़त्ता कि मेरी हथेली पानी से भर गई। मैं ने घबरा कर पानी नीचे गिरा दिया।

वोह मुझ से मायूस हो कर मुझे घूरता हुवा हेड मास्टर के कमरे में जा पहुंचा, उस के सामने भी शो'बदेबाज़ी करता रहा। मसलन कंकर उठा कर हेड मास्टर के मुंह में रखा तो वोह शकर बन गई उस ने कुछ पैसे हेड मास्टर से और कुछ दीगर असातिज़ा किराम से धोके के ज़रीए़ ह़ासिल किये और देखते ही देखते स्कूल से बाहर निकला और ग़ाइब हो गया।

﴾3﴿ फ़क़ीर दुआ़ करेगा

एक इस्लामी भाई ने बताया कि मेरी पेन्टर की दुकान थी। कमो बेश 10:00 बजे सुब्ह़ मैं बोर्ड पर लिखाई में मसरूफ़ था कि पीछे से सलाम की आवाज़ आई। मैं ने जवाब देते हुए मुड़ कर देखा तो सामने एक शख़्स खड़ा था जिस के सर पर सफ़ेद टोपी थी, चेहरे पर शेव बढ़ी हुई थी, काले रंग का लम्बा कुरता पहना हुवा था। मैं समझा कोई फ़क़ीर है, लिहाज़ा ! मैं ने उसे कुछ पैसे दे कर फ़ारिग़ करना

www.dawateislami.net

चाहा तो अ़जीब अन्दाज़ में मुस्कुराया और कहने लगा : मैं पैसे लेने वाला फ़क़ीर नहीं, **मैं तो क़लन्दर साईं का फ़क़ीर हूं।** क़लन्दर साईं के पास जा रहा था, तुझे देखा तो मिलने चला आया, **बोल क्या मांगता है? बाबा देने आया है !!!** मैं बोला : बाबा दुआ़ करो, येह सुन कर उस ने सामने रखा छोटा सा लकड़ी का टुकड़ा उठाया और मुंह में चबा कर कुछ देर बा'द बाहर निकाला तो वोह इलाइची की सूरत इख़्तियार कर चुका था। मैं बड़ा मुतअस्सिर हुवा। **समझा येह कोई अल्लाह वाला है जो आज मेरे नसीब जगाने आया है!** उस ने मुझे वोह इलाइची खाने के लिये दी तो मैं ने मुंह में रख ली और बोला : आप बैठिये, मैं चाय मंगवाता हूं, मगर उस ने कहा : फ़क़ीर चाय नहीं पीता, **बोल तू क्या मांगता है?** मुझे तू परेशान लगता है, दुश्मनों ने बांध रखा है, फ़क़ीर आज देने आया है, मांग क्या मांगता है? मैं ने फिर दुआ़ के लिये अ़र्ज़ की तो कहने लगा : फ़क़ीर क़लन्दर साईं पर जाएगा, नियाज़ करेगा, तेरे लिये दुआ़ करेगा **तू नियाज़ के लिये पैसे देगा?**

पैसे मांगने पर मैं चौंका, मगर येह सोच कर ख़ामोश रहा कि हो सकता है येह कोई अल्लाह वाला हो और मुझे आज़्मा रहा हो! लिहाज़ा मैं ने 100 रूपिये निकाल कर दिये तो बोला : इतने कम पैसे, क़लन्दर की नियाज़, साईं क़लन्दर का मुआ़मला है, फ़क़ीर दुआ़ करेगा, फ़क़ीर देने आया है, **बोल क्या मांगता है?** क़लन्दर साईं की नियाज़ के लिये और पैसे दे ताकि फ़क़ीर ख़ुश हो कर दुआ़ करे, **फ़क़ीर को ख़ुश नहीं करेगा?** मैं ने 100 रूपिये और निकाल कर दे दिये, मगर उस ने शायद मेरी जेब में मज़ीद रक़म देख ली थी, लिहाज़ा उस का इसरार जारी रहा। मुझ पर अब अ़जीब घबराहट सी त़ारी हो गई थी, लिहाज़ा मैं ने 100 रूपिये मज़ीद दिये और हिम्मत कर के ज़रा सख़्त

www.dawateislami.net

लहजे में बोला : बस बाबा मैं इस से ज़ियादा नहीं दे सकता ! आप जाओ मेरे लिये दुआ करना, इस पर वोह येह कहते हुए **फ़क़ीर देने आया है, बोल क्या मांगता है ? फ़क़ीर दुआ करेगा, फ़क़ीर दुआ करेगा । क़लन्दर साईं का मुआमला है, बोल क्या मांगता है ? फ़क़ीर दुआ करेगा** ! कहते कहते दुकान से नीचे उतर गया, मैं बा'द में इन्तिहाई अफ़्सोस करता रहा कि वोह मुझे बे वुक़ूफ़ बना कर 300 रूपिये ले गया !!!

﴾4﴿ तकिये के नीचे 500 का नोट

एक इस्लामी भाई ने बताया कि ग़ालिबन सि.1975 ई. की बात है । मेरे दादा जिन की उम्र कमो बेश 70 साल थी । वोह पन्ज वक़्ता नमाज़ी थे और चेहरे पर दाढ़ी भी थी । एक रोज़ दो पहर के वक़्त किसी सुनसान गली से गुज़र रहे थे, कि अचानक पीछे से दो अफ़राद की तेज़ गुफ़्तगू सुनाई दी ।

उन्हों ने पीछे मुड़ कर देखा तो एक शख़्स जिस ने सर पर रूमाल ओढ़ रखा था, चेहरे पर दाढ़ी थी, लिबास भी साफ़ सुथरा था, तेज़ रफ़्तारी से चल रहा था और पीछे एक शख़्स आजिज़ी के साथ कुछ अ़र्ज़ कर रहा था ।

जब येह लोग मेरे दादा के क़रीब पहुंचे तो अ़र्ज़ करने वाला शख़्स दादा से मुख़ातिब हो कर कहने लगा, हुज़ूर इन से मेरी सिफ़ारिश कर दें, मैं ग़रीब आदमी हूं, इन्हों ने मुझे एक "विर्द" पढ़ने के लिये दिया था और कहा था कि किसी को बताना मत । सुब्ह रोज़ाना तेरे तकिये के नीचे से 500 का नोट निकला करेगा, यूं "**रोज़ाना पांच सौ का नोट मिलने लगा** !!!" मैं खुश हाल हो गया, बस मुझ से येह ग़-लती हो गई कि येह बात मैं ने किसी को बता दी और वोह पैसे मिलना बन्द हो गए, आप इन से मेरी सिफ़ारिश कर दें ।

www.dawateislami.net

मेरे दादा ने उस शख़्स को कहा कि बेचारा ग़रीब आदमी है, ग़-लती हो गई उस को मुआ़फ़ कर दें, इस पर वोह उस शख़्स से बोला कि इन बुज़ुर्ग के कहने पर मुआ़फ़ कर रहा हूं। **जा अब रोज़ाना दोबारा 500 रूपै का नोट मिलना शुरूअ़ हो जाएगा, मगर किसी से कहना मत।**

वोह शख़्स ख़ुशी ख़ुशी वहां से रवाना हो गया। अब गली में वोह शख़्स और मेरे दादा रह गए। वोह शख़्स मेरे दादा से कहने लगा : चाचा ! आप कुछ परेशान लग रहे हैं ! **मैं आप की क्या मदद कर सकता हूं** ? दादा हुज़ूर जो मुआ़शी तौ़र पर इन्तिहाई परेशान थे, रो पड़े और उसे अपना ख़ैर ख़्वाह समझ कर अपनी परेशानी बताने लगे।

उस ने मेरे दादा को तसल्ली देते हुए कहा : चाचा ! आप हिम्मत रखें सब सह़ीह़ हो जाएगा, **आप के पास कुछ रक़म हो तो लाओ मैं उस पर दम कर दूं,** उस से ऐसी ब-र-कत होगी कि तुम्हारी सारी परेशानियां दूर हो जाएंगी। दादा बे चारे क्या देते, उन की जेब में चन्द सिक्के थे वोही निकाल कर दिये कि इस पर दम कर दो। मगर वोह बोला : नोट नहीं हैं ? तो चलो **आप के हाथ में जो घड़ी है वोही लाओ मैं इस पर दम कर देता हूं।** दादा ने घड़ी हाथ से उतार कर उस को थमा दी। उस ने जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाला और उस में घड़ी डाली और दम कर के लिफ़ाफ़ा दादा के हाथ में दे दिया और कहा **इसे ले जा कर घर में रख दो और सुब्ह़ खोल कर देखना आप ह़ैरत ज़दा रह जाओगे ! मगर सुब्ह़ तक बिल्कुल ख़ामोश रहना एक लफ़्ज़ भी नहीं बोलना !** फिर लिफ़ाफ़ा खोल कर देखना तो इन्तिहाई ह़ैरत अंगेज़ मन्ज़र देखने को मिलेगा।

www.dawateislami.net

बेचारे दादा हुज़ूर घर में आ कर ख़ामोश बैठ गए। घर वाले बात करें तो कोई जवाब न दें। सब घर वाले परेशान थे कि इन्हें क्या हो गया। ख़ैर, जैसे तैसे रात गुज़ारी और सुब्ह दादा ने जैसे ही लिफ़ाफ़ा खोल कर देखा तो **उस शख़्स के कहने के बिल्कुल मुताबिक़ वाक़ेई दादा हैरत ज़दा रह गए कि उस लिफ़ाफ़े में घड़ी की जगह दो पथ्थर रखे हुए थे !!!** येह देख कर वोह कफ़े अफ़्सोस मल कर रह गए और सारे घर वालों को अपनी ख़ामोशी की वजह बता कर मज़्कूरा वाक़ेआ सुनाया।

﴾5﴿ दिल उछल कर हल्क़ में आ गया

मीरपूर ख़ास (सिन्ध) के मुक़ीम एक शख़्स ने बताया कि मैं एक दिन रेल्वे स्टेशन के क़रीब से गुज़र रहा था कि एक अधेड़ उम्र शख़्स ने मुझे इशारे से अपने क़रीब बुलाया। मैं समझा शायद येह कोई मुसाफ़िर है और रास्ता मा'लूम करना चाहता है। जब मैं उस के क़रीब पहुंचा तो उस ने पुर असरार अन्दाज़ में मेरा हाथ पकड़ा और मेरे कान में सरगोशी करते हुए वोह बात कही जिसे सिर्फ़ मैं जानता था या मेरे घर वाले। मैं वोह बात सुन कर चौंका तो वोह मुस्कुरा कर कहने लगा : "और क्या जानना चाहता है ?" **अल्लाह वाले दिल की बातें जान लेते हैं, जा तेरी सारी परेशानियां ख़त्म हो जाएंगी, अल्लाह वाले की दुआ है, जा चला जा, तेरा सितारा बहुत जल्द चमकने वाला है।**" येह सुन कर मैं तो उस का गिरवीदा हो गया और बे साख़्ता उस के हाथ चूम लिये और कहने लगा कि आप अल्लाह वाले हैं, मुझ पर करम फ़रमा दें। येह सुन कर उस ने कुछ देर के लिये सर झुका लिया और फिर बोला : **ला रक़म दे तो मैं "दुगनी" कर दूं। मैं ने फ़ौरन 100 का नोट** उस के हाथ में दे

www.dawateislami.net

दिया। उस ने वोह नोट हाथ में लिया और कुछ पढ़ने के बा'द उस पर दम कर के मेरी हथेली पर रखा और मुठ्ठी बन्द कर दी। फिर कहा : "मुठ्ठी खोल.....!" जैसे ही मैं ने मुठ्ठी खोली तो हैरान रह गया कि **उस में सो सो के दो नोट मौजूद थे** !

जब वोह शख़्स मुड़ कर जाने लगा तो मैं उस के पीछे लग गया कि बाबा ! आप मज़ीद करम करें। इस पर उस ने नाराज़ी वाले अन्दाज़ में कहा कि तू लालची हो गया है, दुन्या मुर्दार की मानिन्द है इस के पीछे मत पड़, नुक़्सान उठाएगा। मगर मेरा इसरार जारी रहा तो उस ने कहा कि "अच्छा 1000 का नोट है तो **निकाल**।" मैं ने फ़ौरन जेब से 1000 **का नोट निकाला** और उस के हाथ में दे दिया। उस ने हस्बे साबिक़ दम कर के नोट मेरी मुठ्ठी में दबा दिया। मैं ने मुठ्ठी खोली तो हैरत अंगेज़ तौर पर मेरे हाथ में **हज़ार हज़ार के दो नोट थे** ! ! ! मैं ने सोचा कि आज मौक़अ़ मिला है इस से पूरा फ़ाइदा उठाना चाहिये। लिहाज़ा मैं ने उस से कहा आप मेरे साथ मेरे घर चलें ताकि मैं आप की कुछ ख़िदमत वग़ैरा करूं। तो वोह कहने लगा कि **ख़िदमत क्या करेगा ? तू ने घर की रक़म और ज़ेवरात दुगने कराने हैं।** येह सुन कर मेरे दिल की कली खिल गई। मैं ने कहा : बाबा ! आप करम फ़रमाएं। वोह कहने लगा : **अल्लाह** वाले दुन्या से सरोकार नहीं रखते, घरों पर नहीं जाते, **जा घर जा और रक़म व ज़ेवरात यहीं ले आ, मैं दुगना कर दूंगा मगर किसी को बताना मत, वरना मुझे न पा सकेगा।**

www.dawateislami.net

मैं उल्टे क़दमों घर पहुंचा और कमो बेश **डेढ़ लाख नक़द रक़म** और घर के तमाम **सोने के ज़ेवरात** थैली में डाले और भागम भाग उस के पास जा पहुंचा तो वोह ख़ामोशी से सर झुकाए बैठा था। मुझे देख कर उस ने थैली हाथ में ले ली और मुझे कहा : "आंखे बन्द कर ले, **रक़म ज़ियादा है लिहाज़ा ! पढ़ाई भी ज़ियादा करना होगी ।**" तक़रीबन 5 मिनट मैं आंखें बन्द किये बैठा रहा। फिर उस ने कहा : आंखें खोल, मैं ने ज़ेवरात और रक़म पर दम कर दिया है, जा सीधा घर जा, मुड़ कर देखना न रास्ते में किसी से बात करना, घर जा कर थैला खोलना **तो दिल उछल कर हल्क़ में आ जाएगा** ! मैं ने उस के हाथ चूमे और तेज़ तेज़ क़दमों से चलता हुवा घर पहुंचा। घर पहुंच कर मैं ने दरवाज़े और खिड़कियां वग़ैरा बन्द कीं और धड़कते दिल के साथ जैसे ही रक़म और घर के तमाम ज़ेवरात निकालने के लिये थैला खोला तो वाक़ेई उस शख़्स के कहने के मुताबिक़ न सिर्फ़ **मेरा दिल उछल कर हल्क़ में आ गया** बल्कि सर भी चकरा गया क्यूंकि थैली में से डेढ़ लाख की रक़म और ज़ेवरात ग़ाइब थे और उन की जगह अख़्बार की रद्दी भरी हुई थी। मैं बे साख़्ता चीख़ने लगा : **"अरे, मैं लुट गया, वोह मुझे धोका दे गया ।**" मेरी चीख़ो पुकार सुन कर घर के तमाम अफ़राद जम्अ हो गए। मैं ने उन्हें तमाम सूरते हाल से आगाह किया। हम ने उस की तलाश में न सिर्फ़ स्टेशन बल्कि शहर का कोना कोना छान मारा **मगर उस चालबाज़ का पता न चल सका ।**

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन शो'बदा बाज़ों के वाक़िआत से पता चला कि महूज़ किसी के ज़ाहिरी हुल्ये या शो'बदेबाज़ी से मुतअस्सिर हो कर उसे **अल्लाह** का फ़क़ीर या मज्ज़ूब नहीं समझ लेना चाहिये बल्कि हर मुआमले में शरीअ़त को पेशे नज़र रखने में ही आ़फ़िय्यत है और येह भी याद रहे कि मज्ज़ूब पर जज़्ब की कैफ़िय्यत, अज़ खुद त़ारी होती है। **जान बूझ कर त़ारी नहीं की जाती ।**

सच्चे मज्ज़ूब

ह़ज़रते बू अ़ली शाह क़लन्दर पानी पती رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه का इर्शादे गिरामी है कि मज्ज़ूब की पहचान दुरूद शरीफ़ से (भी) होती है। **उस के सामने दुरूदे पाक पढ़ा जाए तो मुअद्दब (या'नी बा अदब) हो जाता है ।**

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : सच्चे मज्ज़ूब को इस त़रह़ पहचाना जा सकता है कि **वोह कभी भी शरीअ़ते मुत़ह्हरा का मुक़ाबला नहीं करेगा ।** (जब कि ब ज़ाहिर वोह शरई अह़कामात पर अ़मल करता नज़र न आए) या'नी बा वुजूद होश में न होने के, उस पर अगर शरई अह़काम पेश किये जाएं तो न वोह इन्हें रद करेगा, और न इन्हें चेलेन्ज करेगा।

ह़ज़रते सय्यिदी मूसा सुहाग رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : ह़ज़रते **सय्यिदी मूसा सुहाग** رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه मश्हूर मज्ज़ूबों में से थे, **अह़मदाबाद** शरीफ़ (हिन्द) में मज़ार शरीफ़ है। मैं उन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा हूं। ज़नाना वज़्अ़ (औ़रतों वाला हुल्या) रखते थे। एक बार क़ह़्त़े शदीद पड़ा। बादशाह, क़ाज़ी व अकाबिर जम्अ़ हो कर **ह़ज़रते सय्यिदी मूसा सुहाग** رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه के पास दुआ़ के लिये गए।

www.dawateislami.net

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इन्कार फ़रमाते रहे कि मैं क्या दुआ के क़ाबिल हूं। जब लोगों की आहो ज़ारी हद से गुज़री तो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने आस्मान की त़रफ़ मुंह उठा कर कुछ फ़रमाया। आप का फ़रमाना था **कि घटाएं पहाड़ की त़रह़ उमंड आईं और जल थल भर दिये।**

एक दिन नमाज़े जुमुआ़ के वक़्त आप (या'नी सय्यिदी मूसा सुहाग رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ) बाज़ार में जा रहे थे, उधर से क़ाज़िये शहर जामेअ़ मस्जिद को जाते थे, इन्हें देख कर अम्र बिल मा'रूफ़ किया कि **वज़्अ़** (ज़नाना हुल्या) **मर्दों को ह़राम है।** मर्दाना लिबास पहनिये और नमाज़ को चलिये।

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस पर इन्कार व मुक़ाबला न किया। चूडियां, ज़ेवर और ज़नाना लिबास उतार कर (मर्दाना लिबास पहना) और मस्जिद को चल दिये। ख़ुत्बा सुना। जब जमाअ़त क़ाइम हुई। और इमाम ने तक्बीरे तह़रीमा कही। **अल्लाहु अकबर** सुनते ही उन की ह़ालत बदली, **सर से पांव तक वोही सुर्ख़ लिबास और चूड़ियां आ गईं।**

आ'ला ह़ज़रत عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ رَبِّ الۡعِزَّت मज़ीद फ़रमाते हैं : अन्धी तक़्लीद के त़ौर पर, उन के मज़ार के बा'ज़ मुजावरों को देखा, कि अब तक बालियां, कड़े, जोशन (बाज़ू का एक ज़ेवर) पहनते हैं। येह गुमराही है। (अल मल्फ़ूज़ शरीफ़, ह़िस्सए दुवुम, स. 208)

सच्चा वज्द

आ'ला ह़ज़रत عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ رَبِّ الۡعِزَّت फ़रमाते हैं कि सच्चे वज्द (या'नी बेख़ुदी) की पहचान येह है कि फ़राइज़ व वाजिबात में मुख़िल न हो। ह़ज़रते सय्यिद अबुल ह़सन अह़मद नूरी عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ पर ऐसा वज्द त़ारी हुवा कि तीन शबो रोज़ इसी ह़ालत में गुज़र गए। सय्यिद अबुल ह़सन अह़मद नूरी عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ ह़ज़रते **जुनैद बग़दादी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی के ज़माने के थे।

www.dawateislami.net

किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुत्ताइफ़ा **जुनैद बग़दादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى से येह ह़ालत अ़र्ज़ की । इस्तिफ़्सार फ़रमाया : **नमाज़ का क्या ह़ाल है?** अ़र्ज़ की : नमाज़ के वक़्त होशियार हो जाते हैं और फिर वोही कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है ! **फ़रमाया :** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **उन का वज्द सच्चा है ।** इस के बा'द आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : **नमाज़ जब तक बाक़ी है, किसी वक़्त में मुआ़फ़ नहीं ।** (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए दुवुम, स. 241)

एक साह़िब सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से थे, बहुत ज़ईफ़ हुए, मगर पंजगाना नमाज़े बा जमाअ़त अदा फ़रमाते । एक शब इ़शा की ह़ाज़िरी में गिर पड़े, चोट आई । बा'दे नमाज़ अ़र्ज़ की : इलाही (عَزَّوَجَلَّ) अब मैं बहुत ज़ईफ़ हो चुका हूं, बादशाह अपने बूढ़े ग़ुलामों को ख़िदमत से आज़ाद कर देते हैं ! मुझे भी आज़ाद फ़रमा दे । **उन की दुआ क़बूल हुई, मगर यूं कि सुब्ह़ उठे तो मजनून** (या'नी दीवाने) **हो चुके थे ।** (मा'लूम हुवा जब तक अ़क़्ल बाक़ी है नमाज़ मुआ़फ़ नहीं ।) (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए दुवुम, स. 242)

मज्ज़ूबे बरेली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى

ह़क़ीक़त येह है कि **अल्लाह** वाला कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम की मुख़ालफ़त नहीं करता, एक मज्ज़ूब **दीना मियां** (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) थे । बरेली शरीफ़ का बच्चा बच्चा उन के नाम से वाक़िफ़ था । **उन्हों ने एक दफ़्आ ट्रेन को अपनी करामत से रोक दिया था ।** आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه एक दिन मह़ल्ला सौदागरान (बरेली शरीफ़) तशरीफ़ ले गए । जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه मस्जिद के क़रीब पहुंचे तो आ'ला ह़ज़रत क़िब्ला رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه मकान से बाहर तशरीफ़ ला रहे थे ।

www.dawateislami.net

दीना मियां رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه आप को देख कर भागे और एक गली में छुप गए। लोगों ने आप को देखा तो पहचाना और कहा : **क्यूं भागते हो, मियां ?** आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी कच्ची ज़बान में फ़रमाया : **बा मौलवा आरू है।** (या'नी शरीअ़त के इमाम आ रहे हैं) लोगों ने कहा : **मौलवी** साहिब आ रहे हैं, तो क्या हुवा। (अब चूंकि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तहबन्द घुटनों से ऊपर था) इस लिये घुटनों पर हाथ रख कर फ़रमाया : **फिरज खुले भट्टे हैं ?** (या'नी मेरा सित्र खुला हुवा है)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ'ला ह़ज़रत क़िब्ला عَلَيْهِ الرَّحْمَة की येह शान, बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में येह मक़्बूलिय्यत कि बड़े बड़े **क़ुतुबो अब्दाल** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के आ'ला मर्तबे की क़द्र करते थे। बल्कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की बारगाह में मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ के असरार और रुमूज़ समझने के लिये ह़ाज़िरी दिया करते थे।

(तजल्लियाते अह़मद रज़ा, मुजद्दिदे वक़्त का एह़तिराम, स. 48)

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की अ़-ज़मत व मक़ाम से मुतअ़ल्लिक़ एक और ईमान अफ़रोज़ सच्चा वाक़ेआ़ पेशे ख़िदमत है पढ़िये और झूमिये।

मज्ज़ूबे ज़माना رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

मज्ज़ूबे ज़माना ह़ज़रते धोका शाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बरेली शरीफ़ के मश्हूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। आप पर भी अकसर जज़्ब (वोह ह़ालत जो मज्ज़ूब फ़क़ीरों के लिये मख़्सूस है) की कैफ़िय्यत त़ारी रहती थी। सि. 1316 हि. का वाक़ेआ़ है कि **ह़ज़रत धोका शाह** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और (ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर) फ़रमाने लगे : हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हुकूमत ज़मीन पर नज़र आ रही है, **आस्मान पर नज़र नहीं आती ?**

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने इर्शाद फ़रमाया : हुज़ूर पुरनूर शहनशाहे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हुकूमत जिस त़रह़ ज़मीन पर है, **इसी त़रह़ आस्मान पर भी है।** ह़ज़रते धोका शाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फिर (ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर) अ़र्ज़ किया : हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हुकूमत ज़मीन पर नज़र आ रही है, आस्मान पर नज़र नहीं आती ? (बुज़ुर्गों से इस त़रह़ के जुम्ले निकलना या तो ह़ालते सकर की बिना पर होता है या ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इस त़रह़ मा'लूम करना, ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर था)

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने फिर फ़रमाया : किसी को नज़र आए या न आए लेकिन **मेरे आक़ा,** शहनशाहे दो जहां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हुकूमत बह़रो बर, ख़ुश्को तर, बगो समर, शजर व ह़जर, शम्सो क़मर, ज़मीनो आस्मान, हर शै पर हर जगह जारी थी, जारी है और जारी रहेगी। येह जवाब सुन कर ह़ज़रते धोका शाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه चले गए।

यक़ीने आ'ला ह़ज़रत हुज़ूर मुफ्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان की उ़म्र शरीफ़ सिर्फ़ 6 साल की थी, और उस वक़्त आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه छत पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि अचानक छत पर से गिर पड़े।

वालिदा साह़िबा ने तश्वीश में आ'ला ह़ज़रत (عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت) को आवाज़ दी और फ़रमाया : तुम (رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه) अभी एक मज्ज़ूब से उलझे और वोह शायद ग़ुस्से में चले गए, देखो जभी तो येह मुस्त़फ़ा रज़ा (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) छत पर से गिर पड़े, मज्ज़ूबों से उलझना नहीं चाहिये। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने फ़रमाया : मुस्त़फ़ा रज़ा (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) छत पर से गिरे तो हैं, लेकिन उन्हें (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) चोट नहीं लगी होगी !!!

www.dawateislami.net

मक़ामे आ'ला ह़ज़रत देखा तो वाक़ेई आप के मीठे मीठे मदीने के मुन्ने शहज़ादे (मुस्त़फ़ा रज़ा عَلَيْهِ الرَّحْمَة) **सहीह़ सलामत मुस्कुरा रहे थे ।** आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर ऐसे मुस्त़फ़ा रज़ा (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) हज़ार भी अ़त़ा फ़रमाए तो भी ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **इन सब को शरीअ़ते मुत़ह्हरा पर क़ुरबान तो कर सकता हूं । लेकिन शरीअ़ते मुत़ह्हरा पर कोई ह़र्फ़ न आने दूंगा ।**

कमाले आ'ला ह़ज़रत फिर फ़रमाया : मज्ज़ूब तो फ़क़ीर के पास इस्लाह़ के लिये तशरीफ़ लाते हैं और येह काम फ़क़ीर के सिपुर्द है । ह़ज़रते धोका शाह साहिब عَلَيْهِ الرَّحْمَة ज़मीन की सैर फ़रमा चुके थे अब आस्मान की सैर फ़रमाने जा रहे थे, लिहाज़ा **उस नज़र की ज़रूरत थी,** जिस से हुज़ूर शहनशाहे कोनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात आस्मान पर भी मुलाह़ज़ा फ़रमाते । **इस लिये फ़क़ीर के पास तशरीफ़ लाए,** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **उन्हें वोह नज़र अ़त़ा कर दी गई ।**

तुफ़ैले आ'ला ह़ज़रत कुछ देर के बा'द ह़ज़रत धोका शाह عَلَيْهِ الرَّحْمَة दोबारा फिर ह़ाज़िर हुए, और लपकते हुए आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की त़रफ़ बढ़ कर मुआनक़ा किया (या'नी सीने से लिपट गए) और पेशानी चूम ली, फिर फ़रमाया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हुकूमत ज़मीन पर है, इसी त़रह़ आस्मान पर भी, बल्कि हर जगह हर शै पर, हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हुकूमत देख रहा हूं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आप के तुफ़ैल, अब आस्मान पर भी मुझे हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **की हुकूमत नज़र आ रही है ।**

(तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा عَلَيْهِ الرَّحْمَة मत्बूआ़ कराची, 1987, स. 49)

www.dawateislami.net

जानते थे तुझे कुतुबो अब्दाल सब
करते थे मज्ज़ूबो सालिक अदब

तेरी चौखट पे ख़म अहले दिल की जबीन
सय्यिदी मुर्शिदी शाह अहमद रज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा वाक़ेआ़त से पता चला कि हमें हर मुआ़मले में शरीअ़त ही को पेशे नज़र रखना चाहिये और अगर किसी ख़ुश नसीब को इस पुर फ़ितन दौर में किसी पीरे कामिल के दामन से वाबस्तगी की सआ़दत मिल जाए, **तो इस के लिये येह भी लाज़िम है** कि वोह त़रीक़त से मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म ह़ासिल कर के मुर्शिदे कामिल के हुक़ूक़ को भी पेशे नज़र रखे ताकि वोह **"यक दर गीर मोहकम गीर"** या'नी "एक दरवाज़ा पकड़ और मज़्बूत़ी से पकड़" पर मज़्बूत़ी से कारबन्द रह कर दुन्या व आख़िरत की भलाइयां ह़ासिल कर सके, वरना शरीअ़त व त़रीक़त से ना वाक़िफ़िय्यत एक मुरीद के लिये न सिर्फ़ दुन्या और आख़िरत के अ़ज़ीम नुक़्सान बल्कि ईमान के लिये भी सख़्त ख़त़रे का बाइ़स बन सकती है। **कामिल मुरीदीन के दो सच्चे और इ़ब्रतनाक वाक़ेआ़त** अपने लफ़्ज़ों में पेश करने की सआ़दत की गई है मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

﴾1﴿ नाम निहाद पीर नुमा आ़मिल

एक इस्लामी भाई जो दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थे, सर पर सब्ज़ इ़मामे का ताज और चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी भी थी। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों में मसरूफ़ रहते। वोह क़िब्ला शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद भी थे, उन्हों ने बताया कि हमारे घर में चूंकि दुन्यवी माह़ोल था, **लिहाज़ा एक दिन बड़े भाई घर में किसी आ़मिल को ले आए,** जो पीर भी कहलाता था। शुरूअ़ शुरूअ़ में इस ने मेरे और मेरे घर वालों के सामने दा'वते इस्लामी और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़ूब ता'रीफ़ें कीं। मगर आहिस्ता आहिस्ता मेरी

www.dawateislami.net

ग़ैर मौजूदगी में घर वालों को दा'वते इस्लामी और क़िब्ला शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से बदज़न करने की कोशिश करना शुरूअ़ कर दी। जिस के नतीजे में घर वाले मेरे दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करने और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर बे जा ए'तेराज़ात करने लगे। मैं ने उन्हें बहुत समझाया मगर **वोह नाम निहाद पीर नुमा आ़मिल घर वालों को अपने दामे तज़वीर** (या'नी मक्रो फ़रेब के जाल) **में फांस चुका था।**

घर वाले एक अ़रसे से चन्द घरेलू मसाइल की बिना पर सख़्त परेशान थे। एक दिन उस **नाम निहाद पीर** ने घर वालों को बताया कि मैं ने रात चिल्ला खींचा तो मुझे मा'लूम हुवा कि तुम लोगों पर **किसी ने ज़बरदस्त काला इ़ल्म करा रखा है,** तुम सब की मे'याद रखी जा चुकी है, इ़लाज इन्तिहाई दुश्वार है और तुम सब की जान सख़्त ख़त़रे में है, मगर आप लोग मत घबराएं। मैं अपनी जान ख़त़रे में डाल कर भी तुम्हारी मुश्किल के ह़ल के लिये कोशिश करूंगा। इस त़रह़ घर वालों को उस ने उल्टी सीधी बातें बता कर अपना गिरवीदा कर लिया। अब तो घर वाले मुझे म-दनी माह़ोल से सख़्ती से रोकने लगे। **मैं बड़ा परेशान था कि क्या करूं ?** दिन ब दिन घर वालों के दिल में उस नाम निहाद आ़मिल की अ़क़ीदत व मह़ब्बत बढ़ती ही जा रही थी।

चन्द माह बा'द इत्तिफ़ाक़न घर वालों के सामने येह बात खुली कि वोह आ़मिल जिसे येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मक़्बूल बन्दा समझ बैठे थे, **बड़े भाई से मसाइल के ह़ल के बहाने कमो बेश 80,000 रूपिये ले चुका है।** येह सुन कर घर वालों के पैरों तले से ज़मीन निकल गई कि एक तो हम वैसे ही बहुत परेशान थे मज़ीद येह आफ़त ! उन्हों ने भाई से पूछा कि उस आ़मिल को **पैसे देते वक़्त तुम ने हमें बताया क्यूं नहीं ?** तो उन्हों ने बताया कि आ़मिल ने सख़्ती से मन्अ़ किया था कि किसी को मत बताना **वरना सख़्त नुक़्सान का अन्देशा है।**

www.dawateislami.net

ख़ैर, जब उस आ़मिल से बात की गई और रक़म वापसी का मुत़ालबा किया गया तो वोह नादिम होने के बजाए सख़्त त़ैश में आ गया और धमकियां देने लगा कि मुझे तंग मत करो, मैं ने येह पैसे तुम्हारे लिये ही ख़र्च किये हैं। अगर मेरी बातें और लोगों से करोगे तो **ऐसा अ़मल करूंगा कि तुम्हारे बच्चे पागल या मा'ज़ूर हो जाएंगे।**

इस त़रह़ डराने वाली बातें सुन कर तमाम घर वाले ख़ौफ़ज़दा हो गए और येह फ़ैसला किया कि **जो पैसे चले गए उन्हें भूल जाएं** और उसे आयन्दा अपने घर न बुलाया जाए। मगर वोह बिन बुलाए आने और मज़ीद पैसों का मुत़ालबा करने लगा। पैसे न मिलने पर धमकियां देता, हम बड़े परेशान थे। मैं ने मौक़अ़ ग़नीमत जान कर घर वालों का ज़ेह्न बनाया और तमाम घर वालों को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद बनवा दिया और **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के बस्ते से राबेत़ा किया, **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** लिये और काट करवाई जिस से घर वालों की घबराहट में कमी हुई और ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ त़ौर पर ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की ब-र-कत से उस नाम निहाद आ़मिल पीर ने ख़ुद ही आना छोड़ दिया। इस त़रह़ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद होने की ब-र-कत से हम सब घर वालों की इस आफ़त से जान छूट गई।

﴾2﴿ अ़क़ीदत की तक़्सीम के नुक़्सानात

एक 20 साला नौ जवान ने बताया कि कमो बेश 4 साल पहले मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद बन गया और इजतिमाअ़ में पाबन्दी से आने लगा। रोज़ाना दर्स देता और मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में शिर्कत भी करता और पाबन्दी के साथ म-दनी इन्आ़मात का कार्ड भी पुर करता, र-मज़ानुल मुबारक में सुन्नतों भरा इजतिमाई ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत भी पाई, और वहां मुझे **सरकारे मदीना,** सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत भी नसीब हुई।

www.dawateislami.net

उस शख़्स का कहना था कि हाए मेरी बद नसीबी कि मैं **अल्लाह** के एक वली से मुरीद होने के बा वुजूद त़रीक़त के उसूलों से ना वाक़िफ़ होने के बाइस इधर उधर भटकने का आ़दी था। काश कि **''यक दर गीर मोहूकम गीर''** या'नी एक दरवाज़ा पकड़ मज़्बूत़ी से पकड़ पर कारबन्द रहता और सिर्फ़ अपने पीरो मुर्शिद की महब्बत और जल्वे दिल में बसाए रखता तो आज मैं यूं बरबाद न होता, काश **मेरी अ़क़ीदत का महवर सिर्फ़ मेरे मुर्शिद होते, काश ! मैं अपनी अ़क़ीदत तक़्सीम न करता।**

मुआ़मला कुछ यूं रहा कि मुझे जब भी किसी नाम निहाद आ़मिल या पीर के मुतअ़ल्लिक़ इत्तिलाअ़ मिलती कि **वोह क़ल्ब जारी कर देता है** या **इस्मे आ'ज़म जानता है** तो मैं बिग़ैर सोचे समझे **उस के पास पहुंच जाता,** मगर हर जगह सिवाए ज़ाहिरी मुआ़मलात के कुछ न मिलता, लेकिन क्या करता मैं अपनी आ़दत से मजबूर था। **जिस का ख़मयाज़ा आख़िरे कार मुझे भुगतना पड़ा।**

एक दिन मेरी मुलाक़ात एक शख़्स से हुई जिस ने त़रीक़त के नाम पर कुछ बातें ऐसे सह्‌र अंगेज़ अन्दाज़ में बताईं कि मुझे बहुत अच्छा लगा और मेरी बद क़िस्मती कि मैं ने उस से दोस्ती कर ली। वक़्त गुज़रता रहा, एक दिन उस ने अपने एक उस्ताद से मिलवाया **जिसे वोह अपना ''पीर'' कहता था।** उस के उस्ताद ने मुझे पानी पर दम कर के पिलाया और अपने पास पाबन्दी से आने की ताकीद की। फिर मेरा दोस्त मुझे अकसर अपने साथ वहां ले जाता। उस के उस्ताद ने मुझे रोज़ाना पढ़ने के लिये एक वज़ीफ़ा भी दिया और कहा कि इसे पढ़ने की वजह से **तुम लोगों के दिल की पोशीदा बातें जान लोगे।** मैं ने बिला सोचे समझे उस वज़ीफ़े को अपना मा'मूल बना लिया।

www.dawateislami.net

यूं एक अ़रसे तक वज़ाइफ़ किये और पाबन्दी से उस के पास जाता रहा, मगर मेरे दिल में रूहानिय्यत बढ़ने के बजाए **सख़्ती बढ़ती चली गई** जिस के नतीजे में मेरा दिल गुनाहों पर दिलेर हो गया। मैं ने उसे आज तक नमाज़ पढ़ते नहीं देखा था और ह़ैरान कुन बात येह थी कि मैं उस से बदज़न होने के बा वुजूद उस के पास मुसल्सल जाता रहता था। न जाने मुझे क्या हो गया था। आहिस्ता आहिस्ता मैं ने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे **इजतिमाअ़** में शिर्कत करना छोड़ दी फिर सर से इ़मामा शरीफ़ भी उतर गया और (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ) दाढ़ी शरीफ़ भी मुंडवा दी, नमाज़ें भी पढ़ना छोड़ दीं और हर उस गुनाह में भी मुलव्वस होता चला गया जो म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से पहले भी नहीं किया करता था, **आह ! मेरी ह़ालत इन्तिहाई इ़ब्रतनाक हो चुकी थी।**

कुछ अ़रसे तक तो मेरा वहां बहुत दिल लगा मगर फिर दिल वहां से भी उचाट होना शुरूअ़ हो गया और घबराहट त़ारी रहने लगी। क्यूंकि अब वोह मुझ से ऐसी बातें करने लगा था **जिन्हें सुन कर मैं कांप उठता।** वोह कहता कि (مَعَاذَاللّٰہِ) **अल्लाह**, रसूल और मुर्शिद एक ही हैं। मुर्शिद ही ख़ुदा है, फ़र्ज़ रोज़ा, नमाज़ सब की जगह बस तसव्वुरे मुर्शिद ही काफ़ी है।" अब मैं वहां जाना नहीं चाहता था मगर मैं मजबूर था क्यूंकि वोह शख़्स मुझे धमकियां देता कि **यहां आने का रास्ता तो है जाने का कोई रास्ता नहीं है, वापसी का सिर्फ़ एक रास्ता है और वोह है "मौत"।** मैं जब भी वहां न जाने का इरादा करता तो मेरी त़बीअ़त ख़राब होने लगती दिल घबराने लगता और मैं न चाहते हुए भी वहां पहुंच जाता।

www.dawateislami.net

बिल आख़िर मायूस हो कर मैं ने **ख़ुदकुशी** का इरादा कर लिया, और शायद मैं **ख़ुदकुशी** कर भी लेता मगर ख़ुश क़िस्मती से किसी त़रह़ मुझे **शहज़ादए अ़त्तार ह़ाजी अह़मद उ़बैदुर्रज़ा क़ादिरी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی से मुलाक़ात की सआ़दत मिल गई । मेरी रूदाद सुन कर उन्हों ने बहुत ही शफ़्क़त फ़रमाई और बड़े प्यार से मुझे समझाया और तौबा करवाई । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने उन की वकालत के ज़रीए उन के वालिद साह़िब (**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه) से तजदीदे बैअ़त भी की । उन्हों ने फ़रमाया की श-ज-रए अ़त्तारिय्या के अवराद पढ़ने का मा'मूल रखो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ग़ैब से मदद होगी, घबराओ मत, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम एक वलिय्ये कामिल के मुरीद हो, बस इरादत मज़बूत़ रखो कोई ख़ौफ़ मत रखो । **कुफ़्रिय्यात बकने वालों के पास किसी सूरत में न जाना,** फ़राइज़ व वाजिबात की सख़्ती से पाबन्दी रखो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ह़िफ़ाज़त करने वाला है ।**

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज तीन साल से ज़ाइद अ़रसा गुज़र चुका है । मैं ने उन लोगों के पास जाना छोड़ दिया है । और अब मैं बहुत पुर सुकून हूं । **अ़रसए दराज़ के बा'द जब मैं ने बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ की तो मेरे आंसू निकल आए,** मैं ने साबिक़ा गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा कर ली है । मगर जब साबिक़ा ह़ालात के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर करता हूं तो कांप उठता हूं कि अगर निगाहे मुर्शिदे कामिल न होती तो न जाने मेरा क्या बनता । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **हम सब के ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए ।**

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन वाक़ेआ़त से मा'लूम हुवा कि जिस ख़ुश नसीब को इस पुर फ़ितन दौर में किसी ऐसे जामेए़ शराइत़ मुर्शिदे कामिल से मुरीद होने की सआ़दत मिल जाए जो इ़ल्मन व अ़-मलन, क़ौलन व फ़े'लन, ज़ाहिरन व बातिनन अह़कामाते इलाहिय्या की बजा आवरी और सुनने नबविय्या की पैरवी करने और करवाने की भी रौशन नज़ीर हो **जिन की निगाहे विलायत की ब-र-कतों से लाखों मुसलमान बिल ख़ुसूस नौ जवान गुनाहों से ताइब हो कर अपने शबो रोज़ नेकियों की ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र रखने में मसरूफ़ हों ।** ऐसे वलिय्ये कामिल के मुरीद होने की सआ़दत पाने वाले को चाहिये कि फ़ैज़े मुर्शिद से दामन भरने के लिये सिर्फ़ अपने पीर के दर पर ही नज़र रखे, इरादत (या'नी ए'तेक़ाद) मज़्बूत़ रखे ।

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : मुरीद को फ़ैज़ ''परनाले'' की मिस्ल पहुंचेगा । बस **हुस्ने अ़क़ीदत चाहिये ।**

दर दर का भिकारी

सुन्नी उ़-लमाए किराम और जामेए़ शराइत़ मशाइख़े इ़ज़्ज़ाम की ज़ियारत व मह़ब्बत में दुन्या व आख़िरत की भलाइयां पोशीदा हैं, मगर वोह लोग जो कि अह़कामे शरीअ़त व त़रीक़त से ना वाक़िफ़ होते हैं और अच्छे बुरे की शनाख़्त नहीं रखते ऐसे लोग नादानी में इधर उधर भटकते फिरते हैं, कहीं क़ल्ब जारी करवाने के नाम पर, कहीं इस्मे आ'ज़म पाने की ख़्वाहिश पर तो ऐसे नादान लोग बसा अवक़ात **शरीअ़त के ख़िलाफ़ अ़मल करने वालों के हत्थे चढ़ जाते हैं** और अपना बहुत बड़ा नुक़्सान कर बैठते हैं ।

www.dawateislami.net

मुरीदीन के लिये ख़ास हिदायात

इमाम शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي इर्शाद फ़रमाते हैं कि "मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने दिल को अपने मुर्शिद के साथ हमेशा मज़्बूत बांधे रखे और हमेशा ताबेअ़दारी करता रहे और हमेशा ए'तेक़ाद रखे कि **अल्लाह तआ़ला ने अपनी तमाम इमदाद का दरवाज़ा सिर्फ़ उस के मुर्शिद ही को बनाया है** और येह कि उस का मुर्शिद ऐसा मज़हर है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस के मुरीद पर फ़ुयूज़ात के पलटने के लिये **सिर्फ़ उसी को मुअ़य्यन किया है** और ख़ास फ़रमाया है और मुरीद को कोई मदद और फ़ैज़ मुर्शिद के वासिते के बिग़ैर नहीं पहुंचता। अगर्चे तमाम दुन्या मशाइख़े इ़ज़्ज़ाम से भरी हुई है। **मगर येह क़ाइदा इस लिये है कि मुरीद अपने मुर्शिद के इलावा और सब से अपनी तवज्जोह हटा दे। क्यूंकि उस की अमानत सिर्फ़ उस के मुर्शिद के पास होती है, किसी ग़ैर के पास नहीं होती।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो मुरीदीन अपने मुर्शिदे कामिल से इरादत मज़्बूत रखते हैं और **यक दर गीर मोहकम गीर** या'नी एक दरवाज़ा पकड़ मज़्बूती से पकड़ पर कारबन्द रहते हैं वोह ब-र-कतें भी वैसी ही पाते हैं। उन के लिये ग़ैब से मदद के ऐसे सामान होते हैं कि अ़क़्लें दंग रह जाती हैं। इस ज़िम्न में एक **ईमान अफ़रोज़ सच्चा वाक़ेआ़** अपने लफ़्ज़ों में पेश करने की सअ़्य की गई है बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

ख़ौफ़नाक जिन्नात की मौत

सूबा पंजाब के एक इस्लामी भाई जो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद हैं और अपने पीर से इन्तिहाई महब्बत करते हैं। इन **अ़त्तारी इस्लामी भाई** का **ह़ल्फ़िया** बयान है कि मुझे मेरा

www.dawateislami.net

दोस्त एक दिन ज़िद कर के किसी ऐसे शख़्स से मुलाक़ात के लिये ले गया जिसे वोह अपना पीरो मुर्शिद बताता था। वोह शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ता था और मश्हूर येह कर रखा था कि **येह मदीने में नमाज़ पढ़ते हैं।** येह शख़्स नंगे सर था, चेहरे पर ख़शख़शी दाढ़ी और मूंछें बहुत बड़ी बड़ी थीं, हाथों के नाख़ुन भी बढ़े हुए थे। कमरे में अ़जीब सी बदबू फैली हुई थी जिस से मुझे वह़शत सी होने लगी। **इतने में वोह पीर अपने फ़ज़ाइल ख़ुद अपने ही मुंह से बताने लगा** कि मेरे पास बहुत बड़ी त़ाक़त है, मेरा मक़ाम लोग नहीं जानते, अगर मैं ख़ुद को ज़ाहिर कर दूं तो लोग अपने मुर्शिदों को छोड़ कर मेरे पास जम्अ़ हो जाएं। इसी त़रह़ तकब्बुराना अन्दाज़ में न जाने वोह क्या क्या बोलता रहा। फिर मुझ से कहने लगा कि **"तुम ख़ुश नसीब हो जो मेरे पास आने की सआ़दत मिल गई, मुझ से मुरीद हो जाओ, हवा में उड़ोगे और पानी पर चलोगे।"**

मैं उस की ख़िलाफ़े शरअ़ वज़्अ़ क़त़्अ़ और तकब्बुराना अन्दाज़े गुफ़्तगू से पहले ही बेज़ार हो रहा था। येह सुन कर मेरे दिल में मज़ीद और भी शदीद नफ़रत पैदा हुई। मगर अपने जज़्बात को क़ाबू में रखते हुए बोला कि "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मैं मुर्शिदे कामिल से मुरीद हूं।**" इस पर वोह बुलन्द आवाज़ से कहने लगा मेरे हाथ पर मुरीद हो कर देखो तो पता चलेगा कि कामिल पीर किसे कहते हैं? अब तो मेरे तन बदन में आग सी लग गई कि मैं ज़माने के वली शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दामन से वाबस्ता हूं और येह जाहिल व बे

www.dawateislami.net

अ़मल आदमी इतना बढ़ बढ़ कर बोल रहा है। लिहाज़ा ! मुझ से बरदाश्त न हुवा और मैं ने उसे खरी खरी सुना दीं। इस पर वोह गुस्से के मारे खड़ा हो गया और गरज कर कहने लगा : **तुम ने हमारी बे अ-दबी की है, तुम हमें नहीं जानते, अब अपना अन्जाम ख़ुद ही देख लोगे, निकल जाओ इस दरबार से, हमारी नाराज़ी तुम्हें बहुत महंगी पड़ेगी ।''**

मैं भी येह कहते हुए वहां से निकल आया कि जो तेरी मरज़ी आए कर लेना, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मेरा पीर कामिल है।** उस रात थकन के बाइस जल्दी आंख लग गई। कमो बेश रात साढ़े तीन का वक़्त होगा, मैं गहरी नींद सो रहा था कि अचानक किसी ने मुझे झंझोड़ा, मैं घबरा कर उठ बैठा। जैसे ही मेरी निगाह दरवाज़े की त़रफ़ उठी तो ख़ौफ़ के मारे मेरी चीख़ निकल गई, वल्लाह सामने **ख़ौफ़नाक शक्लों वाली** कोई अन्जानी मख़्लूक़ मौजूद थी, जो 2 थे, उन के सर छत से टकरा रहे थे जब कि काले काले **लम्बे बाल** पैरों तक लटक रहे थे, नीज़ **लम्बे लम्बे दांत** सीने तक बाहर निकले हुए थे। वोह बलाएं बड़ी बड़ी **सुर्ख़ आंखों** से मुझे गुस्से में घूर रही थीं। **यकायक दोनों बलाएं मेरी त़रफ़ बढ़ीं,** इस से पहले कि मैं संभलता, उन्हों ने मेरी गरदन दबोच ली और ज़मीन पर गिरा दिया, उन के जिस्म से मुर्दार की सी सड़ांद और शदीद **सख़्त बदबू** आ रही थी, दोनों बलाएं मेरी गरदन को पूरी क़ुव्वत से दबाने लगीं। मेरा दम घुटने लगा, मैं चिल्ला रहा था मगर न जाने क्यूं कमरे में मौजूद दीगर

www.dawateislami.net

घर वाले मज़े से सो रहे थे। ऐसा लगता था कि मेरी आवाज़ वोह नहीं सुन पा रहे। मुझे ऐसा लगा कि शायद बच न सकूंगा, लिहाज़ा मैं ने **कलिमए त़य्यिबा** पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, इसी दौरान मैं ने अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को याद करते हुए उन की बारगाह में इस्तिग़ासा भी पेश किया। ख़ुदा की क़सम ! मैं ने इतने में **जागती आंखों से देखा** कि मेरे पीरो मुर्शिद शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **हाथ में नंगी तल्वार लिये तशरीफ़ ले आए,** वोह ख़ौफ़नाक जिन्नात जो ग़ालिबन उसी नाम निहाद पीर ने अ़-मलिय्यात के ज़रीए मुझ पर मुसल्लत़ किये थे, घबरा कर मुझ से दूर हो गए। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **ने जलाल की ह़ालत में आनन फ़ानन एक ही वार में दोनों के सर क़लम कर दिये और वोह दोनों जिन्नात नीचे गिर कर तड़पने लगे और ज़मीन पर तेज़ी से ख़ून बहने लगा ! ! ! अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मेरे क़रीब आए और पीठ पर थपकी देते हुए तसल्ली दी : **"बेटा ! घबराओ मत,** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कुछ नहीं होगा !"** इस के बा'द आप तशरीफ़ ले गए। और देखते ही देखते **ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर उन ख़ौफ़नाक जिन्नात की लाशें और ख़ून भी ग़ाइब हो गया,** सुब्ह़ उस नाम निहाद पीर के दो मुरीद मेरे पास आए और इधर उधर की बातें करते हुए मेरा ह़ाल मा'लूम करने लगे। शायद उन के पीर ने मेरे मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात करने भेजा होगा, और येह मुझे सह़ीह़ सलामत देख कर ह़ैरान थे। **उधर वोह नक़्ली पीर अब तक अपनी उस ख़ौफ़नाक बलाओं की वापसी का इन्तिज़ार कर रहा होगा !**

www.dawateislami.net

दामने अ़त्तार دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

न छूटे हाथ से दामन कभी अ़त्तार का या रब عَزَّوَجَلَّ
बना दे बा वफ़ा दूं वासिता सरकार का या रब عَزَّوَجَلَّ
अदा हो किस ज़बां से शुक्र मेरे मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ
कि तू ने हाथ में दामन दिया अ़त्तार का या रब عَزَّوَجَلَّ
मुझे जल्वत में ख़ल्वत में मुझे बातिन में ज़ाहिर में
बना दे बा अदब और बा वफ़ा अ़त्तार का या रब عَزَّوَجَلَّ
है दामन मुर्शिदी का हाथ में, नामे में इस्यां हैं
भरम रखना क़ियामत में सगे अ़त्तार का या रब عَزَّوَجَلَّ
पड़ोसी ख़ुल्द में मुझ को बना दे अपनी रह़मत से
जनाबे मुस्त़फ़ा ﷺ का ह़ज़रते अ़त्तार का या रब عَزَّوَجَلَّ
मुझे त़यबा में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा अजल आए
वसीला है तेरे दरबार में अ़त्तार का या रब عَزَّوَجَلَّ
क़ियामत में तेरे फ़ज़्लो करम से साथ हो मौला عَزَّوَجَلَّ
मेरे ग़ौसो रज़ा, म-दनी ज़िया, अ़त्तार का या रब عَزَّوَجَلَّ
गदा गो बे अ़मल है और बुरा है सख़्त मुजरिम है
जो कुछ भी है मगर येह है तेरे अ़त्तार का या रब عَزَّوَجَلَّ

(मुलख़्ख़स अज़ रिसाला "ईसाई पादरी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़दमों में" सफ़ह़ा आख़िर)

www.dawateislami.net

मुर्शिदे कामिल के दामन से वाबस्तगी की 12 बहारें

मुसलमान के लिये सब से क़ीमती चीज़ उस का ईमान है। उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि ईमान की हिफ़ाज़त का बेहतरीन ज़रीआ़ किसी मुर्शिदे कामिल से मुरीद होना भी है। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं कि जिसे अपनी ज़िन्दगी में सल्बे ईमान का ख़ौफ़ नहीं होता, उस के मरते वक़्त ख़दशा है कि उस का ईमान सल्ब कर लिया जाए। औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام के दामन से वाबस्तगान पर रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ के ऐसे ऐसे इन्आ़मात होते हैं कि अ़क़्लें दंग रह जाती हैं।

इस पुर फ़ितन दौर में उन ख़ुश नसीब इस्लामी भाइयों और बहनों के वक़्ते मौत और दुन्या से पर्दा फ़रमाने के बा'द के वाक़ेआ़त पेशे ख़िदमत हैं। **जिन्हें ज़माने के वली के दामन से वाबस्तगी की हैरत अंगेज़ ब-र-कतें ह़ासिल हुई** । उन्हें न सिर्फ़ वक़्ते मौत कलिमए त़य्यिबा नसीब हुवा बल्कि जिन ख़ुश नसीबों की क़ब्रे त़वील मुद्दत के बा'द किसी ह़ाजते शदीदा के बाइ़स खोली गईं तो उन के न सिर्फ़ **जिस्म** और **कफ़न सलामत** थे बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्रों से ख़ुश्बू की लपटें भी आ रही थीं। रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से उम्मीद है कि **येह वाक़ेआ़त मुर्शिदे कामिल की तलाश करने वालों के लिये मश्अ़ले राह का काम देंगे** ।

www.dawateislami.net

"कलिमए तय्यिबा" के 7 हुरूफ़ की निस्बत से आशिक़ाने रसूल की ईमान अफ़रोज़ मौत के सात वाक़ेआत

﴾1﴿ मुहम्मद कामरान अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى

मुर्दे ने आंखें खोल दीं 20 अगस्त 2004 शबे जुमुआ झड़ू शहर में अज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ से शहज़ादए अत्तार हाजी **अहमद रज़ा क़ादिरी र-ज़वी अत्तारी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى ने सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया : बा'दे बयान मुलाक़ात पर एक इस्लामी भाई ने हल्फ़िया बताया कि मेरे 22 साला नौ जवान भाई **मुहम्मद कामरान अत्तारी** जो 4 साल क़ब्ल शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए सिल्सिलए आलिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अत्तारिय्या में दाख़िल हो कर अत्तारी बन चुके थे। जभी से हर साल पाबन्दी से र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे में **दा'वते इस्लामी** के तह्त होने वाले इजतिमाई सुन्नतों भरे ए'तेकाफ़ की सआ़दत भी पा रहे थे। उन की रीढ़ की हड्डी में तकलीफ़ रहने लगी। इलाज से वक़्ती इफ़ाक़ा होता, फिर तकलीफ़ शुरूअ़ हो जाती। आख़िरे कार जब बाबुल मदीना (कराची) में टेस्ट करवाया तो केन्सर तश्ख़ीश हुवा। मरज़ दिन ब दिन बढ़ता रहा, आख़िरे कार डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया। जब भाई की ह़ालत ज़ियादा बिगड़ी तो बाबुल मदीना (कराची) के जिन्नाह़ हस्पताल के वॉर्ड नम्बर 4 में दाख़िल कर दिया गया। डॉक्टरों ने हर मुमकिना कोशिश की मगर 10 जनवरी 2004 मग़रिब के वक़्त भाई ने दम तोड़ दिया, वक़्ते इन्तिक़ाल भाई जान का सर मेरी गोद में था। वालिद और वालिदा की ह़ालत ग़ैर थी, जवान बच्चे की मौत पर उन की ह़ालत देखी नहीं जा रही थी।

www.dawateislami.net

मेरे ज़ेह्न में अचानक ख़याल आया कि मेरा भाई ज़माने के वली **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में मुरीद था। फिर येह बिग़ैर तौबा किये और कलिमा पढ़े कैसे मर गया। अभी मैं येह सोच ही रहा था कि अचानक मेरा वोह भाई जिसे चन्द मिनट पहले डॉक्टरों ने मुर्दा क़रार दे कर ड्रिप वग़ैरा निकाल कर हाथ पाउं सीधे कर दिये थे। **उस ने आंखें खोल दीं** और बड़े पुर सुकून अन्दाज़ में वालिदा को मुख़ातब कर के कहा, अम्मा ! शिक्वा मत करना, फिर पांच मरतबा कहा **अल्लाह** बहुत बड़ा है ! फिर बुलन्द आवाज़ से اَعُوْذُ بِاللّٰهِ، بِسْمِ اللّٰه पढ़ कर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कहा और भाई ने ज़िक्रुल्लाह शुरूअ़ कर दिया, हस्पताल का कमरा **अल्लाह**, **अल्लाह** के ज़िक्र से गूंजने लगा। इस दौरान डॉक्टर, नर्स और दीगर अफ़राद भी मेरे मुर्दा भाई को बोलता देख कर जम्अ़ हो चुके थे और सक्ते के आ़लम में दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल और वलिय्ये कामिल के दामन से वाबस्तगी की ब-रकात के ईमान अफ़रोज़ नज़्ज़ारों से मुस्तफ़ीज़ हो रहे थे। आहिस्ता आहिस्ता भाई की आवाज़ मध्धम होती चली गई और कुछ ही देर बा'द मेरे भाई **कामरान अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى ने कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर ज़िक्रुल्लाह करते करते दम तोड़ दिया। येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर सब की आंखें अश्कबार हो गईं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾2﴿ मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى

हैरत अंगेज़ हादिसा **बरोज़** 26 रबीउन्नूर शरीफ़ सिने 1420 हिजरी ब मुताबिक़ 11-7-1999 ब वक़्ते दो पहर पंजाब के मश्हूर शहर **लालामूसा** की एक मसरूफ़ शाहराह पर किसी ट्रेलर ने दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मादार, मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी **मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى (महल्ला साकिन, इस्लाम पूरा लालामूसा) को बुरी तरह कुचल दिया यहां तक कि उन के पेट की जानिब से ऊपर और नीचे का हिस्सा अलग अलग हो गया। मगर हैरत की बात येह थी कि फिर भी वोह ज़िन्दा थे, और हैरत बालाए हैरत येह कि हवास इतने बहाल थे कि बुलन्द आवाज़ से اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله और لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ जा रहे थे। लालामूसा के अस्पताल में डॉक्टरों के जवाब दे देने पर उन्हें शहर गुजरात के अज़ीज़ भट्टी अस्पताल ले जाया गया ! उन्हें अस्पताल ले जाने वाले इस्लामी भाई का ब क़सम बयान है اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की ज़बान पर पूरे रास्ते इसी तरह बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए तय्यिबा का विर्द जारी था। येह म-दनी मन्ज़र देख कर डॉक्टर्ज़ भी हैरान व शश्दर थे कि **येह ज़िन्दा किस तरह हैं** ! और हवास इतने बहाल कि बुलन्द आवाज़ से **दुरूदो सलाम** और **कलिमए तय्यिबा** पढ़ जा रहे हैं ! उन का कहना था कि हम ने अपनी ज़िन्दगी में ऐसा बा हौसला और बा कमाल मर्द पहली मरतबा ही देखा है। कुछ देर बा'द वोह खुश नसीब आशिके़ रसूल **मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने बारगाहे महबूबे बारी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में बसद बे क़रारी इस तरह इस्तिग़ासा किया :

www.dawateislami.net

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **आ भी जाइये !**

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **मेरी मदद फ़रमाइये !**

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिये !**

इस के बा'द बा आवाज़े बुलन्द कलिमए तय्यिबा

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

पढ़ते हुए जामे शहादत नोश कर गए । **जी हां, जो मुसलमान ह़ादिसे में फ़ौत हो वोह शहीद है ।**

(मुलख़्ख़सन फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 35, मत्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

वासिता़ प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद के वोह फ़ाजिर गया

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾3﴿ अल्ह़ाज अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی

मर्ह़ूम अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ह़सीन नौ जवान थे । आवाज़ अच्छी थी, इब्तिदाअन मॉडर्न दोस्तों का माह़ोल मिला था । (जैसा कि आज कल आ़म माह़ोल है और مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इसे मा'यूब भी नहीं समझा जाता) गाने वग़ैरा गाते, मूसीक़ी का फ़न सीखा, अमरीका में क्लब में मुलाज़मत करने के लिये बड़ी भाग दौड़ भी की लेकिन मुक़द्दर में "**दर्दे मदीना**" था ।

क़िस्मत अच्छी थी, अमरीका में नौकरी ही न मिल सकी वरना आज शायद हज़ारों दिलों में उन की मह़ब्बत व अ़क़ीदत की शम्अ़ रोशन न होती । ख़ुश क़िस्मती से इन्तिक़ाल से तक़रीबन सात

www.dawateislami.net

साल क़ब्ल इस्लामी भाइयों का म-दनी माहोल मुयस्सर आ गया। शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हो कर सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या में दाख़िल हो गए। **अ़त्तारी तो क्या हुए** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **जीने का अन्दाज़ ही बदल गया।**

फ़िल्मी गानों की जगह **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी ना'तों ने ले ली। कभी स्टेज पर आ कर मिज़ाहिया लत़ीफ़े सुना कर लोगों को हंसाते थे, अब सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हिज्रो फ़िराक़ के पुर सोज़ क़सीदे गुनगुना कर आ़शिक़ों को रुलाने और दीवानों को तड़पाने लगे। **"दा'वते इस्लामी"** के पाकीज़ा म-दनी माहोल और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जैसे वलिय्ये कामिल की सोह़बते बा असर ने एक मॉडर्न नौ जवान को प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का दीवाना और सर ता पा सुन्नतों का नुमूना बना दिया। चेहरे पर दाढ़ी मुबारक, सर पर ज़ुल्फ़ें और हर वक़्त सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास और सर इमामए मुबारका से आरास्ता रहने लगा। न सिर्फ़ ख़ुद सुन्नतों पर अ़मल करते बल्कि अपने बयान के ज़रीए दूसरों को भी सुन्नतों पर अ़मल की तरग़ीब दिलाते रहे। शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि वोह एक अच्छे मुबल्लिग़, ना'त गो शाइ़र थे और मेरा हुस्ने ज़न है कि वोह आ़शिक़े रसूल और बा अख़्लाक़ व बा किर्दार मुसलमान थे।

चन्द रोज़ बिस्तरे अ़लालत पर रह कर **रबीउ़ल ग़ौस शरीफ़** की चांद रात सि.1406 हि. शबे हफ़्ता ब मुत़ाबिक़ 14 दिसम्बर सि.1985 ई. को सिर्फ़ 22 साल इस बे वफ़ा दुन्या में गुज़ार कर भरपूर जवानी के आ़लम में इस दुन्या से कूच कर गए। اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّااِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

www.dawateislami.net

क़ुरआनो सुन्नत के म-दनी माहौल की ब-र-कत से लगता है वोह ज़िन्दगी की बाज़ी जीत गए, उन्हें सुन्नतें काम आ गईं, जिन की सुन्नतें ज़िन्दा करने की धुन थी । उन शफ़ीक़ आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का करम हो ही गया !

मर्हूम तख़्तए ग़ुस्ल पर मुस्कुरा दिये ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं मर्हूम की तक्फ़ीन व तदफ़ीन में अव्वल ता आख़िर शरीक रहा । चन्द मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी मिल जुल कर निहायत ही एह़तियात़ के साथ मर्हूम को ग़ुस्ल दे रहे थे और मैं उन्हें ग़ुस्ल की सुन्नतें बता रहा था । जब दौराने ग़ुस्ल मर्हूम को बिठाया गया तो चेहरे **पर इस त़रह मुस्कुराहट फैल गई, जिस त़रह़ वोह अपनी ज़िन्दगी में मुस्कुराया करते थे ।**

मैं उस वक़्त मर्हूम की पुश्त पर था, जितने इस्लामी भाई चेहरे की त़रफ़ थे उन सब ने येह मन्ज़र देखा । कफ़न पहनाने के बा'द चेहरा खुला छोड़ दिया गया और आख़िरी दीदार के लिये लोग आने शुरूअ़ हुए, हम मिल कर ना'त शरीफ़ पढ़ रहे थे । बा'ज़ देखने वालों ने देखा कि मर्हूम के होंट भी जुम्बिश कर रहे थे । गोया ना'त शरीफ़ पढ़ रहे हैं ।

ह़स्बे वसिय्यत **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, जनाज़ए मुबारका का जुलूस बहुत बड़ा था और समां भी क़ाबिले दीद था । ज़िक्रो दुरूद और ना'त व सलाम से फ़ज़ा गूंज रही थी ।

आ़शिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले
महबूब की गलियों से ज़रा घूम के निकले

बिल आख़िर अश्कबार आंखों के साथ मर्हूम को सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया ।

www.dawateislami.net

बा'दे तदफ़ीन अ़ज़ीज़ो अक़ारिब रुख़्सत हो गए। मगर अब भी रूहानी रिश्तेदार या'नी इस्लामी भाई कसीर ता'दाद में काफ़ी देर तक क़ब्र पर मौजूद रहे और ना'त ख़्वानी होती रही।

मर्हूम को सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दामन में छुपा लिया

मर्हूम के सोइम के सिल्सिले में **शहीद मस्जिद** खारादर बाबुल मदीना (कराची) में इ़शा के बा'द इस्लामी भाइयों ने क़ुरआन ख़्वानी और इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त का इन्ड़क़ाद किया। इजतिमाअ़ कसीर था इस लिये मस्जिद के बाहर ही इजतिमाअ़ का इन्तिज़ाम किया गया। **मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की लिखी हुई ना'त शरीफ़ के इस शे'र की देर तक तकरार होती रही।

बख़्शवाना मुझ से आ़सी का रवा होगा किसे ?
किस के दामन में छुपूं दामन तुम्हारा छोड़ कर

ह़ाज़िरीन पर एक ज़ौक़ की कैफ़िय्यत त़ारी थी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : एक ख़ुश नसीब इस्लामी भाई ने मुझे बताया कि इस दौरान मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई आंख बन्द हुई और दिल की आंखें खुल गईं। क्या देखता हूं कि **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी चादरे मुबा-रका फैलाए हुए इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में जल्वा अफ़रोज़ हैं और ख़ुश नसीबों को बुला बुला कर चादरे मुबा-रका में छुपा रहे हैं। इतने में मर्हूम **अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ सफ़ेद म-दनी लिबास में इमामा सर पर सजाए नुमूदार हुए तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मर्हूम को भी दामने रह़मत में छुपा लिया।

www.dawateislami.net

ढूंडा ही करें सिद्रे क़ियामत के सिपाही
वोह किस को मिले जो तेरे दामन में छुपा हो

देखा उन्हें महशर में तो रह़मत ने पुकारा
आज़ाद है जो आप के दामन से बंधा हो

(मुलख़्ख़स अज़ फ़ैज़ाने सुन्नत, जदीद, बाब : फ़ैज़ाने दुरूदो सलाम, स. 198)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿4﴾ ह़ाजी अ़ब्दुर्रहीम अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े नयाआबाद के एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में पेश करता हूं, उन का कहना है कि मेरे वालिदे बुज़ुर्ग वार **ह़ाजी अ़ब्दुर्रहीम अ़त्तारी** (पटनी) जिन की उ़म्र कमो बेश 70 साल थी। इब्तिदाई दौर दुन्या की रंगीनियों की नज़्र रहा मगर फिर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत** से ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। **1995** ई. में जब दूसरी बार ह़ज का मुज़्दए जां फ़िज़ा मिला तो उन की ख़ुशी क़ाबिले दीद थी। जैसे जैसे रवानगी का वक़्त क़रीब आ रहा था, ख़ुशी दो चन्द होती जा रही थी। आख़िर उन की ख़ुशियों की मे'राज का वक़्त क़रीब आ गया। रात 4:00 बजे एरपोर्ट की त़रफ़ रवानगी थी। पूरी रात ख़ुशी ख़ुशी तय्यारी में मश्ग़ूल रहे, मेहमानों से घर भरा हुवा था तक़रीबन 3:00 बजे एह़राम बराबर में रख कर अपने कमरे में लैट गए। मैं भी लैट गया, अभी ब मुश्किल पन्दरह मिनट हुए होंगे कि मेरे कमरे के

www.dawateislami.net

दरवाज़े पर दस्तक पड़ी। चौंक कर दरवाज़ा खोला तो सामने वालिदा परेशानी के आ़लम में खड़ी फ़रमा रही थीं : तुम्हारे वालिद साहि़ब की त़बीअ़त ख़राब हो गई है। मैं ब उ़जलत तमाम पहुंचा तो वालिद साहि़ब बे क़रारी के साथ सीना सेहला रहे थे, फ़ौरन अस्पताल ले जाया गया डॉक्टर ने बताया कि **हार्ट अटेक हुवा है।** घर में कोहराम मच गया कि कुछ ही देर बा'द सफ़रे मदीना के लिये रवानगी है और वालिद साहि़ब को येह क्या हो गया ! अफ़्सोस त़य्यारा वालिद साहि़ब को लिये बिग़ैर ही सूए मदीना परवाज़ कर गया। वालिदे मोह़तरम 5 दिन अस्पताल में रहे। इस दौरान मज़ीद **चार बार दिल का दौरा** पड़ा। मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की ब-र-कत से होश के आ़लम में **उन की एक भी नमाज़ क़ज़ा न हुई।** जब भी नमाज़ का वक़्त आता तो कान में अ़र्ज़ कर दी जाती : नमाज़ पढ़ लें, आप **फ़ौरन आंख खोल देते। तयम्मुम** करा दिया जाता और आप नक़ाहत के बाइ़स इशारे से नमाज़ पढ़ लेते। आख़िरी "अटेक" पर फिर बे होश हो गए। इ़शा की अज़ान पर आंखें झपकीं तो मैं ने फ़ौरन अ़र्ज़ किया : अब्बा जान नमाज़ के लिये तयम्मुम करवा दूं, इशारे से फ़रमाया : हां, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने तयम्मुम करवाया और वालिद साहि़ब ने **अल्लाहु अकबर** कह कर हाथ बांध लिये मगर फिर बेहोश हो गए। हम घबरा कर दौड़े और डॉक्टर को बुला लाए। फ़ौरन I.C.U. में ले जाया गया, चन्द मिनट बा'द डॉक्टर ने आ कर बताया कि आप के वालिद साहि़ब बड़े ख़ुश नसीब थे कि उन्हों ने बुलन्द आवाज़ से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ा और उन का इन्तिक़ाल हो गया। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ (پ۲،البقرہ۱۵۶)

www.dawateislami.net

एक सय्यिद ज़ादे ने वालिदे मर्हूम को गुस्ल दिया चूंकि वालिद साहिब को उंगलियों पर गिन कर अज़्कार पढ़ने की आ़दत थी लिहाज़ा आप की उंगली उसी अन्दाज़ में थी **गोया कुछ पढ़ रहे हैं,** बार बार उंगलियां सीधी की जातीं। मगर दोबारा उसी अन्दाज़ पर हो जातीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कसीर इस्लामी भाई जनाज़े में शरीक हुए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे भाई की भी वालिद साहिब के साथ ह़ज पर जाने की तरकीब थी। वोह ह़ज की सआ़दत से बहरा मन्द हुए। बड़े भाई का कहना है कि मैं ने मदीनए मुनव्वरा में रो रो कर बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की, कि मेरे मर्हूम वालिद का ह़ाल मुझ पर मुन्कशिफ़ हो, जब रात को सोया तो ख़्वाब में देखा कि वालिदे बुज़ुर्ग वार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار एह़राम पहने तशरीफ़ लाए और फ़रमा रहे हैं : "मैं उ़मरह की निय्यत करने (मदीने शरीफ़) आया हूं, तुम ने याद किया तो चला आया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मैं बहुत ख़ुश हूं।**" दूसरे साल मेरे भतीजे ने मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ के अन्दर का'बतुल्लाह शरीफ़ के सामने अपने दादा जान या'नी मेरे वालिदे मर्हूम ह़ाजी **अ़ब्दुर्रह़ीम अ़त्तारी** को ऐ़न बेदारी के आ़लम में अपने बराबर में नमाज़ पढ़ते देखा। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर बहुत तलाश किया मगर न पा सके।

(मुलख़्ख़सन फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स.102, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

मदीने का मुसाफ़िर सिन्ध से पहुंचा मदीने में
क़दम रखने की नौबत भी न आई थी सफ़ीने में

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾5﴿ मुहम्मद वसीम अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى

क़ाबिले रश्क मौत **मुहम्मद** वसीम अ़त्तारी (बाबुल मदीना नोर्थ कराची) **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद थे और उन की बारगाह में ह़ाज़िरी की सआ़दत पाते रहते थे। उन इस्लामी भाई के हाथ में केन्सर हो गया और डॉक्टरों ने हाथ काट डाला।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि उन के अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई ने बताया : वसीम भाई शिद्दते दर्द के सबब सख़्त अज़िय्यत में है। मैं अस्पताल में इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवा और तसल्ली देते हुए कहा : दीवाने ! बायां हाथ कट गया इस का ग़म मत करो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दायां हाथ तो महफ़ूज़ है** और सब से बड़ी सआ़दत येह कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ईमान भी सलामत है।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने उन्हें काफ़ी साबिर पाया, सिर्फ़ मुस्कुराते रहे यहां तक कि बिस्तर से उठ कर मुझे बाहर तक पहुंचाने आए। रफ़्ता रफ़्ता हाथ की तकलीफ़ ख़त्म हो गई मगर बेचारे का दूसरा इमतिह़ान शुरूअ़ हो गया और वोह येह कि सीने में पानी भर गया, दर्दो कर्ब में दिन कटने लगे। आख़िर एक दिन तकलीफ़ बहुत बढ़ गई, **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ कर दिया। **सारा दिन अल्लाह, अल्लाह की सदाओं से कमरा गूंजता रहा,** त़बीअ़त बहुत ज़ियादा तश्वीशनाक हो गई थी, डॉक्टर के पास ले जाने की कोशिश की गई मगर इन्कार कर दिया, दादी जान ने फ़र्ते शफ़्क़त से गोद में ले लिया ज़बान पर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जारी हुवा और 22 साला मुहम्मद वसीम अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (پ۲،البقرہ۱۵۶)

www.dawateislami.net

जब मर्हूम को ग़ुस्ल के लिये ले जाने लगे तो अचानक चादर चेहरे से हट गई, **मर्हूम का चेहरा गुलाब के फूल की त़रह़ खिला हुवा था,** ग़ुस्ल के बा'द चेहरे की बहार में मज़ीद निखार आ गया। तदफ़ीन के बा'द आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ना'तें पढ़ रहे थे, **क़ब्र से ख़ुश्बू की ऐसी लपटें आने लगीं कि मसामे जां मुअ़त्त़र हो गए** मगर जिस ने सूंघी उस ने सूंघी। घर के किसी फ़र्द ने इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में मर्हूम मुह़म्मद वसीम अ़त्त़ारी को फूलों से सजे हुए कमरे में देखा, पूछा : कहां रहते हो ? हाथ से एक कमरे की त़रफ़ इशारा करते हुए कहा : **''येह मेरा मकान है, यहां मैं बहुत ख़ुश हूं।''** फिर एक आरास्ता बिस्तर पर लैट गए। मर्हूम के वालिद साहिब ने ख़्वाब में अपने आप को वसीम अ़त्त़ारी की क़ब्र के पास पाया और क़ब्र शक़ हुई और **मर्हूम सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए हुए सफ़ेद कफ़न में मल्बूस बाहर निकल आए** ! कुछ बात चीत की और फिर क़ब्र में दाख़िल हो गए और क़ब्र दोबारा बन्द हो गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

(मुलख़्ख़सन फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 24, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

दुआ़ए अ़त्त़ार : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी, मर्हूम की और उम्मते मह़बूब की मग़्फ़िरत फ़रमा। और हम सब को दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत दे और मरते वक़्त ज़िक्रो दुरूद और **कलिमए त़य्यिबा** नसीब फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

आ़सी हूं, मग़्फ़िरत की दुआ़एं हज़ार दो
ना'ते नबी सुना के लह़द में उतार दो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾6﴿ अ़त्तारिय्या इस्लामी बहन

सांघड़ शहर के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई का ह़ल्फ़िया बयान है कि मेरी बहन **बिन्ते अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारिय्या** को केन्सर के मूज़ी मरज़ ने आ लिया। आहिस्ता आहिस्ता ह़ालत बिगड़ती गई डॉक्टरों के मश्वरे पर ऑपरेशन करवाया, त़बीअ़त कुछ संभली मगर कमो बेश एक साल बा'द मरज़ ने दोबारा ज़ोर पकड़ा। लिहाज़ा राजपूताना हस्पताल **(ह़ैदराबाद, बाबुल इस्लाम-सिंध)** में दाख़िल कर दिया गया।

एक हफ़्ता हस्पताल में रहीं मगर ह़ालत मज़ीद अबतर होती चली गई अचानक उन्हों ने ब आवाज़ **कलिमए त़य्यिबा** का विर्द शुरूअ़ कर दिया। कभी कभी दरमियान में اَلصلوٰۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعلی الک واَصْحَابِکَ یا حَبِیْبَ اللّٰہ भी पढ़तीं। बुलन्द आवाज़ से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विर्द करने से पूरा कमरा गूंज उठता था अ़जीब ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र था। जो आता मिज़ाज पुर्सी के बजाए उन के साथ **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ कर देता। डॉक्टर्ज़ और हस्पताल का अ़मला ह़ैरत ज़दा था कि **येह अल्लाह की कोई मक़्बूल बन्दी मा'लूम होती है वरना हम ने तो आज तक मरीज़ की चीख़ें ही सुनी हैं** और येह मरीज़ा शिक्वा करने के बजाए मुसल्सल **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ है।

तक़रीबन 12 घंटे तक येही कैफ़िय्यत रही। अज़ाने मग़रिब के वक़्त इसी त़रह़ बुलन्द आवाज़ से **कलिमए त़य्यिबा** का विर्द करते करते उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह ख़ुश नसीब इस्लामी बहन भी **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता और इस ज़माने के सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से मुरीद थीं। (मुलख़्ख़सन निस्बत की बहारें, स.11)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾7﴿ अ़त्तारिय्या होने की ब-रकत

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के मश्हूर शहर सख्खर के एक इस्लामी भाई ने एक मक्तूब भेजा। जिस में कुछ यूं तह़रीर था कि मेरी हमशीरा कमोबेश 12 साल से बीमार थी, त़वील अ़रसा बीमार रहने की वजह से उस की ह़ालत इन्तिहाई नाज़ुक हो चुकी थी। जिस की वजह से हम सख़्त ज़ेह्नी अज़िय्यत में मुब्तला थे। इसी दौरान 25 सफ़र सि. 1423 हि. 9 मई सि. 2002 ई. बा'द नमाज़े अ़स्र शहज़ादए अ़त्तार **ह़ाजी अह़मद उ़बैद रज़ा क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की सख्खर तशरीफ़ आवरी हुई।

मैं उन से मुलाक़ात तो न कर सका अलबत्ता मुझे उन की ज़ियारत करने का शरफ़ ज़रूर ह़ासिल हो गया। मैं ने उन के साथ आने वाले मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी को अपनी हमशीरा की बीमारी से मुतअ़ल्लिक़ बताया और दुआ़ की दरख़्वास्त की। उन्हों ने बड़ी शफ़्क़त फ़रमाई और मुझे दिलासा भी दिया। उन के मश्वरे पर मैं ने अपनी हमशीरा का नाम **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद करवाने के लिये लिखवा दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ चन्द ही दिनों बा'द **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब से मुरीद कर लेने के बिशारत नामे के साथ इ़यादत नामा भी ब सूरते मक्तूब आ पहुंचा। मैं उन दिनों ज़रूरी काम के सिल्सिले में शहर से बाहर गया हुवा था। वापसी पर जब मुझे मक्तूबात की आमद का पता चला तो मैं ने हमशीरा से पूछा : क्या आप ने मक्तूबात पढ़ लिये ? हमशीरा ने जवाब दिया कि : "अभी तक किसी ने पढ़ कर नहीं सुनाया।" वोह ख़ुद ही पढ़ लेती लेकिन बीमारी की वजह से मजबूर थी।

www.dawateislami.net

मैं ने उसे फ़ौरन दोनों मक्तूबात पढ़ कर सुनाए। वोह मुरीद हो जाने और मक्तूबात की आमद पर बेहद ख़ुश थी। चुनान्चे वोह बार बार मक्तूबात को अ़क़ीदत से चूमती और अपनी आंखों से लगाती। इयादत नामे वाले मक्तूब में शर्हुस्सुदूर के ह़वाले से रिवायत नक़्ल थी कि जो कोई बीमारी में ○ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّي كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ चालीस बार पढ़े और इस मरज़ में मर जाए तो शहीद है और अगर तन्दुरुस्त हो गया तो मग़्फ़िरत हो जाएगी।

मेरी हमशीरा ने फ़ौरन 40 मरतबा मज़्कूरा वज़ीफ़ा पढ़ लिया। दूसरे ही दिन यकुम रबीउ़ल अव्वल सि.1423 हि. 14 मई सि. 2002 ई. को सुब्ह़ फ़ज्र के वक़्त उस का इन्तिक़ाल हो गया। ऐसा लगता है वोह सिर्फ़ **ज़माने के वलिय्ये कामिल अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **के दामन से वाबस्ता होने के इन्तिज़ार में थी।**

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वलिय्ये कामिल की मुरीदनी होने की ऐसी ब-र-कत मिली कि मैं ने ख़ुद आख़िरी वक़्त में उसे बा आवाज़े बुलन्द दो या तीन मरतबा **कलिमए त़य्यिबा** لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ते सुना। फिर हमशीरा ने ख़ुद ही हाथ पाउं सीधे कर लिये और आंखें बन्द कर लीं, उस वक़्त अज़ाने फ़ज्र की आवाज़ आ रही थी।

(मुलख़्ख़सन निस्बत की बहारें, स.14)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मरते वक़्त कलिमए त़य्यिबा पढ़ने की फ़ज़ीलत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ऐसा लगता है कि वक़्ते मौत कलिमए त़य्यिबा पढ़ने वाले इस्लामी भाइयों और बहनों की **दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल और ज़माने के वलिय्ये कामिल के दामन से निस्बत रंग ले आई** और उन्हें आख़िरी वक़्त कलिमा नसीब हो गया। और जिस को मरते वक़्त कलिमा नसीब हो जाए उस का आख़िरत में बेड़ा पार है। चुनान्चे **नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस का आख़िर कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ (या'नी कलिमए त़य्यिबा) हो, वोह जन्नत में दाख़िल होगा। (ابو داؤد ج ۳ ص ۱۳۲، رقم الحدیث ۳۱۱۶)

क़ब्र जन्नत का बाग़

अब उन ख़ुश नसीब इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ़त पेशे ख़िदमत हैं **जिन्हें ज़माने के वली के दामन से वाबस्तगी की वोह बहारें नसीब हुईं** कि उन की क़ब्रें त़वील मुद्दत के बा'द किसी ह़ाजते शदीदा के बाइ़स खोली गईं तो **न सिर्फ़ उन के जिस्म और कफ़न सलामत थे बल्कि उन की क़ब्रों से ख़ुश्बूओं की लपटें भी आ रही थीं।** और उन ख़ुश नसीबों के लिये कितनी बड़ी बिशारत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि **क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है** या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा है। (ترمذی شریف ج ۴ ص ۲۰۹)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन ख़ुश नसीबों के तरोताज़ा अजसाम का क़ब्रों से सह़ीह़ व सालिम ज़ाहिर होना इस बात की अ़लामत है कि **उन की क़ब्रें रब عَزَّوَجَلَّ के करम से जन्नत का बाग़ हैं।** इन ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ़त का ब ग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

"करामात" के छे हुरूफ़ की निस्बत से आशिक़ाने रसूल की क़ब्रें खुलने के 6 वाक़ेआत

﴾1﴿ बिन्ते गुलाम मुर्सलीन अ़त्तारिय्या

3 र-मज़ानुल मुबारक 1426 हि. (8-10-05) बरोज़ हफ़्ता पाकिस्तान के मशरिक़ी हिस्से में ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला आया जिस में लाखों अफ़राद हलाक हुए इन्हीं में मुज़फ़्फ़राबाद (कश्मीर) के अ़लाक़े "मीर इतसोलियां" की मुक़ीम 19 साला **नसरीन अ़त्तारिय्या** बिन्ते गुलाम मुर्सलीन **शहीद** हो गईं। मर्हूमा सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या अ़त्तारिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद थीं और मरते दम तक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहीं। दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में बा क़ाइदगी के साथ शिर्कत भी फ़रमाती थीं। बा'दे तदफ़ीन मर्हूमा नसरीन अ़त्तारिय्या अपने वालिदैन और छोटे भाई के ख़्वाब में मुसल्सल आतीं और कहतीं : **"मैं ज़िन्दा हूं और बहुत ख़ुश हूं"** बार बार इस त़रह़ के ख़्वाब देखने की बिना पर वालिदैन को तश्वीश हुई कि कहीं हमारी बेटी क़ब्र में ज़िन्दा तो नहीं !

उन्हों ने वहां के इस्लामी भाइयों से राबित़ा किया, इस्लामी भाइयों ने मुफ़्तियाने किराम से क़ब्र कुशाई की इजाज़त त़लब की उन्हों ने मन्अ़ फ़रमाया मगर मर्हूमा के वालिद और दीगर घर वालों ने 8 जुल क़ा'दतुल ह़राम सिने 1426 हि. (10-12-05) **शबे पीर रात तक़रीबन 10 बजे क़ब्र को खोल दिया ! यकबारगी आने वाली ख़ुश्बूओं की लपटों से मशामे दिमाग़ मुअ़त्त़र हो गए ! शहादत को 70 अय्याम गुज़र जाने के बा वुजूद नसरीन अ़त्तारिय्या का कफ़न सलामत और बदन बिल्कुल तरोताज़ा था !!!**

www.dawateislami.net

अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल | है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल
सलामत रहे या ख़ुदा म-दनी माह़ोल | बचे नज़्रे बद से सदा म-दनी माह़ोल
ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी | सुनो ! है बहुत काम का म-दनी माह़ोल
तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अह़काम | येह ता'लीम फ़रमाएगा म-दनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ | तुम अपनाए रखो सदा म-दनी माह़ोल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾2﴿ अ़त्त़ारिय्या इस्लामी बहन

एक मुबल्लिग़ ने अपनी बहन की सास के मुतअ़ल्लिक़ आंखों देखा वाक़ेअ़ा सुनाया कि हमारी बहन के बच्चों की दादी का ग़ालिबन सि. 1997 ई. मर्कज़ुल औलिया लाहोर में इन्तिक़ाल हुवा । मर्हूमा अमीरे अहले सुन्नत अबू बिलाल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के ज़रीए क़ादिरी अ़त्त़ारी सिल्सिले में मुरीद थीं । और क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थीं और हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत भी फ़रमाती थीं ।

इन्तिक़ाल के तक़रीबन **साढ़े सात माह** के बा'द शदीद बारिशें हुईं । जिस से उन की क़ब्र धंस गई । वोह कहते हैं कि मैं ने बढ़ कर क़ब्र की मिट्टी निकालनी शुरूअ़ की तो सफ़ेद सफ़ेद कपड़ा नज़र आया मज़ीद मिट्टी हटाई तो देखा कि **उस अ़त्त़ारिय्या इस्लामी बहन का पूरा जिस्म ख़ैरो सलामती के साथ कफ़न में लिपटा हुवा था और कफ़न तक मैला न हुवा था ।**

(रिसाला, क़ब्र खुल गई, स. 24)

www.dawateislami.net

मिले नज़्अ़ में भी राह़त रहूं क़ब्र में सलामत
तू अ़ज़ाब से बचाना म-दनी मदीने वाले

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿3﴾ अल्ह़ाज मुह़म्मद उ़ह़ुद रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى

25 र-जबुल मुरज्जब सि.1416 हि. रात तक़रीबन पोने ग्यारह बजे मर्कज़ुल औलिया लाहोर के पूंछ रोड का मारकेट एरिया शदीद फ़ाइरिंग की तड़तड़ से गूंज उठा। हर त़रफ़ ख़ौफ़ो हिरास फैल गया और धड़ाधड़ दुकानें बन्द होने लगीं। जब लोगों के ह़वास कुछ बह़ाल हुए तो देखा कि एक कार **शो'लों की लपेट** में है।

दर अस्ल तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर तह़रीक दा'वते इस्लामी की आ़म मक़्बूलिय्यत और इस्लाम की ह़क़ीक़ी शानो शौकत का उ़रूज बरदाश्त न करते हुए "किसी" के इशारे पर दहशत गर्दों ने दुन्याए अहले सुन्नत के अमीर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी अबू बिलाल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जान लेने की नाकाम कोशिश की थी। मगर "**जिसे ख़ुदा रखे उसे कौन चखे**" के मिस्दाक़ दुश्मन का मन्सूबा ख़ाक में मिल गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सुन्नतों की मज़ीद ख़िदमत लेने के लिये अपने प्यारे ह़बीब ﷺ के आ़शिक़ को आंच न आने दी।

www.dawateislami.net

इस फ़ाइरिंग के नतीजे में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी **मुहम्मद सज्जाद अ़त्तारी** और अल्हाज **मुहम्मद उहुद रज़ा** अ़त्तारी जामे शहादत नोश कर गए। दोनों शहीदाने दा'वते इस्लामी को मर्कज़ुल औलिया लाहौर के मश्हूर **"मियानी क़ब्रिस्तान"** में सिपुर्दे ख़ाक किया गया। तदफ़ीन के तक़रीबन **आठ माह बा'द** लाहोर में शदीद बारिशें हुईं। जिस के सबब शहीदे दा'वते इस्लामी ह़ाजी उहुद रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की क़ब्र मुन्हदिम हो गई।

अइज़्ज़ा की ख़्वाहिश पर लाश की मुन्तक़िली का सिलसिला हुवा। काफ़ी लोगों की मौजूदगी में मिट्टी हटा कर जब चेहरे की त़रफ़ से सिल हटाई गई तो **ख़ुश्बू की लपट से लोगों के मशामे दिमाग़ मुअ़त्तर हो गए।** मज़ीद सिलें हटा ली गईं। ऐ़नी शाहिदीन के बयान के मुत़ाबिक़ शहीदे दा'वते इस्लामी **ह़ाजी उहुद रज़ा अ़त्तारी** (जो कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद थे) **का कफ़न तक सलामत था।** तदफ़ीन के वक़्त जो सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सर पर बांधा गया था वोह भी इसी त़रह़ सजा हुवा था। चेहरा भी फूल की त़रह़ खिला हुवा था **हाथ नमाज़ की त़रह़ बंधे हुए थे** जब कि शहीद को जहां गोलियां लगी थीं वोह भी ज़ख़्म ताज़ा थे और कफ़न पर ताज़ा ख़ून के धब्बे साफ़ नज़र आ रहे थे। दुरूदो सलाम की सदाओं में शहीद की लाश को उठा कर दूसरी जगह पहले से तय्यार शुदा क़ब्र में मुन्तक़िल कर दिया गया (येह वाक़िआ मुख़्तलिफ़ अख़्बारात में भी शाएअ़ हुवा।) (मुलख़्ख़स अज़ क़ब्र खुल गई, स. 25)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हम्ले के वाक़िए के बा'द बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में एक इस्तिग़ासा पेश किया ।

(इस के चन्द अश्आ़र हदिय्याए नाज़िरीन हैं जिसे पढ़ कर अस्लाफ़े किराम की यादें ताज़ा होंगी कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने क़ातिलों को भी दुआए ख़ैर से नवाज़ते हैं)

अचानक दुश्मनों ने की चढ़ाई या रसूलल्लाह ﷺ
शहीद दो हो गए इस्लामी भाई या रसूलल्लाह ﷺ

मेरा दुश्मन तो मुझ को ख़त्म करने आ ही पहुंचा था
मैं क़ुरबां तुम ने मेरी जां बचाई या रसूलल्लाह ﷺ

अ़दू झक मारता है ख़ाक उड़ाता है तेरे क़ुरबान
मुझे अब तक न कोई आंच आई या रसूलल्लाह ﷺ

शहीदे दा'वते इस्लामी सज्जाद व उहुद आक़ा ﷺ
रहें जन्नत में यकजा दोनों भाई या रसूलल्लाह ﷺ

नहीं सरकार ﷺ ज़ाती दुश्मनी मेरी किसी से भी
है मेरी नफ़्सो शैत़ान से लड़ाई या रसूलल्लाह ﷺ

हुक़ूक़ अपने किये हैं दरगुज़र दुश्मन को भी सारे
अगर्चे मुझ पे हो गोली चलाई या रसूलल्लाह ﷺ

तमन्ना है मेरे दुश्मन करें तौबा अ़त़ा कर दो
उन्हें दोनों जहां की तुम भलाई या रसूलल्लाह ﷺ

अगर्चे जान जाए ख़िदमते सुन्नत न छोड़ूंगा
शहा करते रहें मुश्किल कुशाई या रसूलल्लाह ﷺ

तमन्ना है तेरे **अ़त्तार** की यूं धूम मच जाए
मदीने में शहादत उस ने पाई या रसूलल्लाह ﷺ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अज़हर मिनश्शम्स हुवा कि दा'वते इस्लामी पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीबे मुकर्रम ﷺ का ख़ुसूसी करम है और इस म-दनी तह़रीक के महके महके म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहने वाला ख़ुश नसीब मुसलमान दोनों जहां की ने'मतों से मालामाल होता है और फ़ैज़याब हो कर दूसरों को भी फ़ैज़ लुटाता है ।

www.dawateislami.net

मय्यित की चीख़ें

गोरकुन ने शहीदे दा'वते इस्लामी ह़ाजी मुह़म्मद उहुद रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के क़दमों की त़रफ़ बनी हुई एक औ़रत की क़ब्र की त़रफ़ इशारा करते हुए मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के इस्लामी भाइयों को बताया कि येह क़ब्र **ह़ाजी उ़हुद रज़ा अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की शहादत से पहले की है। अकसर रात के सन्नाटे में इस क़ब्र से चीख़ों की आवाज़ सुनी जाती थीं। जब से ह़ाजी उहुद रज़ा अ़त्तारी यहां दफ़्न हुए हैं, मा'लूम होता है कि मय्यित से अ़ज़ाब उठ गया है। क्यूंकि चीख़ों की आवाज़ बन्द हो गई है। **इस बात की तस्दीक़ क़ब्रिस्तान के क़रीब रहने वाले दीगर अफ़राद ने भी की है।**

जो अपनी ज़िन्दगी में सुन्नतें उन की सजाते हैं
उन्हें मह़बूब मीठे मुस्त़फा ﷺ अपना बनाते हैं

﴾4﴿ मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى

मुरीद होने की ब-र-कत बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े गुल बहार के एक मॉडर्न नौ जवान ब नाम मुह़म्मद एह़सान **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हुए और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद बन गए। एक वलिय्ये कामिल से मुरीद तो क्या हुए उन की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। चेहरा एक मुठ्ठी दाढ़ी के ज़रीए म-दनी चेहरा बन गया और सर पर मुस्तक़िल त़ौर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे का ताज जगमग जगमग करने लगा। उन्हों ने दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में कुरआन नाज़ेरा ख़त्म कर लिया और लोगों के पास जा जा कर **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने लगे। एक दिन अचानक उन्हें गले में दर्द मह़सूस हुवा, इलाज करवाया मगर "म-रज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की" के मिस्दाक़ गले के म-रज़ ने बहुत ज़ियादा शिद्दत इख़्तियार कर ली यहां तक कि क़रीबुल मर्ग हो गए।

www.dawateislami.net

म-दनी वसिय्यत

इसी ह़ालत में उन्हों ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मत़्बूआ़ **म-दनी वसिय्यत नामा** को सामने रख कर अपना वसिय्यत नामा तय्यार करवा कर अपने अ़लाक़े के निगरान के सिपुर्द कर दिया और फिर सदा के लिये आंखें मूंद लीं । वक़्ते वफ़ात उन की उ़म्र तक़रीबन पैंतीस साल होगी । उन्हें गुल बहार के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया। ह़स्बे वसिय्यत बा'दे ग़ुस्ल कफ़न में चेहरा छुपाने से क़ब्ल, पहले पेशानी पर उंगुश्ते शहादत से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नाफ़ और सीने के दरमियानी ह़िस्सए कफ़न पर **या ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, **या इमाम अबा ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, **या इमाम अह़मद रज़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, **या शैख़ ज़ियाउद्दीन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और उन के **पीरो मुर्शिद** का नाम लिखा गया। दफ़्न करते वक़्त दीवारे क़ब्र में त़ाक़ बना कर अ़हदनामा, नक़्शे ना'लैन व दीगर तबर्रुकात वग़ैरा रखे गए। **बा'दे दफ़्न क़ब्र पर अज़ान भी दी गई** और कमो बेश बारह घन्टे तक उन की क़ब्र के क़रीब इस्लामी भाइयों ने इजतिमाए ज़िक्रो ना'त जारी रखा।

वफ़ात के तक़रीबन **साढ़े तीन साल बा'द** बरोज़ मंगल 6 जुमादिस्सानी सि.1418 हि. (7-10-97) का वाक़ेआ़ है एक और इस्लामी भाई मुह़म्मद उ़स्मान क़ादिरी र-ज़वी का जनाज़ा इसी क़ब्रिस्तान में लाया गया । कुछ इस्लामी भाई मर्ह़ूम **मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی की क़ब्र पर फ़ातेह़ा के लिये आए तो येह मन्ज़र देख कर उन की आंखें फटी की फटी रह गईं कि क़ब्र की एक जानिब बहुत बड़ा शिगाफ़ हो गया है और **तक़रीबन साढ़े तीन साल क़ब्ल वफ़ात पाने वाले मर्ह़ूम मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی **सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए ख़ुश्बूदार कफ़न ओढ़े मज़े**

www.dawateislami.net

से लैटे हुए हैं। आनन फ़ानन येह ख़बर हर त़रफ़ फैल गई और रात गए तक ज़ाइरीन मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى के कफ़न में लिपटे हुए तरो ताज़ा लाशे की ज़ियारत करते रहे। (येह वाक़ेआ़ भी कई अख़्बारात में शाएअ़ हुवा)

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बारे में ग़लत़ फ़हमियों के शिकार रहने वाले कुछ अफ़राद भी **दा'वते इस्लामी वालों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस अ़ज़ीम फ़ज़्लो करम का खुली आंखों से मुशाहदा कर के तह़सीनो आफ़रीन पुकार उठे और दा'वते इस्लामी के मुह़िब बन गए।** (मुलख़्ख़स अज़ क़ब्र खुल गई, स. 28, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿5﴾ मुह़म्मद नवीद अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى

ज़िल्अ़ जन्नतुल मा'ला ह़ल्क़ा गुलशने अ़त्तार त़ाई मह़ल्ला मुहाजिर केम्प नम्बर 7, बाबुल मदीना कराची के मुक़ीम दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता सत्तरह साला इस्लामी भाई **मुह़म्मद नवीद अ़त्तारी** का 18 र-जबुल मुरज्जब सि.1421 हि. सुब्ह़ तक़रीबन आठ बजे इन्तिक़ाल हुवा। तक्फ़ीन के बा'द ह़स्बे वसिय्यत मर्ह़ूम के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज सजा कर मुहाजिर केम्प नम्बर 7 के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया।

जुमा'रात रबीउ़ल ग़ौस सि. 1422 हि. 12 जुलाई सि. 2001 ई. को मर्ह़ूम मुह़म्मद नवीद अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى ने अपने भाई को ख़्वाब में आ कर बताया कि **"तुम मेरी क़ब्र पर नहीं आते, आ कर देखो तो सही मेरी क़ब्र का क्या ह़ाल हो गया है"** जिस दिन

www.dawateislami.net

ख़्वाब आया था उस दिन शदीद बारिश हुई थी। चुनान्चे जा कर देखा तो जुमा'रात को होने वाली मूसलाधार बारिश के बाइस क़ब्र धंस गई थी।

क़ब्र कुशाई इतवार को सुब्ह तक़रीबन साढ़े सात बजे मर्हूम के तमाम भाई ब शुमूल दा'वते इस्लामी के आठ हुफ़्फ़ाज़े किराम क़ब्र पर आए। कई लोगों की मौजूदगी में गोरकुन ने क़ब्र कुशाई की तो येह मन्ज़र देख कर तमाम हाज़िरीन की आंखें फटी की फटी रह गईं कि **मर्हूम नवीद अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى **जिन की वफ़ात को तक़रीबन 9 माह का अ़रसा गुज़र चुका था। उन का बदन तरोताज़ा और कफ़न भी सलामत है। सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए दोनों हाथ नमाज़ की त़रह़ बांधे मज़े से लेटे हुए हैं।**

चार इस्लामी भाइयों ने मिल कर उन की लाश को क़ब्र से निकाला। उन के जिस्म और क़ब्र से ख़ुश्बू की लपटें आ रहीं थीं। क़ब्र को दुरुस्त कर के दोबारा दफ़्न कर दिया गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नवीद अ़त्तारी की मग़्फ़िरत करे और उन के सदक़े हम सब को बख़्शे। (اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن.صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) इस वाक़िए़ की भी अख़्बारात के ज़रीए़ काफ़ी तश्हीर हुई।

(मुलख़्ख़स अज़ क़ब्र खुल गई, स. 31, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿6﴾ ख़ुश नसीब अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى

बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का ह़ल्फ़िया बयान है कि मेरे वालिद साह़िब अ़ब्दुस्समीअ़ अ़त्तारी म-दनी माह़ोल से ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर मेरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करने पर कभी कभी ए'तेराज़ किया करते। मगर मैं ने जवाब देने के बजाए

www.dawateislami.net

घर वालों पर इनफ़िरादी कोशिश जारी रखी मौक़अ़ मिलने पर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें घर में सुनाने का सिल्सिला रखा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से वालिद साहिब समेत तमाम घर वाले भी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद बन गए और एक दिन वालिद साहिब ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान की केसेट "क़ब्र की पुकार" सुन कर चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ भी सजा ली। नमाज़ वोह पहले ही शुरूअ़ फ़रमा चुके थे। चन्द दिन बीमार रहे और उन्हें राजपूताना हस्पताल में दाख़िल करा दिया गया। 20 जूलाई 2004 बरोज़ मंगल दो पहर कमो बेश एक बज कर तीस मिनट पर मेरी और दीगर रिश्तेदारों की मौजूदगी में वालिद साहिब अ़ब्दुस्समीअ़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى बुलन्द आवाज़ से **कलिमए त़य्यिबा** لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का विर्द करने लगे और इसी आ़लम में उन की रूह़ परवाज़ कर गई।

सब्ज़ लिबास **कमो बेश** 3 दिन बा'द मेरी 5 साला बेटी ने बताया कि रात मैं ने दादा अब्बू को ख़्वाब में देखा कि वोह बहुत ख़ुश थे और मुस्कुरा रहे थे, **उन का चेहरा बहुत रोशन लग रहा था,** उन्हों ने सब्ज़ रंग का लिबास पहन रखा था। कह रहे थे कि मैं यहां बहुत आराम में हूं।

कमो बेश 40 दिन बा'द शदीद बारिश हुई और क़ब्र एक जानिब से दब गई। ख़त़रा था कि अन्दर गिर जाएगी। लिहाज़ा जब क़ब्र को दुरुस्त करने के लिये खोलने की ज़रूरत पेश आई तो एक ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र सामने था, वालिद साहिब **अ़ब्दुस्समीअ़ अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى **का कफ़न और जिस्म 40 दिन गुज़रने के बा वुजूद सलामत था और ख़ुश्बू की लपटें आ रही थीं।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अ़ज़ीम निस्बतें

मज़कूरा बाला वाक़ेआ़त में जिन इस्लामी भाइयों और बहनों की **कलिमए पाक** का विर्द करते हुए दुन्या से **क़ाबिले रश्क अन्दाज़ में रुख़्सती** का बयान है और वोह ख़ुश नसीब जिन के बदन व कफ़न एक अ़रसा गुज़र जाने पर भी सलामत थे और उन की **क़ब्रों में ख़ुश्बू का बसेरा था,** उन ख़ुश नसीबों में येह निस्बतें यक्सां देखीं गईं कि येह तमाम इस्लामी बहनें और भाई...!

(1) अ़क़ीदए **तौह़ीदो रिसालत के दाई,** (2) **नबिय्ये करीम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम, (3) सह़ाबए किराम, **अहले बैत** और औलियाए कामिलीन के मुह़िब, (4) चारों अइम्मए उ़ज़्ज़ाम को मानने वाले और करोड़ों ह़-नफ़ियों के अ़ज़ीम पेश्वा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मुक़ल्लिद या'नी ह़-नफ़ी थे, (5) **मस्लके आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर कारबन्द थे, (6) तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता और ज़माने के वली शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद थे।

मुर्शिदे कामिल की दुआ़ओं का सदक़ा

हमारा ह़ुस्ने ज़न है कि मज़कूरा दुन्या से रुख़्सत होने वाले ख़ुश नसीब इस्लामी भाइयों को मिलने वाली बहारें **उन के मुर्शिदे कामिल की दुआ़ओं का सदक़ा है।** क्यूंकि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन को दुआ़ओं से नवाज़ते ही रहते हैं। इस की एक झलक मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

21-12-2002 में क़िब्ला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद**

www.dawateislami.net

इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का जब ऑपरेशन हुवा तो ऑपरेशन के शुरूअ़ से आख़िर तक साथ रहने वाले डॉक्टर (जो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुरीद हैं) उन्हों ने ह़ल्फ़िया बताया कि नीम बे होशी में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ईमान अफ़रोज़ अन्दाज़ देख कर मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए, लोगों का CROWD हो गया, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की रिक़्क़त अंगेज़ सदाओं और दुआ़ओं को सुन कर कई आंखें अश्कबार थीं। इस दौरान आप ने वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी ज़बान से जो जो अदा किया और जिन जिन कलिमात की बार बार तकरार की वोह येह थे,

''सब लोग गवाह हो जाओ मैं मुसलमान हूं, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **! मैं मुसलमान हूं, या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मैं तेरा ह़क़ीर बन्दा हूं, या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **मैं आप का अदना ग़ुलाम हूं, मैं ग़ौसुल आ'ज़म** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) **का ग़ुलाम हूं, ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मेरे गुनाहों को बख़्श दे, ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मेरे मां बाप की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मेरे भाई बहनों की मग़्फ़िरत फ़रमा, या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मेरे घर वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मेरे तमाम मुरीदों की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! ह़ाजी मुश्ताक़ की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! तमाम दा'वते इस्लामी वालों और वालियों की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मह़बूब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा ।''**

www.dawateislami.net

कभी इन दुआ़ओं की बार बार तकरार करते, कभी ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल होते तो कभी **कलिमए त़य्यिबा** का विर्द कर के अपने ईमान पर सब को गवाह बनाते हुए STRETCHER पर सुवार अपने ROOM की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे थे,

मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का करोड़ हा करोड़ शुक्र अदा करता हूं कि उस ने मुझ जैसे अदना को इतनी अ़ज़ीम हस्ती **अमीरे अहले सुन्नत अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का दामन नसीब फ़रमाया और इन के मुरीदों में किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ثُمَّ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

म-दनी मश्वरा जो किसी का मुरीद न हो उस की ख़िदमत में मेरा तो म-दनी मश्वरा है कि फ़ी ज़माना शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वुजूदे मुबारक को ग़नीमत जाने और बिला ताख़ीर उन का मुरीद हो जाए। यक़ीनन मुरीद होने में नुक़्सान का कोई पहलू ही नहीं, दोनों जहां में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा ही फ़ाइदा है। अपने घर के एक एक फ़र्द बल्कि अगर एक दिन का बच्चा भी हो तो उसे भी सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सिल्सिले में दाख़िल कर के मुरीद बनवा कर क़ादिरी र-ज़वी अ़त्तारी बना दे।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने मुरीदों से किस क़-दर मह़ब्बत फ़रमाते हैं येह तो आप पढ़ ही चुके हैं कि **नीम बेहोशी में भी वोह अपने मुरीदों के लिये मग़्फ़िरत की दुआएं मांगते रहे,** यहां तक कि मा'लूम हुवा है कि बक़र ईद (सि.1423 हि.) में उन्हों ने

www.dawateislami.net

ईसाले सवाब के लिये एक कुरबानी अपने **ग़रीब मुरीदों** की त़रफ़ से और एक कुरबानी अपने **फ़ौतशुदा मुरीदों** की त़रफ़ से की। ज़ाहिर है जो नीम बेहोशी में भी अपने मुरीदों को न भूले **वोह भला होश के आ़लम में किस त़रह़ भुला सकते हैं!** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नज्अ़ और क़ब्रो ह़श्र में भी **अ़त्तारिय्यों का बेड़ा पार है!**

आप ख़ुद या किसी और को मुरीद या त़ालिब बनवाना चाहते हैं तो आख़िरी सफ़ह़े पर दिये गए फ़ॉर्म पर उन के नाम तरतीब वार बमअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **म-दनी मर्कज़ "फ़ैज़ाने मदीना" त्रीकोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ा पूर, अह़मदआबाद** के पते पर रवाना फ़रमा दें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें **सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा।

क़िस्मत अपनी प्यारी प्यारी — ग़ौस के सदक़े हैं अ़त्तारी
निस्बत है क्या ख़ूब हमारी — हम अ़त्तारी हैं अ़त्तारी
बहरे रज़ा ऐ रब्बे बारी — बच्चा बच्चा हो अ़त्तारी
ख़ौफ़े ख़ुदा से गिर्या त़ारी — हो, येह तड़प है बन अ़त्तारी
इ़श्के़ नबी में आहो ज़ारी — का है शौक़ तो बन अ़त्तारी
जो कोई भी है अ़त्तारी — कैसे भला होगा वोह नारी
नेकी से गर दिल है आ़री — आओ बन जाओ अ़त्तारी

(मुलख़्ख़सन "रिसाला अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के ऑपरेशन की झल्कियां")

www.dawateislami.net

हैरत अंगेज़ यक्सानिय्यत

जिन ख़ुश नसीब इस्लामी भाइयों और बहनों को वक़्ते मौत कलिमए त़य्यिबा पढ़ने की सआ़दत मिली और क़ब्रें खुलने पर जिस्म व कफ़न सलामत होने के साथ ख़ुश्बू का बसेरा था उन तमाम में हैरत अंगेज़ यक्सानिय्यत येह देखी गई कि येह तमाम अपने पीरो मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की म-दनी तरबिय्यत की ब-र-कत से (1) पंज वक़्ता नमाज़ी और दीगर फ़राइज़ो वाजिबात पर अ़मल का ज़ेहन रखने और सुन्नतों के मुत़ाबिक़ अपने शबो रोज़ गुज़ारने वाले थे, (2) नेकियां कर के **नेकी की दा'वत** फैलाने और बुराइयों से बच कर बुराइयों से बचाने की कोशिश करने वाले, (3) **दुरूदो सलाम** महब्बत से पढ़ने वाले, (4) **फ़ातेहा नियाज़ बिल ख़ुसूस ग्यारहवीं शरीफ़** और बारहवीं शरीफ़ का एहतिमाम करने वाले, (5) ईदे मीलादुन्नबी ﷺ की ख़ुशी में **जश्ने विलादत** की धूमें मचाने वाले, (6) चराग़ां और इजतिमाए ज़िक्रो ना'त करने वाले थे। जब कि फ़ौत हो जाने वाले ख़ुश नसीब इस्लामी भाई (7) **बारह रबीउ़न्नूर शरीफ़** के दिन एहतिमाम के साथ **म-दनी जुलूस** में शिर्कत करने के साथ साथ। (8) मज़ाराते औलिया पर बा अदब ह़ाज़िरी भी दिया करते थे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन तमाम ख़ुश नसीबों से मुतअ़ल्लिक़ मुन्दरिजए ज़ैल फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रोशनी में ग़ौर फ़रमाएं।

फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ जिस का आख़िर कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه (या'नी कलिमए त़य्यिबा) हो, वोह जन्नत में दाख़िल होगा। (ابو دائود ج ۳ ص ۱۳۲، رقم الحديث ۳۱۱۶)

﴿2﴾ क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा है। (ترمذی شریف ج 4ص 209)

www.dawateislami.net

दुन्या व आख़िरत में कामयाबी

रसूले करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के **फ़रामैने जन्नत निशान** पढ़ कर तो हर शख़्स का हुस्ने ज़न येही होना चाहिये कि मौत के वक़्त इन्तिहाई नाज़ुक और मुश्किल वक़्त में मज़्कूरा आ़शिक़ाने रसूल का **कलिमए त़य्यिबा** पढ़ना और दुन्या से रुख़्सत होने के बा'द उन के तरोताज़ा अजसाम का क़ब्रों से **सह़ीह़ व सलामत ज़ाहिर होना,** क़ब्रों से ख़ुश्बू की लपटें आना, **उन आ़शिक़ाने रसूल के मज़्कूरा अ़क़ाइद का ऐन शरीअ़त के मुत़ाबिक़ होने की दलील है । और उम्मीद है अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم **उन से राज़ी होंगे और** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **वोह दुन्या व आख़िरत में कामयाब होंगे ।**

हर ज़ी शुऊ़र और ग़ैर जानिब दार शख़्स येही कहेगा कि येह तो वोह ख़ुश नसीब हैं, जिन्हों ने **वलिय्ये कामिल के दामन और मस्लके ह़क़्क़ा अहले सुन्नत की वोह बहारें पाईं कि** उन्हें वक़्ते मौत **कलिमए त़य्यिबा** पढ़ने की सआ़दत मिली, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह ख़ुश नसीब क़ब्र, ह़श्र, मीज़ान और पुल सिरात़ पर भी हर जगह **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ ﷺ के फ़ज़्लो करम से कामयाब हो कर सरकार ﷺ की शफ़ाअ़त का मुज़्दए जां फ़िज़ा सुन कर जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा ﷺ का पड़ोस पाने की सआ़दत पा लेंगे ।

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ , اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ , اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

www.dawateislami.net

येह किताब पढ़ने के बा'द दूसरों को पढ़ने की तरग़ीब दीजिये

शादी, ग़मी की तक़रीबात, इजतिमाआ़त, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल तक़्सीम कर के सवाब कमाइये ।

गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर कुछ रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये ।

अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के हर घर में वक़्फ़े वक़्फ़े से बदल बदल कर सुन्नतों भरे रसाइल पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाएं ।

www.dawateislami.net

مَــاخِــذ و مَــراجِــع

کتاب	مصنف/مؤلف	کتاب	مصنف/مؤلف
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	فیضانِ بسم اللہ	امیرِ اہلسنّت مدظلہ العالی
کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان	برے خاتمے کے اسباب	امیرِ اہلسنّت مدظلہ العالی
صحیح بخاری	محمد بن اسماعیل البخاری	الترغیب والترہیب	ذکی الدین عبد العظیم المنذری
تفسیرِ نعیمی	مفتی احمد یار خان نعیمی	الرسالۃ القشیریۃ	ابو القاسم عبد الکریم القشیری
مسند امام احمد	امام احمد بن حنبل	انوارِ رضا	---------
صحیح مسلم	مسلم بن حجاج نیشاپوری	زبدۃ المقامات	---------
سنن ابو داؤد شریف	ابو داؤد سلیمان بن اشعث	رُوحُ البیان	حضرت اسمعیل حنفی
شرح الصدور	امام جلال الدین السیوطی	شرح العلامۃ الزرقانی علی المواہب	محمد بن عبد الباقی زرقانی
کیمیائے سعادت	محمد بن محمد الغزالی	جامع الاحادیث	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان
احیاء العلوم	محمد بن الغزالی	جامع الترمذی	ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ
تذکرۃ الاولیاء	فرید الدین محمد العطّار	دلیل العارفین	خواجہ بختیار کاکی علیہ الرحمۃ
نزہۃ المجالس	مولانا عبد الرحمٰن الصفوری	فوائد فواد	میر حسن سنجری علیہ الرحمۃ
احسن الوعاء	مولانا نقی علی خان	ہشت بہشت	---------
لقط المرجان فی احکام الجان	امام جلال الدین السیوطی	حیاتِ اعلیٰ حضرت	علامہ ظفر الدین بہاری علیہ الرحمۃ
کشف المحجوب	داتا گنج بخش علی ہجویری	فوائد السالکین	---------
وقار الفتاویٰ	حضرت وقار الدین علیہ الرحمۃ	الجامع الصغیر	علامہ جلال الدین سیوطی علیہ الرحمۃ
فتاویٰ رضویہ شریف	اعلیٰ حضرت علیہ الرحمۃ الرحمٰن	اخبار الاخیار	شیخ عبد الحق محدث دہلوی علیہ الرحمۃ
الملفوظ شریف	مفتی اعظم ہند مصطفیٰ رضا خان	انتباہ فی سلاسل اولیاء اللہ	---------
حقائق عن التصوف	حضرت عیسیٰ شاذلی علیہ الرحمۃ	الوظیفۃ الکریمہ	مفتی حامد رضا علیہ الرحمۃ
المواہب الدنیا	علامہ احمد بن محمد قسطلانی علیہ الرحمۃ	فتاویٰ افریقہ	اعلیٰ حضرت علیہ الرحمۃ
مجمع الزوائد	امام ابو القاسم عبد الکریم ھیثمی	ایھا الولد	امام غزالی علیہ الرحمۃ الوالی
جامع کرامات اولیاء	علامہ محمد یوسف نبہانی	زلف و زنجیر	علامہ ارشد القادری علیہ الرحمۃ

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात : (अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्राहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु-रक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?
(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कह़ूत़ि वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (अल हुक़ूक़ लि त़ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिदुआ़अ मअ़हू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

www.dawateislami.net

﴾शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब﴿

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62)

(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70)

(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93)

(19,20,21) जहुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़्तार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वस्सानी)

(कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

www.dawateislami.net

(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)

(37) अ़त्त़ारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़हात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से)

(कुल सफ़हात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)

(51) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़हात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

www.dawateislami.net

(57) तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़्हात : 187)

(58) आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्हात : 62)

(59) अहादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़्हात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अहादीस (कुल सफ़्हात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़्हात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी सवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़्हात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़्हात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़्हात : 74)

(65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीकुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़्हात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़्हात : 64)

(67) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़्हात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़्हात : 136)

(70) उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़्हात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़्हात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़्हात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्हात : 79)

www.dawateislami.net

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नहूव फ़ी शर्ह़े हिदा-यतुन्नहूव

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

﴾शो'बए तख़रीज﴿

(79) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल सफ़ह़ात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)

(87) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

(कुल सफ़ह़ात : 274)

﴾शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴿

(88) सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम

(कुल सफ़ह़ात : 49)

(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़ह़ात : 48)

(90) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें ह़िस्सए दुवुम)

(कुल सफ़ह़ात : 32)

(91) 25 क्रिस्चेन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 33)

(92) दा'वते इस्लामी की जैलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और उन का इ़लाज (कुल सफ़ह़ात : 48)

(94) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त सिवुम (सुन्नते निक़ाह)(कुल सफ़ह़ात : 86)

www.dawateislami.net

(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)

(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)

(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)

(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)

(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)

(100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)

(102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)

(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)

(104) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2)(कुल सफ़हात : 48)

(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)

(106) मुख़ालिफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)

(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)

(108) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1) (कुल सफ़हात : 49)

(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)

(110) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (4) (कुल सफ़हात : 49)

(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)

(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)

(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)

(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)

(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

(116) नूरानी चेहरे वाले बुर्ज़ुग (कुल सफ़हात : 32)

(117) आंखो का तारा (कुल सफ़हात : 32)

(118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़हात : 32)

www.dawateislami.net

(119) बा ब-रकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़हात : 32)
(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(128) नौ मुस्लिम की दर्द भरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
(135) ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिसा (कुल सफ़हात : 32)
(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
(138) सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)
(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
(140) चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

٧٨٦

الصلوة والسلام عليک يا رسول الله

"क़ादिरी - अ़त्तारी" या "क़ादिरिय्या - अ़त्तारिय्या" बनवाने के लिये

﴾1﴿ नाम व पता बॉल पेन से और बिलकुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अलफ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं।

﴾2﴿ ऐंडरेस में मह़रम या सरपरस्त का नाम ज़रूर लिखें।

﴾3﴿ अलग अलग मक्तूब मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

न.	नाम	मर्द / औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल ऐंडरेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़्त जहां आप ख़ुद मुरीद होना पसन्द फ़रमाएं। वहां इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए अपने अ़ज़ीज़ो अक़रिबा, अहले ख़ाना व दोस्त अह़बाब और दीगर इस्लामी भाइयों को भी बैअ़त के लिये तरग़ीब दिला कर मुरीद करवा दें। और यूं अपनी और दूसरे मुसलमानों की आख़िरत की बेहतरी का सामान करें।

www.dawateislami.net

٧٨٦

الصلوة والسلام عليک يا رسول الله

"क़ादिरी - अ़त्तारी" या "क़ादिरिय्या - अ़त्तारिय्या" बनवाने के लिये

﴾1﴿ नाम व पता बॉल पेन से और बिलकुल साफ़ लिखें, ग़ैर मशहूर नाम या अलफ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं।

﴾2﴿ ऐडरेस में मह़रम या सरपरस्त का नाम ज़रूर लिखें।

﴾3﴿ अलग अलग मक्तूब मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

न.	नाम	मर्द / औ़रत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल ऐडरेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़्त जहां आप ख़ुद मुरीद होना पसन्द फ़रमाएं। वहां इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए अपने अ़ज़ीज़ो अक़रिबा, अहले ख़ाना व दोस्त अह़बाब और दीगर इस्लामी भाइयों को भी बैअ़त के लिये तरग़ीब दिला कर मुरीद करवा दें। और यूं अपनी और दूसरे मुसलमानों की आख़िरत की बेहतरी का सामान करें।

www.dawateislami.net

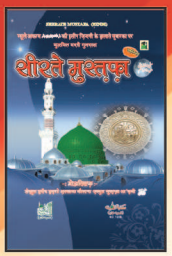

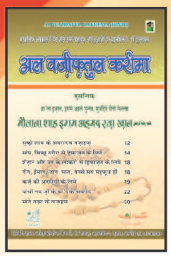

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E- mail:maktabaahmedabad@gmail.com